एहसास मुझे तुम्हारे दर्द का

प्रकाशक : अजीत सी. पटेल
दादा भगवान विज्ञान फाउन्डेशन
1, वरूण अपार्टमेन्ट, 37, श्रीमाणी सोसायटी,
नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के सामने,
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009,
Gujarat, India.
फोन : + 91 93 2866 1166 - 77

© Dada Bhagwan Foundation,
5, Mamta Park Society, B\h. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad - 380014, Gujarat, India.
Email : info@dadabhagwan.org
Tel : + 91 93 2866 1166 - 77

All Rights Reserved. No part of this publication may be shared, copied, translated or reproduced in any form or shape (including electronic storage or audio recording) without written permission from the holder of the copyright. This publication is licensed for your personal use only.

प्रथम संस्करण : ३०० प्रतियाँ, जुलाइ २०२०

भाव मूल्य : 'परम विनय'
और
'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : १०० रुपए

Printed in india

www.dadabhagwan.org

Inspired by the teachings of
Param Pujya Dada Bhagwan

डिस्क्लेमर

वर्तमान युग में मानव, टेक्नॉलोजी में जितना एडवान्स होता जा रहा है उतना ही आंतरिक शांति से दूर होता जा रहा है।

टीनेज... रंगीन सपने.. पेरेन्टल प्रेशर.. फ्रेन्ड सर्कल... पीयर प्रेशर... अंधी दौड़... सोशल मीडिया... परिणामतः खुशी एवं गम के बीच झूलता ये युवावर्ग अन्ततः डिप्रेशन तक पहुँच जाता है।

इस उपन्यास में इस पूरे सफर का सविस्तार वर्णन किया गया है। साथ ही साथ इस मायाजाल से बाहर निकलने के उपाय तथा अन्य समझ का भी इसमें समावेश किया गया है।

परम पूज्य दादाश्री हमेशा कहते थे कि दुःख केवल अज्ञानता के कारण ही होते हैं। जीवन के हर पड़ाव पर होने वाली गल्तियाँ और उनके स्थान पर सही समझ को सुंदर तरीके से वर्णित किया गया है, जो टीनेजर्स और यूथ के लिए अत्यंत उपयोगी होगी।

इस उपन्यास में परम पूज्य दादाश्री द्वारा दी गई सच्ची दृष्टि अर्थात् उनके आशय को टीनेज के लेवल पर समझाने का प्रयास किया है वर्ना पूज्य दादाश्री की एक्ज़ेक्ट समझ के लिए तो उनके पुस्तकों को ही मूल आधार मानना होगा।

(1)

वातावरण में बहुत उमस थी। सिर्फ मनुष्य ही नहीं बल्कि मूक प्राणियों को भी यही आशा थी कि मेघराजा अब तो कृपा करे, बारिश हो और इस गरमी से छूटकारा मिले। बादल घिर आए थे। गरमी से सभी परेशान थे। हाँ, मैं भी! फिर भी मेरे मन में बहुत शांति थी और साथ ही साथ स्थिरता की ठंडक भी। जिस प्रकार मैं जीवन में अकेली थी उसी प्रकार इस रूम में भी अकेली थी। पर अब नहीं। बहुत रह लिया अकेले। अब मैं खुद की कम्पनी इन्जॉय करने लगी थी।

रूम में खिड़की के पास मेरा स्टडी टेबल था और उस पर मेरे जीवन की आपबीती लिखी मेरी डायरी थी। इस डायरी ने मैंने जीवन के हर एक अच्छे-बुरे पलों को संभाल कर रखा था। या यूँ कहिए की सभी अप्रिय घटनाएँ उसमें दफन थी क्योंकि अच्छे पल तो मेरे जीवन में थे ही नहीं। पर अब इस डायरी का नया अध्याय प्रारंभ होने जा रहा था और वह भी आपकी उपस्थिति में।

अचानक खिड़की में से शीतल हवा का झोंका आया। मैंने उसे

अपने पूरे देह एवं सिर पर महसूस किया। एकदम सहजभाव से मैंने अपने सिर पर हाथ रखा। आज किसी भी प्रकार का भोगवटा या हीन भावना नहीं थी, स्थिरता और सहजता का अनुभव किया। आज तक नफरत, हताशा और गुस्से के साथ, एक फ़रियादी बनकर ही मैंने अपने आप को और भगवान के न्याय को अनेक बार धिक्कारा था।

आप सोच रहे होंगे न कि मैं कौन बोल रही हूँ?

मैं संयुक्ता....

आपकी ही मित्र...

आपकी ही परछाई...

आप अपने में मुझे कहीं न कहीं अदृश्य रूप में देखोगे ही...

शायद आप मुझे नहीं पहचानते इसलिए आपमें छुपी हुई मेरी तस्वीर को भी नहीं पहचान सकते।

जीवन के विविध पहलूओं में उलझकर मैं और आप, छोटी सी नासमझी के कारण, बेवजह ही अपने होंठ और आँखों को नहीं हँसने की उम्रकैद की सजा दे दिया करते हैं। आज जब मैं एक नई दृष्टि प्राप्त कर खुले मन से हँस रही हूँ और जी रही हूँ तब मुझे उसका अहसास हो रहा है।

खिड़की से सीधे कमरे में प्रवेश करने वाली हवा की गति अब

बढ़ने लगी। डायरी के पन्ने उड़ने लगे। एक सीलवट वाला पन्ना मेरी आँखों के सामने आते ही मेरी उंगलियों ने उसे रोक लिया। नज़रें उन बीते दिनों के याद में दौड़ने लगी।

हाँ, याद है मुझे, इस पन्ने की लाल स्याही का रंग क्यों निकला और उसमें सिलवट क्यों पड़ गई थी। उतावलेपन में खराब अक्षर में लिखा गया यह पन्ना आज मेरा इतिहास बता रहा था।

'आज जब मैं स्कूल से घर लौटी तब बहुत बारिश हो रही थी। मेरी सभी फ्रेन्ड्स, सिर्फ नाम मात्र को, बारिश में भीग चुकी थी। चूंकि भीग ही चुके थे इसलिए हम सबने वर्षा का आनंद लेने हेतु टेरेस पर जाना तय किया। मुझे भी बारिश में भीगना बहुत पसंद है इसलिए मैं भी उनके साथ गई। 'आओ संयुक्ता, यहाँ कितना मज़ा आ रहा है!'

'हाँ' मैंने हर बार की तरह सकुचाते हुए कहा।

'चलो हम सब अंताक्षरी खेलें।'

'बारिश में अंताक्षरी.... बहुत खूब... बहुत खूब', कहते हुए श्वेता उछल पड़ी।

श्वेता, नेहा, कृष्णा और मैं, इस तरह दो-दो की टीम बन गई।

'याहू... चाहे कोई मुझे जंगली कहे...' श्वेता, गीत शुरू करते

ही बारिश के पानी से भरे गड्ढे में कूद पड़ी और उसके पीछे हम सब भी पानी से खेलने लगे।

‘रे मामा.. रे मामा... रे...’, अंताक्षरी... अलग-अलग पिक्चरों के गीतों के साथ आगे बढ़ रही थी। गीत के अनुसार एक्शन करते-करते हम खूब मस्ती में मशगूल हो गए थे। मानो पूरी दुनिया के राजा न हो! अपनी शर्म और संकोच शायद मैं भूल गई थी।

दस-पंद्रह मिनट बाद नेहा ने शुरू किया। ‘ये रेशमी जुल्फें... ये शरबती आँखें...’

बस खत्म... मेरी हक़ीक़त... मेरी वास्तविकता.. मेरी नाराज़गी ने मेरी सारी खुशियों का एक सेकेंड में ही अंत कर दिया। मेरा चेहरा फीका पड़ गया। सभी सहेलियों को गाने के अनुसार उंगलियों से अपने बालों के साथ खेलते देख मैं झेंप गई। मुझे सबसे ईर्ष्या होने लगी। मन में हुआ कि अभी घर चली जाऊँ पर ऐसा करने के लिए मेरे पैर मेरा साथ नहीं दे रहे थे।

‘संयुक्ता... चलो अब तुम्हारी बारी है, अब तुम गाओ...’ कृष्णा ने मुझे झकझोड़ा।

मुझे तो यह पता ही नहीं चला कि गाना कब खत्म हो गया और अंतिम अक्षर कौन सा था? मैं चुप ही रही क्योंकि यदि कुछ

कहती तो शायद रो पड़ती। हिम्मत कर बस इतना ही कह सकी, 'मुझे ठंड लग रही है, मैं घर जाती हूँ।'

मैं जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ उतरकर नीचे घर में आ गई।

कमरे में आकर कुर्सी पर बैठ गई। खूब गुस्सा आ रहा था। स्वयं से नफरत एवं घृणा से मेरा मन भर आया था। आँखें बारिश की तरह बरस रही थी। मैंने डायरी खोली और आँसू भरी धुँधली आँखों से इस घटना की पीड़ा को उसमें उतार दी। भीगी आँखें, गीले-कांपते हाथ एवं दु:खी मन से लिखते-लिखते पन्ना भी भीग गया। और लिखावट भी बहुत खराब थी।

आज फिर से यह सिलवट वाला और धब्बे वाला पन्ना मुझे उस बुरी घटना की याद ताजा कर गया।

मेरे आज और कल में जमीन-आसमान का अंतर था। मैंने अपने जीवन के बहुत से सुखद प्रसंगों को स्वयं की हीन भावना के कारण दु:ख और भोगवटे की जलन की अग्नि में झोंक दिया था। मेरा बचपन और यौवन की शुरुआत, हमेशा के लिए उदासी की छाया में बीता था। बढ़ती उम्र के साथ जीवन जीने की इच्छा भी घटती जा रही थी। मैं, और ज्यादा हताश होती जा रही थी।

पर अब मुझे पुनः उन तमाम पलों को जीना है। जो शायद

संभव नहीं। पर हाँ, मैं पहली बार बरसात की राह देख रही हूँ। मुझे अब बिना किसी संकोच के उसमें भीगकर मोर की तरह नाचना है। जब से मुझे एक महान विभूति का सानिध्य प्राप्त हुआ है तब से जैसे मेरा जीवन ही बदल गया। उन्होंने मुझे नया जीवन दिया। नई दृष्टि दी। उनके प्रेम और करूणा की धारा की दो बूंदों ने ही मुझे तृप्त कर दिया। फिर भी वह किस प्रकार अधिकाधिक मिले यह लालसा मुझमें प्रबल होती गई। मेरा मन अब स्वयं से हटकर उनकी ओर दौड़ पड़ता है। और क्यों न जाए? जिस सुख की आशा में मैं कभी शांति से सोई भी नहीं, उस सुख का स्वाद उन्होंने ही तो मुझे चखाया।

दुनिया में अधिकतर लोग पैसों के बल पर, प्रतिष्ठा के बल पर, बुद्धिमत्ता के बल पर या फिर अपनी कोई विशेष कला द्वारा स्वयं को स्थापित कर लेते हैं। और फिर यदि महिलाओं की बात करें तो सबसे पहले सभी के मानसपटल पर उनका रूप रंग ही आता है। पहली ही नज़र में यह देखा जाता है कि वह कैसी दिखती है। फिर उसकी बुद्धि की परख होती है और शायद कुछ ही लोग उसके गुणों को महत्व देते हैं। पर मुझमें तो शायद इनमें से एक भी गुण विशेष नहीं थे। मैं सामान्य थी और आज भी हूँ। बुद्धि और गुण की बात करें तो बुद्धि तो निरंतर जलन और नेगेटिविटी में ही खर्च हो गई।

और गुणों तक तो पहुँच ही न सकी क्योंकि अंत:करण सिर्फ और सिर्फ किस प्रकार जीवन में शांति मिले और किस प्रकार लोगों का सामना करूँ इसी पीड़ा में खोया रहता। उसमें जो भी अच्छे गुण थे, वे भी प्राय: मृत जैसे हो गए थे। प्रतिदिन नए अवगुण ही जन्म लेते। बाकी रूपरंग की बात है, उस संबंध में तो मैं हमेशा नेगेटिव ही रही। आज पहली बार मुझे बाह्य रूप रंग गौण लगा। तभी अचानक रौनक आया और उसने मेरे विचारों की श्रृंखला तोड़ी।

'दीदी, आज नाटक देखने जाना है?'

'हाँ चलते हैं। बता कितने बजे जाना है?'

'क्या बात है? आज आपने बिना विचार किए ही उत्तर दे दिया?'

'हाँ... आज मैं तुझे मना नहीं करूँगी। मुझे जाना ही है।'

'बढ़िया.. तो छ: बजे का शो है, तुम सवा पाँच बजे तैयार रहना।'

'ओ.के., डन।' मैंने रौनक को हाई-फाईव दिया।

मेरा छोटा भाई रौनक... मुझे खुश रखने के लिए नए-नए नुस्खे अपनाता और मैं हमेशा उसे चकनाचूर कर देती। मेरी इच्छा उसे निराश करने की नहीं रहती किंतु स्वयं में इतना असंतोष था कि जिसके कारण किसी की ममता और भावना को समझने और सोचने

की समझ मैं खो चुकी थी। सतत खुद में ही खोया हुआ, उदास और पूर्णतः हताश व्यक्ति दूसरों को क्या खुश कर सकेगा?

घड़ी में साढ़े चार बजे थे। मैं तैयार होने के लिए खड़ी हो गई। मैंने शांतिपूर्वक जीन्स एवं टी-शर्ट पहना। मुँह धोया। एक छोटी सी स्लिंग बैग में वॉलट और मोबाइल रखा। आईने के सामने खड़े होकर मैंने स्वयं को एक कॉन्फिडेन्ट स्माइल दी।

खुद को आईने में देखकर मुस्कराना मेरे लिए आज तक बहुत कठिन था। डर था कि कहीं आईना भी मेरा मज़ाक न उड़ा दे। पर आज अंदर एकदम शांति लग रही थी। सबकुछ शांत था। मन के भीतर किसी भी प्रकार के कोई विचार नहीं थे। बस, एक अलग प्रकार का आनंद और आत्म विश्वास का अनुभव हो रहा था। अपनी आंतरिक एवं बाह्य दुनिया का सामना करने के लिए अब मैं लगभग तैयार हो चुकी थी।

रौनक ने आवाज दी, 'दीदी, दस मिनट में निकलना है, तैयार हो जाना।' मैंने शार्ट में ही जवाब दिया, 'हाँ, तैयार हूँ।'

मैं फिर से आईने के सामने गई। पहले भी, जब कहीं बाहर जाना होता तब मुझे बार-बार आईने के सामने जाकर खड़े रहने की आदत थी। मेरे लिए यह जगह हमेशा दुःखदायी ही रही है। आईने

पर पड़ी हुई एक बड़ी दरार और बिना काँच का कुछ हिस्सा, मुझे फिर से मेरे भूतकाल में खींचकर ले गया...

मम्मी का बर्थ डे था। पापा नाटक की टिकटें लेकर आए थे। नाटक देखने के बाद हम सब बाहर रेस्टोरेंट में खाना खाने जाने वाले थे। पर आज भी मम्मी तो सादी साड़ी में ही तैयार हुई थी।

दादी ने कहा, 'रश्मि, आज तो अच्छे कपड़े पहनो।' 'ये अच्छे ही तो हैं।' मम्मी की आँखें दादी को इशारे से कुछ समझा रही थी।

रौनक बाहर मित्रों के साथ खेलने गया था। वह दौड़कर घर आया और आकर फटाफट तैयार हो गया। वह बहुत खुश था क्योंकि हम बाहर घूमने या होटल में कम ही जाते थे। उसे घर से बाहर निकलने से पहले हमेशा अपने बाल को चार-पाँच बार सँवारने की आदत थी। बेसिन में से हाथ में पानी लेकर बालों में लगाया और सीधा मेरे कमरे में घुसा चला आया।

'ए... कब से आईने के सामने क्या कर रही हो? मुझे तैयार होने दो। यहाँ से हटो ज़रा।' और उसने मज़ाक में ही मुझे हल्का सा धक्का दिया।

मेरा डिप्रेस मन फिर से खिसक गया, 'क्या समझता है अपने आप को? नहीं हटूँगी जा।'

‘तुम्हें इतना क्या तैयार होना है?’ वह भी गुस्से में आ गया।

‘तू होता कौन है मुझे कुछ कहने वाला!’ अब मेरी कमज़ोरियाँ क्रोध में परिवर्तित होकर बाहर निकलने लगी।

‘एक तो टकली (गंजी) है और रौब की कोई सीमा नहीं!’ रौनक का अहंकार भी जाग उठा था।

मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो उसने मेरी दुखती नस दबाने के बजाय पूरी की पूरी ही काट डाली हो। पास ही टेबल पर पेपरवेट रखा हुआ था। मैं गुस्से से अंधी हो गई थी। मैंने पेपरवेट हाथ में उठाया। मन तो किया कि रौनक को दो तमाचे मार दूँ। लेकिन आईने के लिए झंझट हुई थी इसलिए मैंने उसे आईने पर ही ज़ोर से दे मारा। आईना टूट गया, कई दरारें पड़ गई और काँच का थोड़ा सा हिस्सा टूटकर नीचे गिर गया। ज़ोरदार आवाज सुनकर सभी रूम में इकट्ठा हो गए। किसी ने मुझसे कुछ नहीं कहा। सभी रौनक पर गुस्सा करने लगे। वैसे पापा की आँखों में मेरे लिए गुस्सा और दया दोनों दिखाई दे रहे थे। पर मम्मी एवं दादी की उपस्थिति ने उन्हें कुछ शांत किया। मम्मी की आँखों में आँसू भर आए। वे धीरे से काँच उठाने लगी। काँच के कण हर तरफ बिखर गए थे।

मैंने काँच तोड़ा और रौनक ने मेरा मन।

ज़मीन पर काँच के कण बिखर गए और मेरे मन में हीनता और लघुता के कण बिखर गए जो मेरे हृदय में चुभ गए।

मेरे जीवन में जो-जो अप्रिय घटनाएँ घटित हुई, उसे मैंने तो भोगा ही पर अपने मम्मी-पापा को भी मैंने कभी शांति से रहने नहीं दिया। मेरे साथ-साथ वे भी उतनी ही पीड़ा का अनुभव कर रहे थे जितनी की मैं।

बाहर जाना अपने आप कैन्सल हो गया। दादी चुपचाप अपने रूम में चली गई। रौनक बाहर के रूम में जाकर टी.वी. शुरू करके बैठ गया। मम्मी रसोईघर में जाकर काम करने का नाटक करने लगी क्योंकि वे जानती थी कि इस वक्त मुझसे कुछ कहना ठीक नहीं था। यदि वे अभी कुछ कहती तो मेरा मिज़ाज उन पर खूब भारी पड़ता। अत: थोड़े समय के बाद ही वे प्रेम से मुझे समझाकर शांत कर देती थी। मेरे हाथ-पैर अभी भी गुस्से से काँप रहे थे। पापा ने नाटक की टिकटों को फाड़ कर डस्टबिन में डाल दिया। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा और फिर चुपचाप बाहर चले गए। अंतत: मम्मी का बर्थ-डे खिचड़ी खाकर ही मनाया गया।

बेचारी मम्मी... हमेशा मेरी वजह से दुविधा में पड़ जाती थी। मैं भी समझदारी भूलकर मात्र अपने में ही केंद्रित हो जाती थी। इसीलिए

तब मुझे किसी और की पीड़ा का अहसास नहीं होता था। जो खुद डूब रहा हो उसे दूसरों को बचाने का विचार कैसे आ सकता है?

‘दीदी... अब चलो, देर हो जाएगी!’ रौनक रूम में आया और मैं फिर से वर्तमान में लौट आई।

(2)

बीस मिनट में हम नाटक हॉल पहुँच गए। लोगों की निगाहें मुझ पर ऐसे टिक जाती मानो किसी एलियन को देख रहे हों। सभी के बीच से निकलते हुए रौनक और मैं आगे बढ़े।

'रौनक, पॉपकॉर्न लोगे?'

'हाँ, मैं जाकर ले आता हूँ।' रौनक आगे बढ़ा।

'आज मैं लेने जाऊँगी।' उसका हाथ पकड़कर मैंने उसे रोका।

उसे आश्चर्य हुआ। कुछ बोला नहीं पर उसकी आँखों से खुशी झलक रही थी। पॉपकॉर्न की लाइन में मेरे पीछे दो आंटी खड़ी थीं। उन्होंने धीरे से मुझ पर कमेंट किया।

'ए, इसे देखिए तो, बाल कैसे विचित्र हैं।'

'है या नहीं वही समझ में नहीं आ रहा है।'

'शायद कोई बीमारी होगी।' एक आंटी के मन में अचानक दया उभर आई। दूसरी आंटी ने भी अब बोलना बंद कर दिया। बाहर

ऐसा सब सुनना और सहन करना मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी। पर अब मैंने इसे स्वीकार कर लिया है।

'आंटी, आपका रूमाल नीचे गिर गया है।' मैंने जाते-जाते उनसे कहा।

'ओह, थैंक यू।' उन्होंने आभार व्यक्त किया।

नाटक अच्छा था। कॉमेडी थी। मैं खूब हँसी। धीरे-धीरे सभी लोग थियेटर से बाहर निकलने लगे। हल्के शोरगुल के बीच मुझे एक आवाज़ सुनाई दी।

'संयुक्ता...'

मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मेरी स्कूल फ्रेंड ईशिता खड़ी थी।

'हाय, हॉउ आर यू?'

मैंने हाथ बढ़ाया।

'फाइन, तू कैसी है?' उसने भी आश्चर्य से मेरी ओर देखा और हाथ मिलाया।

'बिल्कुल ऑल राइट।'

'और क्या चल रहा है?'

'ऑल इज़ वेल, तू बता।' आज मैंने उससे सच्चे दिल से बात

की।

ईशिता यानी हमारी क्लास की सबसे ब्युटीफूल लड़की! सिर्फ चेहरा ही नहीं बल्कि बाल भी उतना ही सुंदर! टीचर्स भी उससे पूछते कि बालों के लिए वह कौन सा तेल इस्तेमाल करती है। और तब उसका सीना गर्व से फूल जाता। लड़कियाँ भी उसे फ्रेंड बनाना अपना सौभाग्य समझती थी, फिर भले ही अदंर से उसके प्रति ईर्ष्या में जलती हो।

सुंदरता के कारण उसका पारा थोड़ा ऊँचा ही रहता। मैं उससे बहुत ही कम बात करती। उसे देखकर मुझे अपने आप पर और ज्यादा शर्म आती। मैं बहुत हीन महसूस करती इसलिए उससे दूर ही रहती।

एक बार, छठवीं कक्षा में स्टेज पर एक नाटक होने वाला था। उसमें भाग लेने के लिए सभी बहुत उत्साहित थे। मेरी भी दिल से यही इच्छा थी लेकिन मैं यह किसी को बता नहीं पा रही थी। जब सभी लड़कियाँ ग्रुप में उस बात की चर्चा करतीं तो मैं उनकी बातें दूर खड़ी रहकर ध्यान से सुना करती। नाटक वृद्ध और युवा पीढ़ी के बीच जनरेशन गैप पर था। कुल पाँच किरदार थे। उसमें एक पात्र वृद्ध स्त्री का था। सभी मज़ाक के मूड में थे।

‘ऐ अंजली, उस यंग लड़की का रोल तो मैं ही करूँगी।’

स्वाति ने एलान किया।

'चल हट, तू तो उसकी मम्मी के रोल में ही अच्छी लगेगी।'

अंजली ने पलटवार किया।

'मुझे लगता है कि वह रोल तो ईशिता को ही मिलेगा।' 'ईशिता की चमची' 'निशा तुरंत बोल पड़ी। निशा हमेशा ईशिता के पीछे-पीछे घुमने में और उसकी हाँ में हाँ मिलाने में नम्बर वन थी। सभी उसे पीठ पीछे 'ईशिता की चमची' कहकर बुलाते। मानो उसका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं था। 'आई थिंक निशा सच कह रही है। टीचर ईशिता को ही सलेक्ट करेंगे।' रेहाना ने भी स्वीकार किया।

'ओ.के. बाबा, तो फिर वह रोल तो गया मेरे हाथ से।' स्वाति ने अंजली की ओर देखते हुए कहा।

'अपनी तो मम्मी-पापा बनने की बारी आएगी।' अंजली की कमेंट पर सभी ज़ोर से हँस पड़े। ईशिता मौन रही। वह सातवें आसमान में उड़ने लगी। उसके नथुने गर्व से फूल गए।

'अच्छा चलो, अब दो रोल बचे हैं। एक तो यंग लड़की का भाई और दूसरा उसकी दादी माँ।' प्रिया ने बात आगे बढ़ाई।

'उसके भाई का रोल तो सना को ही सूट करेगा, उसके बाल ब्वाय कट हैं न।' अंजली ने फिर से अपनी होशियारी दिखाई।

‘और उसकी दादी माँ कौन बनेगी?’ स्वाति ने प्रश्न किया।

‘उसमें तो किसी को इन्टरेस्ट नहीं है।’ रेहाना ने कहा।

‘किसी न किसी को तो करना ही पड़ेगा न?’ प्रिया ने कहा।

‘मेरे पास एक आइडिया है।’ ईशिता ने सभी का ध्यान मेरी ओर करते हुए धीरे से कुछ इशारा किया। मुझे समझ में नहीं आया। सभी जोर-जोर से हँसने लगे।

‘वाऊ ईशिता तेरा आइडिया तो सुपर है।’ ईशिता कुछ बोले तो निशा कैसे चुप रह सकती थी।

‘अरे यार, जाने दे न।’ प्रिया थोड़ा सीरियस होकर बोली।

‘एक बार उससे पूछकर देखते हैं।’ निशा बोली।

‘वैसे भी दादी माँ के रोल में सफेद बाल की विग पहननी पड़ेगी। जो उसे परफेक्ट फिट होगी।’ ईशिता के वाक्य में भरपूर अहंकार छलक रहा था।

‘संयुक्ता, तुझे ड्रामा में पार्ट लेना है?’ निशा ने आवाज लगाकर मुझसे पूछा।

‘नहीं।’ उन्हें पता नहीं था कि मैंने उनकी सारी बातें सुन ली है। मैं एकदम टूट गई। बिखर गई। ईशिता के प्रति मुझे नफरत होने

लगी। मेरी एक दिन ऐसी हँसी उड़ाई जाएगी उसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। मैं एक मज़ाक बनकर रह गई। मेरी आँखे भर आई थी पर मुझे सबके सामने रोना नहीं था। मैं तेज़ कदमों से बाथरूम की ओर जाने लगी पर रास्ते में ही रो पड़ी। बाथरूम में पानी का नल खोलकर मुँह धोया और अपने आँसुओं को सब लड़कियों से छिपाने की कोशिश की पर मेरी आँखें एकदम लाल हो गई थी। उस दिन किसी का भी सामना करने की मुझमें हिम्मत नहीं था। नज़रें झुकाकर मैं अपने क्लास में लौट आई और अपनी डॉयरी लेकर स्टाफ रूम की तरफ गई।

'अक्षिता मैम।' मैंने धीरे से क्लास टीचर को पुकारा।

'बोलो संयुक्ता।'

'मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे घर जाने के लिए छुट्टी दोगे, प्लीज़?'

'क्या हुआ तुम्हें? तुम रो रही थी?' अक्षिता मैम को पता चल गया।

'हाँ मैम, पेट में बहुत दर्द है। सहन नहीं हो रहा है।' मैंने नज़रें झुकाकर बहाना बनाया।

'आप यदि अनुमति दें तो फोन करके पापा को बुला लूँ?'

‘हाँ, लाओ डायरी, मैं साइन कर देती हूँ।’ अक्षिता मैम ने भी मुझसे ज्यादा सवाल किए बिना छुट्‌टी दे दी। यह मुझ पर उनका उपकार था क्योंकि यदि वे ज्यादा कुछ पूछती तो शायद मैं अपने आँसू रोक नहीं पाती।

‘थैंक यू मैम।’ मैंने बड़ी मुश्किल से उन्हें एक हल्का-सा स्माइल दिया।

स्कूल के ऑफिस से फोन करके पापा को बुलाया। गेट पर मैम की साइन की हुई डायरी दिखाकर पापा के साथ स्कूटर पर घर जाने के लिए निकली।

‘बेटा, चलो तुम्हें पहले डॉक्टर के पास ले जाता हूँ।’ पापा ने चिंतित स्वर में कहा।

‘नहीं, मुझे घर जाना है।’

‘बेटा, पर तुम दवाई ले लोगी तो तुम्हें अच्छा लगेगा।’

‘मैंने आपसे कहा न कि मुझे घर जाना है। अभी डॉक्टर की ज़रूरत नहीं है।’ मैंने अकुलाकर पापा को जवाब दिया।

‘जैसी तुम्हारी मर्जी।’ शायद पापा समझ गए थे कि मैं झूठ बोलकर आयी हूँ इसलिए आगे कुछ कहे बिना ही मुझे सीधे घर ले गए।

‘संयुक्ता....’ ईशिता ने मुझे झकझोरा।

‘ओह....’ देखा तो मैं थियेटर के हॉल में खड़ी थी। मेरी विचारधारा टूट गई।

‘तू स्कूल के किसी फ्रेन्ड के टच में है क्या?’ ईशिता ने पूछा।

‘नहीं। पर अब हम दोनों टच में रहेंगे।’

‘मुझे अपना मोबाइल नम्बर दो।’ ईशिता जैसी लड़की ने मेरा नम्बर माँगा? मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ पर और आगे सोचने के बजाय हमने आपस में नम्बर शेयर किया।

‘चल, फिर मिलेंगे।’ आगे और कोई बात नहीं करनी थी इसलिए मैंने उसे बाय कहना ही उचित समझा।

‘हाँ, श्योर मिलेंगे।’

‘ओ. के. बाय।’

‘बाय।’ ईशिता ने बाय तो किया पर मानो उसे और कुछ कहना हो ऐसा लगा। मैं एक मिनट उसके सामने रुक गई।

‘तुम बहुत बदल गई हो।’ ईशिता बोल पड़ी।

‘अच्छा?’ तुझे ऐसा लगता है?’ उसकी बातें सुनने में मुझे इन्टरेस्ट आने लगा।

‘हाँ, यू लुक हेप्पी एन्ड कॉन्फिडेन्ट।’

‘यू आर राइट।’

‘इतने सालों के बाद तुमसे मिलकर अच्छा लगा।’ प्राउडी ईशिता आज मुझसे इतनी अच्छी तरह बातें कर रही थी उसका मुझे उतना ही आश्चर्य हुआ जितना ईशिता को मुझे खुश देखकर हुआ।

‘दीदी अब चलें?’ रौनक ने आवाज़ दी।

हॉल से लगभग सभी लोग जा चुके थे। मैं और ईशिता एक दूसरे को देखकर अचम्भित होकर भावनाओं में ऐसे खो गए थे कि समय का ध्यान ही नहीं रहा। वैसे भी जब दो लड़कियाँ मिलती हैं न तब लम्बी बातें ही होती है। और अब मैं भी सभी के साथ मिक्स होने लगी थी। पहले वाली संयुक्ता तो किसी के साथ ज्यादा मिक्स नहीं होती थी। और ईशिता भी सिर्फ कुछ ही लड़कियों को अपनी फ्रेन्ड बनाती थी। पर आज वह भी बदली हुई लगी।

‘दीदी।’ रौनक ने फिर से आवाज़ दी।

‘हाँ, आ रही हूँ।’

‘ओ.के., बाय ईशिता। बाद में फोन पर बात करेंगे।’

‘हाँ, मैं तुम्हें फोन करूँगी।’ मैंने उसे स्माइल दी और हम दोनों अपने-अपने रास्ते चल पड़े।

(3)

बाहर रोड पर आकर मैं एक कार्नर पर खड़ी रही। रौनक बाइक लेकर आया। मैं बाइक पर बैठ ही रही थी कि तभी..... 'हुररररे.....' ज़ोर से आवाज़ सुनाई दी।

मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मेरी स्कूल में पढ़ने वाला एक लड़का, मीत, पीछे खड़ा था।

'हाय', मैं बाइक पर से नीचे उतरी। ''आज क्लासमेट्स डे लग रहा है।''

'क्यों ?'

'अभी ईशिता मिली थी और अब तुम।'

'अब और पंद्रह-बीस मिनट पक्के।' रौनक मन में ही बड़बड़ाया। पर आज वह भी मुझमें आए हुए बदलाव को आश्चर्य और आनंद मिश्रित प्रेम से ध्यानपूर्वक देख रहा था। आज उसे बड़ी बहन को देखना अच्छा लग रहा था।

‘हाऊ आर यू?’ उसने आश्चर्यचकित होकर मेरी ओर देखा।

‘फाइन, तुम कैसे हो?’ मेरे चेहरे पर खुशी साफ नज़र आ रही थी।

‘बंदा ऑलवेज़ कूल-कूल।’ मीत ने अपनी स्टाइल में सिर हिलाते हुए और कंधा उचकाते हुए कहा।

‘हा.... हा... हा! तुम अभी भी वैसे ही हो।’

‘हाँ और क्या, वैसे ही रहना चाहिए न। तुम सकुशल हो न?’

मीत वर्षो पहले स्कूल में भी मुझसे ऐसे ही पूछा करता था। खास कर तब, जब मैं हताश होती।

‘हाँ, अब सच बोल रही हूँ। मजे में हूँ।’ मैंने आज उसे सही जवाब दिया था। स्कूल में बाकी लड़के मुझसे घृणा करते थे और मेरी हँसी उड़ाते थे। पर मीत उन सबसे अलग था। उसने कभी भी मेरा वैसा मज़ाक नहीं उड़ाया बल्कि वह मुझे दुःखी देखकर अपनी बेकार की बातों से हँसा देता था।

‘कहाँ खो गई फिर से?’

‘नहीं, नहीं, बस सालों पुराने स्कूल के दिन याद आ गए।’

‘मुझे देखकर अच्छे-अच्छों को सारी बातें याद आ जाती है।’

‘अभी भी तुम एवर रॉकिंग ही हो।’

‘ये तो मुझे जन्म से ही मिली हुई गिफ्ट है भाई।’

‘हाँ यार, तुमसे बातों में मैं नहीं जीत सकती।’

‘और क्या चल रहा है?’

‘बस, अभी ग्रेजुएशन पूरा किया है।’

‘ओ. के. अच्छा। दो वर्ष पीछे, कहाँ अटक गई थी?’ मीत ने सहज ही मज़ाक में पूछा।

‘दो वर्ष का ब्रेक लिया था। तुम क्या करते हो?’

‘हम तो बी डॉट कॉम हुए और अब ‘लाइफ लिविंग विथ बर्डन’ का कोर्स शुरू किया है।’

‘यानी???’

यानी एल. डॉट. एल. डॉट. बी. कर रहा हूँ यार।’ मीत की आवाज़ में नाराज़गी थी।

‘व्हाट? तुम और एल. एल. बी? यकीन नहीं हो रहा है।’

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।

‘अरे, जाने दो। पापा ने मेरी लाइफ की गाड़ी को टो करके एल.एल.बी. के कम्पाउन्ड में डाल दिया।’ नाराज़गी के साथ ही उसने

हँसते-हँसते कहा।

‘हा... हा... हा... तुम सचमुच फनी हो।’

‘अरे, फनी हूँ इसीलिए हैप्पी हूँ। वर्ना इस एल.एल.बी. में मेरे जैसा इंसान हँसना और जीना दोनों भूल जाए।’

‘हँ अ अ अ...’ मुझे समझ में ही नहीं आया कि क्या कहूँ।

‘अब तुम आगे क्या करने वाली हो?’

‘फाइन आर्टस।’

‘बढ़िया। अपना कॉन्टेक्ट नम्बर दो और टच में रहना।’

‘हाँ, श्योर।’ हमने एक-दूसरे का नम्बर शेयर किया और रवाना हुए।

‘घर लौटते समय रास्ते में मुझे स्कूल की यादें ताज़ा होने लगी। रौनक की बाइक ट्रैफिक के बीच से आराम से निकल गई।

‘दीदी, यह मीत था न?’

‘हाँ, तुझे याद है?’

‘हाँ, उसकी पर्सनालिटी मुझे पहले से ही अच्छी लगती है।’

‘बहुत खुले दिल का है।’

‘बंदा अभी तक कूल-कूल ही है।’

‘हाँ, कई बार होमवर्क किए बिना आ जाता था पर टीचर को पटाने में उसे देर नहीं लगती थी।’

रौनक और मैं एक ही स्कूल में थे अतः मेरी क्लास के कुछ लड़के-लड़कियों को वह अच्छी तरह जानता था।

जब हम घर पहुँचे तब मम्मी ने खाना तैयार रखा था। खाना खाकर मैं अपने कमरे में चली गई। टाइम पास करने के लिए मोबाइल में फेसबुक खोला। किसी ने एक गुजराती जोक शेयर किया था। ‘हँसे तेनुं घर वसे एम कहेवाय छे पण भाई घर वसे पछी ए रडे एनु शुं???’ (जो हँसमुख है उसका घर बसता है पर भाई घर बसने के बाद उसे रोना पड़ता है उसका क्या??) मुझे भी पढ़कर हँसी आ गई। मीत याद आ गया। मुझे याद है एक बार उसने मुझसे पूछा था....

‘संयुक्ता, तुम हमेशा हेवी मूड में क्यों रहती हो?’

‘पता नहीं।’ मेरे पास उसके इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं था।

‘जिंदगी इस तरह गंवाने के लिए नहीं है।’

‘जिंदगी यों जीने जैसी भी नहीं है।’ मैं अपना दर्द उसे नहीं दिखाना चाहती थी पर मेरी उदासी शब्दों में बाहर आ ही गई।

‘अरे, तुम तो बहुत निराशावादियों जैसी बात कर रही हो।’

‘तुम नहीं समझोगे। जाने दो।’ मुझे मीत के साथ बात करने में

कोई रुचि नहीं थी।

'आज रिज़ल्ट आने वाला है इसलिए चेहरा उदास है न?' मीत ने अनुमान लगाया।

'नहीं, मुझे अब उसकी कोई चिंता नहीं है।'

'क्या बात है, लगता है तुम पर मेरा असर होने लगा है।'

'अभी मेरा मूड ठीक नही है, प्लीज़।' तब मुझ पर मीत की सहानुभूति का कोई असर नहीं होता था।

मैं जानती थी कि वह मुझे शांत करने के लिए इतनी मेहनत कर रहा था। सिर्फ मुझे ही नहीं पर क्लास में किसी को भी उदास देखता तो उसे हँसाने की कोशिश अवश्य करता। उसने जीवन में टेंशन लेना सीखा ही नहीं था।

'अच्छा, पर एक आख़िरी बात कहूँ?'

'कह दो!', मैंने उसकी ओर देखे बिना ही जवाब दिया।

'तुमने वह सुना है?'

'वह यानी क्या?' मुझे संक्षिप्त में ही बात पूरी करनी थी।

'अरे यार गुजराती में वो कहावत नहीं है?'

'????' मैंने कोई उत्तर नहीं दिया पर सवालभरी नज़रों से

उसकी ओर देखा।

'बोले एना बोर वेचाय अने हंसे तेनुं घर वसे।'

'हाँ, तो?'

'अरे, वैसी अपनी भी एक खोज़ है।'

'ओ.के.।'

'तुम्हारे फायदे की बात है। 'हाँ' कहो तो बताता हूँ।'

'हाँ, बोल दो।'

'बोले एना बोर वेचाय अने हसे ए तो दुनिया ने वेची शके।'

'नॉनसेन्स!' अब मुझसे उसके ज़ोक्स सहन नहीं हो रहे थे।

पर वह उतना ही शांत और खुशमिज़ाज था। कहीं न कहीं उसके मन में मेरे लिए सहानुभूति थी।

'नॉनसेन्स क्यों?'

'तो क्या बहुत सेन्स वाली बात है? तुम क्या हँस-हँस के दुनिया बेचने वाले हो?'

'इसका मतलब है कि दुनिया के सभी दुःख और तकलीफें हँसकर बेची जा सकती है।'

'किसे?'

‘जिसने हमें वह दुःख दिया हो उसे।’

‘अच्छा।’ उस समय मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था। सुबह मैंने जो दवाई ली थी उससे एसीडिटी की जलन महसूस हो रही थी।

‘प्लीज मीत, बुरा मत मानना। मैं तुम्हें हर्ट नहीं करना चाहती पर अभी मुझे कुछ देर अकेले रहना है।’

‘नो प्रॉब्लम।’

मीत चुपचाप चला गया। रिसेस पूरी हुई एवं तीन पिरियड के बाद स्कूल की छुट्टी हो गई।

‘बोले एना बोर वेचाय पण जे हँसे ते दुनिया ने वेची शके।’ उस दिन मीत ने अपने जिस मजाकिया स्टाइल में कहा था उसे आज व्हाट्स एप पर देखकर फिर से याद ताज़ा हो गई।

‘संयुक्ता, तुझे दादी बुला रही है।’ मम्मी ने मेरे रूम में आकर कहा और मेरी विचारधारा टूट गई।

‘ठीक है।’

मैं दादी के पास गई।

‘देख बेटा तेरे लिए वैद्य के पास से लेप लायी हूँ। आ लगा देती हूँ।’

‘रहने दो दादी, अब इन सबकी ज़रूरत नहीं है।’

‘क्यों बेटा?’ दादी को आश्चर्य हुआ।

‘दादी, इतने सालों से यह सब करके कोई खास फायदा नहीं हुआ। अब बहुत हो गया।’ मैंने दादी से साफ-साफ कहा।

‘यह तो खास जड़ी-बुटियों से बना है।’ दादी का प्रेम और लगाव उनके शब्दों में बरस रहे थे।

‘दादी, आपसे एक बात कहूँ?’ मैं दादी के पास बैठ गई और प्रेम से उनका हाथ पकड़कर कहा।

‘बोल न, संयु...’ दादी मुझे प्रेम से ‘संयु’ कहकर बुलाती थी।

‘मुझे अब, मैं जैसी हूँ वैसा ही रहना है।’ मैंने दृढ़ता से कहा।

‘पर बेटा....’ दादी को अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि कभी लेप लगवाने के लिए जिद्द करने वाली लड़की आज ऐसी बात कह रही है।

‘सच कह रही हूँ दादी।’ मैंने उनका हाथ दबाकर उन्हें विश्वास दिलाया।

जब से समझदार हुई तब से मेरी, अपने लुक के प्रति कॉन्शियनेस बढ़ती ही जा रही थी। उसके लिए मैं कुछ भी कर गुजरने के लिए

तैयार थी। मैं अब तक दस-पंद्रह एलोपेथी, होमियोपेथी के डॉक्टर और आठ-नौ आयुर्वेदिक वैद्यों के चक्कर काट चुकी थी। अलग-अलग प्रकार की कई दवाईयाँ, जड़ी-बुटियाँ, तेल, शैम्पू सबकुछ आज़मा कर देख चुकी थी। कुछ भी बाकी नहीं रखा था। उल्टी हो जाए ऐसे अनेक प्रकार के काढ़े भी पी चुकी थी। मेरा शरीर अभी भी उन सभी दवाओं का साइड इफेक्ट झेल रहा है। आँखों के नीचे काले धब्बे हो गए हैं। कई हार्मोनल बदलाव आ गए हैं। स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया है।

इन सबके बीच मेरे जीवन में एक ऐसे व्यक्तित्व का आगमन हुआ जिन्होंने मेरे अस्तित्व को सही पहचान दी। मेरे जीवन का पूरा ध्येय ही बदल दिया। किसी जन्म के महापुण्य का ही यह फल होगा। अभी भी पिछले असरों के परिणाम कभी-कभी सामने आ जाते हैं पर मन बहुत जल्दी शांत हो जाता है।

इस तरह कुछ दिन बीत गए। एक दिन अचानक फोन की घंटी बजी।

'हैलो....'

'हाय.... संयुक्ता! कैसी हो मैडम?'

'हाय मीत।'

‘क्या हुआ? आवाज क्यों ढीली है?’

‘नहीं, नहीं। वह तो यूँ ही।’

‘अरे यार,.... जस्ट चिल लाइक मी।’

‘हाँ बाबा, अब मैं भी कभी-कभी चिल कर ही लेती हूँ।’

‘सचमुच? व्हाट ए चेन्ज।’

‘यस।’

‘ग्रेट।’

‘बोलो, अभी मुझे कैसे याद किया?’

‘तुम याद नहीं करती इसलिए।’

‘हा...हा...हा...’ मुझे हँसी आ गई।

‘मुझे तुमसे एक काम था।’

‘मुझसे काम? मुझसे क्या काम है?’

‘तुम मुझसे मिलने मेरे घर आ सकती हो?’

‘घर?’ मुझे थोड़ी हिचकिचाहट हुई। वैसे तो मीत एक अच्छा लड़का था। फिर भी इतने सालों बाद घर मिलने जाना उचित नहीं लग रहा था।

‘मैं समझ सकता हूँ कि तुम्हें ऑड लग रहा होगा।’

‘ऐसा है तो तुम मेरे घर आ सकते हो।’ मैंने कहा।

‘एक्चुअली.... बात कुछ पर्सनल है पर ऐसा लगता है कि तुमसे शेयर करूँ।’

‘हाँ कहो न।’ मीत का ऐसा रूप मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

‘जब से तुम से मिला हूँ और तुममें चेन्ज देखा है तब से तुम मेरे मन से हट ही नहीं रही हो।’

‘मीत, वाय आर यू साऊन्डिंग सो कॉम्पलिकेटेड। प्लीज, जो कुछ कहना हो वह क्लीयरली बोलो।’ मैंने कहा।

‘तुम्हें मिराज याद है?’

‘हाँ, उसे कौन भूल सकता है। कैसा है वह?’ मिराज मीत का छोटा भाई... मैं जब भी मीत के घर जाती तब उसके छोटे भाई, मिराज के साथ मस्ती करने में मुझे बहुत मज़ा आता था।

‘बस, उसी के लिए तुम्हें फोन किया है।’

‘मैं कुछ समझी नहीं।’

‘मिराज अभी पूरी तरह से डिप्रेशन में है ऐसा तो नही कहा जा सकता पर उसके करीब ही है ऐसा लगता है।’

‘ओह!’

‘हमने उसे समझाने की पूरी कोशिश की लेकिन तुमसे मिलने के बाद ऐसा लगा कि तुम्हारे जैसी लड़की, जिसने अपने जीवन के कठिन संयोगों और संघर्षों का सामना करते हुए, अपने अनुभवों से, अपने अस्तित्व को मिटने से पहले ही अच्छी तरह सँभाल लिया हो, वही उसकी हालत ज्यादा अच्छी तरह से समझ सकती है। यदि तुम उसे समझाओगी तो वह समझ पाएगा कि जीवन कितना अनमोल है।’

‘क्या हुआ है उसे?’

‘एक तरफ फैमिली प्रेशर और दूसरी तरफ पीअर प्रेशर, बस उसकी वजह से डिप्रेस हो गया है।’

‘ओह, तो श्योर आऊँगी।’

‘थैंक यू।’

‘अरे, नो थैंक्स। कल संडे है। कल ही मिलते हैं, यदि संभव हुआ तो।’ मिराज के लिए मैं कुछ कर पाऊँ तो मेरा अहो भाग्य। ऐसा विचार आते ही मैं तुरंत हाँ कह दी।

‘हाँ, कल मिलते हैं।’

‘मिराज को यह मत बताना कि मैंने तुम्हें उसके लिए बुलाया है। सालों बाद हम अचानक मिल गए इसलिए मिलने आ गयी, इतना ही कहना।’

‘ठीक है, डोन्ट वरी।’

‘ओ.के. तो फिर कल मिलते हैं। बाय।’

‘बाय।’ मीत ने फोन काट दिया। मैंने पलंग पर से तकिया हाथ में लिया और रिलेक्स होकर बैठ गई।

मिराज का चेहरा अभी भी मुझे याद था। जिस तरह मेरा भाई रौनक और मैं एक ही स्कूल में पढ़ते थे उसी तरह मीत और मिराज भी उसी स्कूल में पढ़ते थे। हम कभी-कभी रिसेस में एक साथ ही नाश्ता करते थे।

‘मिराज तो नॉर्मल था, उसे फिर किस बात का डिप्रेशन आया होगा? उसका परिवार तो अच्छा है। तो प्रेशर किस बात का होगा? मीत ने कभी ऐसा कुछ बताया नहीं कि घर में कोई प्रॉब्लम है। आज तक मैंने उसे हमेशा हँसते हुए और दूसरों को हँसाते हुए ही देखा है। आज पहली बार उसकी आवाज़ में पहले जैसी मुक्तता के बदले छोटे भाई के प्रति प्रेम, लगाव और दुःख झलक रहा था। जैसे रौनक मेरे लिए दुःखी होता था वैसे ही वह भी अपने भाई के लिए दुःखी होता होगा। मुझे उसकी मदद करनी ही चाहिए। उसने मुझे कई बार उदास होने पर हँसाने की कोशिश की है। ऑफ्टर ऑल ही इज ए गुड फ्रेंड। मुझे तब भले ही उसकी कीमत समझ में नहीं आती थी

पर आज समझ पा रही हूँ।'

अगले दिन सुबह, नहाने के बाद मैंने भगवान के दर्शन किए और दीए जलाए। मैं मिराज की मदद कर सकूँ ऐसी प्रार्थना की। नाश्ता करने के बाद मम्मी को बताकर मीत के घर जाने के लिए तैयार हो गई। तभी मीत का फोन आया।

'हलो, अपना एड्रेस तुम्हें एस.एम.एस. किया है।'

'ओ.के. मैं पहुँच जाऊँगी।'

(4)

मैं ठीक दस बजे वहाँ पहुँच गई। मीत ने दरवाजा खोला। उसकी मम्मी सामने सोफे पर बैठी थी। एक विशाल ड्राइंग रूम में बड़ा सा सोफा सेट और एक सुंदर सा कारपेट सबसे पहले ध्यान आकर्षित कर रहा था। खिड़की पर गोल्डन एवं रेड कलर के पर्दे थे। घर वेल डेकोरेटेड था।

'कैसी हो आंटी?'

'मजे में हूँ बेटा। तुम कैसी हो? बहुत सालों के बाद दिखी।'

'हाँ आंटी। बहुत सालों के बाद मीत से मुलाकात हो गई इसलिए फिर से आना हुआ।'

'मिराज कहाँ है? दिख नहीं रहा है?' मैंने पूछा। समझ में नहीं आ रहा था कि आगे क्या बात करूँ!

'मिराज बेटा, संयुक्ता दीदी आई हैं।' आंटी ने उसे बुलाया।

'आता हूँ।' अंदर रूम में से जवाब आयी।

‘कुछ लोगी?’ आंटी ने पानी का गिलास देते हुए मुझसे पूछा।

‘कुछ भी नहीं आंटी।’

‘तुम सब बैठकर शांति से बातें करो। मीत, चाय या कॉफी जो भी चाहिए मुझसे कह देना। मैं किचन में जा रही हूँ।’

‘हाँ, मम्मी। मुझे आपके अलावा कौन चाय पिलाएगा।’ मीत ने मस्का लगाया।

‘अच्छा तो अब, सीधा-सीधा बोल न कि चाय पीनी है। संयुक्ता भी पीएगी न?’

‘हाँ, बना ही दो।’

आंटी किचन की ओर जा रही थी तभी मिराज सामने के रूम से बाहर आया। आंटी की नज़रें उसी पर थी, पर मिराज किसी की ओर देखे बिना ही एक नज़र मेरी ओर देखकर धीरे से आकर सोफे पर बैठ गया। मिराज की मम्मी को देखकर मुझे अपनी मम्मी याद आ गई। उनका ध्यान भी हमेशा मुझ पर ही रहता। मेरे हावभाव देखकर वे समझ जाती कि मैं ठीक हूँ या नहीं।

‘हाय मिराज, हाऊ आर यू?’ उसे देखते ही मैं चौंक गई। वह पहले कैसा था और अब कैसा हो गया है।

‘गुड दीदी’ नीरस आवाज़ और धीमी चाल में, उसके डिप्रेशन

की झलक दिख रही थी।

उसे देखकर, उसमें मुझे अपनी पिछली हालत की झलक दिखाई दी। मेरे रोंगटे खड़े हो गए मैंने तुरंत ही अपने आप को संभाला और अपने पर्स में से एक पैकेट निकालकर हँसते-हँसते कहा 'मिराज, मैं यह स्पेशली तुम्हारे लिए लायी हूँ।' मैं जितना संभव हो सके उतना, उसके साथ नॉर्मल रहकर बात करना चाहती थी। उसे आभास नहीं होना चाहिए कि उसे देखकर मुझे झटका लगा है।

मिराज ने पैकेट पर नज़र डाली। उसकी आँखों में प्रश्न था।

'गेस व्हाट..... केन यू टेल मी, इसमें क्या हो सकता है?'

'मिराज पैकेट की ओर देख रहा था। वह कुछ कहे उससे पहले ही मीत उसे हाथ में लेकर बोला, 'गिफ्ट... वाउ.... लेट मी गेस.... लुक्स लाइक टी शर्ट!!!?'

'अ...ह...रोंग....'

'अ.... एनी बुक...?'

'नो.....'

'देन....' मीत पैकेट को आगे-पीछे घुमाते हुए, उसे फील करते हुए बोला, 'शो पीस?'

‘डोंट ट्राय मीत... वैसे भी तुमने लाइफ में कभी सही उत्तर दिया है? मालूम है न, स्कूल में भी मैडम जब तुमसे कोई प्रश्न पूछती तब तुम इसी तरह से अंदाजी–तुक्का ही लगाते थे।’

‘फिर भी ऐसा करते–करते अंत में सही उत्तर दे ही देता था! मालूम है न?’

‘हाँ...हाँ...मालूम है। पर आज तुम कितनी भी ट्राय कर लो तब भी सही उत्तर नहीं दे सकोगे।’

मेरी और मीत की इस नोकझोंक को सुनकर अल्का बहन बाहर आ गए।

‘क्या लायी हो बेटा?’

‘मिराज के लिए गिफ्ट है, आंटी।’

‘ओहो...’ कहकर उन्होंने मीत के हाथ में से पैकेट ले लिया। वे भी उसे उलट–पलटकर देखने लगी और मन ही मन अनुमान लगाने लगी।

‘आंटी, आप मत खोलना।’

‘ओ.के.... ओ.के....।’ चाय उबलने की सुगंध आते ही वे रसोईघर में चली गई।

मैं अपनी भौंहे नचा रही थी।

'बता भी दो न... नहीं तो मैं खोलकर देख लूँगा।' मीत ने दादागिरी करते हुए कहा।

'बस क्या? .... हार गए तो दादागिरी कर रहे हो?'

'यप.... मिराज, यू एंड मीत बोथ आर ऑल आउट।'

'अब छोड़ो। जल्दी से बता दो। ज्यादा सस्पेंस मत क्रिएट करो। मुझसे रहा नहीं जा रहा है। मैं इस गिफ्ट का रेपर खोल ही लेता हूँ।'

यह सब चल रहा था तब भी मैं मिराज के चेहरे के हाव भाव में कुछ बदलाव आने की राह देख रही थी। शायद मुझे सफलता न मिले, वह भी स्वाभाविक था। उसकी हालत के अनुसार यह असामान्य व्यवहार भी सामान्य ही था।

मीत पैकेट खोलने जा रहा था तभी...

'स्टेच्यू मीत....' मैंने पहली दो उंगलियाँ मीत की तरफ की तो मीत स्थिर हो गया।

हँसते-हँसते मैंने मीत के हाथों से पैकेट ले लिया।

'ओवर' कहकर मैंने मीत को फ्री कर दिया।

और दोनों हँसने लगे। थोड़ी देर में तो महीनों से घर की हवा

में जो बेजान खामोशी थी मानो उसमें जान आ गई। निस्तेज़ वातावरण में चेतना का प्रवाह होने लगा। लम्बे समय के बाद संयुक्ता और मीत की मीठी नोकझोंक सुनकर नीची नज़रें झुकाए बैठे हुए मिराज की नज़रें ऊपर उठी.... चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

बस... मैं इसी पल की राह देख रही थी।

'मिराज.... ' रेपर खोलते हुए मैंने कहा, 'इसमें तुम्हारे लिए साँपसीढ़ी है।' और मैंने साँपसीढ़ी की गेम मिराज के सामने रखी।

'साँपसीढ़ी?' मीत के होठों से शब्द निकल पड़े।

मिराज ने अचरज भरी निगाहों से मेरी ओर देखा, 'दीदी, तुम्हें अभी भी याद है?'

मिराज जब छोटा था तब साँपसीढ़ी बहुत खेलता था। मैं जब-जब मीत के घर जाती वह मुझे साँपसीढ़ी खेलने बैठा देता। कम से कम पाँच बार खेलने के बाद ही वह मुझे मीत के साथ पढ़ाई करने देता था।

'हाँ मिराज, इसीलिए लाई हूँ कि आज भी मीत से मिलने से पहले क्या तुम मेरे साथ पाँच बार साँपसीढ़ी नहीं खेलोगे?'

मेरी आँखों में भावुकता और प्रेम दोनों दिखाई दे रहे थे। ये रिश्ते भी अजीब होते हैं। माता-पिता के साथ संबंध, शिक्षक के साथ

संबंध, मित्रों के साथ संबंध.... जिन रिश्तों को नाम दिया जा सकता है उनमें खींचतान क्यों होती है? और जहाँ नाम नहीं वहाँ कितनी शांति और अपनापन है!!

मिराज के चेहरे की स्माइल बड़ी हुई। यह मेरी पहली जीत थी। उसने टेबल पर साँपसीढ़ी की गेम रखी। फिर बॉक्स में से गोटी और पासे निकाले। मैं मिराज के सामने बैठ गई।

'मीत, तुम अब हमें डिस्टर्ब मत करना।' कहकर मैंने मीत को जाने के लिए कहा।

और दोनों खेलने लगे। उसी समय अल्का बहन बाहर आकर चाय के तीन कप और बिस्कुट रखकर चले गए।

हूररे.... ओह नो.... टीउ..... ड्रप... झूम...यप.... ऐसे कई उद्‌गारों के साथ हम दोनों बिस्कुट के साथ चाय की सिप लेते गए और खेलते रहे। पाँच में से तीन गेम मिराज जीता और दो मैं। हम दोनों हँसने लगे।

मिराज को हँसता देखकर अल्का बहन की आँखें और मीत का दिल भर आया।

'बस मिराज, अब मैं थक गई।' ऐसा कहकर मैंने साँस लिया।

'मैं तो थका हुआ ही था, दीदी' और अचानक ही मिराज के

चेहरे पर आई फ्रेशनेस गायब हो गई।

अल्का बहन और मीत उसे देखकर चुप हो गए। पर मेरे लिए यह कहाँ नई बात थी.... मेरे लिए तो आज की जीत, सफलता की पहली सीढ़ी थी।

'तब तो बहुत अच्छा है। मैं तुम्हारी थकान दूर करूँ और तुम मेरी। गुड कंपनी।'

'संयुक्ता, तुम्हारा सेन्स ऑफ ह्युमर स्ट्रांग हो गया है, यार!'

'थैंक यू मीत। कुछ समय बाद देखना न, मिराज भी सेन्स ऑफ ह्युमर में तुमसे आगे निकल जाएगा। है न मिराज?'

मिराज ज़रा सा मुस्कुराया। कुछ देर तक मीत के साथ स्कूल की बीती बातों की याद ताज़ा करके हम हँसने लगे।

'चलो, फिर मिलेंगे, फ्रेश होकर, अगली सरप्राइज़ के साथ। ओ.के.?' मैंने मिराज की ओर देखा।

मिराज ने सहज ही सिर हिलाया।

आज की मिराज के साथ हुई मुलाकात भले ही छोटी थी पर वह उसे असर कर गई वही मेरे लिए महत्वपूर्ण था।

'पर नेक्स्ट टाइम हम कहीं बाहर मिलेंगे। घर में नहीं। 'मैंने

आंटी की तरफ देखकर उनकी मौन सहमति मांगी।

उन्होंने पलकें झुकाकर मंजूरी दी।

मिराज कुछ बोला नहीं, इसलिए मैंने उससे कहा, 'याद है न तुझे मेरी थकान उतारनी है और मुझे तेरी।'

'फिर आना बेटा।' अभी भी अल्का बहन की आँखें नम थी। मुझसे एक मूक अपेक्षा उनके हावभाव में स्पष्ट झलक रही थी।

सभी से 'बाय' करके मैं घर वापस जाने के लिए निकली। बीस मिनट में घर पहुँच गई। मेरी आँखों के सामने मिराज का चेहरा बार-बार आ रहा था। मिराज के रूप में मैंने दूसरी संयुक्ता को देखा और आंटी के रूप में अपनी मम्मी को।

खुद को जिस दुःख का अनुभव हो चुका हो, वही दुःख जब कोई दूसरा अनुभव कर रहा हो तो उसके लिए स्वभावतः आत्मीयता हो जाती है। उसकी आंतरिक दशा को मैं महसूस कर रही थी। 'मुझे मिराज को इस स्थिति से बाहर निकालना ही है!' और मैंने उसके लिए जितने हो सके उतने सभी प्रयत्न करने का निर्णय कर लिया।

जब से मैं अपने दर्द और हीनभावना से बाहर निकली थी, तब से मेरी यह भावना दृढ़ होती जा रही थी कि मेरी तरह दूसरे लोग भी किस प्रकार उससे बाहर निकलें। मिराज से मिलकर मेरी वह

भावना प्रबल हो गई थी।

आज, बहुत समय के बाद मैं अकेले बाहर निकली थी।

जब हम खुद की आंतरिक शक्ति का मूल्यांकन कर लेते हैं तब हमें जीवन जीने के सच्चे आनंद का अनुभव होता है। मैं अब तक सिर्फ अपने बालों के कारण अपने आप पर सतत शर्मिंदगी और हीन भावना के साथ जी रही थी और किसी से खुलकर कुछ बोल भी नहीं पाती थी।

आज मैंने अनुभव किया कि **जो दुनिया तुम्हें नीचा दिखाती है लेकिन वास्तव में उस दुनिया में किसी के पास भी तुम्हें देखने की फुरसत नहीं है। सभी अपनी-अपनी चिंता में पड़े रहते हैं।** हाँ, कुछ दो-चार लोग ऐसे मिल भी जाते हैं जो फुरसत में होते हैं और दूसरों की पंचायत करके ही पेट भरते हैं लेकिन उससे पूरी दुनिया वैसी नहीं हो जाती। ऐसे में यदि मैं, 'लोग क्या कहेंगे?' यह सोचकर हमेशा संकुचित जीवन व्यतीत करूँ तो उसमें किसका दोष है?

मेरी नासमझी का।

सिर्फ एक ही गलत समझ के कारण कितने वर्ष व्यर्थ ही चले जाते हैं। और वह समझ बदलते ही सब कितना हल्का लगने लगता है। वह तो अनुभव करके ही समझा जा सकता है! दुनिया तो इसी

तरह चलती है और चलती रहेगी। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हम किस रास्ते पर चल रहे हैं।

'क्या संयुक्ता भी मिराज के जैसे....' मिराज धीमे कदमों से अपने रूम में गया तब अल्का बहन मीत से पूछने गई पर उनका वाक्य अधूरा रहा।

'हाँ मम्मी, पर आपने देखा न? अब वह कितनी बदल गई है?'

'हाँ.... बहुत नॉर्मल लग रही थी।'

'मम्मी, मेरी बहुत इच्छा है कि आप भी उससे मिलो। उससे बातचीत करके आपको पता चलेगा कि मिराज की मन:स्थिति अभी कैसी है?'

'हाँ, ज़रूर।' अल्का बहन ने सहमति दी।

'मम्मी, उसे देखकर मुझे पहली बार ऐसा लगा कि किसी भी परिस्थिति में हताश या डिप्रेस नहीं होना चाहिए।'

'हाँ, उसके बालों के बारे में कह रहा है न? किसी भी लड़की को अपने रुपरंग पर सबसे ज्यादा मोह होता है। और दुनिया भी ऐसी है कि यदि किसी लड़की के रुपरंग में कोई एब या ख़ामी हो तो उसका जीना ही मुश्किल कर देती है।'

'हाँ, लोगों की दृष्टि संकुचित है, खासकर हमारे समाज में।

मम्मी, संयुक्ता को देखकर मुझे यकिन हो गया कि मिराज भी फिर से हँसने-बोलने लगेगा। स्कूल में संयुक्ता कैसी थी! वह सबसे अलग और शांत बैठी रहती थी और सभी टीचर और स्टूडेन्ट्स उसकी अवहेलना करते।'

'पहले हमारे घर कितना आती थी, पर बाद में आना बिल्कुल ही बंद कर दिया।'

'हाँ, जैसे-जैसे उसका इन्फिरियारिटी कॉम्पेलक्स बढ़ता गया वैसे-वैसे वह सबसे दूर होती गई।'

'ओह, तो उसने बहुत तकलीफें झेली होगी।' अल्का बहन के दिल में संयुक्ता के लिए दया और आत्मीयता होने लगी।

'कभी ऐसा लगता है कि उसने यह सब किस तरह सहन किया होगा!'

'तेरी बातें सुनकर तो मुझे मिराज की ज्यादा चिंता होने लगी है।'

'वह तो संयुक्ता का भूतकाल था, उसका वर्तमान देखो।'

'हँ। शरीर में रोग हो जाए तो दवाई करके ठीक किया जा सकता है लेकिन यदि अहंकार टूट जाए तो उसको जोड़ने में बहुत समय लगता है।'

'मम्मी, मैं चाहता हूँ कि तुम भी संयुक्ता से बात करके अपना

मन हल्का कर लो। इस तरह कब तक अंदर ही अंदर घुटती रहोगी?'

'ठीक है।' मम्मी ने रूँधती आवाज में कहा और आँखों से आँसू निकल पड़े उससे पहले ही वे किचन में चली गईं।

(5)

घर पहुँचकर मैंने थोड़ा रिलेक्स किया। मिराज को देखकर मुझे, अपने बीते दिन याद आ गए। पर अपने भूतकाल की गहराईयों में उतरने की मेरी ज़रा सी भी इच्छा नहीं थी।

भूतकाल को याद करने में कोई सुख नहीं है। यदि वह अच्छा हो और वर्तमान में तकलीफें हों तो भूतकाल को याद करके इंसान दुःखी हो जाता है। और यदि भूतकाल अप्रिय हो और वर्तमान में सबकुछ ठीक चल रहा हो तो भूतकाल में डूबकर हम अच्छे वर्तमान को बिगाड़ देते हैं।

कुर्सी पर बैठकर मैंने पलंग पर पैर पसारे। मैं खिड़की के बाहर देखने लगी। आज हल्की धूप थी। बारिश का मौसम नहा था फिर भी बादल घिर आए थे। कभी-कभी बेमौसम बरसात होने लगती है। रसोईघर में से बर्तनों की आवाज आ रही थी।

'चलो संयुक्ता, आज कीचन में काम किया जाए।' मेरे अंदर से अचानक आवाज़ आई। रसोईघर के बर्तनों की आवाज़ मुझे मम्मी की ओर खींच ले गई। मैंने पहले कभी भी रसोईघर में कोई हेल्प की

ही नहीं थी। 'जब जागो तभी सवेरा'। बेचारी मम्मियों का जीवन भी कितना अजीब-सा होता है। दिन का पचास से पैंसठ प्रतिशत समय वे रसोईघर में ही बिताती हैं।

'मम्मी, चलो हम कॉफी पीते हैं।'

'कॉफी? इस समय?'

'हाँ मम्मी, आज इच्छा हो रही है।'

'अच्छा। तुम बैठो। मैं अभी बनाकर देती हूँ।'

'नहीं मम्मी, आज मैं बनाऊँगी। आप बाकी का काम निपटा लो।' मैंने फ्रिज खोलकर दूध की पतीली हाथ में लेते हुए कहा।

'तुझे बनाना आता है?' मम्मी को आश्चर्य हुआ।

'हाँ, मैंने पापा से कॉफी बनाना सीखा है।'

'अच्छा?'

'हाँ, जब आप पापा से रूठ जाती और दादी माँ घर में नहीं होती तब पापा रसोईघर में जाकर कैसे चाय-कॉफी बनाते थे! याद है न मैडम?'

'हाँ। याद है!' मम्मी रोमांचित हो उठी। उनका चेहरा शर्म से लाल हो गया।

हमारे जीवन में खुशी के ऐसे कुछ ही पल थे, जो मुझे याद आते हैं। हम सब साथ मिलकर बैठे हों ऐसे पलों को जीए हुए मानो सालों बीत गए। इट्स टाइम टू रिलीव दोस गोल्डन मोमेंट्स।

'और तुम बच्चों को मनाने के लिए वे मैगी भी बनाते थे। वह भूल गई?'

'नहीं, मुझे याद है। भूली नहीं हूँ। मैं और रौनक, पापा के हाथ की बनी मैगी खाने के लिए संडे का इंतजार करते थे।' मेरी आवाज़ में आई गहराई मन ही मन पापा को थैंक्स कह रही थी।

'अभी तुम्हारे पापा भी घर पर होते तो कितना मज़ा आता।'

'वह मज़ा भी आएगा! संडे कहाँ दूर है। पर आज मुझे सिर्फ आपके साथ ही बैठकर कॉफी पीनी है। ओन्ली मी एंड माय मम्मा।' मैंने मम्मी के साड़ी का पल्लु पकड़कर कहा।

मम्मी की आँखों में आँसू आ गए। उनका दिल भर आया। उन्होंने प्रेम से मेरे गाल पर हल्की चपत लगाई।

'याद है, जब तुम तीन-चार साल की थी, तब हर बात में ऐसा ही कहती कि ओन्ली मी एंड माय मम्मा।'

मम्मी ने सिर हिलाकर, पलकों को खोलते और बंद करते हुए एक हल्की स्माइल के साथ कहा।

अचानक कॉफी की स्ट्रांग स्मेल आई। मैंने गैस बंद कर दिया। बात करते-करते कॉफी तैयार हो गई। डाइनिंग टेबल पर बैठकर हमने साथ में कॉफी पी। हम दोनों के बीच कोई खास बातचीत नहीं हुई पर भावनाओं का आदान-प्रदान जरूर हुआ।

हर रिश्ते का अपना एक अलग महत्व होता है। उसकी मिठास और अपनापन का अनुभव करने के लिए हर बार आउटिंग पर जाने की ज़रूरत नहीं होती। कभी-कभी टी.वी. और मोबाइल के बंधन से मुक्त होकर ऐसा समय बिताने में जो खुशी होती है, वह टी.वी. और मोबाइल के मनोरंजन के टेम्परेरी सुख से कई गुना ज्यादा होती है।

'कॉफी अच्छी बनी है।' मम्मी ने मेरी तारीफ की।

जो मुझे बहुत मीठी लगी।

बातों ही बातों में मैंने मम्मी को मीत और मिराज के बारे में बताया।

'जब रोहन घर पर हो तब उन लोगों को बुलाना। मिराज को अच्छा लगेगा।'

'हाँ। गुड आइडिया। पर अभी मिराज घर आने के लिए तैयार नहीं होगा।'

नेक्स्ट मीटिंग में मैं मिराज के साथ क्या बातें करूँ उसके बारे में सोचने लगी।

'तेरी कॉफी ने तो पिछली यादों को ताज़ा कर दिया। आज की कॉफी भी यादगार रहेगी।' मम्मी ने टेबल पर से कॉफी के कप उठाते हुए कहा। फिर वे अपने काम में लग गई।

मम्मी की बात पर से मुझे मेरा आइडिया मिल गया। रूम में जाकर मैंने तुरंत ही मीत को फोन किया।

'हलो।'

'हाय, मैं तुम्हें ही फोन करने वाला था।'

'क्यों?'

'थैंक यू, कहने के लिए।'

'तो कह दो।' मैंने रौब से कहा।

'तुम सचमुच ही बदल गई हो संयुक्ता। पर तुम्हें ऐसे देखकर मुझे खुशी होती है।'

'थैंक यू।'

'आज तुमने मिराज को जो साँपसीढ़ी की गेम लाकर दी न उसे मिराज ने अपने रूम में रख लिया। तुम्हारे आने से घर के माहौल

में थोड़ा चेंज आया।'

'हाँ, आइ थिंक मिराज को चेंज की बहुत ज़रूरत है।'

'हाँ।'

'मैंने फोन इसलिए किया था कि मैं मिराज से मिलूँ, उससे पहले क्या हम दोनों एक बार मिल सकते हैं?'

'हाँ, श्योर। कल मिलें?'

'कल? ओ.के. ठीक है।'

'मैं पहली बार यूँ अकेले किसी लड़के से मिलने जाने वाली थी। इसलिए मन ज़रा खटक रहा था। मीत से हाँ तो कह दिया, पर मम्मी से पूछना ज़रूरी लगा। फोन रखकर मैं सीधे मम्मी के पास गई।

'मम्मी, मैं मीत से अकेले मिलने जाऊँ क्या वह योग्य है?'

मम्मी, मेरी आँखों में देखती रह गई।

'ऐसा क्यों पूछ रही है?'

'आपको तो पता है कि मिराज के बारे में थोड़ी बातचीत करने के लिए मिलना है। फिर भी यूँ अकेले मैं कभी गई नहीं।'

'तुम्हारा हेतु क्या है वह महत्वपूर्ण है।'

'हेतु तो मिराज का ही है। नथिंग पर्सनल।'

‘तुमने मुझसे पूछा वह अच्छी बात है। बस इतना ध्यान रखना कि हमारे वाणी और व्यवहार हमेशा ऐसे रहें कि अपनी मर्यादा न भूलें। मुझे तुम पर विश्वास है। हमने तुम्हारे लिए ऐसे कोई कड़क नियम नहीं रखे हैं। क्या आवश्यक है और क्या अनावश्यक उसकी समझ तुममें है ही।’

मम्मी की उन स्थिर नज़रों ने मेरे मन में मर्यादा और विश्वास की लक्ष्मण रेखा खींच दी।

वैसे तो मुझे इस बात का एहसास है कि मेरे जैसी लड़की पर कोई लड़का फिदा नहीं हो सकता। पर किसी लड़के को देखकर मेरा मन न बिगड़े उसका ध्यान तो मुझे ही रखना है न!

अगले दिन मैं और मीत कॉफी बार में मिले। वहाँ आसपास सारा यंग क्राउड ही था। कहीं कपल बैठे थे तो कहीं चार-पाँच फ्रेंड्स का ग्रुप। कुछ लोग मेरी ओर देखने लगे। दो मिनट के लिए मैं कॉन्शियस हो गई। मेरी चाल धीमी हो गई। पर कुर्सी पर बैठी ही थी कि किसी के कहे हुए कुछ शब्द याद आ गए और मैं फिर से नार्मल होने लगी।

जब हमें अपने आप पर विश्वास होता है तब फिर लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं उसका कोई महत्व नहीं रहता।

मैं बातें तो मीत के साथ कर रही थी पर मेरा ध्यान इस बात पर था कि आसपास वाले हमें ही देख रहे हैं। वे लोग मीत को भी उतना ही घूर रहे थे जितना की मुझे।

'होप यू डोन्ट फील ऑकवर्ड।' मैंने मीत से पूछा।

'नहीं। क्यों?'

'आसपास वाले सभी हमारी ओर....'

'ओह रियली! मीन्स वी आर स्पेशल।' मीत ने कॉलर ऊपर किया और आसपास उड़ती नज़र घुमाई। हर बार की तरह उस दिन भी मैंने उसे आदतन सीरियस बात को भी इज़ीली लेते देखा। मुझे उसका यह गुण पहले से ही पसंद था। सीखने जैसा था।

'एक्चुअली उन लोगों को मुझमें कुछ अजीब लगता है इसलिए....'

'नो, यू आर रोंग। तुम्हारी जगह पर यदि कोई बहुत अट्रैक्टिव लड़की होती तब ये लोग क्या कर रहे होते?'

'फिर भी देख ही रहे होते...'

'राइट। इन लोगों को और कोई काम ही नहीं है। वे खुद यहाँ आते हैं एन्जॉय करने, रिलैक्स होने, पर बेचारे पराई पीड़ा में पड़ जाते हैं। मनुष्य जाति का स्वभाव ही ऐसा है।'

‘हाँ, वह कहते हैं न.... जहाँ-जहाँ नज़र मेरी पड़े....

‘वहाँ-वहाँ दोष दूसरों के दिखे!’ मीत ने आगे लाइन पूरी करते हुए कहा।

मैं और मीत खिलखिलाकर हँस पड़े।

‘बोलो क्या कहना था?’

‘मैं तुमसे मिराज के बारे में थोड़ा जानना चाहती थी।’

मीत ने गहरी साँस ली।

‘मिराज आज जिस हालत में है, एक्चुअली उसकी शुरुआत कब और कैसे हुई वह मैं भी नहीं जानता।’

यह सुनकर मेरे मन में कई सवाल उठे जो मेरे चेहरे पर उभर आए।

‘उसमें चेन्जेस तो पिछले डेढ़ साल से दिखाई दे रहे थे जो सामान्यत: हम सभी में टीन एज में आते ही हैं। पर जितना मुझे समझ में आया है, उस पर फ्रेंड सर्कल का बहुत असर पड़ा है।’

‘मुझे लगता है आज के जमाने में सभी को कम-ज्यादा प्रमाण में ही सही पर ये प्रॉब्लम तो होता ही है।’ मैंने आसपास नज़र घुमाते हुए कहा। वहाँ बैठे लड़के-लड़कियों में इम्प्रेशन जमाना, स्टाइल मारना

ऐसी सब हरकतें चल रही थी।

'इसके अलावा, मुझे लगता है कि बीच में थोड़ा पीरियड ऐसा गया, जब वह मुझसे भी दूर रहने लगा था।'

कॉफी का एक सिप लेकर मीत ने कप नीचे रखा और....

'एक बार, जब मैं और मिराज कोई काम निपटाकर घर लौट रहे थे तब रास्ते में उसने एक सवाल पूछा था जो आज भी मुझे याद है।'

'मीत, तुमने कभी कोई चेट फ्रेन्ड बनाया है?' मिराज की आँखों में उत्सुकता थी।

'चेट फ्रेन्ड? नहीं भाई नहीं। हमें कहाँ ज़रूरत है ऐसा फ्रेन्ड ढूँढने की? साथ मिलकर बातें कर सकें ऐसे फ्रेन्ड्स तो हैं ही न हमारे पास।'

'पर मेरे बहुत सारे फ्रेन्ड्स तो रोज़ चेटिंग करते हैं। परम तो कहता है उसकी बेस्ट फ्रेन्ड उसकी चेट फ्रेन्ड ही है।'

'उसे ज़रूरत होगी पर मुझे कभी भी इसकी ज़रूरत नहीं महसूस नहीं हुई।'

हम घर पहुँच गए और बात वहीं अधूरी रह गई। मुझे उसके साथ इस टॉपिक पर शांति से चर्चा करनी चाहिए थी। उसके मन का समाधान हो इस तरह से उसे शांति से सुनने और समझने की

ज़रूरत थी। पर मैंने उसकी बात व्यर्थ समझकर काट दी और उस दिन के बाद मिराज ने इस टॉपिक पर कभी कोई बात ही नहीं की।

'क्या उसे नए-नए फ्रेन्ड बनाना पसंद है?'

'हँ... फ्रेन्ड्स...' मीत सोचने लगा।

मैं उसके हाव-भाव देख रही थी।

'घर में सभी यही ऐसा कहते हैं कि मैं हर किसी के साथ ईज़ीली मिक्स हो जाता हूँ, फॉरवर्ड हूँ, मेरी सभी से जमती है।'

'और मिराज?'

'मिराज पहले से ही स्वभाव से थोड़ा संकोची था। वह फ्रेन्ड के मामले में थोड़ा चूज़ी था। ऐसे ईज़ीली किसी को भी फ्रेन्ड नहीं बना लेता।'

'इन्ट्रोवर्ट?'

'हँ... हाँ.... वैसे तो इन्ट्रोवर्ट ही कहा जाएगा।'

'उसका कोई बेस्ट फ्रेन्ड?'

'फ्रेन्ड में तो पहले विश्रुत नाम का लड़का था पर फिर उसकी फैमिली कुछ साल पहले दूसरे शहर में शिफ्ट हो गई थी। तब से उसके फ्रेन्ड सर्कल में एक मोड़ आया।'

‘तो अभी कौन है उसके अच्छे फ्रेन्ड्स?’

‘जितना मुझे पता है और मम्मी से सुना है, अभी तो वह किसी के टच में रहना ही नहीं चाहता। लेकिन...’

‘लेकिन क्या?’

‘विश्रुत के बाद उसने दो फ्रेन्ड्स बनाए थे, परम और निखिल। परम उसका क्लासमेट है। हमारे घर के पास ही रहता है। रिच फैमिली का बिगड़ा हुआ लड़का है। देखा जाए तो स्वभाव में मिराज से एकदम अपोज़िट कह सकते हैं।’

‘और निखिल कौन है?’

‘निखिल परम के पापा के बिज़नेस पार्टनर का बेटा है। उसकी उम्र लगभग उन्नीस-बीस साल होगी।’

‘यानी निखिल तो उम्र में भी काफी बड़ा है न?’

‘हाँ, पर मिराज उन दोनों के साथ ही घुमता था।’

‘ओ.के.। तुम्हारी बातें सुनकर मैं और दो बातें जानना चाहती हूँ।’

‘कौन सी?’

‘पहली तो यह कि तुमने बताया कि मिराज इन्ट्रोवर्ट है और परम एक्स्ट्रोवर्ट। तो इन दोनों की फ्रेन्डशिप किस आधार पर टिकी

थी? नॉर्मली हम अपने स्वभाव और विचार के साथ थोड़ा-बहुत मैच करे ऐसे लोगों के साथ रहना ज्यादा पसंद करते हैं।'

'इसके बारे में तो मैंने सोचा ही नहीं।'

'दूसरा क्या पूछना था तुम्हें?'

'दूसरा यह कि सचमुच उसका कोई चेट फ्रेन्ड था या है?'

मीत दो मिनट मौन रहा।

'सच कहुँ संयुक्ता...' मीत बोलते-बोलते रुक गया।

'हाँ, कहो न।'

'मैं अपनी लाइफ में इतना बिज़ी था कि इसके बारे में मुझे कुछ पता ही नहीं तो मैं तुम्हें क्या जवाब दूँ। पर आज जब तुम ये सब पूछ रही हो तब मुझे ऐसा लगता है कि घर में किसी को भी इसके बारे में कोई आइडिया ही नहीं है। वर्ना मम्मी मुझे ज़रूर बताती। मैंने मिराज को कई बार मोबाइल में खोया हुआ देखा है। उस वक्त उसके चेहरे पर गुस्सा, बेचैनी, अधीरता, उत्सुकता और खुशी के भाव भी देंखे हैं। पर मुझे ऐसा ही लगता था कि वह परम और निखिल के साथ ही बात करता होगा।' अचानक बोलते-बोलते मीत डिस्टर्ब होने लगा।

'इट्स ओ.के.।'

‘नो इट्स नॉट ओ.के.। मिराज की हालत देखकर यह प्रश्न मेरे मन में क्यों नही उठा?’

मैं मीत को देख रही थी।

‘मम्मी कई बार मोबाइल के लिए उसके पीछे पड़ जाती, तब मैं मम्मी को समझाता कि इस उम्र में ऐसा सब तो कॉमन है इसलिए उसे ज्यादा टोके नहीं। क्योंकि कई बार मैं खुद भी मोबाइल में ऐसा खो चुका होता कि घंटो कहाँ बीत जाते पता ही नहीं चलता।’

‘आई थींक सभी का यही हाल है। सभी मोबाइल में ऐसे पड़े रहते हैं कि खुद के साथ, परिवार के अन्य सदस्यों के साथ क्या हो रहा है उसकी खबर ही नहीं होती पर दुनिया में, देश में, पॉलिटिक्स में, समाज में, सेलिब्रिटी वर्ल्ड में क्या चल रहा है उसकी खबर सभी को होती है। फ्रेन्ड आज किस रेस्टारेन्ट में, किसके साथ, कौन से कपड़े पहन कर गया वह सबकुछ पता होता है।’

‘आज तुम्हारे साथ बात करके रियलाइज़ हुआ है कि मिराज में आ रहे बदलाव को सामान्य मानना और उसकी उलझन के बारे में जानने में हमसे भी कहीं भूल हो गई है। धीरे-धीरे वह लोगों के साथ कटऑफ होता गया और ज्यादा से ज्यादा टाइम मोबाइल के साथ बिताने लगा उसके पीछे का कारण अब समझ में आता है।’

‘क्या?’

‘वह अकेला पड़ गया था। उसके साथ हँसने-बोलने वाला कोई था ही नहीं।’

‘डोन्ट वरी। एवरी थींग इज़ गोइंग टू बी नॉर्मल।’

‘थैंक्स संयुक्ता...’

‘तुम यूँ बार-बार थैंक्स मत कहो। जब मिराज पहले जैसा हो जाए तब कहना।’

मैंने मोबाइल में टाइम देखा, ‘टाइम टू गो होम।’

हम दोनों कॉफी शॉप की पार्किंग तक पहुँचे तब अचानक मीत कहने लगा

‘पहले तो मिराज कुछ बातों पर चिढ़ जाता, अकुला जाता और कभी गुस्सा भी करता था। अब तो चिढ़ता भी नहीं है, गुस्सा भी नहीं करता, बहुत शांत और गंभीर हो गया है। पता नहीं लेकिन ऐसा लगता है कि उसने और कई सारी बातें अपने अंदर ही दबाकर रखी है।’ ऐसा लगा कि धीरे-धीरे मीत को मिराज के बरताव और व्यवहार की ऐसी बातें समझ में आने लगी थी जिसे अब तक उसने नोटिस ही नहीं की थी।

हमारी मीटिंग से यदि इस दिशा में उसका विज़न खुल गया तो

वह मिराज की हालत और उसके प्रॉब्लम को समझने में हमें ज़रूर हेल्पफूल होगा, इस आशा के साथ मैंने मीत को 'बाय' कहा।

'ये दुनिया भी अजीब है। यदि कोई क्रोध करता हो तो सब कहते हैं, ज्यादा क्रोध करना ठीक नहीं। बचपन से ही इस तरह से टोके जाने पर एक दिन ऐसा आता है कि वह व्यक्ति, अपनी किसी भी प्रकार की भावनाएँ व्यक्त करना ही बंद कर देता है। परिणामस्वरूप उसके अंदर की पूरी सिस्टम ही डिस्टर्ब हो जाती है। वह शांत पड़ जाता है। और तब उसका वह शांत पड़ चुका व्यवहार ही एबनॉर्मल लगने लगता है। ऐसे समय में उस व्यक्ति के अंतर में व्याप्त अंधकार को परखना कठिन होता है।'

मैं जब अपनी स्कूटी पर घर लौट रही थी तब मेरा मन ह्युमन सायकोलाज़ी के विविध रंग-रूप को समझने में व्यस्त हो गया था। 'अंहकार का स्वरूप भी कितना कॉम्प्लिकेटेड है न! यदि चढ़ जाए तो किसी की नहीं सुनता और यदि टूट जाए तो दूसरों का तो क्या खुद अपना सामना भी नहीं कर पाता।'

घर आ गया। मैंने अपनी स्कूटी को ब्रेक लगाया और उसके साथ-साथ मन में उठ रहे विचारों को भी टेम्परेरी ब्रेक लग गया।

(6)

मम्मी हमेशा की तरह किचन में व्यस्त थी।

'रौनक कहाँ है?'

'बाहर गया है, आता होगा।'

मम्मी नाश्ते के लिए पूरियाँ बना रही थी। मैंने एक-दो पूरियाँ खायी और पानी पीया। मुझे ऐसा था कि मम्मी मुझसे पूछेंगी कि मीत से मिलने कहाँ गई थी और क्या बातें की। पर मम्मी ने कुछ नहीं पूछा। मम्मी की यह ओपननेस मुझे दिल को छू गई। वैसे सामान्य तौर पर यदि वे इन्क्वायरी करतीं, तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। माँ होने के नाते उन्हें पूछने का पूरा अधिकार है।

कभी-कभी रिश्तों में कोई सवाल-जवाब हो या न हो लेकिन उनमें विश्वास का होना बहुत महत्वपूर्ण है। और यदि कोई इतना विश्वास करता है तो उसका विश्वास कैसे तोड़ सकते हैं?

रौनक कब घर लौट आया हमें पता ही नहीं चला। लेकिन

बाहर वाले रूम से आती हुई टी.वी. की तेज़ आवाज़, उसके लौट आने की सूचना दे रही थी। मैं रसोई में से बाहर निकली।

‘कहाँ गया था?’

‘कहीं नहीं। यूँ ही घूम आया थोड़ी देर। घर में बोर हो रहा था।’

‘और तुम कहाँ गई थी?’

‘मैं मीत से मिलने गई थी।’

‘हाँ, मम्मी कुछ कह रही थी, उसके भाई को कुछ प्रॉब्लम है ऐसा।’

‘हाँ, हमें इस बारे में बात करने का टाइम ही कहाँ मिला है? तुम अपने में बिज़ी रहते हो।’

‘इतना भी बिज़ी नहीं हूँ, तुम जब कहो तब तुम्हारे लिए तो फ्री ही हूँ।’

उसी समय रौनक के मोबाइल की रिंग बजी। मेरी ओर देखकर झेंप गया। लेकिन मैंने उसे स्माइल दी जिससे उसे राहत मिली।

‘एक्सक्यूज़ मी प्लीज़’ कहकर वह बाहर चला गया।

अब मैं अकेली थी। मन विचारों में खोया हुआ था। मैं बाहर वॉक करने निकली। मेरे घर के बाहर वॉक करने के लिए थोड़ी

खुली जगह थी लेकिन आज मुझे टेरेस पर जाकर वॉक करने का मन हुआ। पूरा टेरेस खाली था। सिर्फ मैं और मेरे विचार थे। मैंने ऊपर से नीचे का नज़ारा देखा। सभी लोग अपने रोजमर्रा के कामों में व्यस्त थे। फिर भी कहीं-कहीं कोई-कोई टेक्नोलॉजी के व्यस्त जीवन से कुछ पल चुराकर आनंद लेते हुए दिखाई दिए। बगल वाले फ्लैट की दो लड़कियाँ बेडमिन्टन खेल रही थी।

मुझे अचानक कुछ सूझा। हफ्ते भर बाद फिर से मिराज से मिलना तय किया।

आज की मुलाकात पहले दिन से थोड़ी ज्यादा अच्छी रहेगी ऐसी आशा के साथ मैं उसके घर के पास पहुँची।

'मैं तुम्हारी बिल्डिंग के नीचे खड़ी हूँ। तुम लोग नीचे आ जाओ।' मैंने मीत को कॉल किया।

'हाँ, आते हैं।'

पाँच मिनट के बाद मिराज और मीत नीचे आए।

'घर में आना था न?' मीत ने तुरंत कहा।

'नहीं। कभी-कभी खुली हवा में ज्यादा मज़ा आता है। खिड़की-दरवाजे, छत, दीवारें कभी-कभार मुझे बंधन जैसे लगते हैं।

'ऐ नासमझ, बंद दीवारों के पीछे जीया तो क्या जीया है,

ऐ नासमझ, बंद दीवारों के पीछे जीया तो क्या जीया है,

खुले आसमान के नीचे देख, खुशियों ने बसेरा किया है।'

'वाह... वाह....क्या शेर मारा है.... शुक्रिया... शुक्रिया.....' खुद शायरी कहकर खुद की ही तारीफ करते हुए मीत ने एक नए अंदाज में वातावरण को प्रफुल्लित बनाने की कोशिश की।

'इसे शायरी कहते हैं?'

'आई डोन्ट नो। मौका भी है और दस्तूर भी... तो मैंने चौका मार दिया। बट इफ यू डोन्ट लाइक देन आई विल इम्प्रूव मायसेल्फ।'

'तुम कभी नहीं बदलोगे पर दिस टाइम इट वॉज बेटर, नॉट फालतू।' मैंने कहा।

'थैंक यू। पर वैसे तो मैं और मेरा फालतू कमेन्ट्स, इन दोनों से ही मेरा अस्तित्व पूरा होता है।'

'मिराज ये तुम्हारा भाई अपनी बातों से तुम्हें कितना टार्चर करता होगा, यह सोचकर मुझे तुम पर दया आती है।' मैंने मज़ाक में कहा।

'आजकल सभी को मुझ पर दया ही आती है।' मेरी बात ने मिराज को सीरियस कर दिया और मिराज ने मीत के उत्साह को ठंडा कर दिया। शायद गलत शब्दों का प्रयोग गलत समय पर हो गया।

‘तुम्हें वॉक करना अच्छा लगता है?’ मैंने बात को बदलते हुए कहा।

‘कुछ खास नहीं!’ मिराज ने अनमना सा जवाब दिया।

‘यहाँ पास में पार्क है, वहाँ ज़रा घूमने चलें? मुझे सचमुच वहाँ जाना है। कुछ चेन्ज लगेगा मुझे। तुम साथ आओगे?’

‘ओ.के.।’

‘और हाँ, आज मेरा बेडमिन्टन खेलने का मूड है और मैं इसी तैयारी के साथ आयी हूँ। उम्मीद है कि तुम दोनों मुझे निराश नहीं करोगे।’

‘सॉरी दीदी, मैं सिर्फ पार्क में आऊँगा। मुझे कुछ खेलना नहीं है।’

‘नो प्रॉब्लम। तुम कंपनी दोगे वही मेरे लिए काफी है।’

मुझे ऐसा लगा कि मिराज के साथ मिक्स होने में और थोड़ा समय लगेगा। अब मीत चुप हो गया था। पता नहीं उसके मन में क्या चल रहा था। जो भी हो वह मिराज के बारे में ही सोच रहा होगा।

हम पार्क में पहुँचे। शाम का समय था इसलिए ठंडक महसूस हो रही थी। आम दिन होने के कारण भीड़ कम थी। इसीलिए मैंने शनि-रवि को यहाँ आना टाल दिया था।

पार्क में प्रवेश करते ही एक पतंगा मिराज के कंधे पर आकर बैठ गया।

मिराज थोड़ा रुक गया।

'आइ थिंक इट लाइक्स यू' मैंने कहा।

'नो बडी लाइक्स मी।'

मीत मिराज की तरफ देखता ही रह गया। पर उसने अपनी भावनाओं को मिराज के सामने व्यक्त नहीं होने दिया।

मिराज ने जैसे ही कदम आगे बढ़ाए वैसे ही पतंगा उड़ गया। हरी-भरी घास से आच्छादित एक बड़ी खुली जगह में हम रुक गए।

'यहाँ बैठना है?'

'ओ.के.' मीत ने सहमति जताई।

मिराज का कोई ओपिनियन ही नहीं था। मैं आसपास देखने लगी। कुछ लोग चलने में और कुछ लोग कसरत करने में व्यस्त थे। कुछ दूरी पर चार-पाँच आंटियों का समूह बैठा था।

'जब मैं छोटी थी तब पापा हमें कभी-कभी यहाँ लेकर आते थे।'

'हाँ, मुझे पता है।' मीत ने कहा।

'तुम्हें कैसे पता?'

‘कभी–कभी तुम्हें यहाँ फिसलपट्टी एवं झूले तोड़ते हुए देखा था।’

‘व्हाट?’

‘आई मीन फिसलपट्टी में फिसलते हुए और झूला झूलते हुए।’

मिराज मुस्कराया। मुझे अच्छा लगा।

‘मैं एक सवाल पूछती हूँ जवाब देना। देखते हैं तुम दोनों में कौन इन्टेलिजेन्ट है।’

मीत ने कालर ऊँचा किया।

‘हाथी को पिंजरे में कैसे बंद कर सकते हैं?’

‘हाथी को?’ मीत सोचने गया।

‘मिस्टर इन्टेलिजेन्ट... बोलो।’

मिराज चुप था।

‘उसकी साइज का पिंजरा हो तो कर सकते हैं।’ मीत ने कहा।

‘रोंग।’

‘तो तुम ही बता दो इसका जवाब।’

‘सिम्पल.... पिंजरे का दरवाजा खोलकर फिर हाथी को पिंजरे में बंद कर सकते हैं।’

‘देट वॉज़ नॉनसेन्स।’

‘हमें नॉनसेन्स बातें ही करनी है। तुम नॉनसेन्स उत्तर तो दो। वह भी एक टैलेन्ट है।’

‘अब दूसरा... ऊँट को पिंजरे में कैसे रख सकते हैं?’

‘पिंजरे का दरवाजा खोलकर।’ मीत ने गर्व से कहा।

‘रोंग।’

‘अब वह कैसे रोंग?’

‘हाथी को पिंजरे में से निकलेंगे तभी ऊँट को रखेंगे न?’

‘ये तो सुपर नॉनसेन्स था।’

अब तो मिराज भी हँस पड़ा।’

‘कम ऑन मिराज, अब अंतिम प्रश्न का उत्तर तुझे देना है।’

‘आई विल ट्राय दीदी।’

‘सिंह और सिंहनी की शादी होने वाली थी। सभी उनकी शादी में गए पर एक प्राणी नहीं गया। वह कौन था?’

‘वह, जिसे सिंह ने खा लिया होगा।’ मीत ने फूल कॉन्फिडेन्स के साथ जवाब दिया।

‘रोंग।’

‘मिराज, तुम बताओ वह कौन होगा?’

‘मुझे सच में नहीं पता दीदी।’

‘ओ.के., तो बता दूँ?’

‘हाँ मेरी माँ बता दे।’ मीत ने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा।

‘ऊँट! क्योंकि वह पिंजरे में था।’

‘हा...हा...हा...’ मिराज ज़ोर से हँसने लगा।

‘देट वॉज सो फनी संयुक्ता। इतने बकवास जोक्स तुम कहाँ सुनती हो?’ मीत ने हँसते-हँसते कहा।

‘वह तो सीक्रेट है, नहीं बता सकती।’

और पूरा वातावरण सहज हो गया।

‘चलो, अब मेरे साथ कौन पहले बेडमिन्टन खेलेगा?’

मीत ने मिराज की ओर देखा। उसने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई इसलिए मीत खड़ा हो गया।

‘देखो बहुत समय के बाद खेल रही हूँ।’ मैंने एक रेकेट मीत को देते हुए कहा।

हमने खेलना शुरू किया। शुरू में तो मीत के हाथ से रेकेट ही गिर जाता था। मैं समझ नहीं पाई कि वह जानबूझकर नाटक कर रहा था या फिर सच में वैसा हो रहा था। दस मिनट में हमें खेलने

की पूरी ग्रिप आ गई। मिराज चुपचाप बैठकर देख रहा था। उसे बोर नहीं होते देखकर हमने गेम खेलना जारी रखा।

'क्या मीत, तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। तुम तो हर फील्ड में एक्सपर्ट हो न?' मीत की ओर से आने वाले शटलकॉक को मारने के लिए मुझे ऊँचा कूदना पड़ा।

'अरे, कभी-कभी एक्सपर्ट के भी खराब दिन तो आते हैं न?'

'रियली?'

'ओह... नो....' गेम अच्छी चल रही थी।

'उप्स...'

'कम ऑन.... यू केन डू इट।' शटलकॉक को मारने पर मीत ने खुद ही अपना कंधा थपथपाया।

'यस...कीप ट्राईंग।'

'वेल डन, संयुक्ता।'

'थैंक यू.... थैंक यू।' मीत के साथ खेलने में अब मज़ा आने लगा। मैंने एक सेकेंड के लिए मिराज की ओर देखा। अब वह वातावरण के साथ लाइव हो गया हो ऐसा लगा। आखिर उसके लिए ही तो यह सब कर रहे थे।

‘वेल.... क्या तुम जानती हो कि आज मैं ऐसा क्यों खेल रहा हूँ? मीत ने पूछा।

‘क्यों?’

‘आज मैं तुम्हें जीतने का एक मौका दे रहा हूँ।’

‘आपकी मेहरबानी।’

‘अरे.... मीत....’ मीत के हाथ से फिर से रेकेट छूटते ही, मिराज अचानक बोल पड़ा।

‘आखिर भाई, भाई की साइड तो लेगा ही न। मिराज को सहज होते हुए देखकर मैंने कहा।

‘आखिर भाई किसका है?’ मीत ने कालर ऊँची करते हुए कहा।

‘मेरा भी भाई है।’ मैंने भी शान से कहा।

‘टाइम प्लीज।’ मुझे एक आइडिया आया और मैंने गेम रुकवा दिया।

‘क्या हुआ?’

‘ऐसे कूद-कूदकर अब भूख लगने लगी है।’

‘मुझे भी। बोलो क्या खाना है?’

यहाँ एक आइसक्रीम पार्लर है न।’

‘हाँ, तो तुम आइसक्रीम ले आओ। तब तक मैं थकान दूर कर लेती हूँ।’

मैंने जानबूझकर मीत को वहाँ से जाने के लिए कहा।

‘ओ.के. पहले घर से पैसे लेने पड़ेंगे इसलिए थोड़ी देर होगी।’

‘नो प्रॉब्लम। टेक योर टाइम। मुझे कोई जल्दी नहीं है।’

शायद मीत समझ गया कि मुझे मिराज से अकेले में बात करनी है इसीलिए मैंने उसे आइसक्रीम लाने भेजा है।

(7)

मीत के जाने के बाद मैं मिराज के साथ सामने वाली बेंच पर बैठ गई।

'तुम बेडमिन्टन अच्छा खेलती हो, दीदी।' उसने बात करने की शुरुआत की। नजर नज़र

'सच कहूँ? बस यही एक आउटडोर स्पोर्ट्स है जो मुझे अच्छे से खेलना आता है।'

वह मुस्कुराया।

'पर यदि तुम मुझे क्रिकेट खेलने कहो, तो मेरे हाथ से बैट ही छूट जाएगा।'

'क्रिकेट वॉज़ माय फेवरिट गेम।'

'वॉज़ क्यों? इज क्यों नहीं?' मैंने पूछा।

'अब मैंने क्रिकेट खेलना ही छोड़ दिया है।'

'आइ थिंक कोई भी एक स्पोर्ट्स एक्टिविटी की हॉबी रखनी

चाहिए क्योंकि स्पोर्ट्स से हमें बहुत कुछ सीखने मिलता है। लाइफ लेसन्स।'

'सब ऐसा नहीं समझते। मेरे पेरेन्ट्स को मुझसे सिर्फ पढ़ाई में होशियार बनने की अपेक्षा है।'

'वह तो सभी पेरेन्ट्स को ऐसा ही होता है।'

'नहीं, दीदी। सभी को ऐसा नहीं होता। कितने पेरेन्ट्स तो अपने बच्चों को सभी फ्रीडम देते हैं। किसी प्रकार का कोई रिस्ट्रिक्शन नहीं। नो रूल्स।'

'ज़रूरत से ज्यादा फ्रीडम से तो इंसान बिगड़ जाता है!'

'वैसे भी आजकल सीधे लोगों की किसी को ज़रूरत नहीं है। बिगड़े हुए लोगों का ही बोलबाला है। सीधे का साथ कोई नहीं देता।'

'अपने मित्रों की बात कर रहे हो?' मैंने सीधे ही पूछ लिया।

'हाँ, वे सब फ्रेन्ड्स थे पर अब नहीं।'

'अच्छे फ्रेन्ड्स मिलना इज़ी नहीं है।'

'पर मैंने तो उनके लिए अपना सबकुछ बिगाड़ दिया। खुद को चेन्ज करना क्या इतना आसान है? फिर भी उन लोगों के टाइप का बनने में फेल हो गया। हर तरह से फेल।'

'फेल होने वाला वास्तव में कुछ खोता नहीं है।'

'दीदी, मुझे तुम्हारी बात समझ में नहीं आई।'

'जो फेल होता है, उसे थोड़ा नुकसान होता है पर अनुभव की कमाई करता है। उसे इतना अवश्य आ जाता है कि कौन-कौन सी भूल करने से फेल हो जाते हैं।'

'पर फेल तो हुआ न?'

'हाँ, एक बार फेल हो जाए पर फिर से वे भूलें रिपीट न होने दें तो जीतने के चान्सेस बढ़ जाते हैं।'

मिराज सोच में पड़ गया।

मिराज अपने अंदर दबी हुई भावनाओं को आज व्यक्त करेगा ऐसा एहसास होने पर मैंने अपनी आपबीती बताना शुरू किया। 'स्कूल में मेरे तो कोई खास फ्रेन्ड्स बनते ही नहीं थे। कभी कोई बन भी जाता था तो दूसरी लड़कियाँ उसे मुझसे दूर कर ही देती थी। शुरू में मैं सबसे अच्छे से बात करती, मुझसे जितना हो सके उतनी हेल्प करने की कोशिश करती। मैंने अपने स्वाभिमान को एक तरफ रखकर, दूसरों को अच्छा लगे वैसा बरताव करने का बहुत प्रयास किया पर सभी अपना-अपना स्वार्थ पूरा करके मुझे छोड़ देते। मैं खुद को उनके ढाँचे में ढालने का प्रयत्न करते-करते थक गई, किंतु अंत में निराशा

ही हाथ लगी।

'हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है। सभी सेल्फिश हैं। स्वार्थ के ही संबंध हैं।' मिराज इतना ही कहकर अटक गया।

'फिर तो मैं लोगों के उपहास, अशांति और घृणा का पात्र ही बनकर रह गई थी। धीरे-धीरे मैं सबसे कट ऑफ होती गई। पूरी कक्षा में मीत जैसे इने-गिने दो-तीन लोग ही थे जो कभी-कभी मेरे साथ बात करते। पर तब तक तो मेरा स्वभाव इतना संकुचित हो गया था कि मैं किसी के साथ ज्यादा बोल ही नहीं पाती थी। किसी की आँखों से आँखे मिलाकर बात करने में भी मुझे तकलीफ होती थी। मीत अकेला ही था जिसने अंत तक मुझे सपोर्ट करने की ट्राय जारी रखी पर मुझे तब मीत की पड़ी नहीं थी। क्योंकि मैं इतनी हताश और निराश हो गई थी कि किसी के साथ फ्रेंडशीप करने के पहले ही मुझे डर लगता कि वे मुझे छोड़ देंगे तो? कोई मुझे छोड़ दे वह दुःख और अपमान सहन करने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। इसीलिए जिन लोगों को सच्चा लगाव था उन लोगों को भी मैंने अपने से दूर ही रखा था। मुझे किसी पर विश्वास ही नहीं रहा। सच कहुँ तो मुझे खुद पर भी विश्वास नहीं था तो दूसरों पर कैसे होता? मुझे अपने घर में भी किसी पर विश्वास नहीं था! उन लोगों ने मुझे ओवर प्रोटेक्ट

किया था, फिर भी मेरा आंतरिक दु:ख इतना प्रबल था कि मैंने सभी को अपने से दूर कर दिया था।'

मिराज मेरी ओर देखता रहा। उसके चेहरे पर के बदलते भावों को देखकर लग रहा था कि उसके मन में उसका भूतकाल जीवंत हो रहा है।

'दीदी, मैं छोटा था तब से मुझे मीत के साथ सब शेयर करने की आदत थी। उससे मुझे हमेशा सच्चा प्यार मिलता था। उसे मेरी परवाह थी। मैं उससे कभी भी कुछ भी कह सकता था। ही वॉज़ लाइक माय सोलमेट। लेकिन....'

'लेकिन क्या?'

'लेकिन अब मुझे उससे बात करना अच्छा नहीं लगता।'

'सब इतना अच्छा था तो फिर अब क्या हुआ?' मीत और मिराज के आपसी संबंधों में आत्मीयता कम होती देखकर मुझे थोड़ा दु:ख हुआ।

'अब जैसे आकाश में मस्ती में उड़ती हुई पतंग कट गई है और कलाबाजी कर रही है।' मिराज की निगाहें सामने पेड़ पर लटकती हुई पुरानी फटी हुई पतंग पर स्थिर थी।

'वातावरण के प्रभाव से चीज़ों पर धूल तो चिपक जाती है

लेकिन उससे वे खराब तो नहीं हो जाती है न? उसे साफ करके पहले की तरह चमकाई जा सकती है।' मुझे विश्वास था कि कहीं भी हार नहीं मानने वाला मीत अपने घर में भी हारेगा नहीं। पर जब व्यक्ति अत्यंत करीबी हो तब कुछ संभलकर काम लेना पड़ता है। इस काम में सहायक बनकर शायद मैं मीत जैसे एक अच्छे मित्र की मित्रता का बदला कुछ अंश में चुका पाने के लिए उत्सुक थी।

उसी समय मीत आइसक्रीम लेकर आता हुआ दिखाई दिया।

मीत को देखकर मिराज रुक गया।

'मिराज **मुझे इतना पता है कि जिस व्यक्ति पर से यकिन उठ जाए उसके सामने अपने मन की बात कहना कितना मुश्किल है। पर इतना याद रखना कि चाहे कितने भी दूर हो जाएँ पर अपने तो अपने ही रहते हैं।**'

'पर बहुत समय से मैंने उसके साथ कोई बात शेयर नहीं की है, दीदी। और अब उससे कुछ कहने का मन भी नहीं होता।'

'तुम निश्चय करोगे तो कर सकोगे। मीत के लिए तुम्हारे मन में अभी जो अभिप्राय पड़ गए हैं उसे हिम्मत करके एक बार दूर कर दो। पुराने दिन याद करो।'

'चोको चिप्स।' मीत ने आइसक्रीम देते हुए कहा।

‘वाउ, चोको चिप्स!’ मिराज को रिलेक्स करने के लिए मैंने बात बदल दी, ‘आई लव चोको चिप्स।’

मनपसंद आइसक्रीम भी कभी फॉर्मेलिटी के लिए खानी पड़ेगी, ऐसा तीनों में से किसी ने कभी सोचा नहीं था। तीनों चुप थे।

‘मिराज का भी यह फेवरेट फ्लेवर है।’ मीत मिराज के पास बैठ गया। यह वही मीत है जो दुनिया में सबके साथ घुलमिल सकता है पर आज अपने भाई के सामने अपनी आत्मीयता, अपना लगाव, अपनापन व्यक्त करने में हिचकिचा रहा था।

‘आज हम महिनों के मौन को तोड़ने का प्रयास तो कर ही सकते हैं न। फिर भले ही परिणाम में सफलता मिले या न मिले।’

मिराज को समझ में आ गया था कि मैं मीत के लिए कह रही हूँ। पर वह चुप रहा। उसका गला भर आया।

‘मिराज, बिना किसी संकोच के बात करो। व्यवहार और मर्यादा की दृष्टि से भी हम दोनों के साथ कोई तीसरा व्यक्ति मौजूद रहे वह अच्छा ही है।’

‘मैं समझता हूँ, दीदी। पर मुझे कठिन लग रहा है।’

‘कठिन इसलिए लग रहा है क्योंकि हमारा फोकस प्रयत्न पर से हटकर परिणाम पर चला जाता है। ध्यान यदि प्रयत्न पर ही रहे

तो काम सरल लगेगा।'

'मुझे ऐसा लगता है कि पहले वह मुझे समझ सकता था। पर अब उसको तो क्या, मैं अपनी हालत किसी को नहीं समझा सकता। अंदर मानो सब कुछ स्थिर हो गया है। अब तो समय भी बीत गया। जब मुझे सचमुच उसकी आवश्यकता थी तब मैं बिल्कुल अकेला था।'

मिराज बोल रहा था पर मीत के साथ नज़र नहीं मिला पा रहा था। मीत की नज़रें भी बोझ के कारण झुकी हुई थी।

'तुझे जो स्टेग्नन्ट लग रहा है, वही मुझे अंदर से खा रहा है। स्टेग्नन्ट पानी में तुरंत काई जम जाती है। उसके बजाय बहते पानी की तरह आगे बहते रहने में ही मज़ा है। एक ही स्थान पर रुक जाने से जीवन कहीं रुक नहीं जाता। आंतरिक भावनाएँ, व्यथाएँ और उलझनों को दूर कर समाधान करके आगे बढ़ने में ही सबकी भलाई है।'

मिराज मौन था। उसके चेहरे पर गंभीर नीरवता दिख रही थी। उसके अंत:पटल पर उफनते समुद्र में उठने वाले ज्वार भाटे की तरह अंतर्द्वंद चल रहा था।

मैं शांत बैठकर राह देख रही थी कि मिराज आगे कुछ कहे। आज वह ज़रूर ओपन होगा ऐसा मुझे विश्वास था।

दो मिनट हम तीनों शांत बैठे रहे। मिराज आसपास नज़रें घूमा

रहा था। उसकी घूमती नजरें अंत:मन में अनेक घटनाओं को देख रही थी। आखिरकार उसके होंठ और आँखें कुछ कहने के लिए तैयार हुए हों, ऐसी उसने गहरी साँस ली।

'तुम्हें एक बात पता है?' मैंने उत्सुकता से मिराज से पूछा।

'क्या?' उसकी आँखों में थोड़ी जिज्ञासा दिखाई दी।

'ह्युमन ब्रेन की एक स्टडी के अनुसार हमारे जीवन में लगभग 200 व्यक्ति होते हैं। उसमें से मात्र पाँच व्यक्ति ही ऐसे होते हैं जो वास्तव में हमारे सबसे नज़दीक होते हैं और यही लोग हमारी दुनिया होते हैं। बाकी सब व्यवहार मात्र ही हैं। तुम्हारे जीवन में ऐसे पाँच व्यक्ति कौन हैं?'

मिराज सोच में पड़ गया। पाँच मिनट बाद उसने मेरी ओर देखा।

'तुम्हारे प्रश्न का जवाब अभी मेरे पास नहीं है। उसके लिए तो शांति से सोचना पड़ेगा। पर यह सवाल सुनकर मेरे दिमाग में जो व्यक्ति फ्लैश हुए उनमें से शुरुआत करूँ।' अब उसने बात करने की पहल की।

'हाँ।'

अंतत: मिराज ने मीत की ओर देखा। पल दो पल उस पर नज़र स्थिर कर उसने कहा, 'मीत पहले से ही मेरा सेफ्टी शील्ड था। जहाँ

जाऊँ वहाँ यदि मीत मेरे साथ रहे तो मुझे कोई चिंता नहीं होती। मैं उसके साथ सब शेयर करता था। धीरे-धीरे पढ़ाई का प्रेशर बढ़ने लगा, उसका भी और मेरा भी। पूरे दिन स्कूल, उसके बाद ट्युशन और फिर थक जाते तो थोड़ी देर टी.वी. में टाइम स्पेन्ड करते।

पापा के आग्रह से मीत ने अपनी इच्छा के विरूद्ध एल.एल.बी. में एडमीशन ले लिया था। अत: उन दिनों वह बहुत डिस्टर्ब रहने लगा। मुझे उसके साथ बहुत कुछ शेयर करना होता पर उसकी हालत देखकर मैं अपने प्रॉब्लम खुद ही सॉल्व करने का प्रयास करता। मैं मीत को और अधिक परेशान नहीं करना चाहता था। बट ही इज ए चेम्प। उसने बहुत जल्दी ही वास्तविकता को स्वीकार कर लिया और खुद को एल.एल.बी. की की पढ़ाई में व्यस्त कर लिया। उसमें यह गुण बहुत अच्छा है। वह वास्तविकता का सामना मुझसे अधिक अच्छे तरीके से और आसानी से कर लेता है। मैं हमेशा ढीला पड़ जाता, पर वह नहीं।'

'डू यू नो दैट इन्ट्रोवर्ट पीपल आर एक्चुअली वेरी सिन्सियर। यदि वे लोग अपनी कंपनी एन्जाय करना सीख लें तो जीवन में कभी अकेले नहीं पड़ते।'

'ऐसा मुझे पहले किसी ने कहा ही नहीं है कि इन्ट्रोवर्ट पीपल

आर वेरी सिन्सियर।'

'यस दे आर स्पेशल। मीन्स यू आर स्पेशल।'

दीदी, फिर दूसरा नाम आता है मेरे फ्रेन्ड विश्रुत का। वह भी मेरी तरह ही इन्ट्रोवर्ट था।

'विश्रुत?'

'हाँ, दीदी। ही वॉज़ माय बेस्ट फ्रेन्ड एवर।'

'मुझे उसके साथ बहुत अच्छा लगता था। हम भले ही दस मिनट के लिए मिलते तब भी उस दस मिनट में हमें एक दूसरे को समझने, सुनने का संतोष होता। क्रिकेट में भी हमारी फ्रिकवन्सी बहुत मैच होती थी।'

'वह स्कूल में भी तुम्हारे साथ था?'

'नहीं। हमारी पहचान क्रिकेट से ही हुई थी। वह हमारी सोसायटी में रहता था। यह बात उन दिनों की है जब सोसायटी के सभी लड़के एकत्र होकर क्रिकेट खेलते थे। हम दोनों ने एक साथ ही क्रिकेट कोचिंग क्लास शुरू की थी। धीरे-धीरे क्रिकेट का नशा इतना बढ़ गया कि मेरा ध्यान पढ़ाई में कम हो गया। विश्रुत तो ऑल राउंडर था। पढ़ाई हो या क्रिकेट, वह आगे ही रहता। पर पढ़ाई में मेरा फोकस कम होने पर मेरा रिजल्ट डाउन होने लगा। मम्मी-पापा उसका नाम

ले-लेकर मुझे बार-बार टोकते, विश्रुत को देखो और तुम्हें देखो। वह हर तरह से स्मार्ट है। पढ़ाई से कोम्प्रोमाइज़ किए बिना क्रिकेट खेलता है। और तुम तो सिर्फ क्रिकेट में ही आगे बढ़ रहे हो, फिर भी तुम उससे पीछे ही हो।'

इतना कहकर मिराज रुक गया। उसका गला भर आया था। कुछ ही देर में वह संभल गया।

मीत की स्थिर पोजीशन में थोड़ी हलचल हुई पर मैंने उसे शांति से बैठे रहने के लिए आँखों से इशारा किया।

'फिर क्या हुआ?' मैंने पूछा।

'सच कहुँ संयुक्ता दीदी, मुझे पर्सनली विश्रुत से कोई प्रॉब्लम नहीं थी। पर इस प्रकार बार-बार उसके साथ कम्पैरिज़न होने से मैं भी खुद को उसके साथ कम्पैयर करने लगा। उसमें कौन सी कमी है, यह खोजने लगा। पढ़ाई और क्रिकेट, इन दोनों में से किसी भी एक फील्ड में मुझे उससे आगे बढ़ना था। पढ़ाई में मुझे अपनी कपैसिटी विश्रुत से कम लगी इसलिए मैंने अपनी पूरी मेहनत क्रिकेट के पीछे लगा दी। निकट भविष्य में ही एक टूर्नामेंट होने वाली थी। सभी तरीके से विश्रुत से खुद को बेस्ट साबित करने में मैंने अपना जी जान लगा दिया।'

‘देन?’

‘मुझे क्रिकेट टूर्नामेंट में अपनी मेहनत का कोई रिजल्ट मिले, उसके पहले ही स्कूल का रिजल्ट आ गया। परसेन्टेज बहुत कम हो गए थे। घर से वार्निंग मिल गई कि अब से क्रिकेट कोचिंग बंद। मैंने बहुत रिक्वेस्ट किया कि एक टूर्नामेंट पूरा हो तब तक मुझे जाने दो। पर पापा टस से मस नहीं हुए। मम्मी ने भी इस बार मेरी साइड नहीं ली। यह मेरे लिए बहुत बड़ा शॉक था। मुझे लगता था कि मैं एक क्षेत्र में तो खुद को विश्रुत से आगे प्रुव करके दिखाऊँ। पर मम्मी-पापा ने मेरी मेहनत और सपनों पर पानी फेर दिया। तभी से मन ही मन मैं मम्मी-पापा से दूर होता गया।’

‘पापा वैसे तो हम दोनों को डिसिप्लिन और पढ़ाई के अलावा कभी ज्यादा टोकते नहीं थे। इन दो बातों में वे ज़रा भी कॉम्प्रोमाइज नहीं चलाते थे। वास्तव में तो पापा ने खुद ही मिराज को क्रिकेट कोचिंग ज्वाइन कराया था। पर जिस दिन से मिराज के रिजल्ट पर उसका असर दिखने लगा तब से वे मिराज का कोई ऑर्ग्युमेन्ट सुनने के लिए तैयार नहीं थे। मेरे साथ भी एल.एल.बी. के लिए वे इसी प्रकार अडिग थे।’ मीत ने कहा।

बेंच पर पड़े अधसूखे पत्तों को हाथ में लेकर मिराज ऐसे ही

घूमाने लगा।

'और विश्रुत?'

'उसके पापा का जॉब पुणे ट्रांसफर हो गया, इसलिए वे लोग पुणे शिफ्ट हो गए। पर विश्रुत ने मेरे मम्मी-पापा को इतना प्रभावित कर दिया था कि उसके जाने के बाद भी मम्मी-पापा उसका नाम लेकर मुझे पढ़ाई के लिए डाँटते थे। उन पर लाख गुस्सा आने के बाद भी मैं उन्हें कुछ बोल नहीं सकता था। बस अंदर ही अंदर घुटता रहता... एक ही प्रश्न के साथ कि पढ़ाई में एवरेज स्टूडेंट क्या जीवन में कभी सक्सेसफूल नहीं हो सकते?'

'जिस प्रकार हम अपने मम्मी-पापा से हक से ज़िद करते हैं उसी प्रकार कभी-कभी अपनी उलझने भी उनसे खुले मन से शेयर करनी चाहिए। भावनाओं को कूचलने से बहुत नुकसान होता है। उसका प्रभाव पूरी जिंदगी हमारे साथ रहता है। जिस प्रकार दिल खोलकर हँसना अच्छी हेल्थ के लिए ज़रूरी है, उसी प्रकार रोकर दिल हल्का कर लेना भी अच्छी हेल्थ के लिए उतना ही आवश्यक है।'

'दीदी, यू आर जीनियस। तुम्हारी बातें कुछ अलग ही हैं। तुम्हारे पास हर सवाल के जवाब रहते हैं।'

'मैं जीनियस तो नहीं हूँ। पर हाँ, इतना अवश्य कह सकती हूँ

कि प्रत्येक सवाल का जवाब पाने के लिए धैर्य रखना जरूरी है। तुझे भी अपने सवालों के जवाब तक पहुँचना तो पड़ेगा न?'

मेरी बात सुनकर मीत मुझे देखता ही रह गया और मिराज एकदम चुप हो गया। उसने भी अभी तक अपनी बहुत सी इच्छाओं को मन में दबा कर रखा था यह साफ दिख रहा था। और यह स्वभाविक भी था। किसी के सामने खुलकर बोलना आसान नहीं है। अत्यधिक विश्वास होने पर ही अपने दिल की बात दूसरों को कही जा सकती है। मुझे मिराज से कोई पर्सनल बेनिफिट की अपेक्षा तो थी ही नहीं। मेरी यही भावना थी कि वह अपने अंत:पटल के पीछे छीपे हुए बोझ को हल्का कर आंतरिक शांति प्राप्त करे।

पार्क में अंधेरा हो गया था और मेरे घर जाने का समय भी।

'मिराज, आज वातावरण कितना सुखद लग रहा है न। ग्रीष्म ऋतु की गरमी के बाद इस प्रकार ठंडी हवा के झोंके भेजकर प्रकृति आने वाली वर्षा ऋतु का अहसास करा देती है। इसलिए गरमी के बाद ठंडक आती ही है। हमें धैर्यपूर्वक उसकी राह देखने की आवश्यकता है।'

मीत के लिए ये सब फिलॉसाफी नई नहीं थी। पर मिराज के लिए तो थी ही। फिर भी मुझे विश्वास था कि वह ज़रूर मेरी बात समझ गया होगा।

खुलकर मन की बात बता देने से मिराज को रिलेक्स्ड लग रहा था। मुझे आंतरिक शांति मिली। अगली मीटिंग में वह अवश्य ही कुछ ज्यादा खुलकर कहेगा ऐसी आशा के साथ मैंने दोनों से विदा ली।

'फिर जल्दी मिलेंगे।' कहकर मैं वहाँ से निकल गई। दोनों भाई भी पार्क के बाहर निकल गए।

मिराज का मन तो हल्का हो गया पर मेरे मन में असंख्य विचारों के बादल घिर आए।

हे दादा!

और मेरे मानस पटल से घमासान हटकर शांति छा गई।

उनका मुखारविंद मेरी नज़रों के सामने आ गया। आँखों में प्रेम, चेहरे पर प्रेम, हास्य में प्रेम, पूरा व्यक्तित्व ही प्रेम भरा, प्रेम और बस प्रेम ही।

केवल प्रेम की जीवंत मूर्ति.... ऐसे दादा।

ज़रा से परिचय से ही चिर-परिचित पहचान लगे, ऐसे आप्तस्वजन दादा....

दादा को याद करते-करते मैं घर पहुँची।

(8)

घर का दरवाजा खुला ही था। ऐसा लगा किसी सेन्सिटिव टॉपिक पर बातें हो रही हों। घर का वातावरण भी तनावपूर्ण लग रहा था।

'पता नहीं आजकल इन बच्चों को क्या हो गया है।' अंदर के रूम से दादी की दु:खभरी आवाज सुनाई दी।

'बिल्कुल ठीक कहा! इतनी छोटी-छोटी बातों में ऐसा करते हैं। बेचारे माँ-बाप क्या करें?' मम्मी भी उतनी ही बेचैन लग रही थी।

'रौनक को कुछ मत बताना। अभी तो वह बच्चा है।' दादी की आवाज में दृढ़ता थी।

'अरे माँजी, सोसायटी में से इस बात का पता चले बिना रहेगा नहीं।'

'फिर भी घर में इसकी चर्चा मत करना।'

'किस बात पर चर्चा हो रही होगी?' भारी मन से मैंने रूम की ओर कदम बढ़ाए।

‘क्या हुआ?’ मैंने चिंतित स्वर में पूछा।

‘आ गई बेटा?’ दादी ने प्यार से पूछा।

‘आज तो बहुत देर कर दी आने में?’ मम्मी ने बात बदलते हुए कहा।

‘क्या बात है? आप इतनी टेंशन में क्यों लग रही हो?’

‘कुछ नहीं।’ मम्मी ने बात छिपाते हुए कहा।

‘मुझे पता है कि आप लोग कोई सीरियस बात कर रहे थे। मुझसे क्यों छिपा रहे हैं?’

‘अरे बेटा, कुछ कहने जैसा होगा तो तेरी मम्मी तुझे जरूर बताएगी। हम तो यूँ ही अखबार में रोज सब खबरें आती हैं न, उसकी बातें कर रहे थे।’

‘ठीक है दादी, यदि आप नहीं बताना चाहतीं तो कोई बात नहीं। वैसे भी मैं बहुत थक गई हूँ।’ मुझे भी ऐसी गंभीर बातें सुनने में कोई रस नहीं था।

मेरा सिरदर्द करने लगा। दादी और मम्मी मुझे अभी भी छोटी बच्ची समझकर मुझसे बातें छिपाते हैं, यह मुझे अच्छा नहीं लगा। हालाँकि इसमें उनका भी कोई दोष नहीं था। पहले वाली संयुक्ता वैसे भी सिरफिरी ही तो थी। चलो ठीक है। जो भी हो, बाद में तो

पता चल ही जाएगा।

‘मम्मी मेरे सिर में दर्द हो रहा है। चाय बना दोगी? मुझे दवाई लेकर कुछ देर सो जाना है।’

‘बेटा, चाय के साथ कुछ खा लेगी तो अच्छा है।’

‘ठीक है।’

थोड़ा खाकर, दवाई लेकर, मैं रूम में चली गई। पलंग पर लेटकर हाथों से सिर दबाते-दबाते सोने की कोशिश करने लगी। कब नींद आ गई पता ही नहीं चला।

अगले दिन फिर से मन में सवाल उठने लगे। ऐसी क्या बात है, जो ये लोग मुझे और रौनक को नहीं बताना चाहते?

सुबह नहाकर नाश्ते के लिए सभी इकट्ठा हुए। प्लेट्स और कप लाने मैं किचन की ओर बढ़ी।

‘दीदी, आज तुम्हारा क्या प्लान है?’

‘कुछ खास नहीं।’

‘तो नाश्ता करके रूम में मिलते हैं।’ रौनक थोड़ा डिस्टर्ब लगा।

‘ओ.के.।’

रोज़ की तरह आज भी डाइनिंग टेबल पर थोड़ी बहुत न्यूज़

और आसपास की बातें चली। तय किए अनुसार मैं रौनक के रूम में पहुँची।

‘बोलो, क्या बात है? तुम थोड़ा डिस्टर्ब लग रहे हो।’

‘एक्चुअली... तुम्हें पता है, कल क्या हुआ?’ रौनक ने फिर से कल वाली बात छेड़ी।

‘नहीं क्या हुआ?’ मुझसे तो किसी ने कुछ नहीं कहा।’ मैं भी अब अधीर होने लगी थी।

‘वह चिंतन, पीछे वाली सोसायटी में रहता है न?’

‘हाँ, वह मस्तीखोर... याद है मुझे। क्या हुआ उसे?’

‘दीदी, वह घर छोड़कर चला गया।’

‘घर छोड़कर? पर क्यों?’

‘सुना है कि उसे पेन्टर बनने में दिलचस्पी थी। इस पर उसके पापा बहुत नाराज़ हुए और ऐसा साधारण कोर्स करने के बजाय इन्जीनियरिंग करने के लिए फोर्स किया, इसलिए।’

‘बस, इतनी सी बात पर घर छोड़कर चला गया?’

‘तुम्हें इतनी सी बात लग रही है पर उसे बहुत अपमानजनक लगा होगा तभी तो ऐसा किया होगा न?’

‘पता नहीं क्यों पर आजकल सभी का मन बहुत कमजोर हो गया है।’

‘मुझे तो इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ। अभी चार दिन पहले ही तो वह मुझे सोसायटी के जिम में मिला था।’

‘तुझे कैसे पता चला?’

‘फ्रेन्ड्स से।’

‘मम्मी को भी पता होगा न?’

‘हाँ।’

‘उन्होंने मुझे तो कुछ नहीं बताया।’

‘वह इसलिए क्योंकि दादी और मम्मी को यही चिंता है कि कहीं इन सब बातों का हम पर नेगेटिव असर न हो जाए।’

‘हम थोड़े ही ऐसा कुछ करने वाले हैं?’

‘पर उन्हें इस बात का डर लगता है।’

‘शायद मेरे पिछले व्यवहार के कारण उन्हें अभी भी ऐसा लगता होगा।’

‘छोड़िए न! दीदी बीती बातें।’ रौनक ने मेरा हाथ दबाते हुए कहा।

‘क्या करूँ? आजकल सभी के केस डिप्रेसिव ही लगते हैं।’ ‘शायद तुम सच कहती हो। जब से बोर्ड का रिजल्ट आया है तब से अखबार में बुरी खबरें पढ़-पढ़कर मैं थक चुका हूँ। कोई सुसाइड करता है तो कोई...’ सुसाइड शब्द बोलते-बोलते अचानक रौनक चुप हो गया।

‘इट्स ओ.के.। तुम भी बीती बातों का बोझ मत रखना।’ मैंने रौनक को भूतकाल में से बाहर निकाला।

‘हाँ।’

‘उसके पेरेन्ट्स बहुत चिंतित होंगे न?’

‘हाँ।’

तभी रौनक के मोबाइल की रिंग बजी और वह रूम में से बाहर निकल गया। चिंतन के बारे में सुनकर मैं नर्वस हो गई। वह शरारती था पर साथ ही ज़ज्बाती भी था। उसने ऐसा कदम क्यों उठाया होगा? कहाँ गया होगा? यह सोचते-सोचते मैं भी अपने भूतकाल में पहुँच गई....

मुझे भी कई बार ऐसा होता था कि इस घर, इस दुनिया, इन सबसे भागकर कहीं चली जाऊँ। पर कहाँ? कोई ऐसी जगह है ही नहीं। उन अपमान भरे दिनों की मानसिक वेदना इतनी असहनीय

लगती थी कि मैं न ही जी सकती थी और न ही मर सकती थी। यह जीवन एक पिंजरे की तरह लगता जिसमें से भाग निकलने का कोई रास्ता ही नहीं था।

मुझे मिराज याद आ गया। किसी भी बात में प्रेशर का कितना भयंकर परिणाम आता है। चिंतन तो चला गया। पता नहीं उसका क्या होगा? पर मिराज को तो मैं अपनी नज़रों के सामने देख रही हूँ। और मिराज की मदद करने की मेरी भावना और दृढ़ हो गई।

सप्ताह भर में ही मैं, मीत और मिराज फिर से मिले। इस बार हम बीच पर मिले। पिछली बार मिराज थोड़ा ओपन हुआ था, इस बात से मीत बहुत खुश था। उसकी यही इच्छा थी कि किसी भी तरह मिराज डिप्रेशन में से बाहर निकले और वह उसकी आँखों में साफ दिखाई दे रही थी।

'हाय मिराज! कैसे हो? मैंने पूछा।

मिराज थोड़ा सा मुस्कराया पर उसके मन पर जो बोझ था, वह स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

'मिराज, शायद तेरी पीड़ा मैं एक्ज़ेक्टली न समझ पाऊँ, बट आइ केयर फॉर यू एन्ड आइ वान्ट टू हेल्प यू।'

मैं मिराज की परिस्थिति और हालात उसके शब्दों में सुनने के

लिए आतुर थी। अभी भी बहुत कुछ भरा पड़ा था जो खाली होना बाकी था।

‘दीदी, मम्मी–पापा मुझ पर जो पढ़ाई के लिए प्रेशर डालते थे, वह मुझसे सहन नहीं होता था। आखिर मेरी भी इच्छाएँ हैं... शौक हैं... क्या मेरी लाइफ में मेरी च्वाइस की कोई अहमियत नहीं? क्या मम्मी–पापा जो कहें वही पढ़ना होगा? वही करना होगा? मुझे बहुत सफोकेशन होता था। पर अपनी उलझन दूर करने के लिए मेरे पास कोई नहीं था, मीत भी नहीं। हम सभी एक ही घर में रहते थे पर पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लगने लगा था कि मैं बिल्कुल अकेला पड़ गया हूँ। मुझे बहुत बोझ लगता था। इसी दौरान मैं परम के टच में आया।

‘परम? योर स्कूल फ्रेन्ड?’

‘मेरा क्लासमेट और हमारे घर के पास ही रहता है। पहले हमारे बीच हाय हेलो से ज्यादा कोई खास बात नहीं होती थी। पर फिर, जब से हम दोनों ने एक साइंस प्रोजेक्ट पर साथ में काम किया तब से हम थोड़े नज़दीक आ गए। एक दिन फोन की घंटी बजी।’

‘हलो।’

‘हलो मिराज, क्या कर रहे हो?’ उस ओर से परम ने पूछा।

‘कुछ खास नहीं।’

‘तो मेरे घर पर आ जाओ। मैं बहुत बोर हो रहा हूँ। मेरे घर में कोई नहीं है। हम साथ बैठकर साइंस प्रोजेक्ट पर काम कर सकते हैं।’

‘ओ.के. आता हूँ।’

मैं दस मिनट में परम के घर पहुँच गया। उस दिन मैं पहली बार उसके घर गया था। घर में चारों ओर रिच लाइफ स्टाइल झलक रही थी। परम को स्कूल में देखकर लगता नहीं था कि वह इतनी वेल टू डू फैमिली से है।

‘मैगी की खुशबू आ रही है।’ परम के घर में प्रवेश करते ही मैंने कहा।

‘हाँ यार, मम्मी घर पर नहीं है इसलिए मैगी के अलावा और तो क्या बनाया जा सकता है?’ परम ने हँसते हुए कहा।

‘चल, मेरे रूम में बैठते हैं।’ उसने मुझे अपने रूम की ओर ले जाते हुए कहा।

हम दोनों उसके रूम में गए। वहाँ सब कुछ बिखरा पड़ा था, जो परम के आलसी स्वभाव की ओर इशारा कर रहा था। उसने पलंग पर फैले हुए स्कूल यूनिफार्म, हेडफोन, इयर प्लग और बाकी सामान को उठाकर साइड में रखा और मुझसे बैठने के लिए कहा।

पलंग के पास टेबल पर ही लैपटॉप खुला पड़ा था।

‘तूने रिसर्च शुरू कर दिया?’ मैंने पूछा।

‘हाँ, किया तो है पर बहुत बोर हो रहा था इसीलिए तुझे बुला लिया।’

इतने में ही मोबाइल पर मैसेज आया। परम ने मोबाइल हाथ में लिया।

‘अभी....’ परम के चेहरे पर मुस्कान छा गई और उसकी उँगलियाँ फटाफट मैसेज टाइप करने में व्यस्त हो गई।

‘क्या हुआ? कौन है?’ मैंने उत्सुकतावश पूछा।

‘अरे कुछ नहीं। कुछ समय से मेरी एक नई चेट फ्रेन्ड बनी है। हम दोनों जब भी फ्री होते हैं तब थोड़ी बातें कर लिया करते हैं।’

‘चेट फ्रेन्ड? कौन है?’

‘वेल, आई रियली डोन्ट नो हर। बट स्टिल आइ नो हर वेरी वेल।’

‘मीन्स?’

‘अरे यार, चेट फ्रेन्ड है यानी रियल में मैं उससे कभी मिला ही नहीं। शी इज इन डेल्ही। बट वी आर वेरी गुड फ्रेन्ड्स। हम रोज एक बार तो बात करते ही हैं।’

परम की बातें सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। मन में कई सवाल उठने लगे।

‘इसमें इतना शॉक होने जैसा क्या है? सचमुच तुम बहुत सीधे हो यार।’

‘मेरे घर में ऐसा सब अलाउड नहीं है।’ मैंने अपना बचाव करते हुए कहा। परम की कॉमेन्ट से मुझे इन्फिरियर फील होने लगा था।

‘इसमें कोई खराबी नहीं। जैसे हम दूसरे फ्रेन्ड्स के साथ बातें करते हैं वैसे ये भी फ्रेन्ड्स ही हैं। बल्कि इसमें नए-नए लोगों को मिलने का और पहचानने का स्कोप है। और सच कहूँ तो अनजाने हों तो बातें करने में और भी ज्यादा मज़ा आता है। सब अलग-अलग जगह पर रहते हैं। अलग-अलग कल्चर है। कभी एक दूसरे को देखा भी नहीं होता। वे जो रोज़ मिलते रहते हैं, हमारी गैर मौजूदगी में दूसरे फ्रेन्ड से हमारी बुराई भी करते हैं। जबकि यहाँ ऐसा कुछ होता ही नहीं है।’ परम नॉनस्टाप बोलता रहा।

‘यू मीन.... इसमें सबकुछ गुडी-गुडी होता है?’ मैंने तुरंत ही पूछा।

‘नॉट एक्जेक्टली, बट यस यू केन से सो।’

‘तो तेरी चेट फ्रेन्ड दिल्ली से है?’

‘वैसे तो इंडियन ही है। पर बोर्न एन्ड ब्रोट अप इन अमेरिका।’

‘ओह! उसने जो कुछ बताया, क्या वह सब सच ही होगा?’

‘मुझे तो लगता है कि वह सच ही बोल रही है। वी बोथ ट्रस्ट इच अदर।’

‘क्या यह ब्लाइंड ट्रस्ट नहीं है?’ मेरे मन में कई प्रश्न उठ रहे थे।

‘आइ डोन्ट थिंक सो।’

मैं परम की बातों को गले से नीचे उतारने की ट्राइ कर रहा था।

‘और अभी, आज ही और एक नई फ्रेन्ड बनी है। वह बैंगलोर की है।’

‘एक ही दिन में फ्रेन्ड बन गई?’

‘हाँ। शी इज सो नाइस। आइ लाइक नॉन गुजराती पीपल मोर देन देशी गुजरातीज। हम सब देशी लोगों से इन लोगों की थिंकिंग और लाइफ स्टाइल अलग होते हैं। इसलिए इन लोगों के साथ बात करने में मज़ा आता है। दे आर वेरी स्मार्ट एन्ड ओपन माइन्डेड।’

मेरे साथ बातें करते-करते परम चेट भी कर रहा था। सामने से भी फटाफट मैसेजेस आ रहे थे। परम का यह रूप मुझे पहली नज़र

में कुछ अच्छा नहीं लगा पर फिर भी मेरी उत्सुकता बहुत बढ़ गई।

‘चलो, इस मेडम को अभी बाय कह देता हूँ। बाद में मना लूँगा।’

‘इसमें क्या मनाना? फ्रेन्ड है तो थोड़ा तो समझेगी ही न।’

‘अरे, हम रोज इसी टाइम पर चेट करते हैं क्योंकि इसी समय उसे फ्री टाइम मिलता है। इसलिए थोड़ा गुस्सा हो गई है। तुझे पता है न इन लड़कियों को रूठने में देर नहीं लगती।’

‘चेट फ्रेन्ड रूठती भी है?’ और गुस्सा भी करती है??? लुक्स विअर्ड...’

‘अरे, ये तो मेरी पुरानी फ्रेन्ड है इसलिए हम दोनों के बीच रूठना–मनाना तो चलता ही रहता है। तू नहीं समझेगा।’ परम ने सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

‘यह क्या बला है.. इन्विज़िबल फ्रेन्ड्स को भी मनाना पड़ता है?’

‘तू इतना नेगेटिव क्यों है? रहने दे। इट्स नॉट योर कप आफ टी। चल, प्रोजेक्ट पर काम शुरू करते हैं। बाद में इस मेडम को भी टाइम देना पड़ेगा।’

‘इट्स नॉट योर कप आफ टी।’ परम की यह कमेन्ट मानो मेरे दिल में सुई की तरह चुभ गई। मन किया कि उसे साबित करके दिखा दूँ कि मैं आउट डेटेड नहीं हूँ। पर परम के सामने क्या बोलूँ

वह मुझे समझ में नहीं आया। मेरा खराब न दिखे इसलिए बात को बदलने के लिए मैंने मोबाइल में टाइम देखा।

‘अच्छा, चल जल्दी करते हैं। सात बज चुके हैं। एक घंटे के बाद मुझे घर जाना पड़ेगा।’

‘परम के चेटिंग के चक्कर में टाइम कैसे बीत गया उसका पता ही नहीं चला।’ मैं थोड़ा उबने भी लगा था क्योंकि उसके घर पहुँचने के बाद मैं खाली बैठा हुआ ही था। वास्तव में उबने से ज्यादा मुझे अपमान का दुःख था। मुझे ऐसा लगने लगा कि पढ़ाई में मुझसे पीछे रहने वाले परम के सामने इस मामले में मैं नीचा पड़ गया हूँ।

थोड़ी देर हम दोनों ने साथ मिलकर सब सर्च किया। ज़रूरी डाटा स्टोर कर लिया। इतने में फिर से मोबाइल पर मैसेज आने लगे। परम फिर से उसमें खो जाए उससे पहले ही मैंने कहा ‘तू मुझे यह सब मेल कर देना। मैं फिर अपनी तरह से इसमें से पॉइंट्स बना लूँगा।’

‘हाँ, अभी मेल भेज देता हूँ।’ परम ने तुरंत ही मुझे डॉक्युमेन्ट मेल कर दिया।

परम के मोबाइल पर धड़ाधड़ मैसेज आना शुरू हो गए। और फोन की घंटी बजी।

‘इसे धीरज ही नहीं है।’ उसने लैपटॉप छोड़कर फोन हाथ में

लिया।

'कौन है?' मैंने पूछा।

'वही नीकी।'

'उसके पास तेरा नम्बर भी है?'

'हाँ,' परम ने तुरंत कहा।

'तेरे घर में किसी को इन सबसे प्रॉब्लम नहीं है?' मैं पूछे बिना रह नहीं सका।

'नहीं, उसमें क्या प्रॉब्लम? मम्मी को पता है कि मैं नीकी के साथ बातें करता हूँ। मेरे घर में सभी ब्रोड माइन्डेड हैं। ऐसा कोई रिस्ट्रिक्शन नहीं है।' परम ने गर्व से कंधे उचका कर कहा।

मैं परम को बाय कहकर वहाँ से निकल गया।

मीत एकटक मिराज को देखता रहा और मैं मीत को। कॉफी शाप में हमारी बातचीत के दौरान भी मीत ने इस बात को पॉइन्ट आउट किया था। परम के चेट फ्रेन्ड वाले चक्कर का मिराज के जीवन में क्या कोई कनेक्शन है? मैं और मीत एक ही प्रश्न पर रुक गए।

मिराज की कहानी अभी शुरू ही हुई थी। आगे कौन से नए चैप्टर और किरदार जुड़ेंगे वह देखना बाकी था।

(9)

मैं समय पर घर तो पहुँच गया लेकिन चलते-चलते मेरे मन में कई सारे सवाल उठ रहे थे। खुद की कितनी लिमिट होनी चाहिए? क्या आजकल के जमाने में ज़रूरत से ज्यादा सीधा होना अनफिट कहलाता है? सभी के मम्मी-पापा के विचार, क्यों अलग-अलग होते हैं? क्या सचमुच मेरे पैरेंट्स ऑर्थोडोक्स हैं? परम के फ्रीडम का मुख्य आधार उसके ब्रोड माईन्डेड पैरेंट्स हैं लेकिन मेरे फ्रीडम का क्या? मैं तो मोबाइल में सिर्फ गेम खेलता हूँ या वाड्सएप चेक करता हूँ तब भी मम्मी उबल पड़ती है। लेकिन परम? वह तो इससे भी बहुत आगे निकल चुका है फिर भी उसके घर में कोई रोक टोक नहीं? और मेरी मम्मी तो हमेशा टोकते ही रहती है। कहती है 'तेरे पापा की मौजूदगी में तो मोबाइल को छूना भी मत! उन्हें यह सब पसंद नहीं।' इस प्रकार के कई प्रश्नों, शिकायतों और गलतफहमियों के बवंडर में फँसा हुआ मेरा मन विचलित होने लगा था।

बोलते-बोलते मिराज गदगद हो गया था। मुझे उसकी आँखों

में उलझन दिखाई दी।

'तुम्हें पता है मिराज, ये टीन एज बहुत कॉम्प्लिकेटेड होती है। उसमें ऐसा सब, सभी के साथ होता ही है। लेकिन इस एज में होने वाली घटनाएँ और उनसे होने वाले अनुभव कभी-कभी हमारे जीवन की दिशा ही बदल देते हैं। अगर ऐसे समय गलत रास्ते पर चले गए तो वापस मुड़ने में बहुत देर लग जाती है। हालाँकि डरने जैसा भी नहीं है। जीवन में सिर्फ ऐसे लोगों का साथ होना ज़रूरी नहीं है जो मात्र हमारी तारीफ़ें करें बल्कि एक सही मार्गदर्शक का होना अत्यंत आवश्यक है जो हमें गलत रास्ते पर जाने से रोक ले।'

मिराज की आँखों में प्रश्नचिन्ह दिखाई दिए।

'खुद के निजी स्वार्थ के लिए हमारी तारीफ़ करने वाला तो फेक फ्रेन्ड होता है। रियल फ्रेन्ड तो वह होता है जो हमारे हित के लिए टीका करने से भी डरे नहीं।' मीत के मुँह से तुरंत ही ये शब्द निकल पड़े।

मीत में यही खास बात थी। अच्छे लेखकों की बुक्स पढ़ना मीत की हॉबी थी। स्कूल में मुझे उसकी बातों से बहुत कुछ नया जानने मिलता था।

'गुजराती में एक कहावत है मिराज, ज़ेरना पारखा ना होय।

यह ज़रूरी नहीं है कि खुद ही हर चीज़ का अनुभव लें, दूसरों को जो अनुभव हुए उसे देखकर भी सीखा जा सकता है।' एक भाई दूसरे भाई की उलझन आखिर कब तक शांत बैठकर चुपचाप सुनता रहता।

'तुम्हें पता है मिराज, कभी-कभी हमारी टीका करने वाले लोग ही हमें आईना दिखा देते है। जैसे हम अपने आप को आईने में देंखे तो जैसे हैं वैसे ही दिखाई देंगे न?' मैंने मिराज से पूछा।

'हाँ।' उसने जवाब दिया।

'वैसे ही, जो वास्तव में हमारा हित चाहते हैं वे हमें गलत रास्ते पर जाने से एक बार तो ज़रूर रोकते ही हैं। पर सभी टीका करने वाले हमारे हितैषी हों ये ज़रूरी नहीं। कोई जैलेसी और ईर्ष्या के कारण भी टीका करते हैं।'

'तो फिर उन्हें कैसे पहचाना जा सकता है?'

'इसका सबसे आसान उपाय, जो मैंने अनुभव किया है, वह है हमारी फैमिली। आमतौर पर हमारे फैमिली मेम्बर्स की बातों पर हम गौर नहीं करते लेकिन अच्छे फ्रेन्ड्स के अलावा हमारा हित चाहने वाले हमारे पैरेंट्स के अलावा और कौन हो सकते हैं?'

मिराज कुछ नहीं बोला। यह बात उसके गले नहीं उतर रही थी।

‘एनी वे.... फिर...?’

‘धीरे-धीरे मैं परम से और क्लोज़ होता गया क्योंकि वह जो कुछ भी करता था, उसे जानने में मुझे इन्ट्रेस्ट आने लगा था। मेरे घर में वह सब करना संभव ही नहीं था। मेरे घर में तो पढ़ाई को लेकर टोक-टाक के अलावा कुछ था ही नहीं। वैसे भी क्रिकेट कोचिंग छोड़ना पड़ा उस बात का रोश मेरे मन में था ही। इस बात के लिए मैं मम्मी-पापा को माफ नहीं कर पा रहा था।

स्कूल के अलावा जब भी फ्री टाइम होता तब मैं परम के घर पहुँच जाता। वह क्या-क्या करता है, वह सब देखता, शायद अनजाने में ही सीख रहा था। इस प्रकार, मैं और परम एक दूसरे से ज्यादा क्लोज़ होने लगे।’

मिराज ने अपने पास रखी पानी की बोतल में से दो घूँट पानी पीया और थोड़ा सहज हुआ।

‘मेरे बुरे दिन चल रहे थे। जहाँ देखो वहाँ निराशा ही मिल रही थी।’ एक दिन....

‘क्या रिज़ल्ट आया?’ घर में पैर रखते ही मम्मी ने पूछा।

मैं सोफे पर बैठ गया, स्कूल बैग की चैन धीरे से खोली और मम्मी के हाथ में मार्कशीट थमा दी।

‘बावन प्रतिशत?’ मम्मी को धक्का लगा।

‘ठीक से चेक कर। इतने कम कैसे हो सकते हैं?’ अचानक रूम से पापा बाहर निकले।

पापा इस समय घर में कैसे? उनका चेहरा देखते ही मेरी धड़कने तेज़ हो गई।

‘बावन प्रतिशत तो बहुत कम है। पिछली बार छैसठ प्रतिशत थे। इतने कम मार्क नहीं चलेंगे मिराज।’ मम्मी ने सख्ती से कहा।

‘पहले कभी भी इतने कम परसेन्टेज नहीं आते थे। लेकिन अभी-अभी तुम्हारी पढ़ाई पर बहुत असर हो रहा है। दिनभर तुम मोबाइल और फ्रेन्ड्स के पीछे ही पड़े रहते हो।’

‘अपनी कपैसिटी के अनुसार मैं मेहनत कर ही रहा हूँ। और मैंने तो पहले से ही कहा था कि मुझे किसी अच्छे ट्यूशन क्लासेस में भेजो।’ मैंने ऊँची आवाज में कहा।

‘मिराज, शांति से बात करो।’ मम्मी की भी आवाज ऊँची हो गई।

‘मम्मी आप लोगों को तो ऐसा ही लगता है कि मैं मेहनत करता ही नहीं। एक तो मेरी ट्यूशन क्लास कितनी दूर है। रोज़ आने-जाने में कितना टाइम चला जाता है। मैं कितना थक जाता हूँ। ऊपर से मेरा कम्प्यूटर भी बिल्कुल सड़ा हुआ है। बार-बार हैंग हो जाता है।

इस वजह से मेरे प्रोजेक्ट्स भी टाइम पर पूरे नहीं हो पाते। आप मुझे साइबर कैफे जाने नहीं देते। आपको तो पता ही है कि प्रोजेक्ट्स के मार्क्स भी काउन्ट किए जाते हैं।' हर प्रकार के आर्ग्युमेन्ट्स करके मैंने अपने आप को बचाने का पूरा प्रयत्न किया।

'तो क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम्हें ट्यूशन क्लासेस और लैपटॉप की वजह से प्रॉब्लम है।' पापा ने सीधे ही पूछा।

'हाँ।' मैंने चिढ़कर जवाब दिया और पैर पटकते हुए रूम में चला गया।

जब अपनी भूल को स्वीकार करने की तैयारी नहीं होती तब हम ज्यादा जोर से सामने वाले पर टूट पड़ते हैं। ऐसी-ऐसी दलीलें कर देते हैं कि मानो सारा कसूर सिर्फ और सिर्फ उन्हीं का हो। मिराज ने भी ऐसा ही किया। मिराज की बातें सुनते-सुनते मुझे अपना भूतकाल दिखाई दे रहा था। मैंने भी इसी तरह के कारनामें किए थे जो फ्लैश बेक बनकर बार-बार झलक दिखलाकर जा रहे थे।

घर में खामोशी छा गई।

'यदि उसे ट्यूशन दूर पड़ता हो तो बदल देते हैं।' पापा ने तुरंत कहा।

'प्रॉब्लम ये नहीं है कि उसकी क्लासेस दूर है लेकिन उसके

बाकी सब फ्रेन्ड्स जहाँ ट्यूशन जा रहे हैं, उसे भी वहीं जाना है।

'ठीक है न! जाने दो। यदि इसी बात की तकलीफ़ है तो उसे भी सॉल्व कर देते हैं। फिर तो पढ़ाई करेगा न।' पापा ऊँची आवाज़ में बोले ताकि मैं सुन पाऊँ।

'अरे लेकिन वे क्लासेस बहुत कॉस्टली हैं। हम इतना ज्यादा खर्च नहीं कर सकते। वह तो पैसे वालों का काम!'

'तुम पैसों की चिंता मत करो। देखा जाएगा। उसकी पढ़ाई में पैसे खर्च हो उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं।'

आखिरकार उस दिन के झगड़े ने मुझे मेरी मर्जी के अनुसार नज़दीक वाली ट्यूशन क्लासेस में पहुँचा ही दिया। परम भी वहीं जाता था इसलिए मैं भी वहीं जाना चाहता था। धीरे-धीरे सब नार्मल होने लगा। हाँ मेरे मन में यह बोझ रहता था कि इस बार अच्छे मार्क्स लाने ही पड़ेंगे क्योंकि पापा ने मेरी एक ज़िद तो पूरी कर ही दी है।

एक दिन घर में लैपटॉप के रेट्स लिखे हुए पेम्पलेट को देखकर मम्मी को आश्चर्य हुआ।

'यह पेम्पलेट कौन लाया है?'

'मैं।' मैंने तुरंत ही जवाब दिया।

'क्यों?'

'मेरी क्लास में एक फ्रेन्ड ने नया लैपटॉप खरीदा इसलिए मैंने उससे प्राइज लिस्ट माँगा था। आपको बताने लाया हूँ।'

'देखो मिराज, पहले तुम अच्छी तरह से पढ़ाई करो। उसके बाद तुम्हारी डिमांड पूरी होगी। तुमने कहा इसलिए महंगे ट्यूशन क्लासेस में तो ज्वाइन करवा दिया। अब रिज़ल्ट अच्छा आएगा उसके बाद ही लैपटॉप दिलवाएँगे।'

'तनय कितना लकी है। प्रशांत चाचा उसका कितना ध्यान रखते हैं। मेरे तो नसीब ही खराब है।' मैंने अपने चाचा के बेटे का उदाहरण देकर अपनी मनमानी करवाने की कोशिश की।

'तुम्हारे पापा जितना मुमकिन है उतना सब कर ही रहे हैं। तुम्हें ब्रान्डेड कपड़े चाहिए वह भी दिलवा देते हैं। तुम्हारी स्कूल और ट्यूशन फीस भी बहुत ज्यादा है पर तुम्हारे पापा ने पढ़ाई के लिए कभी मना नहीं किया है। और कितना करें वे तुम्हारे लिए!' हर बार की तरह मम्मी, पापा के गुणगान गाकर मुझे समझाने की लगी। लेकिन मेरे मन में दोनों के प्रति असंतोष ही था।

'वह सब तो प्रशांत चाचा भी तनय के लिए करते ही हैं न।' मैंने तुरन्त पलटकर जवाब दिया।

'तुम्हें यदि तनय का ही देखना हो तो पहले यह देखो कि वह

कितने मार्क्स लाता है।'

'वह तो लाएगा ही न? चाचा ने पहले से ही उसके लिए पर्सनल कोचिंग रखवा दिया है।'

'तुम कब समझोगे? हर बात पर आर्ग्युमेन्ट करने के अलावा तुम्हारे पास और कोई बात ही नहीं है।'

'आप लोग भी तो हर बात पर मुझे टोकते रहते हो।'

'तुम्हें भी बहुत छूट दी ही गई है। पर जहाँ छूट नहीं दी जा सकती वहीं मना करते हैं।'

'मिराज बेटा, मम्मी को ऐसे जवाब नहीं देना चाहिए।' दादी ने मुझे शांति से समझाया।

थोड़े दिनों के लिए दादी हमारे घर रहने आयी थी। मुझे उनकी दखलअंदाजी भी चुभ रही थी।

'दादी, आप बीच में मत बोलिए। आपको पता नहीं है कि इस घर में हमेशा तनय की ही तारीफ़ होती है। सभी को तनय ही अच्छा लगता है। मेरी तो कोई वैल्यू ही नहीं है।' मेरी कमान छटकी।

'नहीं बेटा ऐसा नहीं है। तुम भी होशियार ही हो।' दादी ने कहा।

'नहीं, मैं होशियार नहीं हूँ। मुझे पढ़ाई से ज्यादा क्रिकेट में रुचि

है। लेकिन पापा ने मुझे उसमें आगे नहीं बढ़ने दिया। मेरी क्रिकेट कोचिंग क्लास को बीच में ही छूड़वा दिया।' जो बात मेरे दिल में चुभ रही थी वह आज शब्द बनकर बाहर निकल ही गई।

'वह इसलिए कि उसका तुम्हारे पढ़ाई पर असर हो रहा था। तुम आठवीं कक्षा में हो। अगले साल नौंवी कक्षा में जाओगे। आजकल पढ़ाई का कितना लोड होता है। सब जगह भागदौड़ करोगे तो, तुम्हारी ही तबीयत बिगड़ेगी।' मम्मी ने हर तरह से समझाने की कोशिश की। पर मुझे उनकी एक भी बात स्वीकार नहीं थी।

'सच तो यह है कि आप सभी को ऐसा ही लगता है कि जो पढ़ाई करता है वही आगे बढ़ सकता है। लेकिन यह सच नहीं। क्रिकेट में कैरियर क्यों नहीं बन सकता? इन सभी क्रिकेट्र्स को देखो, करोड़पति हैं ही न?'

'बेटा, उसमें भी जो सबसे अच्छा परफार्मेंस कर दिखाए उसी की कीमत होती है। बाकी कितने ही उसमें गुमनाम हो चुके हैं।' मम्मी खुद भी शांत हो गई और मुझे भी शांत करने की कोशिश करने लगी।

'मीत ने कभी मम्मी के साथ इस तरह ऊँची आवाज़ में बात नहीं की। अपने बड़े भाई से कुछ सीख बेटा। यूँ ऐसे कठोर शब्द नहीं बोलने चाहिए।' दादी की इस बात से मैं और ज्यादा चिढ़ गया।

‘हाँ हाँ, आपको तो हमेशा मीत ही दिखाई देता है न? होशियार, सयाना, समझदार, हँसमुख... सब मीत में ही है। क्या आपको कभी मुझमें कोई अच्छी बात दिखाई दी है? पूरा दिन सभी मुझे ही उपदेश देते रहते हैं मीत जैसा बन, मीत से सीख। मैं चीख-चीखकर अपना सारा गुस्सा बाहर निकाल रहा था। पर उससे भी ज्यादा बेचैन करने वाली बात यह थी कि उस दिन पहली बार मेरे शब्दों में मीत के लिए भी द्वेष था। मुझे इस बात का एहसास ही नहीं था कि मैं क्या बोल रहा था।’

दो साल पहले मिराज कैसा था और आज कैसा हो गया है। यह सोचकर मम्मी की आँखों में आँसू आ गए। दिनोदिन मैं उद्दंड और क्रोधी होता जा रहा था। मीत इस घटना का साक्षी था। उसने किसी के भी फेवर में एक शब्द भी नहीं कहा था।

‘इट्स अ साइन ऑफ टीन एज। टीन एज में ऐसा सब होता ही है। स्वयं के अंदर की और बाहर की दुनिया के बीच घर्षण चलता ही रहता है। स्कूल में सभी का देख-देखकर खुद के भीतर एक स्पर्धा खड़ी हो जाती है।

ऐसा लगता है कि मानो हम औरों के साथ रेस में खड़े हुए हैं। लेकिन वास्तव में खुद से खुद ही को हराकर जीतने के लिए एक

विचित्र रेस हमारे मन के अंदर चलती रहती है। इसी का नाम ही, टीन एट। जहाँ एक ओर कितनी ही तरंगें, सपने और कल्पनाओं के घोड़े दौड़ते रहते हैं और दूसरी ओर वास्तविकता हमें दौड़ाते रहती है। इस दोनों के बीच बैलेन्स नहीं हो पाता है इसलिए फिर सफोकेशन शुरू होता है। घर के लोग हमें समझते नहीं ऐसा लगने लगता है। अपनी ही बातें सच्ची और बाकी सब झूठे। ऐसी स्ट्रांग बिलीफ मन में घर कर जाती है। और तब संघर्ष का सामना करना पड़ता है। लगभग सभी के साथ ऐसा होता है।' मीत ने कितनी आसानी से इतनी गंभीर बात कह दी। बोलते समय वह मिराज को नहीं बल्कि मुझे देख रहा था। लेकिन मैसेज डायरेक्ट मिराज को पहुँचा रहा था। उसके चेहरे पर बड़े भाई जैसी मेच्युरिटी दिख रही थी।

मुझे एक बार फिर मीत की समझदारी पर गर्व हुआ। 'मीत, तुम सब जानते थे फिर भी तुमने मिराज को क्यों नहीं समझाया?'

'उसे सब मालूम था पर उसने कभी भी मेरी साइड नहीं ली। इसलिए मुझे उस पर भी गुस्सा आता था।' मिराज ने थोड़ा अकुलाते हुए कहा।

'आइ कांट बिलीव दीस मीत। ऐसे टाइम पर तुम कैसे चुप रह सकते हो?' मुझे आश्चर्य हुआ।

‘शायद मेरी बात मिराज तक पहुँचाने के लिए वह सही समय नहीं था। कुछ बातें समझने और समझाने के लिए जब तक बोलने वाले और सुनने वाले, दोनों के ही मन की स्थिरता और तैयारी न हो तब तक खुद की लाख सच्ची बात भी सामने वाले तक नहीं पहुँचाई जा सकती। लेकिन राइट टाइम की राह देखने में शायद मैंने ज्यादा ही देर कर दी।’ मीत की नजरें झूक गई।

‘आधे-पौन घंटे के बाद मीत मेरे रूम में आया। पलंग पर मेरे पास गोद में तकिया रखकर, एकदम रिलेक्स होकर बैठ गया। मुझे ऐसा लगा कि वह मुझे कुछ समझाएगा। लेकिन उसने ऐसी कोई बात ही नहीं की। मेरी बुक्स लेकर पन्ने पलटने लगा।’ मिराज ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा।

‘तुम्हारी हेन्ड राइटिंग पहले से इम्प्रूव हो गई है। गुड।’

मैंने उसकी ओर देखा। हमारी नज़रें मिलते ही मैंने नज़रें घूमा ली।

‘अरे यार मिराज, तू तो शेर बच्चा है। तुझे पता है? शेर जब लंबी छलांग मारने वाला हो न, तब पहले दो कदम पीछे जाता है।’ कहकर वह रुक गया।

‘तो?’

‘इसलिए क्या तुझे ऐसा नहीं लगता कि तुम भी अब कोई लम्बी छलांग लगाने वाले हो?’

मेरा गुस्सा कम हो रहा था। फिर भी मैं गुस्से में तो था ही।

‘यानी मिराज, मुझे ऐसा लगता है कि आगे से तेरा रिज़ल्ट सूपर आएगा।’

मैं कुछ नहीं बोला।

‘चिल यार। हम जैसे लोगों की वजह से ही तो स्कॉलर लोग स्कॉलर माने जाते हैं। इसलिए वी आर मोर वैल्यूएबल।’

मीत मुझे मनाने का प्रयत्न कर रहा था। पर मुझे उसकी बातों में कोई इंट्रेस्ट नहीं आ रहा था। उस दिन पहली बार मुझे उसकी बातें फालतू लग रही थी।

‘मिराज, हमें अपनी परिस्थिति के अनुसार जीवन जीना चाहिए। हमें अपने मन को इतना मजबूत कर लेना चाहिए कि हमारी इच्छा के विपरित परिस्थितियाँ भी हमें हिला न सके।’ अब वह भी सीरियस था।

मैं चुपचाप सुन रहा था।

‘इसलिए ज़रा सा भी नेगेटिव सोचे बिना आगे बढ़ो। अपना लक्ष्य ध्यान में रखकर काम करो। तो अच्छा रिज़ल्ट आना निश्चित है।’

‘प्लीज मीत, अभी मुझे तुम्हारी बातें सुनने में बिल्कुल भी इन्ट्रेस्ट नहीं है। मेरे ट्यूशन का टाइम हो गया है।

ऐसा कहकर मैं अपनी बैग लेकर घर से बाहर निकल गया। मीत मुझे जाते हुए देखता रहा।

स्कूल और ट्यूशन क्लासेस दोनों जगह पर अब परम से मुलाकात होने लगी। जहाँ सभी ब्रान्डेड कपड़े पहनकर आते थे ऐसे ट्यूशन क्लासेस में जाने की अपनी इच्छा तो मैंने ज़िद करके पूरी करवा ली थी। पर विचारों और संस्कारों में जिन लोगों की गिनती नॉन-ब्रान्डेड क्लास में होती है, मैं उन्हें पहचान नहीं पा रहा था। उनके पास ऐसा बहुत कुछ था जो मुझे आकर्षित करता था। परम से प्रभावित होकर मैं उसके जैसा बनने का प्रयत्न करता पर पूरी तरह सफल नहीं हो पाता। फिर भी परम के साथ रहने से मेरे स्वभाव और विचारों में निश्चित ही बदलाव आ गया था।

(10)

उसी समय मेरे फोन की रिंग बजी। मिराज बोलते-बोलते रुक गया।

'एक्सक्यूज़ मी।' कहकर मैंने मिराज से परमिशन ली।

'नो प्रॉब्लम।' उसने मुझे फोन पर बात करने की इजाज़त दे दी। मिराज के साथ बातचीत की लिंक बीच में तोड़ना नहीं चाहती थी पर यह फोन उठाना भी ज़रूरी था। आखिर यह फोन मिराज के लिए ही था।

मुझे दूसरी ओर से बात करने वाले सज्जन से, मिराज के लिए थोड़ा मार्गदर्शन लेना था। उन महान विभूति के मार्गदर्शन के बिना मिराज की सहायता करना मेरे लिए मुमकिन नहीं था। मैं मिराज से थोड़ी दूर गई। बात पूरी कर मैंने मिराज की ओर देखा। उसकी हालत में मुझे अपनी हालत दिखाई देती थी। दोनों के जीवन में कारण अलग-अलग थे पर परिणाम में बहुत एकरूपता थी।

मिराज बड़ी गहराई से समुद्र को इस प्रकार देख रहा था जैसे अपने जीवन की गहराई में उतर गया हो। मेरी तरफ पीठ करके बैठे हुए मिराज के पास जाकर मैं बैठ गई।

'सॉरी। पर अभी अँधेरा नहीं हुआ है। यदि तुम्हारे पास टाइम हो तो हम और थोड़ी देर यहाँ बैठ सकते हैं।'

'हाँ, दीदी। मुझे भी बैठना है। मुझे आज थोड़ी शांति लग रही है। पता नहीं कितने दिनों का अंदर छिपा हुआ बोझ आज हल्का हुआ तो अच्छा लगा। पर अभी तो मेरी बात अधूरी है। आप सुनकर थक तो नहीं जाओगी न?' कहते-कहते उसने एक नज़र मीत की ओर भी देख लिया।

मीत के चेहरे पर मुस्कान और आँखों में नमी थी। मिराज के साथ ही साथ उसका बोझिल मन भी हल्का हो रहा था।

'नहीं रे। मुझे तो सुनना अच्छा लगता है।' मिराज की ओर से मुझे पॉज़िटिव रिस्पोन्स मिल रहा था, इस बात की मुझे खुशी था।

मैं उसकी ओर देख रही थी। उसकी नजरें समुद्र में दूर दिखाई दे रही एक नाव पर थी।

उसने मेरी ओर देखा और बोलना शुरू किया।

'मेरे मन में नया मोबाइल अथवा नया लैपटॉप लेने का अंतर्द्वंद

शांत नहीं हुआ था। मुझे भी परम के सामने अपना स्टेटस बनाए रखना था। अपनी ज़िद पूरी करवाने के लिए मैंने इस बार परीक्षा में अच्छे मार्क्स लाने के लिए अंतिम पंद्रह-बीस दिन खूब मेहनत की। नई ट्यूशन क्लास में अच्छे अंकों के आधार पर अपना स्टेटस बनाए रखने की छिपी हुई इच्छा भी मेरे अंदर थी।'

अपने हित के लिए अच्छी तरह पढ़ाई करनी चाहिए या अपना स्टेटस बनाए रखने के लिए? एक ही परिणाम देने वाली दोनों परिस्थितियों के आशय में जमीन-आसमान का अंतर होता है। आशय के आधार पर जीवन के लक्ष्य बदल जाते हैं।

नया मोबाइल लेने के दृढ़ संकल्प के कारण की गई मेहनत से मुझे 74 प्रतिशत मिले। घर में सभी मुझसे खुश थे। मम्मी-पापा को लगा कि महंगे ट्यूशन क्लास में भेजने का उनका निर्णय सही है।

'मेरा रिज़ल्ट देखकर मेरे भूतकाल के व्यवहार और उसके पीछे छिपी हुई मेरे विचारों की गंभीरता को वे लोग समझ ही नहीं सके। भूतकाल की छाप उनके मन से निकल गई। अंततः माता-पिता के समुद्र जैसे विशाल दिल में बच्चों की भूलें विलीन हो ही जाती हैं।'

संभालकर रखा हुआ लैपटॉप की प्राइज़ लिस्ट का पम्पलेट पापा ने फिर से अपने हाथ में लिया और कुछ सोचने लगे।

अब घर में कोई किचकिच नहीं थी क्योंकि मेरे रिज़ल्ट में सुधार हुआ था। और वैसे भी समर वेकेशन था इसलिए मुझे जो करना हो, वह सब करने की छूट थी। फ्रेन्ड्स, फन, मस्ती, पार्टी, क्रिकेट मैच... सब कुछ।

इसके साथ ही मुझे मेरी मनपसंद चीज़ मिल गई। नया लैपटॉप। मेरे बर्थ डे के दिन मम्मी-पापा ने मुझे सरप्राइज़ गिफ्ट दी। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। काफी समय से मम्मी-पापा के लिए जो मेरा स्नेह गायब हो गया था वह कई गुना फिर से बढ़ गया। मेरा अधिकतर समय लैपटॉप पर ही बीतने लगा। मैंने नए मोबाइल की बात फिलहाल मन से निकाल दी।

'देखो बेटा, तुम्हारे पापा ने तुम्हारे लिए नया लैपटॉप खरीदा है, तो अब उसका सदुपयोग करना।'

'हाँ मम्मी, डोन्ट वरी। पर अभी तो वेकेशन है इसलिए मैं इन्जॉय कर सकता हूँ न?'

'हाँ, पर एक लिमिट रखना, दो घंटे से ज्यादा नहीं।' मम्मी ने गंभीरतापूर्वक कहा।

'ओ.के. मम्मी। थैंक यू।' कहकर मैंने मम्मी को एक बड़ी सी स्माइल दी। इस व्यवहार में प्रेम कम मस्का अधिक था। वह समझने

में एक माँ को देर कहाँ लगती है? मम्मी भी फीकी सी स्माइल देकर चली गई।

वैसे तो मीत के लिए भी नया मोबाइल लिया था, तो फिर मुझे लैपटॉप तो दिलवाते ही न। मम्मी-पापा हैं तो अपने बच्चों के लिए इतना तो करेंगे ही न। मेरा मन ऐसे तर्क-वितर्क कर रहा था।

मैं नए लैपटॉप को देखते रहा। परम के घर में जब उसे फ्रेन्ड्स के साथ चैट करते देखा था वह दृश्य मेरी आँखों के सामने आ गया। आखिर मैंने फेसबुक, इन्स्टाग्राम, ट्वीटर आदि पर अपना अकाउन्ट बना लिया। चैट मैसेन्जर डाउनलोड कर लिए। एक चैट फ्रेन्ड बनाने की इच्छा पूरी करने का दिन आज आ ही गया।

पहले ही दिन फ्रेन्ड लिस्ट में छः नए नाम जुड़ गए। सभी के साथ दस-पंद्रह मिनट हेलो, हॉय, बाय से आगे जितना समझ में आया उतना बातचीत करने में कुछ संकोच हुआ, तो कुछ आनंद भी आया। और अधिक नए लोगों की खोज के लिए प्रयास ज़ारी रहा। नशे में चूर व्यक्ति की तरह, सब कुछ भूलकर, तीन घंटों तक अलग-अलग सोशल मीडिया प्रोफाइल और चैट मैसेन्जर को समझने और लोगों के साथ जनरल बातचीत करने में मैं मशगूल हो गया।

सचमुच उसमें डूबता ही जा रहा था...

मुझे मज़ा आने लगा। मेरा इन्फिरियारिटी वाला स्वभाव चैटिंग की दुनिया में कहीं भी आड़े नही आ रहा था क्योंकि यहाँ तो कोई सामने था ही नहीं। किसी ने मुझे ऑनलाइन गेम खेलने के लिए इन्विटेशन दिया। वह लिंक खोलने जा ही रहा था कि मुझे मम्मी-पापा की बात याद आ गई।

'मिराज, इन्टरनेट में वायरस का प्रॉब्लम बहुत ही बढ़ गया है। कोई भी अनजान वेबसाइट नहीं खोलना। आजकल बहुत सी वेबसाइट गलत रास्ते पर ले जाने वाली होती है। ऐसी चीज़ों में नहीं पड़ना जो हमारे संस्कार के विरुद्ध हो।' पापा की कही बात ने मुझे अलर्ट कर दिया।

तभी मोबाइल की रिंग बजी। परम का फोन था।

'हेलो।'

'हेलो, क्या बॉस! तो तुझे सोशल मीडिया की चिड़िया पसंद आ गई न?'

मुझे जवाब नहीं सूझा।

'ओ.के. सुन, मैंने तुझे जो लिंक भेजी है, वह देखना!'

'अच्छा।'

'चल बाय, मेरी फ्रेन्ड वेट कर रही है। नहीं तो फिर गुस्सा हो

जाएगी।' ऐसा कहकर परम हँसा और फोन काट दिया।

फोन रखकर लैपटॉप देखा तो जिनके साथ चैट कर रहा था वे सब इन्विज़िबल या कहीं और बिज़ी हो गए थे। मैंने लॉग आउट कर दिया। उसी समय रवि का फोन आया।

'हाय मिराज, क्या कर रहा है?'

'कुछ खास नहीं। बस यूँ ही टाइम पास कर रहा था।'

'मुझे तुम्हारी फ्रेन्ड रिक्वेस्ट मिली इसलिए आश्चर्य हुआ।'

'उसमें आश्चर्य करने जैसा क्या है?'

'यही कि तुम भी फेसबुक पर आ गए।'

'हाँ। फेसबुक, इन्स्टाग्राम, ट्वीटर सभी में हूँ भाई।' इतना बोलते ही मेरी आवाज गर्व से ऊँची हो गई।

'बहुत अच्छा।'

'लगता है कि अब तुम माडर्न हो गए।'

उसके व्यंग भरे शब्द सुनकर मुझे थोड़ा गुस्सा आ गया पर मैं चुप रहा।

'सुन, मेरे पास बहुत सी अच्छी मूवीज़ का कलेक्शन है। तुझे चाहिए?'

‘मूवीज़?’

‘हाँ, वेकेशन में और क्या करेंगे? मम्मी-पापा सभी मूवीज़ देखने तो जाने नहीं देते इसलिए मैं घर में ही देख लेता हूँ।’

‘गुड आइडिया।’

‘अपना पेन ड्राइव लेकर घर आ जाना।’

‘ओ.के.।’

इस तरह प्रतिदिन घंटो तक लैपटॉप के सामने बैठे रहने का सिलसिला शुरू हो गया। रवि के पास से मिली हुई लगभग पंद्रह मूवीज़ मैंने एक सप्ताह में ही देख ली। रोज़ के एक-दो पिक्चर देखने की मुझे आदत हो गई। धीरे-धीरे मैं अपने रूम में ही रहने लगा। मम्मी-पापा से बात करने में मुझे खास मज़ा नहीं आता था। अब तो मीत के साथ भी बातचीत कम हो गई थी। वह और मैं अपने आप में बिज़ी थे। गेम्स हो, मूवी हो या फिर चेटिंग हो, जिसके पीछे पड़ जाता उससे बाहर नहीं निकल पाता था।

बोलते-बोलते मिराज ने मीत की ओर देखा। वह नीचे की तरफ देख रहा था। बाहर से शांत मगर गंभीर दिख रहा था। मीत का ऐसा रूप मैंने पहली बार देखा था। ऐसा लगा कि उसके मन में भी सुनामी जैसा तूफान चल रहा है। मेरे कान मिराज की आप

बीती सुनने में व्यस्त थे पर मेरी नजरें मीत पर स्थिर हो गई थीं। उसे मैंने पुनः मिराज पर केंद्रित की। वह इतना साहस करके बोल रहा है इसलिए मेरा फोकस भी उसी की ओर ही होना चाहिए ऐसा सोचकर मैं पुनः मिराज की बीती बातों के सफर में खो गई। उसके केवल होंठ ही नहीं बोल रहे थे। चेहरा एवं आँखें भी बोल रही थीं।

'मुझे रोकने वाला कोई नहीं था। दादी की तबीयत बिगड़ने के कारण मम्मी उनकी देखरेख में, पापा अपने बिज़नेस बढ़ाने में और मीत अपने नापसंद कैरियर को पसंदीदा बनाने में व्यस्त था। सोशल मीडिया के रंग में मैं इतना रंग गया था कि देर रात तक जागता रहता। पहले तो मुझे छुट्टी के दिनों में क्रिकेट खेलने में भी मज़ा आता था। पर अब मुझे बाहर जाकर फ्रेन्ड्स या अन्य लोगों के साथ हँसने-बोलने के बजाय रूम की चार दीवारों के बीच रहकर सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेम्स की रंगीन और आर्कषक दुनिया में रहना अच्छा लगने लगा। मैच में किसी के साथ कोई बहस हो जाती तो मुझसे सहन नहीं होता था। किसी के साथ माथा-पच्ची करने के बजाय अकेले बैठकर ऑनलाइन टाइम पास करना अच्छा। यहाँ किसी के साथ कोई झगड़ा ही नहीं होता!'

इतना सुनते ही मीत ने नजरें उठा कर देखा। उसका मौन टूटा।

‘भाई, तुम इतना अधिक अकेले पड़ गए थे और मुझे मालूम ही नहीं पड़ा। तुम अकेले पड़ गए थे और मैं अकेले रहने का प्रयास कर रहा था।’

मीत की बातों में रहस्य था। पर मुझे अभी मीत को नहीं मिराज को संभालना था। वह लक्ष्य चूक न जाऊँ इसलिए मैंने खुद को और मिराज को डायवर्ट होने से रोक लिया।

‘तुम्हारी बात एकदम सच है, मिराज। यह एक ऐसी बनावटी दुनिया है जो हमें अपनी वास्तविक दुनिया से खींचकर दूर ले जाती है। जिसके कारण जीवन में जब हमारी अपेक्षा के विपरित कुछ घटित होता है या किसी कड़वे सच का सामना करना पड़ता है तब परिस्थिति से सामंजस्य कर खुद को स्थिर रखने की शक्ति हममें होती ही नहीं। टी.वी., मूवी, गेम्स, सोशल मीडिया और इन्टरनेट का मायाजाल हमारी सभी शक्तियों को खत्म कर देता है। मन को निर्बल एवं पंगु बना देता है।’

‘मुझे लगा था कि विश्रुत के जाने के बाद तुम परम के साथ काफी अटैच हो गए हो। पर उसका तुम पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा इस बात का तो मुझे अंदाजा ही नहीं था।’ मीत की आवाज में नाराज़गी झलक रही थी।

‘सिर्फ परम ही नहीं था मेरे जीवन में....’

मिराज बोलते-बोलते रुक गया। चेहरे पर थोड़ी बेचैनी उभर आई। ये बेचैनी उसकी अपनी भूलों के लिए थी या मीत के लिए ये मैं समझ नहीं पायी।

‘मिराज, आज तुमने जिस साहस से अपने भूतकाल में झाँकने की हिम्मत की है उसे अप्रीशिएट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। पर आज इस चेप्टर के जितने पात्रों को ज़ाहिर कर दोगे उतना हल्कापन महसूस करोगे, ऐसा मुझे विश्वास है।’ मैंने मिराज को हिम्मत देते हुए कहा।

मिराज ने सहमति में सिर हिलाया और बात आगे बढ़ायी।

एक दिन परम ने मुझे फोन करके सोसायटी के बाहर एक पार्क के पास मिलने आने के लिए कहा। जब मैं वहाँ पहुँचा, तब उसके साथ लगभग 20 वर्ष की उम्र का एक लड़का भी बैठा था।

‘यह निखिल है। मेरा नया फ्रेन्ड।’

‘हाय।’ निखिल ने मेरी ओर हाथ बढ़ाया।

‘हाय।’ मैंने उसके साथ हाथ मिलाते हुए कहा।

‘तू कह रहा था न कि मैं बहुत दिनों से दिखाई नहीं दे रहा हूँ उसका कारण यही है।’ परम ने स्पष्ट करते हुए कहा।

‘मीन्स?’ मैंने ने आश्चर्य से पूछा।

‘ये मेरे पापा के मित्र का बेटा है। कुछ दिन पहले हम दोनों का परिवार मनाली घूमने गया था, यह तो तुम्हें मालूम है न?’

‘हाँ।’

‘ये लोग पहले बड़ौदा में रहते थे। पर अब इसके पापा और मेरे पापा बिज़नेस पार्टनर बन गए हैं और अब ये लोग यहीं शिफ्ट हो गए हैं।’ परम के चेहरे पर कुछ अलग ही प्रकार का आनंद था।

‘ओह, देट्स नाईस।’

‘यह यहाँ एकदम नया है, इसलिए मैं रोज इसके साथ बाहर जाता हूँ। इसके पास कार का लायसेन्स है।’ परम को देखते ही लगा कि वह निखिल से बहुत प्रभावित हुआ है।

निखिल मुझे ओवर स्मार्ट लगा। मुझे उससे मिलकर ज्यादा खुशी नहीं हुई।

वेकेशन के दिन मौजमस्ती में ही बीत रहे थे। परम और निखिल के साथ समय बीताने के अवसर भी बढ़ते जा रहे थे। एक दिन उन लोगों ने मूवी देखने जाने का प्लान बनाया।

‘तुम कभी निखिल से मिले हो? मैंने मीत से पूछा।

‘नहीं।’

‘दीदी, उसके पास समय ही नहीं था। वह घर में कम और बाहर ज्यादा रहता था। और जो घर में थे वे सब मेरे पास होते हुए भी पास नहीं थे।’ मिराज की आँखों में मीत के लिए शिकायत और मम्मी-पापा के लिए असंतोष झलक रहा था।

‘मिराज, जो बीत गया उसे याद करके दुःखी होने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि तुम जिनसे दुःखी हुए हो, वे सब आज तुम्हारे लिए दुःखी हो रहे हैं। तुम्हें खुश देखकर ही उनके व्यथित मन को चैन मिलेगा।’

मिराज का मौन इस बात का संकेत दे रहा था कि उसे मेरी बात समझ में आ रही है। मेरी तरफ स्थिर उसकी आँखें एक पुराने चेप्टर के नये पेज को रिवाईन्ड कर देखने की तैयारी में थी।

(11)

'मिराज, आज शाम के शो में सीट खाली है। मैंने ऑनलाइन देख लिया है। तुम कहो तो टिकट बुक करवा लूँ।' निखिल ने पूछा।

'मूवी??? पर मुझे पहले घर में पूछना पड़ेगा।'

'अभी फोन करके पूछ लो ना।' परम ने शार्टकट तरीका बताया।

'नहीं, ऐसी सब बातों का फोन पर जवाब नहीं मिल सकता।'

यह सुनकर परम और निखिल, दोनों, एक दूसरे की ओर देखकर हँसने लगे। उन दोनों के लिए यह बात मानो एक मज़ाक था। पर मेरे लिए यह बात आग में घी डालने के समान थी।

टीन एज में आवेश और उत्सुकता का ऐसा वेग होता है कि जो दूसरों के पास है वह खुद के पास भी होना ही चाहिए। वह उनकी ज़िद बन जाती है। परम और निखिल के पास ऐसा कुछ था जो मुझे भी चाहिए था... फ्रीडम।

'मम्मी, आज मेरे फ्रेन्ड्स मूवी देखने जा रहे हैं। मैं भी जाऊँ?'

घर में पैर रखते ही मैंने मम्मी से सीधा पूछा।

'मूवी देखने?' यूँ अचानक पूछे गए प्रश्न से मम्मी को भी आश्चर्य हुआ।

'हाँ, वैसे भी पापा हमें ज्यादा मूवी देखने नहीं ले जाते हैं।'

'जो देखने लायक होते हैं, वह देखने तो ले ही जाते हैं न?'

'हाँ, लेकिन उनके अनुसार साल भर में मुश्किल से एक या दो पिक्चर ही ऐसे होते हैं जो देखने लायक हों।'

'मिराज, तेरे पापा और मुझे दूसरे लोगों की तरह वल्गर पिक्चर देखना पसंद नहीं है। तुम तो जानते ही हो न?'

'हाँ, मुझे पता है। पर सभी पिक्चर कोई वैसे नहीं होते। मेरे फ्रेन्ड्स जब पिक्चर की बातें करते हैं तब मैं अनाड़ी की तरह बैठा रहता हूँ।'

'मिराज, हमें ऐसी बातों में दूसरों के साथ कम्पैरिज़न नहीं करना चाहिए। बेटा, तुममें जो अच्छे गुण हैं, उसे संभालकर रखने की जिम्मेदारी तुम्हारी है।'

'मम्मी, पापा मुझे कभी समझ नहीं पाएँगे। आप तो समझो।' मम्मी को इमोशनली ब्लेक मेल करके खुद की ज़िद पूरी करवाने के लिए मैंने बात बदल दी।

मीत वहीं मौजूद था। मम्मी ने उसकी ओर देखा।

‘अब वह अपना ध्यान खुद रख सकता है। वेकेशन है तो जाने दीजिए। फिर तो उसे पढ़ाई में से सिर उठाने की भी फ़ुरसत नहीं मिलेगी।’ मुझे इस बात की कल्पना भी नहीं थी कि मीत मेरे फेवर में मम्मी को समझाएगा।

मीत भावुक होकर मिराज को देख रहा था, इस बात से अनजान मिराज बीते हुए चेप्टर के पेज में खोया हुआ था।

‘ठीक है, इस बार हो आ, पर हर बार ऐसा नहीं चलेगा।’ मम्मी ने सख्ती से कहा।

‘मैं हर बार जाना भी नहीं चाहता। वैसे भी दस दिन के बाद स्कूल खुल जाएगी फिर कहाँ जाऊँगा?’ लेकिन ऐसा बोलते वक्त मेरे मन में तो यही था कि बाद का बाद में देख लेंगे।

‘ठीक है। कितने बजे का शो है?’

‘सवा पाँच का।’

‘टाइम पर घर वापस आ जाना। वहाँ से और कहीं मत जाना। समझ गया?’

‘जो हुकुम, ज़नाब।’ मैंने सर झुकाकर मम्मी को सलाम करते हुए स्टाइल में कहा।

‘बस, अब ज्यादा नाटक करने की ज़रूरत नहीं है।’

इस तरह से पहली बार फ्रेन्ड्स के साथ मूवी जाने का मौका मिला था। परम और निखिल जैसे हाई-फाई फ्रेन्ड्स की कम्पनी थी इसलिए मैंने अपने फेवरेट ब्रान्डेड कपड़े आलमारी से निकाले। नाईकी के शूज़, गॉगल और स्ट्रांग परफ्यूम लगाकर अप टू डेट तैयार होकर मैं परम और निखिल के साथ शहर के सबसे बड़े मॉल में पहुँच गया। शो शुरू होने में दस मिनट का समय था। तीनों फटाफट टिकट काउन्टर पर पहुँचे। हम जो मूवी देखने पहुँचे थे उसकी सभी टिकटें बिक चुकी थी।

‘ओह नो।’ परम ने उदास होकर कहा।

‘अरे, इट्स ओ.के। कोई दूसरी मूवी देख लेते हैं।’ निखिल ने तुरंत ही परम को आश्वासन दिया।

‘हाँ, चलेगा।’ मैंने भी तुरंत हाँ कर दी। मम्मी के पास कितना गिड़गिड़ाया, इतनी तैयारियाँ करके आने के बाद मूवी देखे बिना ही वापस लौटने की मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं थी।

‘अरे यार, लेकिन मैं तो यही मूवी देखना चाहता था। पहले से ही ऑनलाइन बुकिंग करवा लिया होता तो अच्छा होता।’ परम को अब भी अफसोस हो रहा था।

‘अरे, कल फिर से आएँगे। अभी कोई दूसरी देख लेते हैं।’ निखिल ने उसका मूड ठीक करने के लिए कहा।

‘कल का किसे पता है यार। अभी जो टिकट मिल रही है वही ले लेते हैं।’ कौन सी मूवी है, कैसी है, वह जाने बिना, कुछ भी करके मूवी तो देखनी ही है ऐसा मेरा आग्रह था।

निखिल फिर से टिकट काउन्टर पर गया। वह तीन टिकटें लेकर वापस आया। बाहर की दुनिया का आनंद लेने के बजाय खुद को जो फ्रीडम का अनुभव हो रहा था उसका आनंद लेने में, मैं ज्यादा मशगूल था। हम तीनों स्क्रीन थ्री के बाहर खड़े थे। वहाँ जो पब्लिक खड़ी थी उसमें ज्यादातर यंगस्टर का ही क्राउड था।

‘मम्मी-पापा मुझे कितने रिस्ट्रिक्शन में रखते हैं। ये सब कैसे अकेले इन्जॉय कर रहे हैं।’ उन लोगों को देखकर मैं मन ही मन सोचने लगा।

मूवी से ज्यादा मैं अपना फ्रीडम इन्जॉय कर रहा था। वैसे तो मूवी कोई बहुत अच्छी नहीं थी लेकिन थीयेटर के अंधेरे में मैं अपनी हालत आसानी से छिपा पाया। निखिल और परम कभी-कभी, बीच-बीच में कमेन्ट करते। मैं नकली स्माइल देकर उनके जैसे होने का ढोंग करता रहा। कुछ सीन में कुछ लोग सीटी भी मारते तब

निखिल भी एक्साइट होकर सीटी बजा देता। परम भी उसकी ओर शरारत भरी मुस्कान देता। मेरे लिए यह सब बहुत ही ऑकवर्ड था। जो लोग ऐसा करते, उन्हें मैं हमेशा चीप और वल्गर मानता था। ऐसे लोगों की तरफ तो मुझे देखना तक पसंद नहीं था। आज मेरे साथ बैठे मेरे अपने फ्रेन्ड्स ही ऐसा बरताव कर रहे थे। फिर भी कोई भी रिएक्शन देने में असमर्थ था। मेरे अंतर्मन की स्थिति पूरी तरह से डांवाडोल हो रही थी। मेरे भीतर दो पक्ष खड़े हो गए थे। एक पक्ष इन सबका विरोध कर रहा था और दूसरा पक्ष ये सब तो नार्मल बातें हैं, इसे ही लोग इन्जॉयमेन्ट कहते हैं, मैंने खुद अपने आप को कुछ ज्यादा ही मर्यादा के बंधन में बांध रखा है.... ऐसे अनेक प्रकार के तर्क-वितर्क कर रहा था। मैं जबरदस्ती अपने आप को उनके जैसा दिखाने का प्रयत्न कर रहा था।

'ऐसा क्यों?' मैंने मिराज से पूछा।

'इसलिए कि कहीं मेरा एबनॉर्मल बरताव देखकर वे सब मुझे 'ऑड मेन आउट' में न गिने।

'फिर?'

मूवी के असभ्य सीन्स से मेरा मन स्तब्ध और शरीर असहज हो गया था। मूवी खत्म होने के बाद जब सभी आराम से खड़े

होकर बाहर निकलने लगे तब मुझसे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। किसी के साथ नज़र मिलाने में खुद को असमर्थ पा रहा था। मैं नीचे देखकर आगे चलने लगा। मेरा मन मुझे ऐसे काट खा रहा था मानो मैंने कोई गुनाह किया हो।

परम और निखिल बिल्कुल नॉर्मल दिख रहे हैं। तो फिर मुझे ही ऐसा क्यों हो रहा है? इस प्रश्न ने मुझे हिला दिया। क्या वास्तव में मुझमें ही कोई कमी है? यह प्रश्न मुझे खूब सताने लगा। शायद अंदर ही अंदर मैं खुद को कोसने लगा था। मेरे अंदर इतना ज्यादा विरोधाभास चल रहा था जिसे शांत करने के लिए मेरे पास न तो सही समझ थी और न ही योग्यता। मैं अनजाने में ही अपने आप को समय और संयोगों के प्रवाह में बहने की अनुमति दे चुका था।

‘चलो, पिज़ा हट जाते हैं।’ तभी परम ने कहा।

‘यस, लेट्स गो। मुझे भूख लगी है।’ निखिल ने भी परम की हाँ में हाँ मिलाई।

‘तुम क्या कहते हो मिराज?’ परम ने पूछा।

‘वैसे तो जाने में कोई हर्ज़ नहीं लेकिन घर पहुँचने में लेट हो जाएगा।’ मेरा चेहरा फिका पड़ गया था।

‘लेट नहीं होगा। बस आधा घंटा ज्यादा लगेगा।’ परम ने मेरे

कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

‘कम ऑन मिराज। डोन्ट बी मम्मा’स बेबी।’

‘ओ.के.।’ सबके सामने मेरा खराब न दिखे इसलिए मैंने हामी भर दी। वैसे भी परम मुझे हमेशा मना ही लेता था।

‘आज सभी को मेरी ओर से पार्टी।’ परम ने अपना वोलेट बाहर निकाला और पिज़्ज़ा आर्डर करने आगे बढ़ा।

वह आर्डर करके वापस लौटे तब तक मैं और निखिल जाकर एक खाली टेबल पर बैठ गए। किसी ने निखिल को आवाज लगाई।

‘हाय.....’ अठारह–उन्नीस वर्ष की एक लड़की ने आकर निखिल को एक धौल मारा।

‘शार्ट येलो ड्रेस, हाय हिल्स, कंधे पर स्लिंग बैग, सिर पर गॉगल, गोल्डन हाइलाइट किए हुए बाल और डार्क कलर की लिपस्टिक वाली इस लड़की का निखिल के साथ क्या संबंध हो सकता है?’ उसे देखकर मैं सोचता ही रहा गया।

‘हेय..... शिवांगी।’ निखिल ने उससे हाथ मिलाया।

‘गुड टू सी यू आफ्टर अ लोंग टाइम।’ शिवांगी ने निखिल से गले मिलते हुए कहा।

‘तुम यहाँ?’

‘हाँ, जैसे तुम बड़ौदा छोड़कर यहाँ आए हो वैसे मैं भी...’ शिवांगी के चेहरे की रेखा थोड़ी बदल गई।

‘छोड़कर?’

‘जाने दो न.... इट्स अ लोंग स्टोरी।’

‘यू मीन तुम घर छोड़कर...???’

‘नोट एक्ज़ेक्टली बट सम थिंग लाइक दैट... आइ एम स्टेयिंग विथ माइ फ्रेन्ड।’ शिवांगी ने पीछे के टेबल पर बैठी हुई दो-तीन लड़कियों में से एक लड़की की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘ओह... देट्स सेड।’

‘नो, देट्स एब्सल्यूटली कूल।’

इतने में परम पिज़ा का आर्डर करके आ गया।

‘मीट परम, माय बेस्ट फ्रेन्ड इन दिस न्यू सीटी।’

‘हाय!’ शिवांगी ने उससे हाथ मिलाया।

‘यह मिराज है।’ निखिल ने मेरी ओर देखते हुए कहा।

मैं एकटक शिवांगी को देख रहा था क्योंकि उसे देखकर मेरे मन में कई सवाल उठ रहे थे। लेकिन जैसे ही शिवांगी ने मेरी ओर

देखा मेरी नज़रें एक पल के लिए झूक गई। पता नहीं क्यों ब्लू कलर के लेंस वाली उसकी आँखों की नखरे वाली वृत्ति और बेशर्मी मेरी आँखें बर्दाश्त नहीं कर पायी।

'हाय, मिराज। नाइस नेम।' शिवांगी ने मेरी ओर हाथ बढ़ाया।

'हाय।' मैंने फिर से उसकी ओर देखा और अपना हाथ आगे बढ़ाया।

अचानक मिराज आगे बोलते-बोलते रुक गया। मेरी ओर देखते हुए उसकी नज़र मीत पर पड़ी और फिर झूक गई।

'मिराज, मुझे तुम पर गर्व है। मैं भले ही अपने आप को एक्सट्रोवर्ट समझता हूँ पर तुम्हारे जैसी ओपननेस तो मुझमें भी नहीं है। तुम्हारी ट्रान्सपेरेन्सी पर आज मुझे बहुत रिस्पेक्ट हो रहा है। मुझे यह नहीं देखना कि तुमने सही किया या गलत। पर तुम पर जो बीती उसका तुम खुलकर वर्णन कर पा रहे हो यह देखकर मुझे आज ऐसा लग रहा है कि तुम मेरे बड़े भाई हो।' मीत की आँखें नम हो गई।

'मिराज, मीत को तुमसे बेहतर कौन जानता है? वह बहुत ही फ्लेक्सिबल और खुले विचारों वाला है। इसलिए जो कुछ भी हुआ वह तुम निश्चिंत होकर बोलो।' मिराज आगे की बात बताए इसलिए मैं और मीत चुप हो गए।

‘मैंने आज तक इतनी माडर्न लड़की के साथ कभी भी बात नहीं की थी। हेन्ड शेक करके मुझे एक अलग ही प्रकार की फीलिंग हुई। निखिल मुझसे उम्र में छः साल बड़ा था। यह बात मैं भूल ही गया। मुझे लगने लगा कि जो मौज़-मस्ती निखिल करता है और जो छूट परम को है वह सब आज के जमाने में नार्मल बात है और अब मुझे भी चेन्ज हो ही जाना चाहिए।

नकली स्माइल वाले मास्क के पीछे मेरे मन में सतत घमासान चल रहा था। चाहे किसी भी कीमत पर लेकिन अब मुझे बदलना था। औरों जैसा बनना था। मेरी दुनिया मानो परम और निखिल के व्यक्तित्व तक सीमित हो गई थी। मुझे अपना व्यक्तित्व ही बदल डालना था।’

‘आइ मस्ट से, योर फ्रेन्ड्स आर वेरी क्यूट... स्कूल बॉय्स।’ इतना बोलकर शिवांगी हँस पड़ी। इसे कॉम्प्लिमेन्ट समझें या मज़ाक यह बात परम और मुझे समझ में आए उससे पहले ही शिवांगी की फ्रेन्ड वहाँ आ गयी।

‘कम ऑन। शो का टाइम हो गया है।’

‘ओह, यस...’ शिवांगी ने अपने हाथ पर बंधी हुई चमकती, बड़ी रिस्ट वाच में देखा।

‘आप लोग भी मूवी देखने आए हो?’ निखिल पूछता उससे पहले ही परम ने पूछ लिया।

‘यस। बट सॉरी... वी आर गेटिंग लेट।’ शिवांगी ने परम की ओर स्माइल करके उसके गाल पर हल्की चपत लगाते हुए कहा।

‘पहली ही मुलाकात में ऐसा बरताव?’ मुझे मन ही मन बहुत आश्चर्य हुआ।

‘इट्स ओ.के. नाइस मीटिंग यू। वी विल मीट अगेन। राइट निखिल?’ परम ने निखिल की ओर देखते हुए कहा।

मैं जानता था कि परम किसी लड़की से बात करने का कोई मौका नहीं छोड़ता पर फिर भी उस वक्त मुझे उसके प्रति थोड़ी घृणा होने लगी।

‘यस ऑफ कोर्स। अब वैसे भी इसे पता है कि मैं यहीं हूँ। इसलिए ये मुझे परेशान किए बिना छोड़ेगी नहीं।’ निखिल ने हँसते-हँसते कहा।

शिवांगी भी हँस पड़ी। देर हो रही थी इसलिए उसकी फ्रेन्ड उसका हाथ पकड़कर खिंचने लगी।

‘निखिल, गिव मी योर कॉन्टेक्ट नम्बर। आइ विल केच यू लेटर।’

‘श्योर।’ दोनों ने अपना कॉन्टेक्ट नम्बर एक्सचेंज किया।

‘बाय एवरीवन।’ शिवांगी और उसकी फ्रेन्ड ने हाथ हिलाया और वहाँ से जाने लगे।

‘नाइस मीटिंग यू।’ परम ने एक बार फिर से कहा।

शिवांगी ने पीछे मुड़कर उसे एक स्माइल दी।

‘तुम शिवांगी को कैसे पहचानते हो?’ हमें ले जाने के लिए परम का ड्राइवर मॉल की पार्किंग में आ चुका था। घर लौटते समय रास्ते में परम ने निखिल से पूछा।

‘शी वॉज इन माय कॉलेज।’

‘ओह...’

‘शी वॉज बिहाइन्ड मी। बट आइ वॉज नॉट मच इन्टरेस्टेड इन हर।’ निखिल ने अपने सिर पर हाथ घुमाते हुए कहा।

‘व्हाय? शी इज सो नाइस।’

‘शी इज नॉट ऑफ माइ टाइप। शी इज जस्ट फॉर टाइम पास।’

‘टाइम पास? देन व्हाट इज योर टाइप?’

परम के सवाल का कोई जवाब नहीं देते हुए निखिल ने सिर्फ एक स्माइल दी।

‘उसका एक ब्वाय फ्रेन्ड भी था, जो काफी समय से यहाँ शिफ्ट

हो चुका है। लगता है यह भी उसी के पीछे यहाँ आ गई है।'

'ओह.... रियली?' परम उदास हो गया।

'तुम्हारी भी गर्लफ्रेन्ड तो होगी ही न?' परम ने निखिल से पूछा।

'यह भी कोई पूछने वाली बात है?' निखिल ने हँसते हुए कहा।

उत्सुकतावश मैं उन लोगों की बातें सुन रहा था।

इतने में ड्राइवर ने ब्रेक मारकर कार साइड में रोक दी। मेरा घर आ गया था। उस दिन मैंने निखिल का एक नया रूप देखा। निखिल और परम की मानसिकता को समझने में मैं इतना खो चुका था कि हम कब घर पहुँच गए इस बात का ध्यान ही नहीं रहा।

'मिराज... तुम्हारा घर आ गया।' परम ने मुझे हिलाया।

'ओह.... यस।'

'कहाँ खो गए?' परम ने हँसते हुए पूछा।

'कहीं नहीं। चलो बाय। एंड थैंक्स परम।'

'अरे.... मेन्शन नॉट।'

(12)

परम और निखिल जा चुके थे लेकिन उनकी बातें अभी भी मेरे दिमाग में घूम रही थी। कौन होगी निखिल की गर्ल फ्रेन्ड? उसके टाइप की लड़की कैसी होगी? शिवांगी तो इतनी अधिक माडर्न है फिर भी निखिल को उसमें इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं है? परम की भी तो दो चैट फ्रेन्ड्स हैं। मुझे यह सब सोचने की क्या ज़रूरत है? छोड़ो उन्हें जो करना है करें! मुझे उससे क्या लेना-देना? ...मेरे अंदर उठ रहे इन प्रश्नों को हल करने का प्रयास स्वयं ही कर रहा था। फिर भी विचार थम नहीं रहे थे। मुझे कोई लेना-देना नहीं था। पर फिर भी कुछ तो था जो मुझे सोचने से रोक नहीं पा रहा था।

एक दिन मुझे क्या सूझा कि मैं मीत के पास गया।

'मीत, तुम्हारी कोई गर्ल फ्रेन्ड है क्या?' सवाल पूछते वक्त मैंने यूँ दिखाया मानो उससे मस्ती कर रहा हूँ। पर वास्तव में मुझे अपनी उलझन का समाधान चाहिए था।

अचानक पूछे गए इस प्रश्न से मीत ज़रा भड़क गया। लेकिन अगले ही सेकेन्ड उसने हँसते हुए मेरे कंधे पर हाथ रखा।

'गर्ल फ्रेन्ड यानी क्या ये तो बता मुझे?'

'गर्ल फ्रेन्ड यानी गर्ल फ्रेन्ड... डोन्ट ट्राय टू बी सो इनोसन्ट।'

'नो, आइ एम सीरियस। मुझे तुमसे समझना है कि गर्ल फ्रेन्ड का अर्थ तुम्हारे लिए क्या है? लोकभाषा वाली मज़ा करने के लिए या खुद को औरों जैसा प्रूव करने के लिए गर्ल फ्रेन्ड या फालतू टी.वी. सीरियल्स और मूवी देखकर अनुकरण करके बनाई जाने वाली गर्ल फ्रेन्ड या फिर कोई फ्रेन्ड ही हो पर वह गर्ल हो, ऐसी गर्ल फ्रेन्ड?'

'मैं तुम्हें एक सिम्पल सा सवाल पूछ रहा हूँ, उसके बदले तुम मुझसे इतने सारे सवाल क्यों कर रहे हो? तुम बताना नहीं चाहते तो कोई बात नहीं, रहने दो।' मैं भड़क उठा।

'देखो मिराज, गर्ल में फ्रेन्ड ढूँढे और अपनी मर्यादा में रहे ऐसा हो तो ठीक है पर फ्रेन्ड में गर्ल को ढूँढे तो परिणाम बदल जाता है।'

'ऊटपटाँग जवाब मत दो मीत। मुझे कुछ समझ में नहीं आया।'

'शांति से सोचना तो समझ में आ जाएगा।'

मैं इस बारे में उससे ज्यादा आर्ग्युमेन्ट्स करने की हालत में नहीं था इसलिए वहाँ से जाने लगा।

‘मिराज, मुझे एक अच्छी बात याद आयी है, बताऊँ?’ मैंने मिराज को यहाँ रोका।

‘प्लीज दीदी, बताओ न।’

‘रावण ने सीता जी का हरण किया उसके बाद जब भगवान राम और लक्ष्मण उन्हें जंगल में ढूँढने निकले थे, तब उन्हें रास्ते में गहने पड़े मिले। श्रीराम ने एक-एक गहना उठाकर लक्ष्मण से पूछा, ‘लक्ष्मण, ये तुम्हारी भाभी की चुड़ियाँ है?’

‘मुझे नहीं पता।’ लक्ष्मण ने जवाब दिया।

‘इसे देखो तो, ये तुम्हारी भाभी के गले का हार है?’

‘मैं नहीं जानता भाई।’

‘इतने सालों से हम एक साथ जंगल में वनवास कर रहे हैं फिर भी क्या तुम अपनी भाभी के गहने नहीं पहचानते!’ श्रीराम ने आश्चर्य से पूछा।

लक्ष्मण ने कोई जवाब नहीं दिया।

‘यह देखो, ये पायल तो तुम्हारी भाभी के ही हैं न?’

‘हाँ, ये तो भाभी के ही हैं।’ लक्ष्मण ने पहली बार हाँ कहा।

यह सुनकर श्रीराम को अचरज हुआ। उन्होंने लक्ष्मण से पूछा,

लक्ष्मण तुम्हें सीता के एक भी गहने की पहचान नहीं तब फिर तुमने ये पायल कैसे पहचान लिए?'

'भाई, मैंने कभी भी भाभी की ओर देखा ही नहीं है। हाँ पर मैं रोज़ माँ समान भाभी के चरण स्पर्श करता हूँ इसलिए मैंने उनके पायल देखें हैं और इसीलिए मुझे भाभी के अन्य कोई गहनों की पहचान नहीं है।'

'कितनी अद्‌भुत थी लक्ष्मण की मर्यादा और भाभी के प्रति उनकी विनम्रता। हम उसी आर्य प्रजा के वंशज हैं। संयम, मर्यादा, पवित्रता, खानदानी...ये सब तो हमारी जन्मघूँटी में ही हमें मिल जाते हैं। पर आज हमारी क्या दशा हो गई है। संस्कार की कीमत चने-मुरमुरे के बराबर हो गई है। और जिसने उन्हें संभालकर रखा है उन्हें इस बात का अफसोस है।' मैंने कहा।

मिराज ने नजरें झुका लीं।

'मिराज, तुमसे भी यही भूल हो गई। अपने संस्कारों को तुम खुद मिट्टी में मिलाने के लिए तैयार हो गए।' मेरी ऐसी स्पष्ट बात सुनकर उसका चेहरा गंभीर हो गया।

'दीदी, मुझे अब समझ में आ रहा है कि मुझसे कैसी भूल हो गई।'

‘तुम्हें पता है संयुक्ता, मिराज में एक क्वालिटी ऐसी है जो मुझसे भी अच्छी है।’ मिराज आगे कुछ बोले, उससे पहले मीत बोल पड़ा।

‘कौन सी?’

‘खुद की भूलों को स्वीकार करने की शक्ति। भले ही परिस्थितियों और व्यक्तियों का सामना करने में वह पीछे रह गया लेकिन **जो इंसान खुद की भूलों को स्वीकार कर उसे सुधारने का प्रयत्न करता है, एक दिन वह अपनी भूलों को खत्म करके ही रहता है।**’ मीत मिराज को सेल्फ नेगेटिविटी से निकालकर उसे पॉज़िटिव बताने का प्रयत्न कर रहा था।

‘हमारी नौका की पतवार हमारे हाथ में होनी चाहिए, दूसरे के हाथ में नहीं।’ मैंने मिराज को स्ट्रांग लेकिन सहानुभूति वाले शब्दों में कहा।

‘दीदी आप सच कह रही हो। मेरी नौका की पतवार मेरे फ्रेन्ड्स के हाथों में थी। मैं नहीं जानता था कि उस दिन का अनुभव मेरे लिए ज़रूरत से ज्यादा हाई डोज़ साबित होगा।’ कहते हुए मिराज ने बात आगे बढ़ाई।

जब मैं घर पहुँचा तब मम्मी ने डिनर तैयार ही रखा था।

‘चलो, खाना खाने आओ।’ मम्मी ने आवाज लगाई।

मैं और पापा खाना खाने बैठे। मैं घबरा रहा था कि पापा के सामने यदि मम्मी ने पिक्चर के बारे में पूछा तो....! मैंने जैसे-तैसे थोड़ा खाया और फिर उठ गया।

'मिराज, तुमने ठीक से खाया नहीं?'

'बस मम्मी, आज ज्यादा भूख नहीं है।'

'बाहर कुछ खाया है क्या?' जिस टॉपिक के बारे में मैं बात करना टाल रहा था, मम्मी ने उसी पर प्रश्न पूछ लिया।

'नहीं, कुछ खास नहीं। वह तो परम और निखिल को भूख लगी थी इसलिए उन लोगों ने पिज़ा आर्डर किया था।' मन में तो तय किया था कि मैं सच नहीं बताऊँगा। पर पता नहीं क्यों मुझसे झूठ बोला ही नहीं गया।

'दीदी, मैं जल्दी से झूठ नहीं बोल सकता। वह मेरी वीकनेस है। और सच बोलने के बाद मम्मी की डाँट सुननी पड़े तो उसकी तैयारी मैं पहले से ही रखता। मैं और मीत जब छोटे थे तब से हमें घर में सच बोलना ही सिखाया गया है। वही संस्कार उस दिन मेरे आड़े आ गए।'

मीत शांत बैठा मिराज को देख रहा था। पर उसकी आँखें और उसकी खिंची हुई भौंहे इस बात का विरोध दर्शा रही थी।

‘अरे, ये तो वीकनेस नहीं बल्कि स्ट्रैन्थ है। भले अभी लोगों को इसकी वैल्यू न हो पर जो रियल डायमन्ड होता है न वह एक न एक दिन कोयले में अलग से उभर ही आता है।’ मैंने मिराज को उसका पॉज़िटिव पॉइन्ट बताया।

‘मुझे तो अपने में कोई अच्छी बात दिखाई ही नहीं देती।’ वह नेगेटिव ही था।

‘तुममें और तुम्हारी फैमिली में ढ़ेर सारी अच्छी बातें हैं। तुम्हें और मीत को बचपन में जो संस्कार मिले हैं, वे बाधक नहीं है। यही संस्कार लाइफ के रनवे पर दौड़ने में काम आएँगे।’

‘लाइफ का रनवे?’

‘तुमने प्लेन को टेक ऑफ करते हुए देखा है न? शुरुआत में स्पीड कम होती है पर फिर वह स्पीड पकड़ता है और जमीन से टेक ऑफ कर लेता है। संस्कार पकड़कर आगे बढ़ना भले ही आसान नहीं पर वे साथ होंगे न, तो टेक ऑफ करके ऊपर उठ सकोगे। वे संस्कार ही हैं जो कुसंग के वातावरण में स्पीड ब्रेकर का काम करते हैं।’

मीत की बातों को मिराज उतने ही ध्यान से सुन रहा था जितनी की मेरी।

‘तुमने घर में सच बता दिया उसके बाद क्या हुआ?’

‘...उसके बाद?’ मिराज ने कुछ सेकेन्ड का पोज़ लिया फिर बात शुरू की।

‘यह निखिल कौन है?’ पापा ने तुरन्त ही पूछा।

‘वह परम का फ्रेन्ड है।’ मैंने जवाब दिया।

‘परम के पापा के नए बिज़नेस पार्टनर का बेटा है। बड़ौदा से उनकी फैमिली यहाँ शिफ्ट हो गई है।’ मम्मी ने विस्तार से जवाब दिया।

‘आपको कैसे पता चला?’ मम्मी की बात सुनकर मैं चौंक गई।

‘बगल वाले केतकी आंटी परम की मम्मी को बहुत अच्छी तरह पहचानते हैं। वे बता रहीं थीं।’

‘ओह।’

दो मिनट के बाद मैं खड़ा हुआ।

‘मिराज....’ मैं रूम की ओर जा ही रहा था कि पापा ने मुझे बुलाया।

‘हँ।’

‘स्कूल खुलने में अब एक सप्ताह भी बाकी नहीं है, याद है न?’

‘हाँ।’ मैंने अनमना सा जवाब दिया।

‘तुम्हारे नोट बुक्स, टेक्स्ट बुक लेने के लिए स्कूल कब जाना है?’ मम्मी ने पूछा।

‘पता नहीं। परम से पूछ लूँगा।’

‘आजकल तुम्हारा ध्यान किसी भी बात में क्यों नहीं होता? कहाँ खोए रहते हो? परम से तो तुम आज ही मिले थे। तब पूछ लेना था?’ मम्मी की बातें मुझे किचकिच जैसी लगी।

‘याद नहीं रहा।’ मैंने लापरवाही से कह दिया।

मेरा बदला हुआ बरताव देखकर पापा भी थोड़े कठोर हो गए।

‘अब कल बिना भूले पूछ लेना।’

‘हाँ।’ मैं चुपचाप अपने रूम में चला गया।

मैं रूम में जाकर थोड़ी देर यूँ ही बैठा रहा। दिन भर की घटनाएँ रिवाइन्ड होकर मेरी आँखों के सामने तैर रही थी। निखिल के प्रति मुझे अभाव हो गया था। ऐसी थर्ड ग्रेड मूवी की टिकट लेना, मूवी में असभ्य सीन में सीटियाँ मारना, पिज़्ज़ा हट में शिवांगी जैसी लड़की के साथ अच्छा बरताव करना और कार में उसे ही ‘टाइम पास गर्ल’ का टाइटल देने वाले निखिल की ओरिजनल पर्सनालिटी क्या है? यह समझना मुझे कॉम्प्लिकेटेड लगा। अब तक हेन्डसम दिखने वाला और ब्रान्डेड कपड़े पहनकर बढ़िया इंग्लिश बोलने वाले निखिल की

पर्सनालिटी की दूसरी साइड देखने के बाद मुझे पहली बार ऐसा लगा कि निखिल से दूर रहना चाहिए। मन में चल रहे इस घमासान ने मुझे थका दिया था। मैं जल्दी सो जाना चाहता था लेकिन नींद भी कैसे आती? बहुत कोशिशों के बावजूद मन अशांत था। विचारों पर ब्रेक ही नहीं लग रहा था। 'सच' और 'झूठ' का अंतर्द्वंद मन में सतत चल रहा था। मुझे नहीं मालूम था कि यह सिलसिला कितना लंबा चलने वाला है। अंत कहाँ होगा।

अगले दिन मैंने परम से मिलने जाना टाल दिया क्योंकि वह और निखिल अक्सर साथ ही होते हैं। पिछले दिन के अनुभव से मैं डिस्टर्ब था। मैं लैपटॉप पर क्रिकेट की गेम खेलने बैठ गया। उससे बोर होकर वाट्सएप शुरू किया। उसमें भी उब जाने पर इन्स्टाग्राम खोला।

आजकल सभी को इन्स्टाग्राम पर सेलिब्रिटीस को फॉलो करने का बड़ा क्रेज़ है। मैं भी अपने फेवरिट क्रिकेटर्स, फूटबाल प्लेयर्स, बॉक्सर्स और एक्टर्स को फॉलो करता था। बॉलीवुड और डॉलीवुड एक्टर्स के प्रोफाइल देखने में मुझे आश्चर्य और बेचैनी के बीच कहीं मज़ा भी आ रहा था। उनकी चकाचौंध दुनिया की तस्वीरों के बीच, कुछ नहीं देखने लायक फोटोस भी सामने आए। पहले तो मैंने स्क्रीन

पर से नजरें हटा ली और वह पेज बंद कर दिया। पर जिस तरह एक बार चिकनी मिट्टी में फिसलने के बाद उसमें से बाहर निकलने का जितना प्रयत्न करें, उतना उसमें ज्यादा धँसते जाते हैं, उसी तरह कुछ देर के बाद मैं फिर से वही कचरा देखने में खो गया।

मूवी में जो सीन देखे थे वे फिर से मेरे आँखों के सामने आ गए। मैंने उस मूवी की एक्ट्रेस को भी इन्स्टाग्राम में फॉलो किया। ऐसा सब करने के पीछे सिर्फ यही कारण था कि इन लोगों की रियल लाइफ और प्रोफेशनल लाइफ कैसे होती है वह जानने की उत्सुकता! पर यह सब जानकर मैं क्या करूँगा उसका मुझे पता ही नहीं था।

'तुम इतना सब कुछ समझते हो फिर भी उस रास्ते पर खिंचे चले गए?' मैंने मिराज से पूछा।

'समझ तो अब आई। तब तो होश ही कहाँ था? बस नकल करने का भूत सवार था। कौन से क्रिकेटर और एक्टर के पास कौन सी स्पोर्ट्स कार, बाइक है। कितने बंगले हैं वह सब जानना था। और वह भी सिर्फ इसलिए कि जब वे लोग ये सब बातें कर रहे हों तब मैं उनके सामने अनाड़ी न लगूँ। ये नॉलेज नहीं होने के कारण दिल के किसी कोने में मैं अपने आप को औरों से इन्फिरियर मानने लगा था। और इसके उपाय में मैं गूगल, इन्स्टाग्राम, यूट्यूब जैसे सोर्स में

से जानकारी प्राप्त करने लगा जिससे मैं भी ग्रुप गासिपिंग में आगे रहूँ।' मिराज ने एक ही साँस में सबकुछ बोल दिया।

अब मैं भी दूसरों की तरह काफी हद तक अपडेटेड हूँ। इस संतोष के साथ पलंग पर लेट गया। मैं मन ही मन सोचने लगा, इस सभी सेलिब्रिटी के पास कितनी धन-दौलत है। उनमें से कईयों ने तो कॉलेज तक देखी नहीं। दसवीं या बारहवीं कक्षा में फेल होने के बाद फिर से स्कूल भी नहीं गए। फिर भी आज सबसे ज्यादा सुखी हैं। और मेरी हालत कैसी है? स्कूल में, घर में, ट्यूशन में, सारा दिन पढ़ाई के लिए स्ट्रेस और टार्चर के साथ जीना पड़ता है। पढ़ाई करने से किसका उद्धार हो गया है जो मेरा होने वाला है? मैंने एक आह भरी! सिर पर चादर ओढ़े ख्यालों की दुनिया में खोकर कब सो गया यह मुझे पता ही नहीं चला। वैसे भी कई दिनों से कहाँ पूरी नींद होती थी!

आधे घंटे के बाद फोन की रिंग बजी। मैंने बड़ी मुश्किल से आँखें खोली। सोचा परम का ही फोन होगा। आज मिलने नहीं गया न इसलिए। लेकिन नहीं! ऐसा नहीं था। मैंने एक ही आँख खोली और मोबाइल में नाम पढ़ा। इस बार विश्रुत का फोन था। विश्रुत?? इतने दिनों बाद!

‘हेलो।’ मैंने आँखें मलते हुए कहा।

‘हेलो वाला। कहाँ खो गया है? एक्जाम थी तब तक तो ठीक है पर वेकेशन खत्म होने आया फिर भी कोई फोन नहीं, कौन सी दुनिया में जीता है?’ विश्रुत ने मुझे झकझोर दिया।

मेरा मन तो कर रहा था कि दो घड़ी विश्रुत से बात करके अपना दिल हल्का कर लूँ। पर कोई रोक रहा था। बात करनी थी पर शब्द नहीं निकल रहे थे।

‘यहीं हूँ। तुम कैसे हो?’ मैं चंद शब्द ही बोल पाया।

‘आई एम ऑलराइट। बस, आज तुम्हारी याद आई इसलिए फोन कर दिया।

‘हँ’ इससे आगे मुझे कुछ सूझा नहीं इसलिए मैं मौन रहा। मेरी बातों में कोई उल्लास नहीं था। उसे समझने में देर नहीं लगी!

‘आई होप देट एवरी थिंग इज़ ऑलराइट विथ यू।’ विश्रुत ने परेशान होते हुए कहा।

‘हाँ... हाँ... वह तो नींद में हूँ न इसलिए ज़रा...’ मैं फिर से रुक गया।

‘ओह सॉरी, आइ डिस्टर्बड यू। सो जाओ। बाद में आराम से बात करेंगे। बाय, गुड नाइट।’

‘गुड नाइट।’

मैंने आँखें मूंद ली।

‘आई होप देट एवरी थिंग इज़ ऑलराइट विथ यू।’ विश्रुत के शब्द मेरे कानों में गुंजने लगे। मेरे साथ सबकुछ ऑलराइट तो था ही नहीं पर क्या रोंग था यह समझ में नहीं आ रहा था। विश्रुत से बात नहीं हो पाई उसका दिल पर बोझ था और दुःख भी था। धीरे-धीरे सब डल होने लगा था। किसी के साथ अच्छा नहीं लगता था। मेरे मन में परम और निखिल के प्रति छिपा हुआ द्वेष अभी भी था।

मिराज अपने अतीत में सफर कर आया। वह नॉनस्टाप बोलते जा रहा था। उसकी बातें सुनते-सुनते कई बार मेरा दिल पसीज जाता। एक तरफ उसके अनुभवों की धारा बह रही थी तो दूसरी तरफ उसकी बातें सुनकर मेरे मन में उठते विचार भी थमने का नाम नहीं ले रहे थे। उसके जीवन के कई सारे पहलू मेरी समझ में आ रहे थे। पर इन सब बातों का हमारे मन पर कैसा और कितना गहरा असर हो सकता है। वह तो उसे देखकर ही समझ में आ रहा था।

मीत चुप था। विविध भाव दर्शाती भावविभोर आँखों से वह मुझे और मिराज को देख रहा था। उसने हम दोनों को बहुत करीब से देखा था। मिराज के जीवन की डायरी के अनजानें पन्नों को पढ़ते

समय उसका दिल भी पसीज गया होगा। मेरी डायरी के कई चैप्टर तो उसने देखे ही थे। लेकिन आज वह जिस संयुक्ता को देख रहा था उसे देखकर थोड़ा शॉक और सरप्राइज़ के साथ उसे खुशी की अनुभूति भी हो रही थी। आज उसके सामने हम दोनों की दशा रिवर्स हो गई थी। इस रोल रिवर्सल को पचाने और समझने की धीरज और क्षमता उसमें है ऐसा मुझे विश्वास था।

मीत नॉर्मल दिखने का प्रयत्न कर रहा था मानो उसने अपने भीतर के भावों को चेहरे पर उभर आने से रोक दिया हो। लेकिन आँखें तो खुली किताब की तरह होती है। वह बहुत कुछ कह देती है। बड़ा भाई होने के नाते वह सही था। अभी मिराज को सपोर्ट करना ज़रूरी था न कि डाँटना।

‘मिराज, एक बात पूछुँ तुझसे?’

‘हाँ, दीदी।’

‘लाइफ में तुझे स्पेशल, हेप्पी और सेफ किसके साथ फील होता है?’

‘मैं समझा नहीं दीदी।’

‘ओ.के. चलो, मैं तुम्हें तीन ऑप्शन देती हूँ। परम, निखिल और विश्रुत। इन तीनों में से तुम्हें किसके साथ स्पेशल, हेप्पी और

सेफ फील होता है?'

'दीदी, अचानक ही ऐसा क्यों पूछ रही हो?'

'इसे तुम अपने अंदर वाले मिराज से पूछना। बाहर वाले मिराज से नहीं।'

'अंदर वाला मिराज... बाहर वाला मिराज?'

'हाँ, अंदर वाला मिराज अलग है और बाहर दिखावटी मास्क पहनकर घूमने वाला मिराज अलग है। अंदर वाला ओरिजनल है। वह दिल की बात समझता है। बाहर वाला बुद्धि की बात सुनता है। आँखें बंद करोगे तो तुम्हें जवाब मिलेगा।'

मेरा प्रश्न सुनकर मिराज ने आँखे बंद कर दी। वह जवाब ढूँढ रहा था।

'मिराज, सॉरी टू इन्टरप्ट यू।' मुझे बीच में ही बोलना पड़ा।

'हँ....' उसने आँखें खोली और वर्तमान में लौट आया।

मैंने अपनी रिस्ट वॉच की तरफ नजर डाली।

अंधेरा हो चुका था। समय को ध्यान में रखना और खुद की मर्यादा में रहकर आगे बढ़ना ज्यादा महत्वपूर्ण था। वैसे तो हम दोनों के बीच फ्रेन्डशिप का संबंध भी नहीं कह सकते। वह मेरे छोटे भाई

जैसा था। और मैं उसके लिए बड़ी बहन की तरह। मीत के साथ की फ्रेन्डशिप में भी कहीं कोई हद पार नहीं की थी फिर भी हर संबंध में मर्यादा का एक स्थान होता है। यदि दो मिनट भी मर्यादा चूक गए तो उसका अनुचित परिणाम आ सकता है।

'ओह, इट्स लेट। हमें अब चलना चाहिए।' मैं आगे कुछ कहती उससे पहले ही मीत बोल उठा।

'हाँ।' अब मुझे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी।

'लेट्स गो।'

हम तीनों चलते-चलते बीच से बाहर निकल गए। मिराज नज़रें झुकाए चल रहा था। मीत टकटकी लगाए मिराज को देख रहा था। ऐसा लगा जैसे अपने भाई की चाल और हाव भाव में आए हुए बदलाव को देखकर वह खुश था। उसकी आँखों में मेरे प्रति कृतज्ञता थी।

'आज मुझे मिराज के साथ बातें करने में बहुत मज़ा आया। आज लेट हो गए हैं लेकिन हम जल्द ही मिलेंगे।' मैंने मीत की ओर देखते हुए कहा।

मिराज के चेहरे पर मेरे प्रति जो विश्वास झलक रहा था उसे मुझे बनाए रखना था। विश्वास होने पर ही कोई किसी को अपनी बातें बता सकता है। वर्ना आजकल अपना बनाकर हमारे विश्वास

का फायदा उठाकर हमें बर्बाद करने वालों की कोई कमी नहीं है।

'हम तुम्हारे साथ घर तक चलें क्या?' मीत ने पूछा।

'नहीं-नहीं, मैं पहुँच जाऊँगी। डोन्ट वरी। घर नज़दीक ही है।'

'आपके प्रश्नों का जवाब नेक्स्ट मीटिंग में दूँगा दीदी।'

'हाँ। वैसे तो मुझे पता ही है कि तुम्हें जवाब मिल ही गया है।'

मिराज कुछ नहीं बोला। सिर्फ एक स्माइल दी।

हम अलग हो गए। मिराज के लिए मुझे बहुत खुशी हो रही थी। उसकी हालत निश्चित तौर पर सुधर रही थी क्योंकि अब वह मेरे साथ खूब ओपन हो गया था। वह हल्कापन महसूस करने लगा था।

जब हम अपनी पीड़ा किसी विश्वसनीय व्यक्ति के सामने व्यक्त करते हैं तब हमारे मन का बोझ हल्का हो जाता है।

(13)

मैं सोच रही थी कि अब की मीटिंग ऐसे स्थान पर हो जहाँ वह अपने मन की बात पूरी बता दे। उसके बाद वह भूतकाल उसके लिए पीड़ादायी न रहे बल्कि प्रेरणादायी रहे, जो उसे आगे के जीवन में इस प्रकार की गल्तियाँ करने से रोक दे। मेरी ऐसी इच्छा थी कि अब वह अपने जीवन की नई शुरुआत करे। आखिर ऐसा कौन सा स्थान हो सकता है?

मैं घर पहुँची। दादी जी आरती कर रही थी। घर पहुँचते ही एकदम शांति का अनुभव हुआ। मैं भी आरती में शामिल हो गई।

'बेटा, दो दिन हो गए, नवरात्र शुरू हुए, तुम्हें पता है न?' आरती पूरी होने पर आरती की थाली मेरी ओर करते हुए दादी जी ने कहा।

'हाँ, दादी।' मैंने आरती ली। दीए पर से हाथ घुमाकर सिर पर लगाते समय ऐसा अहसास हुआ मानो भगवान से आशीर्वाद प्राप्त हो

गया। मिराज से मिलने की नई जगह मुझे क्लिक हुई।

खाना खाकर फ्रेश होकर मैं रूम में गई। नाइट ड्रेस पहना और पलंग पर लेट गई। मोबाइल पास में ही था पर मुझे उसकी ज़रूरत नहीं थी। मुक्त मन से मैं अपना आंतरिक सुख महसूस करना चाहती थी। मिराज में मुझे अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था। फोन की रिंग बजने पर इच्छा न होते हुए भी मुझे मोबाइल हाथ में लेना ही पड़ा।

'मीत? इस वक्त क्या काम हो सकता है?'

'हेलो.....'

'यार संयुक्ता।'

'क्या हुआ?'

'क्या बताऊँ तुम्हें कि क्या हुआ है?'

'जो कहने के लिए तुमने फोन किया है वह।'

'मिराज ने आज मुझसे कहा कि चलो, हम साथ बैठकर टॉम एंड जेरी देखते हैं।'

'रियली?'

'यस, आई कान्ट बिलीव। हम बचपन में कार्टून देखते थे। वर्षों बाद आज उसके साथ बैठकर कार्टून देखने पर हम दोनों रिलेक्स

हो गए।’

‘वाऊ, यह सुनकर मुझे भी बहुत खुशी हुई।’

‘हम दोनों के बीच कितने महीनों से जो दूरी थी वह कम हो गई।’

‘वह तो मैंने बीच पर ही देख लिया था।’

‘उसने मम्मी से भी कहा कि कितने दिन हो गए, आपने पावभाजी नहीं बनायी है।’

‘ओह, तब तो आंटी भी बहुत खुश हो गई होंगी न!’

‘हाँ, मम्मी तो जैसे एकदम आसमान में उड़ने लगी। मुझसे कह रहीं थी कि संयुक्ता से मिलना है।’

‘ज़रूर मिलूँगी। मिराज की हालत में बहुत सुधार हुआ है। पर मुझे लगता है कि अभी भी कुछ है जो उसने मन में ही रखा है। कोई ऐसी बेरियर है जो उसे रोक रहा है। मैंने आज भगवान से उसके लिए स्पेशल प्रार्थना की है कि वह पहले जैसा सरल हो जाए। मन में रहा-सहा भार भी कम कर दे। तुम भी उसके लिए सच्चे दिल से प्रार्थना करना।’

‘ज़रूर करूँगा। तुम्हारे मुँह से ऐसे शब्द पहली बार सुने।’

‘वह तो एक सुपर पावर है, जिनके मार्गदर्शन से यह रिजल्ट आ रहा है। साथ ही हमारी पॉज़िटिव सोच और सच्चे दिल से की गई प्रार्थना पॉज़िटिव रिजल्ट लाकर ही रहेगी। मुझे पूरा विश्वास है।’

‘मिराज के लिए प्रार्थना तो बहुत की है। पर आज एक अलग विश्वास और पॉज़िटिविटी के साथ प्रार्थना करूँगा।’

‘मैं उससे नेक्स्ट वीक में मिलूँगी।’

‘ओ.के. बाय। तुम्हें अभी थैंक यू नहीं कहूँगा। तुम्हारा प्रोजेक्ट पूरा हो जाने के बाद ही कहूँगा।’

‘हाँ, मात्र थैंक यू ही नहीं। पार्टी भी देनी पड़ेगी।’

‘श्योर।’

‘अच्छा, बाय।’

‘बाय।’

अगले दिन मीत की मम्मी का फोन आया।

‘संयुक्ता, बेटा तुमसे मिलना है।’ किसी भी प्रकार की औपचारिकता के बिना ही उन्होंने कहा।

कारण तो मुझे मालूम ही था। आखिर वह भी एक ‘माँ’ है। वे अपना दु:ख किसके साथ बाँटे? मन की बात किससे कहें? मुझे

मेरी मम्मी याद आ गई।

मैंने आंटी को तुरंत ही हाँ कह दिया। हम बीच पर मिले। आंटी मेरी ओर देख रही थी। उन्होंने बात शुरू की।

'मिराज तुम्हारी बहुत तारीफ कर रहा था। घर में रोज तुम्हारी बातें होती हैं। कल मिराज के सो जाने के बाद मीत मेरे पास आया था।'

मैं शांति से सुन रही थी।

'उसने कहा कि मम्मी, संयुक्ता पूरी बदल गई है। हमेशा पराधीन और लाचार दिखने वाली, नजरे नीचे करके बैठी रहने वाली लड़की आज आँखों में आँखें मिलाकर बात कर सकती है। अपने बाह्य दिखावे पर अफसोस करने के बजाय खुद ही अपनी कमियों को स्वीकार कर मुक्त मन से उन पर हँस सकती है। मिराज को समझाने की कोशिश तो हम सभी ने की थी। पर उसका तरीका कुछ अलग ही है। मिराज को डिप्रेशन में से बाहर निकालने में जहाँ हम थक गए, वहाँ से ही उसने फ्रेश शुरुआत की। मिराज के मुरझाए हुए मन की बंद कलियाँ फूल की तरह एक-एक करके खुलने लगी है। उसकी महक और चहक का अनुभव तो घर में हम सब कर ही रहे हैं न?'

'मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है आंटी। मिराज में मुझे अपना भूतकाल दिखाई दिया। और उस पीड़ा का अनुभव मैंने किया है।

एक महान विभूति के आशीर्वाद से मैंने नवजीवन पाया है। उनके लिए कुछ करने की योग्यता मुझमें नहीं है। इसलिए अपने जैसे किसी दूसरे की मदद कर पाऊँ तो लगेगा कि मैंने कुछ अंश तक उनका ऋण चुकाया है।' मेरा दिल 'दादा' की करूणा के प्रति नतमस्तक हो गया। मेरी आँखें और दिल नम हो गए।

'जो खुद ही पूर्णतः टूट चुका हो, वह व्यक्ति दूसरे का सहारा बन सकता है, मीत, यकीन ही नहीं कर पा रहा था।'

'यकीन तो मुझे भी नहीं हो रहा था।' यह नया जीवन देने के लिए मैंने मन ही मन 'दादा' का आभार माना।

कुछ देर के लिए आंटी की नज़र मुझ पर से हट गई। अपनी साड़ी के पल्लू को उंगलियों से लपेटते हुए मन में थोड़ी कशमकश के साथ ही उन्होंने बात करना शुरू किया।

'जब से मिराज के व्यवहार में परिवर्तन आने लगा था तब से घर में मेरी हालत सेंडविच के जैसी हो गई थी। शुरुआत में वह बहुत अग्रेसिव हो गया था। तब उसके पापा उस पर ज्यादा गुस्सा न हो जाए, इसके लिए मुझे बाढ़ आने से पहले ही पूल बंध जाए, उतना अलर्ट रहना पड़ता था। एक अज्ञात भय रहा करता था कि मिराज अपने पापा के सामने कुछ ऐसा-वैसा न कह दे। क्योंकि

डिसीप्लिन के मामले में उसके पापा बहुत स्ट्रीक्ट हैं। मिराज में होने वाले बदलाव को टीन एज की निशानी समझने की सलाह, मीत मुझे देता था। वह कहता था कि हमें मिराज से गुस्से या व्यग्रता से नहीं बल्कि प्रेम से डीलिंग करना है। फिर भी कभी-कभी मिराज इतना अधिक गुस्सा करता था कि मेरा खुद पर कंट्रोल ही नहीं रहता। मैं भी कई बार उसे कठोर शब्द कह देती थी। एक तरफ उसकी पढ़ाई बिगड़ रही थी तो दूसरी तरफ वह खुद।

अचानक कुछ समय के बाद उसके व्यवहार में बड़ा बदलाव आया। वह घर में एकदम गुमसुम रहने लगा। जिस मिराज पर मुझे पहले गुस्सा आता था उसी मिराज पर खूब दया आने लगी। उसकी हालत देखकर दिल जलता था। मेरे बेटे को जैसे किसी की नज़र लग गई हो। उसके पापा भी बाद में उसकी ऐसी हालत देखकर विचलित हो गए थे। उसकी प्रॉब्लम क्या है यह जानने के लिए हमने अनेक प्रयत्न किए पर हमारे सभी प्रयत्न नाकाम रहे। मीत ने भी उसे समझाने का बहुत प्रयास किया, पर मिराज, मीत से भी अलग रहने लगा। मीत जितना उसके करीब जाता वह उतना ही उससे दूर जाने लगा। स्त्री सब सहन कर सकती है पर अपने बच्चे का दुःख सहन नहीं कर सकती।

‘आपकी बात सही है आंटी। पर यह देखा गया है कि सहनशक्ति की पराकाष्ठा पर पहुँचकर व्यक्ति धर्म की ओर मुड़ता है। नहीं तो भगवान को भी भूला दे, ऐसा यह संसार है।’

‘तुम्हारी बातें तो बुजुर्गों जैसी है।’

‘मैं तो छोटी बनकर ही रहना चाहती थी। पर आसपास के लोगों ने मुझे जल्दी ही बड़ा बना दिया।’

‘हमारा समाज भी विचित्र है।’

‘मुझे इस बात का अंदाजा था कि अल्का आंटी मेरी मम्मी की ही उम्र की होने के कारण शायद मुझसे खूलकर बात नहीं कर पाएगी। और फिर हम से उम्र में बड़े यदि हमसे सलाह माँगे तो वह उचित नहीं लगता।’

‘मैंने मेरे पेरेन्ट्स को खूब दुःख दिए हैं। खासकर मम्मी को। क्या करूँ? अपने मन की भड़ास निकालने के लिए सबसे सरल साधन मम्मी ही थी।’ अल्का आंटी को मुझ पर विश्वास होगा तो ही वे मुझसे खुलकर बात कर सकेंगी। इसलिए मैंने उन्हें अपनी भूलें बताना शुरू किया। एक दिन......

‘संयुक्ता, चलो बेटा तैयार हो जाओ। देर हो रही है।’ मम्मी के करीबी रिलेटिव के घर शादी थी।

‘मुझे नहीं जाना है।’

‘क्यों? इसीलिए तो पापा ने तुम्हारे लिए स्पेशली इतना महँगा ड्रेस खरीदा है।’ पलंग पर रखे ड्रेस को देखते हुए दादी ने कहा।

‘मुझे यह ड्रेस नहीं पहनना!’

‘क्या हुआ बेटा? तुमने ही तो यह ड्रेस पसंद किया था न?’

‘वह मेरी भूल थी। मुझे ऐसा लगा कि अच्छे कपड़े पहनूँगी तो अच्छी दिखूँगी। पर अब मैं समझ चुकी हूँ कि मैं चाहे कुछ भी पहनूँ, इस दुनिया में मुझसे ज्यादा कुरूप कोई नहीं लगेगा।’

‘ऐसा नहीं बोलते बेटा।’ दादी ने प्यार से मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

मैंने दादी का हाथ दूर कर दिया।

ड्रेस लेकर पैर पटकते हुए मैं दूसरे रूम में चली गई। सभी को लगा कि मैं तैयार होने जा रही हूँ। पंद्रह मिनट के बाद मैं रूम से बाहर आई।

‘बेटा, इतनी अधिक डार्क लिपस्टिक? और ये...’ मुझे देखते ही मम्मी एकदम स्तब्ध रह गई।

मैंने जानबूझकर एकदम डार्क और ब्राइट कलर का मेकअप

किया था। अभी की मॉडल्स करती हैं न वैसा ही।

'क्यों इसमें क्या खराबी है? दूसरे लोग करते हैं तो आप उनकी तारीफ़ करती हो और मैं करती हूँ तो अच्छा नहीं लगता, है न?' मैंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया।

'नही, मेरा कहने का ये मतलब नहीं है।'

'यदि आपकी बहन की लड़किया या अन्य लड़कियाँ अच्छे से तैयार होती हैं तो आप उन्हें अच्छी लग रही हो, ऐसा कहती हो।' मेरे अंदर की जलन बाहर फूट रही थी। मैंने खुद के प्रति अपनी नफरत को बाहर निकालने के लिए मम्मी को हथियार बनाया था।

'अचानक तुम्हें क्या हो गया है, संयुक्ता।'

'दादी, आप तो बीच में बोलना ही मत।' मैंने तुरंत ही दादी को बोलने से रोक दिया।

'आप कुछ देर बाहर जाकर बैठिए।' मैं दादी का ज्यादा अपमान न कर बैठूँ इसलिए मम्मी ने दादी से विनम्रतापूर्वक कहा।

'नहीं, यहीं खड़े रहिए। बाहर नहीं जाना है।' मैंने दादी का हाथ पकड़कर रोक लिया।

'आप ही हमेशा कहती है न कि लड़कियों को अच्छी तरह तैयार होना चाहिए। तुम तो अच्छी दिखती हो। बस, एक ही कमी

है और वह भी दवाईयों से ठीक हो जाएगी।'

'हाँ बेटा, पर धैर्य तो रखना पड़ता है न।'

'दो साल हो गए फिर भी कोई रिज़ल्ट नहीं मिल रहा है। और कितना धैर्य रखूँ।' मेरी अशिष्टता बढ़ती ही जा रही थी।

'संयुक्ता....' मम्मी ने मुझे रोकने का प्रयास किया।

'बस मम्मी, मुझे बोलने दीजिए। आप लोग कहते हो न कि मैं अच्छी दिखती हूँ। तो देखिए मैंने रेड लिपस्टिक और गोल्डन आई शेडो लगाया है। फिर भी मैं क्यों सुंदर नहीं लग रही हूँ?'

मैंने हाथ की उँगलियों को ज़ोरों से होंठों पर घिसा और पूरी लिपस्टिक चेहरे पर फैला दिया। आई शेडो और काजल भी फैला दिए। और उन हाथों को नए ड्रेस से पोंछ लिया।

मम्मी और दादी दोनों मौन होकर मेरा पागलपन देखते रहे। मम्मी ने मेरे पास आने का प्रयास किया पर मैंने हाथ बढ़ाकर उन्हें वहीं रोक दिया।

'आप सब यहाँ से चले जाओ। मुझे अकेले छोड़ दो।'

वे लोग चुपचाप रूम के बाहर चले गए। मैंने धड़ाम से रूम का दरवाजा बंद कर दिया।

आईने के सामने जाकर खड़ी रही। अपना चेहरा देखकर मेरे मुँह से चीख निकल गई। मैं फूट-फूटकर रोने लगी।

मम्मी और दादी बाहर से दरवाजा खोलने का निवेदन करती रहीं। मैं अंदर और वे बाहर। दोनों रो रहे थे।

अल्का आंटी एकटक मुझे देख रहीं थीं। शायद उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि मैं किस प्रकार अपनी पागलपन भरी बातों को उनके सामने खुलकर बता रही हूँ?

'आपको पता है आंटी। मेरी दवाईयाँ इतनी स्ट्रांग थी कि उनके साइड इफेक्ट के कारण मेरा स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। मेरे हॉर्मोन्स में बहुत बदलाव आ गए थे। शरीर की गर्मी अंतत: दिमाग और शब्दों से बाहर निकलकर दूसरों को जलाकर ही शांत होते थे। जब चाहे तब मुझे रोना और गुस्सा आ जाता था। बेवज़ह चीखना-चिल्लाना-रोना तो कॉमन हो गया था। इसलिए घर में कोई मुझे सामने से कुछ नहीं कहता था। छोटी-छोटी बातों को बढ़ाने की मेरी कोई इच्छा नहीं रहती थी, पर मुझसे वैसा हो जाता था। कभी-कभी तो मैं एकदम पागलों की तरह ही व्यवहार करती थी। आज भी मुझे मेरा लाल, काला और गोल्डन रंग से भरा हुआ भयानक चेहरा याद आ जाता है तो हृदय की धड़कने बढ़ जाती हैं।' गहरी साँस लेकर मैंने

अपनी बातों को विराम दिया।

मैंने अल्का आंटी की ओर देखा। वे साड़ी के पल्लू से अपनी आँखें पोंछ रहीं थी। मैंने अपना पानी का बोतल उन्हें दिया। उन्होंने दो घूँट पानी पीया और कुछ सहज हुई। कुछ देर तक हम दोनों मौन रहे। मात्र समुद्र के लहरों की आवाजें आ रही थी। हम दोनों समुद्र में उठती हुई लहरों को देख रहे थे। कुछ छोटी-बड़ी लहरें किनारों तक आकर उससे टकराकर पुनः समुद्र में विलीन हो जाती थी।

जीवन भी समुद्र की लहरों जैसा ही है न! जैसे समुद्र में लहरें आती हैं और चली जाती हैं लेकिन किनारा वहीं रहता है। उसी प्रकार हमारे जीवन में भी दु:ख, कठिनाइयाँ, उलझने लहरों के रुप में आती हैं और चली जाती हैं। हमें किनारों की तरह स्थिर रहने की आवश्यकता है।

'संयुक्ता, तुम तो रो लेती थी। मिराज तो रोता भी नहीं था। बस अंदर ही अंदर घूँटता रहता था। और इस कारण वह और ज्यादा डिप्रेशन में जाने लगा।' अल्का आंटी बोलते-बोलते नीचे देखने लगी।

'यही तो प्रॉब्लम है आंटी। हमारे समाज में बचपन से ही लड़कों को ऐसा सिखाया जाता है कि तुम लड़के हो। तुम्हें रोना शोभा नहीं देता। तब से वह पुरुष अहंकार अपनी भावनाओं और आत्मीयता को

व्यक्त करने में हिचकिचाता है। लड़के रोते नहीं.... लड़के कमज़ोर नहीं होते.... ऐसे घुट्टी में पिलाए गए शब्द पूरी जिंदगी उन्हें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने नहीं देते। घुटन होने पर लड़के जब अहंकार रूपी अस्त्रों से अपने इमोशन्स को कुचलते हैं तब उनके विकृत परिणाम दिखाई देते हैं और वह है डिप्रेशन।

'इसमें हमसे क्या गलती हुई है यही समझ में नहीं आ रहा है। हम उसे जो कुछ कह रहे थे वह उसकी भलाई के लिए ही था। मीत बचपन से ही समझदार है। उसने जीवन में हमेशा अपने सिद्धांतों को स्थान दिया है जबकि मिराज के लिए जीवन मूल्यों का कोई महत्व ही नहीं था। वह तो संयोग जिस दिशा में ले गए उसे ही मूल्यवान मानकर उसी के अनुसार आगे बढ़ता रहा। परिणामस्वरूप टूट चुका है।

परिवार के संस्कारों ने उसे कुछ मर्यादा में बांध रखा था। शायद ये संस्कार ही उसे माडर्न रहने में और जमाने के साथ दौड़ने में बाधक बन रहे थे। उसके आसपास का वातावरण मौज, मजा, मस्ती, मित्र, मूवीज, म्यूज़िक, मीडिया और मान-इम्प्रेशन... ये सभी 'म' से हमेशा घिरा रहता था। मिराज को वे आकर्षित करते थे। पर इन सभी 'म' की लिस्ट में एक अधिक का 'म' था, वह था मर्यादा।' जिसके कारण वह खुलेआम हद से बाहर नहीं जा पा रहा था। लेकिन धीरे-धीरे

सबसे नज़रें चुराकर उसने लक्ष्मण रेखा पार करने का प्रयास शुरू कर दिया था। परम और निखिल की कंपनी की इसमें मुख्य भूमिका होगी ऐसा हमें लगता है।'

'ऐसा क्यों हुआ यह तो आपको समझ में आ गया होगा न?'

'हाँ, मेरी रोक टोक और चिकचिक के कारण वह मुझसे सब छिपाता गया...'

'...जिसके कारण वह प्रेशर में रहता था। आंटी, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण आज की पीढ़ी अपनी उम्र से पहले ही बड़े हो जाते हैं। उन्हें दंड, शिक्षा या दबाव से नहीं रोका जा सकता। प्रेम ही एक ऐसा अस्त्र है जिससे उन्हें रोका जा सकता है।'

'क्या माता-पिता बच्चों को प्रेम नहीं करते?'

'करते हैं। पर उसमें अपेक्षा भी रहती है। कम्पेरिज़न भी रहता है। अंत में समाज एवं सोसायटी में अपनी इज्जत, अपना वर्चस्व बना रहे, यह बात तो रहती ही है। और जिसके कारण माता-पिता अपने बच्चों पर अनजाने में ही जो दबाव डालते हैं वह उन्हें टॉर्चरिंग लगता है।'

'मतलब....'

'मतलब यह कि मीत को भी आप लोग उसकी इच्छा के

विरूद्ध एल.एल.बी. ही करवा रहे हैं न। अंकल एल.एल.बी. करके सक्सेसफुल हुए इसलिए उसके बेटे को भी वही लाइन लेना चाहिए, ऐसा आग्रह उचित है?'

यह सुनकर आंटी एकदम चुप हो गईं।

'मीत मानसिक तौर पर सक्षम है इसलिए कोई बाधा नही आई। लेकिन मिराज को क्रिकेट में कैरियर बनाना था और वह नहीं करने दिया गया, तब से उसके टूटने की शुरुआत हो गई। बस, फिर आप कह रहे हैं वैसा देखादेखी, कमजोर मनोबल, स्ट्रेस, पिअर प्रेशर, सेल्फ नेगेटिविटी, स्पर्धा... इन सबने वायरस की तरह उसके मन को खोखला कर दिया। और आज उसकी यह हालत हो गई है।'

आंटी को रोना आ गया।

'आंटी, हताश होना एक अस्थायी मनोदशा है। वह कोई पागलपन नहीं है। फैमिली के सपोर्ट से उसमें से बाहर निकला जा सकता है। फैमिली का सपोर्ट अर्थात् उस पर विश्वास। प्रेम और विश्वास ये दोनों हों तो क्या नहीं हो सकता?' मैंने धीरे से अपना हाथ उनके हाथ पर रखा।

'पेरेन्ट्स को यह समझ में आता है कि उनके बच्चे को एकस्ट्रा ट्यूशन की ज़रूरत है। पर उसे एकस्ट्रा काऊंसलिंग की ज़रूरत है,

ऐसा उन्हें ख्याल में नहीं आता।'

'मीत ने एक बार कहा था कि मिराज को मनोचिकित्सक के पास ले जाते हैं। पर यह बात सुनकर ही मुझे धक्का लगा था। मेरा मन यह बात स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं था।'

'ज़रूरत पड़ने पर साइकायट्रिस्ट के पास जाने में ज़रा भी शर्म या संकोच रखने जैसा नहीं है। लोग क्या सोचेंगे यह सोच-सोचकर परिवार के लोगों को संभालने में हमसे कभी-कभी बहुत देर हो जाती है। डिप्रेशन के बहुत से स्टेज होते हैं। शुरुआत की स्टेज में तो मात्र काउन्सिलिंग से ही पेशेन्ट ऑलराइट हो जाता है। किसी दवाई की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। मिराज भी अभी उसी स्टेज में है। जिस प्रकार शरीर को कभी बुखार आ जाता है उसी प्रकार दिमाग को क्या कभी बुखार नहीं हो सकता?'

उन्होंने अपना दूसरा हाथ मेरे हाथ पर रखते हुए, इस प्रकार सिर हिलाया जैसे कि उन्हें अपनी भूल समझ में आ गई हो।

'एक उम्र में यदि घर से प्यार नहीं मिलता तो इंसान बाहर ढूँढता है। हमारे घर में भी बहुत से प्रॉब्लम्स थे। मेन तो मेरे कारण ही सभी संबंध उलझे हुए थे। पर एक दिन वह गुत्थी सुलझ गई। मेरे परिवार को जिनके द्वारा जीना आया है, उन महान व्यक्ति के

कारण ही मैं आज आपके सामने खड़ी हूँ। मेरे बाहरी दिखावे में भले ही कोई परिवर्तन न हुआ हो पर मेरी समझ में जो परिवर्तन हुआ है उसके परिणामस्वरूप ही मेरी वाणी–बरताव और व्यवहार में अकल्पनीय सुधार हुआ है।'

'संयुक्ता, मुझे भी उनसे मिलना है। उनके बारे में अधिक जानना है।'

'ज़रूर आंटी। अभी मैं उनके मार्गदर्शन के अनुसार ही मिराज के साथ व्यवहार कर रही हूँ। मुझे विश्वास है, मिराज एकदम नॉर्मल हो जाएगा। पहले की तरह।'

यह सुनकर आंटी के चेहरे पर खुशी छा गई।

'अंधेरा हो गया है। हमें निकलना चाहिए आंटी....'

'हाँ। तुमसे मिलकर बहुत अच्छा लगा संयुक्ता। तुमने सिर्फ मिराज को ही नहीं, मुझे भी अच्छा कर दिया।'

और हम दोनों अलग हो गए।

(14)

सप्ताह बीतने में कितना समय लगता है? मैंने मिराज और मीत को दूसरे दिन सुबह सात बजे अपने घर के पास बुलाया। साइकिलिंग करने जाएँगे ऐसा निश्चित किया था। थोड़े ही समय में मिराज का फोन आया।

'हाय मिराज।'

'हेलो दीदी।'

'कैसे हो? सब ऑलराइट?'

'हाँ, बस आपसे बात करनी थी।'

'ऐसा? इतनी जल्दी है? कल तो मिलना ही है न?'

'मैंने जितनी बातें आपसे शेयर की है, उतनी अब तक किसी के साथ नहीं की। मीत के साथ भी नहीं।'

'मुझे यह मालूम है।'

'आपने कहा इसलिए अभी तक मैंने मीत के सामने सभी बातें

कही पर अब नहीं कह पाऊँगा।'

'तुम्हें मुझ पर कितना विश्वास है मिराज?' मीत के सामने क्यों नहीं कह सकोगे, यह प्रश्न डायरेक्ट पूछना मैंने टाल दिया।

'ऐसा क्यों पूछ रही हो? मेरी अब तक की आप बीती सुनने के बाद भी आपको कोई शंका है?'

'देख, तुझे मुझ पर विश्वास है तो मुझे मीत पर विश्वास है।'

'पर दीदी....'

'अभी तक मीत के साथ तेरा जो स्ट्रांग रिलेशन था, वह मात्र कुछ महीनों की गलतफहमी के कारण वीक नहीं हो सकता। अपने जीवन की तकलीफों से जूझने में वह थोड़े समय के लिए सबसे दूर हो गया, इसका मतलब यह नहीं कि वह हमेशा के लिए वैसा ही रहेगा। मीत को तुमसे सच्चा लगाव है।'

'पर वह मुझे समझ नहीं सकेगा। मेरे साथ आगे जो कुछ भी हुआ वे सभी बातें उसके गले के नीचे नहीं उतरेगी। उसने कभी भी मेरे जैसी परिस्थितियों का सामना नहीं किया है। वह मुझे नहीं समझ सकेगा दीदी, प्लीज।'

'मिराज तुम्हारे साथ जो कुछ भी हुआ होगा वह मुझे अभी नहीं मालूम पर इतना जानती हूँ कि हम जिसका सामना करते हुए आगे

बढ़ते हैं वे सब लाइफ के फेज़ीज़ हैं। और **वही लाइफ की प्रोसेस है। भूलों से अनुभव बढ़ता है और अनुभव से भूलें कम होती हैं।'**

'ज़रूरी नहीं कि सभी को सभी प्रकार के अनुभव हुए ही हों!'

'तुम्हारे साथ जो हुआ हो वह कई लोगों के साथ हुआ होगा पर क्या सभी बताते हैं? तुम्हारे साथ जो कुछ भी हुआ, भले ही मीत के साथ या मेरे साथ न हुआ हो, पर हम तुम्हारे साथ हैं। मैं तो आज हूँ, पर हो सकता है कल न रहूँ। पर मीत तो हमेशा अपने भाई मिराज के साथ ही रहने वाला है। मुझे मीत की मेच्योरिटी पर विश्वास है। मुझ पर भरोसा रखो। तुम्हारा विश्वास टूटने नहीं दूँगी। अभी किसी भी प्रकार का विचार किए बिना शांति से सो जाओ। कल सुबह मिलेंगे। तुम पर कोई दबाव नहीं है। जो तुम्हारा दिल कहे वैसा करना।'

'आपको ऐसा लगता है तो ठीक है। मैं ट्राय करूँगा।'

दूसरे दिन सुबह घर के बाहर आकर मिराज ने मुझे फोन किया।

'मैं आपके घर के बाहर हूँ।'

'ओ.के. मैं रेडी ही हूँ। आ रही हूँ।'

'कैसे हो बेटा? अंदर आओ न।' मीत और मिराज से मिलने मम्मी मेरे साथ बाहर आयी।

‘नहीं, आंटी। फिर कभी आऊँगा।’ मिराज ने थोड़ा संकोच करते हुए कहा।

‘मीत कहाँ रह गया?’ मीत के न दिखने पर मैंने पूछा।

‘उसकी साइकिल में पंचर जैसा लग रहा था अतः वह पंचर रिपेयर करवाकर थोड़ी ही देर में आ रहा है।’

‘ओ.के. उसे अभी सुबह ही चेक करना सूझा?’

‘वह आए तब तक अंदर आओ, थोड़ा चाय-नाश्ता कर लो।’

‘नहीं दीदी, आज तो मम्मी ने मेरा फेवरिट नाश्ता बनाया था। अब पेट में जरा भी जगह नहीं है।’

‘अच्छा। नेक्स्ट टाइम आना पड़ेगा। रौनक भी बाहर गया है। तुमसे मिलकर उसे खुशी होगी।’ मम्मी को अब मेरे जैसे केस वाले के साथ बिना आग्रह किए, डीलिंग करना आ गया था।

‘ज़रूर।’

इतने में ही फोन आया।

‘हेलो। संयुक्ता, तुम्हें एक बात कहनी थी।’ मीत को अचानक क्या कहना होगा यह समझ में नहीं आया।

‘क्या?’

‘यह बात तुम मिराज से मत कहना।’

‘ओ.के.।’ मैं चलकर थोड़ा आगे गई ताकि मिराज से दूर जाकर बात कर सकूँ।

‘मिराज तुम्हारे साथ खुलकर बातें कर रहा है। मैं नहीं चाहता कि अब कहीं उसमें ब्रेक लगे। वह एक बार सब बता दे तो उसका मन हल्का हो जाएगा। और मन का बोझ दूर हो जाने पर वह फिर से पहले जैसा ही हो जाएगा ऐसा मुझे विश्वास है।’

‘हाँ, पर तुम कहना क्या चाहते हो?’

‘यही कि यदि मेरे कारण उसे संकोच होता हो तो मैं नहीं आता। तुम दोनों अकेले ही मिल लो तो अच्छा है।’ दोनों भाई एक-दूसरे के लिए सोच रहे थे।

‘नहीं। तुम्हारी ज़रूरत है। तुम आ जाओ। पर उससे पहले मुझे भी तुम्हें एक बात कहनी है।’ मेरा काम था कि दोनों को उत्तर और दक्षिण से बीच में लाकर बैलेन्स करना, उन दोनों को जोड़ना।

‘क्या?’

‘यही कि मिराज के साथ आगे क्या हुआ यह हम नहीं जानते। मुझसे एक प्रॉमिस करो कि यदि आज वह खुलकर सब बातें कह देता है तो किसी भी प्रकार के इमोशन या अग्रेशन में नहीं आओगे। टीन

एज हो तो भूल तो हो ही जाती है। उसकी कोई बात तुम्हारे सिद्धांत के विरूद्ध हो तो भी तुम्हें रिएक्ट नहीं करना है। तुम ही कहते हो न कि एक बार सब कह देगा तो हल्कापन महसूस करेगा। और वह तभी संभव है जब उसे हमारा पूरा सपोर्ट मिलेगा। भले ही उससे कोई भी भूल हो गई हो पर उसे विश्वास होना चाहिए कि वह भूल सामने आने के बाद भी उसके प्रति प्रेम में कोई कमी नहीं होगी।'

'हाँ, संयुक्ता। प्रॉमिस। मैं समझता हूँ। पर अच्छा हुआ कि तुमने पहले से ही सचेत कर दिया। यही बात यदि मैंने पहले समझ ली होती तो शायद हमारे बीच में यह डिस्टेन्स आया ही न होता। चेटिंग की दुनिया के उसके कौतूहल को मैं समझ गया होता तो.....'

'बस। मुझे तुमसे यही प्रॉमिस चाहिए था। तुम आ जाओ। हम लोग इंतज़ार कर रहे हैं।'

मिराज विचारों में खोया हुआ खड़ा था। मैंने उसके पास जाकर गले से खराश निकाली और वह थोड़ा चौंक गया।

'हमें कहाँ जाना है?'

'यहाँ से पीछे एक रास्ता है। लगभग चार-साढ़े चार किलोमीटर दूर एक जगह है, वहाँ जाना तय किया है। पर तुझे अभी नहीं बताऊँगी। वहाँ पहुँचकर ही देख लेना न।'

‘ओ.के.।’

‘बहुत दिनों के बाद आज साइकिलिंग करने में मज़ा आया।’

‘बचपन की कुछ यादों को पुनः जीने का मज़ा ही कुछ और होता है। मैं लगभग रेग्युलर ही साइकिलिंग करती हूँ। और कभी मन होता है तो क्रेयान्स लेकर बच्चों की कलर बुक में कलरिंग करके निर्दोष आनंद पा लेती हूँ। कभी-कभी रास्ते में खेलते हुए पिल्लों के साथ खेलने से भी आनंद आता है।’

‘जो खुशी हम मात्र मोबाइल, टी.वी. और इन्टरनेट की दुनिया से लेते हैं वही खुशी इस प्रकार से लेने का तरीका तो लोग प्रायः भूल ही गए हैं। निर्दोष आनंद.... शब्द भी कितना सुंदर है।’

‘हाँ, मैंने भी किसी से सीखा है। निर्दोष आनंद.... ऐसा आनंद जिसमें किसी को हमसे दुःख नहीं होता।’

उसी समय साइकिल की घंटी बजाते हुए मीत आ गया।

हम तीनों ही लगभग मौन थे। हमने शब्दों को विराम दिया था और मन को छूट.... सुबह के इस खुशनुमा वातावरण की ताज़गी को दिल से महसूस कर लेने की छूट..। रास्ते में सुंदर-सुंदर वृक्ष एवं पौधे देखते-देखते और पक्षियों के करलव सुनते-सुनते, बीस पच्चीस मिनट के बाद हम एक स्थान पर पहुँच गए।

'यह तो मंदिर है।' मिराज बोल पड़ा।

'मैं तो यहाँ पहले कभी नहीं आया।' मीत ने आस-पास देखते हुए कहा।

वह राम भगवान का मंदिर था। जिसमें साथ लक्ष्मणजी, सीताजी और हनुमानजी भी थे। वह स्थान बड़ा पावर हाऊस था। शक्ति, भक्ति और श्रद्धा का पावर हाऊस अर्थात् मंदिर।

'हाँ, चलो दर्शन करने चलें।'

शांति से दर्शन करने के बाद बाहर एक विशाल स्थान में हम बैठ गए और प्रसाद बाँटकर खा लिया।

'दीदी, आपके लास्ट टाइम के सवाल का जवाब....'

'नहीं.... मैंने सिर हिलाते हुए उसे बोलने से रोका। मुझे मालूम है तेरा जवाब क्या है।'

मिराज के चेहरे पर प्रश्नवाचक भाव आ गए।

'लाइफ इज लाइफ! अ जिग्सो पज़ल। लोग अधिक से अधिक उसमें पीसीस खोजने में तुम्हारी मदद कर सकते हैं। पर वे पीस तुम्हारी लाइफ के पज़ल में फीट हो रहे हैं या नहीं और हो रहे हैं तो कहाँ, ये सब तो तुम्हें ही निश्चित करना पड़ेगा।'

‘दीदी, वन्स अगेन आपकी बातें.....’

‘बहुत डीप है, यही न?’

‘हाँ।’

‘पर मुझे इस बात की खुशी है कि तुम्हें उन डीप बातों का अर्थ समझ में आता है। सी....यू आर अ जीनियस।’

मिराज के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान छा गई।

‘तुझे मालूम है, मैंने तुझसे वह प्रश्न क्यों पूछा था?’

‘नहीं।’

‘तुम अपने आसपास के इनर सर्कल में सही व्यक्तियों को फीट कर सको इसलिए। तब तो मैंने तुम्हें परम, निखिल और विश्रुत ये तीन ही ऑप्शन दिए थे। पर ऐसा भी हो सकता है कि उस ऑप्शन में ज यादा लोग भी हों और तुम्हें उसमें से भी सिलेक्शन और केन्सलेशन करना हो।’

मेरी बात सुनकर मिराज की नजरें झुक गई। वह आसपास देखने लगा। कुछ था जो उसे अभी भी खटक रहा था।

‘मंदिर बहुत अच्छा है न दीदी।’ उसने कहा।

‘हाँ, मैं भी आज बहुत समय के बाद आई हूँ।’

‘मन में बहुत शांति लग रही है।’

‘हाँ, क्योंकि हमें भगवान पर श्रद्धा होती है। जहाँ श्रद्धा हो वहाँ शांति लगती ही है।’

‘हाँ।’

‘श्रद्धा हो वहाँ नई शक्ति का संचार होता है। उस शक्ति से तो ऊँचे-ऊँचे पहाड़ को भी लांघ सकते हैं। वहाँ जीवन के इस छोटे-छोटे हादसे में डिप्रेस होने जैसा है ही क्या? सभी दिन एक समान नहीं होते। काले बादलों के बीच सूरज दिखाई नहीं देता उसका अर्थ यह नहीं कि उस समय सूरज नहीं है। बादल हटने पर वह फिर से पहले ही की तरह प्रकाशमान हो जाता है। उसी प्रकार हमारी समझ के सामने भी जो काले बादल आ जाते हैं, उसके हट जाने पर ज्ञानरूपी प्रकाश जगमगाने लगता है। बादल हटाने वाला कोई चाहिए बस।’

‘यू आर राइट। दीदी, आपके कारण मैं बहुत कुछ समझ पाया हूँ।’

‘और मैं दूसरे के कारण।’ पुनः दादा मेरी आँखों के सामने छा गए, ‘कल रात को ही मैंने गाँधीजी की एक सुंदर सुवाक्य पढ़ा था।’

‘कौन सा?’

'I WILL NOT LET OTHER TO WALK THROUGH MY MIND WITH THEIR DIRTY FEET'

-Mahatma Gandhi

'हाँ, अच्छा है।' मिराज ने सुनकर, समझकर और विचार करके उत्तर दिया।'

'कितना स्ट्रांग और आत्मविश्वास भरा है न?'

मीत की नजरें नीची थी और उसके दोनों हाथ जुड़े हुए मुद्रा में पैर पर रखे हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो मन ही मन कोई प्रार्थना कर रहा हो। वह प्रार्थना या तो अपना धैर्य और समझ बढ़ाने के लिए होगी या तो मिराज को खुलकर अपनी बात कहने की शक्ति मिले इसलिए होगी।

'सॉरी, पर मुझे अंदर ही अंदर एक बात खटक रही है कि यह सब जो मैं आपसे कह रहा हूँ वह आप तक ही रहेगा न?'

'इट्स ओ.के. यू डोन्ट हेव टू बी सॉरी यह तो स्वाभाविक ही है न। मैं कोई इतनी महान तो हूँ नहीं कि तुम इस प्रकार अपनी पर्सनल बातें मुझसे कहो। और अभी तक तुमने जितना कहा वह कहना भी क्या सरल है? मैंने भी अपने जीवन की एक डार्क साइड अपनी लाइफ के एक स्पेशल व्यक्ति को अकेले में ही कहा था।'

'दूसरी ओर मुझे ऐसा भी विचार आता है कि आपको मुझसे क्या चाहिए? कुछ भी नहीं। फिर भी आपने अपना बहुत सा समय

मुझे दिया। मेरी सभी बातों को शांति से समझा है। उसमें आपका कहाँ कोई स्वार्थ है?'

'स्वार्थ है न!'

'मैं नहीं मानता।'

'एक टाइम ऐसा था जब मैं भी तुम्हारे जैसी स्थिति में थी। और किसी ने मुझे उसमें से मुक्त करवाया। उस दिन से हमेशा दिल में यही रहता है कि सभी को इसी प्रकार मुक्तता मिलनी चाहिए। किसी का भी दु:ख देखती हूँ तो मुझे बड़ा दु:ख होता है। मेरा अपना दु:ख दूर करने हेतु ही मैं यह सब कर रही हूँ। और यही मेरा स्वार्थ है। तुम इस डाउन फेज़ में से बाहर आ जाओगे तो मुझे बहुत आनंद और संतोष मिलेगा।

किसी ने मेरे जीवन के पूरे ध्येय को बदल दिया है। उन्होंने मेरे लिए इतना अधिक किया है, जिसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती। तो अब मैं उनके लिए क्या कर सकती हूँ? उन्हें कुछ दे सकने में असमर्थ हूँ। हाँ, इतना अवश्य कर सकती हूँ कि अपने जैसे पीड़ित दूसरे मिराज और संयुक्ता को जीवन में सुख, शांति और समझ मिले उसमें कुछ अंश तक मैं सहायक बन सकूँ तो मेरा अहोभाग्य। और यही मेरी उनके लिए रिटर्न गिफ्ट होगी!'

‘आपकी बातें एवं विचार बहुत ऊँचे हैं। उसे समझने में मुझे बहुत देर लगेगी। वह व्यक्ति कौन है यह मुझे जानना है। पर पहले मुझे अपने मन में रहा-सहा भार आज इस पवित्र जगह में खाली कर देना है।’ मैं मिराज की आँखों में दिखने वाली सच्चाई देखती रह गई।

‘विश्वास रखना, तुम्हारी कोई भी बात बाहर नहीं जाएगी या तुम्हारे लिए मेरे मन में कोई भी नेगेटिविटी भी नहीं आएगी। क्योंकि तुझे जो प्रॉब्लम है, वह प्रॉब्लम आज के जमाने में किसे नहीं है? फर्क सिर्फ इतना है कि जिनके संस्कार ऊँचे हैं, वे उसमें से लौटने के लिए मार्ग ज़रूर ढूँढते होंगे। पर उन लोगों को रास्ता नहीं मिलता। इस खाई में से बाहर निकलने के लिए सभी रास्ते की खोज़ करते हैं। पर विश्वास किस पर करें यह बहुत बड़ा प्रश्न है।’

‘सही बात है। मेरे पास अभी तुम्हें कुछ कहने के लिए शब्द नहीं है। पर तुम्हारे एक-एक शब्द को आज मैं समझना चाहता हूँ। तुम्हें सुनने के बाद मैं एक भाई के तौर पर अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य से पीछे न हज जाऊँ इस बात का थोड़ा डर मेरे मन में है। पहले जो कुछ भी हुआ उसके लिए मुझे माफ कर देना मिराज। फिर से वैसा नहीं होने दूँगा।’

मीत के शब्दों से मंदिर के वातावरण की पवित्रता में सच्चाई

और पश्चाताप का भी अनुभव हुआ। दिल में दबाकर रखी हुई बातें यदि उचित समय पर कह दें तो वे संबंधों के बीच खड़ी गलतफहमी की दीवार को तोड़ देती है।

मिराज ने मीत की ओर देखा। मीत की आँखें भर आई थी। मिराज नरम पड़ गया था इसमें कोई संदेह नहीं था। उसकी आँखों में यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था। मेरा एक काम पूरा हुआ ऐसी संतुष्टि के साथ मंदिर की ओर देखकर मैंने भगवान का आभार माना।

कुछ मिनटों तक हमारे बीच में मौन छाया रहा और उन दो भाईयों के बीच स्नेह का अदृश्य आदान-प्रदान। मैं उन पलों की साक्षी बनी, जिसमें मैंने संबंधों को पुनः जीवंत होते देखा।

'मैं जिन महान व्यक्ति की बातें कई बार तुमसे कहा करती हूँ उन्हीं का कहना है कि 'आज का युवा बहुत प्योर है। पर सच्ची समझ न मिलने के कारण भ्रमित है। उन्हें रास्ता दिखाने वाला होना चाहिए। उन लोगों में मात्र मोह बढ़ गया है।' अब मिराज को भावुकता की धारा में से बाहर निकलकर दबी हुई भावनाओं और उलझनों को खाली करना बाकी था। ऐसा विचार करके मैंने उसकी विचारधारा की दिशा बदली।

'मोह.....हाँ....मोह... उसी में फंस गए।'

इतना कहकर मिराज चुप हो गया। आज एक नया ही और अंतिम चेप्टर वह कह देगा ऐसा स्पष्ट समझ में आ रहा था। उसके चेहरे पर दृढ़ता और पश्चाताप दोनों ही दिखाई दे रहे थे। शायद पहले तीन ऑप्शन में नए नाम जुड़ने वाले थे, जिसे कहने के लिए उसने अपने आप को स्ट्रांग किया....

(15)

'मूवी, गेम्स, चेटिंग... मेरा यही रूटीन ज़ारी रहा। इसी बीच मेरे साथ कुछ नया हुआ जिसके लिए मेरे अंदर स्ट्रांग इच्छा तो पहले ही जाग्रत हो चुकी थी। और वह इच्छा थी एक चेट फ्रेन्ड बनाने की।

जब सभी ओर से सिर्फ निराशा ही मिल रही थी तब आशा की एक किरण के तौर पर मुझे एक नई फ्रेन्ड मिली, प्रियंका। पहले ही दिन से मुझे अन्य चेट फ्रेन्ड्स से ज्यादा उसके साथ कम्फर्टेबल लगा। हम दोनों की लाइकिंग और थिंकिंग कुछ हद तक मेच होते थे।'

'अब तक मेरे जितने भी चेट फ्रेन्ड बने हैं उन सब में तुम बेस्ट हो।' प्रियंका की यह बात मेरी सबसे बड़ी खुशी का कारण बन गई। वह जीत की खुशी थी।

'रियली?'

'यस, यू आर सिम्पल एंड ऑनेस्ट। अन्य लड़कों की तरह तुम फर्ल्ट नहीं करते, वह मुझे अच्छा लगता है।'

‘यू आर आलसो वेरी नाइस।’ आज तक मैंने किसी लड़की के साथ इतनी फ्रीली बातें नहीं की है। यह बात मैं प्रियंका से कहना चाहता था पर बोल नहीं पाया।

मुझे प्रियंका का खुलापन अच्छा लगने लगा। मैं स्कूल में लड़कियों के साथ काम से काम रखता था। काम हो तो ही बात करता लेकिन जब परम और निखिल को लड़कियों के साथ ओपनली बातें करते हुए देखा तब से दिमाग में एक प्रकार की इन्फिरियरिटी का भूत घुस गया था। उस दिन के परम के शब्द ‘इट्स नॉट योर कप ऑफ टी’ ने मेरे अहंकार को चोट पहुँचाई थी। मैं संस्कारी था लेकिन इस मामले में मैं उसके साथ कम्पैरिज़न में पड़ गया। अपने आप को साबित करने के लिए बाहर कोई उचित पात्र नहीं मिलने पर इनटरनेट पर एक फ्रेन्ड की खोज शुरू हुई। जिसमें प्रियंका फीट होने लगी।

मेरा दिन कैसा बीता और क्या नया किया, यह सब प्रियंका से कहने की मेरी रोज की आदत पड़ गई। प्रियंका भी अपने फैमिली और फ्रेन्ड्स की बातें मुझसे शेयर करती। कुछ ही दिनों में हम दोनों के बीच इतनी गहरी फ्रेन्डशिप हो गई कि हम रोज़ कम से कम एक बार तो बात करते ही थे। ऐसा कह सकते हैं कि एक प्रकार

का एडिक्शन हो गया था।

यह कहते-कहते मिराज कमज़ोर पड़ने लगा।

‘इट्स ओ.के. मिराज। संकोच करने की ज़रूरत नहीं है। सभी एक दूसरे की देखादेखी करके ही ब्वाय फ्रेन्ड-गर्ल फ्रेन्ड बनाते हैं। सभी के पास कोई है और मेरे पास कोई नहीं, ऐसा प्रेशर रहता है। चाहे पढ़ाई की बात हो, पैसों की बात हो, स्टेटस की बात हो या फिर ऐसे कोल्ड रिलेशन की बात हो, हम सभी के लाइफ में पीयर प्रेशर ही मेन भूमिका निभाता है।’ मैंने मिराज को गिल्टी फीलिंग में से बाहर निकालने के लिए कहा।

उसने आगे बोलना शुरू किया।

‘प्रियंका मेरी सभी बातों का रिस्पांस देती, मेरा केयर करती। मुझे तो ऐसा ही लगता था कि क्या इतनी अच्छी लड़की हो सकती है?’

मैं कई बार प्रियंका के विचारों में खोया रहता। जो संतोष मुझे पहले विश्रुत और मीत से मिलता था वैसा संतोष अब मुझे प्रियंका से मिलने लगा। मुझे ऐसा ही लगता था कि अब मुझे किसी की ज़रूरत नहीं। एक तरफ प्रियंका के साथ मनमेल हो रहा था और दूसरी तरफ घर में सभी के साथ मतभेद हो रहा था।

मीत की पलकें झूक गई। उसके चेहरे पर गंभीरता के बादल

छाने लगे।

‘मिराज, तुम्हारे ट्यूशन सर का फोन था। कल से ट्यूशन जाना है।’ मम्मी के इन शब्दों को सुनकर मानो मेरे वेकेशन की ख़ुशियों पर पानी फिर गया।

‘ओह नो.... कल से ही? स्कूल और ट्यूशन दोनों?’ मैंने ज़ोर से पैर पटका।

‘हाँ। इतना वेकेशन तो मिला अब कल से पढ़ाई में लग जाओ।’ मम्मी ने कड़े शब्दों में कहा।

‘हाँ... हाँ... मुझे पता है। फिर से वही लेक्चर देने की ज़रूरत नहीं।’ मम्मी का अविनय करते हुए मैंने पलटकर जवाब दिया।

मेरे अक्खड़ बरताव से मम्मी हैरान थी। मम्मी जानती थी कि उन्होंने और कुछ कहा तो मैं सामने बहस करके ऐसे टेढ़े जवाब दूँगा। इसलिए वे वहाँ से चली गई। मम्मी-पापा मेरे बदले हुए व्यवहार की वजह नहीं समझ पा रहे थे। वे दोनों मेरे साथ थोड़ा समय बिताने लगे।

‘बेटा मिराज, क्या चल रहा है आजकल? स्कूल शुरू होते ही तुम तो बहुत बिज़ी हो गए हो।’ एक रात अचानक पापा मेरे पास आकर बैठ गए।

‘हाँ।’ मैंने शार्ट में ही बात पूरी की।

‘तुम्हारे पापा और मैं सोच रहे थे कि अब से हम रोज़ रात को वोक पर जाएँगे।’ मम्मी ने आते हुए कहा। ऐसा लगता था कि मुझसे बात करने से पहले दोनों आपस में तय करके आए थे कि क्या बातें करनी है।

‘देखेंगे। मुझे वोक पर जाने में ज्यादा इंट्रेस्ट नहीं है।’

‘क्यों? कभी-कभी जब परम रात को फोन करता था तब तो तुम जाने की ज़िद करते थे।’ मम्मी ने तुरंत कहा।

‘हाँ, पर जब भी उसके साथ जाना हो तब आप तो मना ही कर देते हो न।’

‘वह हमेशा रात को देर से ही बुलाता है तो फिर मना ही करना पड़ेगा न?’

‘रात के अलावा हमारे पास टाइम ही कहाँ है?’

‘अभी तुम्हारी उम्र ही ऐसी है कि शायद तुम्हें हमारी बातें पसंद न आए। पर जब तुम्हें स्वयं अनुभव होगा तब समझ में आएगा कि हम मना क्यों करते हैं।’

‘मेन बात यह थी कि आज से हम थोड़ा टाइम साथ में स्पेंड करेंगे।’ पापा ने बात को पलटने की कोशिश की।

‘हाँ, मिराज। आजकल तो मीत भी इतना बिज़ी हो गया है।

कितने समय से हम सब साथ बैठे भी नहीं हैं।'

'अब मैं बड़ा हो चुका हूँ। मुझे फ्रेन्ड्स के साथ ज्यादा मज़ा आता है, आपके साथ नहीं।' अभी भी मेरे व्यवहार में उतना ही अविनय था। पहले पापा के सामने बोलने की मेरी हिम्मत नहीं होती थी। पर अब मुझे उनकी भी परवाह नहीं थी।

'फ्रेन्ड्स के साथ जाने के लिए मना नहीं है लेकिन उसकी भी एक लिमिट होती है। समय, संयोग भी देखना चाहिए न?' मम्मी ने कहा।

'मिराज यदि मम्मी मना करती है तो उसकी कोई वजह तो होती होगी न?' पापा ने थोड़ा गंभीर होकर कहा।

'कोई वजह नहीं है। मम्मी को बस यही लगता है कि यदि एक बार ऐसे रात में जाने दिया तो मुझे आदत हो जाएगी। और फिर मैं बिगड़ जाऊँगा।'

'नहीं बेटा, हमें तुम पर विश्वास है लेकिन समय अच्छा नहीं है।'

'परम के मम्मी-पापा उसे पूरी फ्रीडम देते हैं। लेकिन मेरे लिए इस घर में हर प्रकार का रिस्ट्रिक्शन है।' आखिर जो बात मेरे मन में दबी हुई थी वह बाहर निकलने की तैयारी में थी। मम्मी-पापा की एक भी बात मेरे गले नहीं उतर रही थी। अंदर एक अलग ही

प्रकार का आक्रोश था। पता नहीं वह सब क्या था?

'तुम्हें ऐसा क्यों लगता है? तुम्हारी सब डिमान्ड पापा पूरी करते हैं फिर भी तुम्हें संतोष नहीं?' मम्मी ने पूछा।

'बेटा, परम की फैमिली बहुत हाई सोसायटी से हैं। उनकी थिंकिंग के अनुसार हम नहीं जी सकते। इसमें हमारे संस्कार नहीं टिक पाएँगे।' पहली बार मेरे बुरे व्यवहार पर भी पापा के शब्दों में कठोरता नहीं थी। मेरे दिल के किसी कोने में थोड़ा असर हुआ लेकिन अंदर नेगेटिविटी के फोर्स के सामने वह टिक नहीं पाया।

'आप लोगों को तो सिर्फ बाह्य जीवन शैली दिखाई देती है। उन लोगों के विचार भी मार्डन हैं जबकि आप और मम्मी पुराने ख़यालातं के हो। न तो आपके विचार में कोई बदलाव आया और न ही आपके रहने के ढंग में। आप दोनों बात-बात में बस सलाह ही दिया करते हो....' मैंने उनकी ओर देखे बिना ही कह दिया। क्योंकि सच तो यह था कि उनकी आँखों में देखने की मेरी हिम्मत ही नहीं हो रही थी। फिर भी इतने समय से जो अंदर दबा हुआ था वह आज बाहर निकल गया। बोलते-बोलते मेरी आवाज काँपने लगी।

यह सब सुनकर मम्मी को बहुत ठेस पहुँची। वे आगे बिना कुछ बोले रसोईघर में चली गई। एक ही घर में रहते हुए भी मैं सबसे

अलग हो गया था। गुस्से में मैंने बिना सोचे समझे कुछ भी कह दिया। दिमाग की नसें खिंचने लगी, गला सूखने लगा। मन किया कि उठकर रूम में चला जाऊँ लेकिन पापा अभी भी सामने ही बैठे थे। उन्हें भावुक होते हुए मैं देख नही सकता था।

एक सेकेन्ड के लिए मैंने उनकी ओर देखा और फिर नजरें झुका ली। एक तरफ अंदर रोष भरा हुआ था तो दूसरी तरफ मम्मी को खूब दुःख दे दिया इस बात का पछतावा था। भीतर अजीब घुटन थी। मुझे क्या करना चाहिए यह मुझे ही क्लीयर नहीं था। कई प्रश्नों और उलझनों के बीच मैं झूल रहा था। मैं खुद अपने ही साथ लड़ रहा था।

इतने में मीत घर पहुँचा। घर का वातावरण तंग था। उसके आते ही बात वहीं रुक गई। जो कुछ भी हुआ था इस बात का उसे बाद में पता चला। रात में वह मेरे रूम में आया।

‘कैसे हो भाई? आजकल बहुत चुप रहते हो?’ मीत पलंग पर मेरी बगल में पड़ा हुआ सामान हटाने लगा।

मैं प्रियंका को मैसेज कर रहा था।

‘हेलो... हाउ आर यू?’

‘व्हेर आर यू???’

‘कल से मेरी स्कूल शुरू हो रही है। आज क्यों तुम्हारा कोई मैसेज नहीं है?’

मैंने जल्दी से फोन बंद किया और मीत की तरफ देखा।

‘नहीं ऐसा कुछ नहीं है। तुम्हें भी कहाँ टाइम है यह देखने का कि मैं क्या कर रहा हूँ और क्या नहीं?’ मैं मानो बगावत पर उतर आया था।

‘यस। आई एम सॉरी फॉर देट। अब से मैंने तय किया है कि मैं घर में भले ही कम, लेकिन क्वालिटी टाइम दूंगा।’

‘वाह।’ मैंने आइब्रो ऊंची करके कटाक्ष से कहा।

‘तुमसे एक बात कहूँ?’ उसने नम्रता से पूछा।

मैंने सिर हिलाकर हाँ कहा।

‘पहले तो तुम छोटे थे तब हर बात में मुझसे पूछते थे लेकिन अब तुम बड़े हो गए हो। तुममें भी सही-गलत की समझ है। अपने अनुभव से तुमसे सिर्फ इतना ही कहूँगा कि जिस बात को हमारा दिल स्वीकार न करे वह काम करने से पहले सचेत हो जाना चाहिए। चाहे कैसी भी फ्रेन्डशिप हो लेकिन जहाँ खुद का दिल मना करे वहाँ आगे बढ़ने से पहले एक बार अवश्य सोचना।’

मैंने मीत की ओर देखा। उसकी वेधक नजरें मानो मिराज के

मन के आरपार जाने की कोशिश कर रही हो, ऐसा लगा।

‘मिराज तुम भले ही मीत से नाराज थे लेकिन उसकी कही बातों को तुम ध्यान से सुन रहे थे इस बात का प्रूफ तुम आज खुद ही दे रहे हो।’ मैंने कहा।

‘हँ...हाँ, उस दिन उसकी बात सुनते ही मेरे दिमाग में मूवी वाले दिन की बात याद आ गई। उस वक्त जो गिल्टी फील हो रहा था वह याद आ गया।’

‘कल से उसकी स्कूल शुरू हो रही है। अब तुम दोनों सो जाओ।’ मम्मी ने बाहर से ही आवाज लगाकर कहा।

‘ठीक है सो जाओ शांति से।’ मेरे कंधे पर हाथ रखकर मीत खड़ा हुआ। मैंने मोबाइल में टाइम देखा पौने ग्यारह बजे थे। प्रियंका के मैसेज भी आए थे।

‘आज सुबह से ही मेरा नेट बंद था इसलिए मैसेज नहीं कर पाई। अभी तुम्हारे मैसेज पढ़े। विल टोक टुमारो। मिस यू।’

पहली बार प्रियंका ने ‘मिस यू’ कहा था। सामान्य भाव से कहे गए इन शब्दों का मुझ पर बहुत असर हुआ।

‘मिस यू’, ‘विथ लव’ ऐसे सभी शब्द दिमाग को बिल्कुल पागल बना देते हैं कि कुछ होश ही नहीं रहता। इन शब्दों के कारण

अनजाने में ही, लिखने वाले व्यक्ति के करीब होते जाते हैं।

'मुझे कोई समझता ही नहीं है। एक प्रियंका ही है जो मुझे समझती है। आज तो मेरी उससे भी बात नहीं हो पाई। कल से तो स्कूल, ट्यूशन और होमवर्क में ही टाइम खत्म हो जाएगा...' यह सोचकर मैंने एक गहरी साँस ली।

प्रियंका के साथ बात करने नहीं मिली तो मेरा क्या होगा? यह दु:ख मेरे अंदर शुरू हो चुका था।

मम्मी-पापा का जो अविनय किया था उसकी वजह से सुबह से ही मेरा सिर भारी था। कहीं चैन नहीं आ रहा था। प्रियंका के पास दिल हल्का करना था लेकिन आज उसके साथ भी बात नहीं हो पाई। पूरा दिन बोरियत, भोगवटा और अकुलाहट में ही बीता। मोबाइल में गेम खेलने की कोशिश की लेकिन उसमें भी दिल नहीं लगा। एक अलग प्रकार की बेचैनी महसूस कर रहा था। आखिरकार लाइट बंद करके मैं सो गया।

पिछले दिन घर में जो कुछ भी हुआ उसके लिए सुबह मम्मी-पापा को सॉरी कहने का मन तो हुआ लेकिन कह नहीं पाया। सवेरे जब स्कूल जाता तब मम्मी खिड़की के पास बाय कहने खड़ी रहती। तब मैं ही मना करता कि अब मैं छोटा नहीं। आप यूँ खिड़की के

पास मत खड़े रहो। लेकिन आज जब सचमुच मम्मी खिड़की के पास नहीं खड़ी थी तब मेरी नजरें मम्मी को ढूँढ रही थी।

स्कूल का पहला दिन उदासी के साथ शुरू हुआ। अनेक विचारों की श्रृंखला के बीच प्रियंका का चेहरा आ जाता था। बहुत दिनों के बाद स्कूल के सभी फ्रेन्ड्स मिले थे इसलिए कुछ पल अच्छा लगा। परम भी अपने पुराने फ्रेन्ड सर्कल में खोया हुआ था। हमने दूर से ही नजरें मिलाई, हाथ उठाया और एक-दूसरे से हाय कहा। मुझे किसी के साथ ज्यादा बात करने में कोई रस नहीं था। बस उन लोगों की बातों को शांति से सुन रहा था।

स्कूल में किसी भी टीचर ने कुछ खास नहीं पढ़ाया। सभी ने अब से पढ़ाई को सीरियसली लेने पर ही ज़ोर दिया। नौवीं कक्षा ही दसवीं कक्षा की नींव है इसलिए गोल सेट करने की बातें कही। मैं भी पढ़ाई को सीरियसली लेकर आगे बढ़ना चाहता था। लास्ट एक्ज़ाम में अच्छे मार्क्स आने के बाद सभी के सामने मेरी एक इमेज़ बन चुकी थी। मैं उसे बनाए रखना चाहता था। अच्छे मार्क्स मिलने पर खुद को भी एक तरह से संतोष हुआ था।

लेकिन पढ़ाई के विचार ज्यादा लम्बे समय तक टिक नहीं पाते थे। मुझे बीच-बीच में परम, निखिल, प्रियंका याद आ जाते। जिससे

मैं किसी भी सर या टीचर की बातों पर फोकस नहीं कर पा रहा था। रिसेस में लंच बाक्स हाथ में लेते ही फिर से मम्मी की याद आ गई।

'लेकिन क्या सारी गलती सिर्फ मेरी ही है? नहीं, उन लोगों की भी भूल तो है ही। वे लोग मुझे समझे ही कहाँ हैं। मुझे जो चाहिए, मुझे जो करना है वह सब मुझे इज़िली कभी भी नहीं मिलता। हमेशा राह देखनी पड़ती है। क्या सबकुछ मुझे ही समझना है, मुझे ही कॉम्प्रोमाइज़ करना है!' फिर से मेरे अंदर आर्ग्युमेन्ट शुरू हो गई। मेरे दिल में जो थोड़ा बहुत पछतावा था वह भी न रहा। बात फिर से वहीं जा अटकी जहाँ अटकी हुई थी।

इस प्रकार स्कूल का दिन उत्तर-दक्षिण दिशा के जैसे इस पार से उस पार के बीच झूलते हुए मनोदशा के साथ बीता।

'हेय मिराज, आज का दिन कितना हेवी था न?' आखिरकार छुट्टी होने के बाद परम ने आवाज लगाकर स्कूल के गेट के पास मुझे रोका।

'हाँ यार, मुझे भी बहुत हेवी लगा।' हम दोनों के लिए दिन हेवी होने के कारण अलग-अलग थे।

'चल, तो फिर आज शाम को ट्यूशन के बाद मिलते हैं।' वह कोई प्लान बनाने के मूड में लग रहा था।

‘अरे हाँ, आज तो ट्यूशन भी जाना है न?’ मुझे और ज्यादा बेचैनी होने लगी।

‘हाँ यार, जाना तो पड़ेगा। लेकिन मेरे पास एक आइडिया है।’

‘क्या?’

‘आज ट्यूशन के बाद हम कहीं बाहर चलें?’

‘बाहर? कहाँ?’

‘वह बाद में सोचेंगे। देख अब पढ़ाई में लोड बढ़ने वाला है इसलिए जो कुछ करना है अभी से कर लेते हैं। बाद में तो ये लोग सिर उठाकर ऊपर भी नहीं देखने देंगे।’

‘देखेंगे। मुझे अभी कहीं जाने की इच्छा नहीं है।’

‘वह तो हो जाएगी। जब ट्यूशन क्लास में मिलेंगे तब तय करेंगे। ओ.के. बाय।’ परम को आज उसका ड्राइवर लेने आया था। निखिल भी बैठा हुआ था। उसने दूर से मेरी ओर हाथ हिलाया।

मैंने भी हाथ ऊँचा किया और स्कूल बस में बैठकर खिड़की के बाहर देखने लगा। मैं फिर से विचारों में खो गया।

मीत के सामने बात करने में मिराज को अब कोई संकोच नहीं हो रहा था। वह अपनी बातों में खो गया। जबकि मैं और मीत, मिराज

के जीवन के उन पन्नों में खो गए थे जहाँ से हताशा और निराशा ने उसके शांत मानस को व्यथित करना शुरू किया था।

घर पहुँचते ही मैंने राहत की साँस ली। लेकिन कल जो कुछ हुआ उसकी प्रतिध्वनि मेरे मन में और घर में गूँज रही थी। मम्मी सामने से मुझसे बात करे इस आशा के साथ मैंने चुपचाप घर में प्रवेश किया। मैं मम्मी से आँखें नहीं मिला पा रहा था। हमारे बीच मौन काम कर रहा था। रोज की तरह खाना थाली में परोसा गया लेकिन मुझे उसमें कोई स्वाद नहीं आ रहा था। मम्मी की नजरें भी मुझसे कुछ सुनने की आशा में मेरे सामने देख रही थी लेकिन मैं मौन ही रहा। खाना खाकर रूम में पहुँचा और मोबाइल हाथ में लेकर पलंग पर लेट गया। प्रियंका का कोई मैसेज नहीं था। ट्यूशन जाने का टाइम हो चुका था। तब तक कई बार मोबाइल चेक किया लेकिन उसका कोई मैसेज नहीं था। प्रियंका को फटाफट मैसेज किए और उसका कोई रिप्लाई आए उसकी राह देखने लगा।

ट्यूशन में भी वही पढ़ाई की बातें। कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। घर में हुए क्लेश के कारण और प्रियंका के साथ कॉन्टेक्ट नहीं हो पाने के कारण मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

'मिराज, व्हेर आर यू?' अचानक सर ने मुझसे पूछा।

‘हियर.... आइ एम हियर ओन्ली सर।’ सर की आवाज मानो घंटी की तरह मेरे दिमाग में बजी। मैं थोड़ा शर्मिंदा हुआ। मेरी आँखों के हाव भाव और मेरे शब्द दोनों मेच नहीं कर रहे थे इसलिए सर ने फिर से पूछा।

‘मैं तुम्हें कब से नोटिस कर रहा हूँ। तुम्हारा ध्यान कहीं और ही है। आज पहले दिन ही यह हालत है तो साल भर क्या करोगे?’ पहले ही दिन यूँ सर ने सभी के सामने मुझे लज्जित कर दिया।

‘नो सर। नथिंग लाइक देट।’

‘तुम्हारे उम्र के लड़कों का यही प्रॉब्लम है। गर्ल फ्रेन्ड या ब्वाय फ्रेन्ड के साथ झगड़ा हुआ तो पढ़ाई पर से ध्यान भटक जाता है।’ सर ने तो यूँ हवा में ही बॉल फेंका था पर वह मुझे लग गया। इसके पीछे का कारण मुझे समझना ही नहीं था। मैं खुद को ही धोखा दे रहा था। मुझे अपने तरीके से जीना था और उसमें मुझे किसी की दखल नहीं चाहिए थी।

सर के कमेन्ट्स सुनकर पूरा क्लास मुझ पर हँसने लगा, जो मेरे लिए अपमानजनक था।

‘अरे, सेम टू सेम। एल.एल.बी. क्लास में मेरी भी ऐसी ही हालत थी।’ मीत ने हमेशा की तरह मज़ाकिया टोन में कहा।

मैंने उसकी ओर घूर कर उसे सीरियस होने का इशारा किया। मेरी इच्छा थी कि आज सिर्फ मिराज ही नहीं बल्कि मीत भी खुलकर बात करे। वह सरल होगा तो ही मिराज उसे और अच्छी तरह समझ पाएगा।

'मिराज, तुम्हारी और मेरी हालत में कुछ खास अंतर नहीं था। बस दोनों के कारण अलग थे। हम दोनों 'प' में ही उलझ गए थे। और इसी वजह से हम जहाँ अटक गए थे वहीं से हमारे बीच की दूरी बढ़ रही थी।' मिराज आगे कुछ कहे इससे पहले ही मीत बीच में बोल पड़ा। बात को ज्यादा समय तक अंदर दबाए रखने की धीरज़ मानो कम पड़ गई थी।

'किस 'प' की बात कर रहे हो?' मिराज ने पूछा।

'तुम्हें पियर प्रेशर और प्रियंका नाम के 'प' ने और मुझे पापा नाम के 'प' ने उलझाया था।'

मीत, मिराज की ओर टकटकी लगाए देखता रहा।

'तुम्हारी जो हालत थी, एल.एल.बी. में मेरी भी वही हालत थी। मैंने उसे अपना तो लिया था लेकिन उसे स्वीकार करने में मुझे खुद अपने आप को बार-बार धक्का मारना पड़ता था। बाहर मैं नॉर्मल होने का नाटक कर रहा था लेकिन अंदर अपने आप में एक लड़ाई

शुरू थी। उसके लिए मेरी शक्तियाँ कम पड़ रही थी। इसलिए उस वक्त तुम्हारे साथ तुम्हारा दर्द बाँट सकूँ इतनी शक्ति मुझमें नहीं थी। बाहर से गुमसुम दिखाई देने वाले मीत के अंदर 'प' के साथ बहस शुरू थी।'

'जिस शक्ति की खोज़ तुम कर रहे थे वह शक्ति तो तुम दोनों के पास ही थी। कई बार खुलकर मन की बात कह देने से ही परिस्थिति का सामना करने की शक्ति मिलती है। कई बार सॉल्यूशन की नहीं लेकिन ऐसे इंसान की ज़रूरत होती है जो हमारी बातें सुने।' मैंने मीत और मिराज की ओर देखते हुए कहा।

'दीदी सच कह रही हैं। तब यदि हमने आपस में बात कर ली होती तो...'

'भले तुम्हें मुझसे शिकायत हो कि मीत के पास मेरे लिए समय नहीं है, लेकिन सच तो यह है कि तुम इसलिए चुप रहे कि खुद के प्रॉब्लम बता कर अपने भाई की परेशानी को बढ़ाना नहीं चाहते थे।' मीत ने मिराज के अंदर जो स्थिति थी उसे बयान करते हुए कहा।

उसकी बातों में हमेशा एक अलग ही मेच्योरिटी रहती।

'और तुमने क्यों कुछ नहीं कहा?'

यह प्रश्न सुनते ही मीत स्तब्ध हो गया और फिर हँस पड़ा।

‘क्योंकि मैं हमेशा तुम्हारा बड़ा भाई बनकर ही रहना चाहता था। मुझे पहले से ही तुम्हारा सहारा बनने की आदत थी इसलिए मैं समझ नहीं पाया कि कभी मुझे भी सहारा लेना चाहिए।’ कहते हुए मीत की आँखें नम हो गई लेकिन उसके चेहरे पर एक स्माइल थी। उसने गर्दन झुका कर सिर हिलाया और फिर अपनी ही बात पर हँस पड़ा।

इसे मीत की स्ट्रैन्थ मानें या वीकनेस, यह भी एक प्रश्न था।

मिराज गंभीर था, मानो उसके और मीत के बीच जो कुछ हुआ वह उसे समझ में आ रहा हो।

‘तुम एक साथ कई उलझनों में फंस गए इसलिए तुम्हें ऐसा लगने लगा कि घर में किसी को तुम्हारी परवाह ही नहीं है। कुछ हद तक शायद यह सच भी हो सकता है। फिर भी क्या हम खुद सामने से किसी से बात कर अपने मन का बोझ हलका नहीं कर सकते हैं? आज के इस फास्ट जमाने में, जब सभी बिना किसी लक्ष्य के जीवन में दौड़ रहे हैं, तब हमारे बिना कहे ही कोई हमारा मन पढ़ ले, ऐसी अपेक्षा रखना योग्य है?’ मेरा प्रश्न ही मिराज के लिए मेरा जवाब था।

(16)

मिराज ने एक गहरी साँस ली। आज उसके लाइफ पज़ल का कौन सा पीस मिलने वाला है, वह देखना था।

‘चल, आ रहा है न बाहर।’ ट्यूशन से छूटने के बाद परम ने पूछा।

‘नहीं।’

‘क्यों ?’

‘बस यूँ ही। आज मूड नहीं है।’ मैंने तय किया था कि परम के साथ बाहर जाना कम कर देना है।

‘अरे इसीलिए तो आने के लिए कह रहा हूँ। आखिर दोस्त कब काम आएँगे।’

‘नहीं प्लीज, नाट टुडे।’

‘कई बार हम दूसरों से इतना प्रभावित हो जाते हैं कि अपना हित-अहित भूलकर उनके पीछे दौड़े चले जाते हैं।’ मिराज की बात

को बीच में रोककर उसके जिग्सॉ पज़ल को कम्पलीट करने के लिए फिर से उसे एक पीस दिया।

'ऐसा क्यों होता है, दीदी?'

'अकेले पड़ जाने के डर से।' मेरा उत्तर मिराज को सीधे ही उसकी वीकनेस तक खींच ले जाएगा यह मुझे मालूम था। पर वास्तविकता को जाने बिना उसमें से बाहर निकलने का प्रयत्न करना व्यर्थ होता है। मेरी इच्छा थी कि मिराज उसकी वीकनेस को मात्र समझे ही नहीं अपितु उसे एक्सेप्ट करना भी सीखे। तो वह अवश्य ही एक दिन उससे बाहर आ सकेगा।

मिराज चुप था पर उसकी आँखें मेरी बात को स्वीकार कर रही थीं।

'इसीलिए तो तुम गए?'

'आपको कैसे मालूम पड़ गया, दीदी? मैंने तो अभी कहा भी नहीं।'

'तुम्हारी अभी की हालत को देखकर। तुम तब न गए होते तो आज तुम्हारी ऐसी हालत नहीं होती।'

मेरी बात सुनकर मिराज आश्चर्यचकित रह गया।

'बट इट्स ओ.के.। देट वाज़ योर पास्ट विच इज़ गोन। नाउ

यू नो कि तुम्हारी पज़ल में कौन फीट है और कौन अनफिट। मे बी यू गेट न्यू पीपल, हू रियली केर फॉर यू एन्ड हू डीज़र्व टू बी पार्ट ऑफ योर लाइफ पज़ल।'

'यस दीदी। आइ वान्ट टू गिव अ न्यू स्टार्ट टू माय लाइफ। जब मैं आपके साथ बात करता हूँ तब ऐसा लगता है कि मेरे जीवन को एक नई दिशा मिल रही है।'

'फिर आगे क्या हुआ?'

परम फोर्स किए जा रहा था कि मैं उसके साथ जाऊँ। मेरा ध्यान मोबाइल में था। प्रियंका के कोई मैसेज नहीं थे क्योंकि उसने मेरे कोई मैसेज देखे ही नहीं थे तो रिप्लाय कैसे आएगा?

'बोल क्या कहता है? आ रहा है न?' परम ने फिर से पूछा।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ?

'निखिल भी आ रहा है। कह रहा था कि कोई अच्छी जगह पर जाएँगे। बस एक घंटे में ही वापस आ जाएँगे। इसलिए तुझे घर लौटने में भी देरी नहीं होगी। अब मना मत करना।'

बाहर जाने के लिए घर में क्या कहूँगा ऐसा सोचकर मैं मौन रहा। दो मिनट बाद लगा कि जल्दी घर जाकर करूँगा भी क्या?

वैसे भी मूड अच्छा नहीं है तो इन लोगों के साथ कहीं बाहर घूम आऊँगा तो अच्छा लगेगा। इस विचार से मैंने परम के साथ टाइम पास करने का निश्चय किया। परम और निखिल के साथ रहकर मैं खुद से ही दूर भाग रहा था।

हिम्मत करके मैंने मम्मी को फोन किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि किसी भी प्रकार की पूछताछ या सलाह-जवाब किए बिना मम्मी ने जाने के लिए हाँ कह दिया।

'थैंक यू।' मैंने मम्मी को सॉरी तो नहीं कहा पर 'थैंक यू' कहने में खुद को रोक न पाया।

मम्मी के प्रेम ने मुझे आंतरिक शांति दी।

'कहाँ जाना है?' मैंने परम से पूछा।

'कैफे में।'

'ओह। तुम इसके लिए इतना फोर्स कर रहे थे?'

'नहीं भाई नहीं। नया कैफे खुला है। निखिल जाकर आया है। कह रहा था कि अच्छा है।'

उसी समय पीछे से एक कार आकर जोर से हॉर्न मारा। हमने पीछे मुड़कर देखा। निखिल कार लेकर आया था।

‘तेरे पापा ने तुझे गाड़ी दे दी?’ परम ने हँसकर कहा।

‘हाँ, कभी-कभी तो देते हैं न।’

मैं और परम, निखिल की कार में बैठ गए। बीस मिनट बाद कार एक पार्किंग में जाकर रुकी।

‘ओह! यहाँ जाना है?’ परम ने तुरंत कहा।

‘लो, तुम्हें कैसे मालूम पड़ा?’

‘अरे बाहर से ही दिख रहा है कि अभी-अभी इनॉग्यरैशन हुआ है।’

‘यस।’

‘यह तो...’ मेरा वाक्य अधूरा रहा।

‘प्लीज़ यार, कुछ नेगेटिव मत कहना। हम सिर्फ कॉफी ही पीएँगें।’ परम ने मुझे आगे बोलने का स्कोप ही नहीं दिया।

एक ही स्थान में अंदर प्रवेश करते समय हम तीनों की मनोदशा अलग-अलग थी। अपनी मनपसंद जगह में जाते समय जो खुशी होती है वह खुशी और मस्ती निखिल के चेहरे और चाल से झलक रही थी। परम कुछ नया जानने और देखने की उत्सुकता के साथ चारों ओर नज़रें घूमाता हुआ आगे बढ़ रहा था। और मैं फिर से एक बार

उचित-अनुचित के विचारों में उलझा हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। अब आने के बाद अंदर प्रवेश करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। वैसे भी विचार कर-करके मेरा मन थका हुआ था। अतः ज्यादा कुछ सोचे बिना मैंने निराश और उदास मन से अनिच्छा के साथ अंदर प्रवेश किया।

अंदर जगमगाती ब्लू और रेड लाइट की चमक मेरे चेहरे पर पड़ी। धीमा पर मादक म्यूजिक, चारों ओर फैले धुएँ के हल्के-हल्के गोलाकार कश, अंदर का वातावरण, वहाँ बैठे युवाओं की सुध-बुध भूलाकर उनके मन पर हावी हो चूका था।

निखिल ने एक टेबल के पास जाकर परम की ओर देखा। परम ने सिर हिलाकर सहमति दी। दोनों वहाँ जाकर बैठ गए। मैंने पीछे खड़े रहकर आस-पास नज़रें घुमाई। वहाँ के म्यूज़िक में मस्त हुए युवाओं के चेहरे पर स्माइल, स्टाइल और स्टेटस झलक रहे थे। मैं भी जाकर उनके साथ बैठ गया। निखिल सोफे पर एक हाथ फैलाकर दूसरे हाथ से सबकी सेल्फी लेने लगा। उतने में ही शिवांगी सामने से आती हुई दिखाई दी। मुझे शॉक लगा। परम को भी आश्चर्य हुआ।

'हेल्लो एवरीवन।' एक बड़ी स्माइल के साथ हाथ हिलाकर शिवांगी ने सभी को ग्रीट किया।

‘हाय डियर’ निखिल खड़ा हुआ और उससे गले मिला।

परम मेरी ओर देखकर मुस्कुरा दिया।

उसी समय वेटर आकर खड़ा हो गया। मैंने आईस टी मंगवायी। परम ने कोल्ड कॉफी के साथ सैंडवीच और शिवांगी ने कोल्ड कॉफी मंगवायी। निखिल ने आईस टी और डबल एप्पल फ्लेवर शीशा (हुक्का)आर्डर किया।

मैंने मीत की तरफ देखा। उसने मिराज की बातों को सुनने के लिए अपने चेहरे के हाव-भाव और दिल के आवेग पर नियंत्रण कर रखा था। मिराज मेरी तरफ देखकर आगे की बातें कह रहा था। मैंने मीत पर एक नज़र डालकर तुरंत ही मिराज की ओर अपनी आँखें और कान के साथ मन को भी स्थिर किया।

‘व्हाट अ सरप्राइज़! हमें मालूम नहीं था कि आप भी आने वाली हैं।’ परम ने निखिल की ओर देखते हुए शिवांगी से कहा।

‘आप? आइ एम नाट एन आंटी।’

‘ओह.... सॉरी शिवांगी।’ परम ने स्माइल देते हुए कहा।

परम के जैसे लड़के हों, वहाँ शिवांगी को कहने की ज़रूरत ही नहीं कि ‘यू केन कॉल मी शिवांगी।’

‘वाय आर यू सो साइलेन्ट? सॉरी बट आइ फरगॉट योर नेम।’

शिवांगी ने मेरी ओर देखते हुए कहा।

‘मिराज।’

‘मिराज। नाइस नेम।’

‘बेचारा, आज ट्यूशन क्लास में सर द्वारा की गई गर्लफ्रेंड वाली कमेन्ट से अपसेट है।’ परम तुरंत ही बोल उठा।

‘ओह रियली? उसमें अपसेट होने जैसा क्या है भाई? आइ होप यू आर नार्मल।’ निखिल हँसने लगा।

‘हाँ यार, पर अपने मिराज भाई एकदम सीधे हैं।’ परम ने कहा।

‘जलेबी जैसा सीधा?’ शिवांगी ने हँसकर कहा।

मुझे ये सब बातें अच्छी नहीं लग रही थी फिर भी हँसकर रिस्पोन्स देना पड़ रहा था।

‘देख मिराज, मुझे देख। तुम मुझे अभी यहाँ सब के बीच कहो कि शिवांगी और मेरा चक्कर है तो मैं जितना खुश होऊँगा उससे ज यादा तो ये खुश होगी।’ निखिल ने शिवांगी की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

‘शट अप। ये तो यह निखिल ही मेरे पीछे पड़ा है। ये और इसके सभी फ्रेन्ड्स मेरे पीछे दुम हिलाकर घूमते थे।’ शिवांगी ने

निखिल की पीठ पर मारते हुए कहा।

मेरी आंतरिक बेचैनी बढ़ रही थी। मेरे साथ फिर से वैसा ही गलत हो रहा था लेकिन पता नहीं क्यों मैं इस ट्रेंड के साथ घुलने-मिलने की कोशिश कर रहा था। बॉडी लेंग्वेज और माइन्ड लेंग्वेज का बैलेन्स बनाकर रखने में अंदर संघर्ष चल रहा था।

उसी समय वेटर हुक्का लेकर आया और उसे जमीन पर रखा। हुक्के के ऊपर रखे गए कोयले को एक छोटे से चिमटे से ठीक तरह से सेट किया और हँसकर हुक्के में फिक्स नली को निखिल के हाथ में पकड़ाकर चला गया। निखिल ने वह शिवांगी को ऑफर किया।

‘तुम्हारे लिए ही तो स्पेशली इस जगह में आए हैं।’

शिवांगी ने पैनी आँखों से मीठी स्माइल के साथ निखिल की ओर देखा और एक कश मारकर हवा में धुँआ छोड़ा।

यह सब देखकर एक मिनट के लिए परम की साँसें रुक गई। मेरी धड़कनें तो तभी से बढ़ गई थी जब से इस जगह पर कदम रखा था। वैसे तो, शिवांगी की पर्सनालिटी देखकर वह हुक्का पीए इसमें आश्चर्य करने जैसी कोई बात नहीं थी।

फिर शिवांगी ने निखिल को हुक्के की नली पास की।

‘तुम लोगों ने निखिल का ऐसा रूप पहले नहीं देखा होगा

न? लोग तो मुँह में से धुँआ निकालते हैं पर यह तो नाक में से भी निकाल सकता है।' शिवांगी ने ऐसा कहकर निखिल को करतब दिखाने हेतु प्रेरित किया।

निखिल ने कॉलर ऊपर किया और तुरंत वह करतब कर दिखाया।

'ग्रेट मेन।' परम ने कॉफी की सीप लेते हुए निखिल की प्रसंशा की।

'सॉरी स्कूल बॉयस, तुम्हें अभी देर है।' शिवांगी ने परम और मेरा मज़ाक उड़ाते हुए कहा। उसकी कमेन्ट परम के लिए माचिस की तीली में आग लगने जैसी थी।

'नो इट्स सेफ। इसमें कहाँ निकोटीन होता है? इसमें सिर्फ एप्पल फ्लेवर है। नो टोबेको।' निखिल ने कहा।

'हाँ, मैंने भी ऐसा ही सुना है। पर मेरे पापा कहते हैं कि तुझे अभी इन सबमें नहीं पड़ना है।' परम ने जवाब दिया।

'यह सब कहने की बातें हैं, टोबेको होता ही है।' मीत बोल पड़ा।

'हाँ।' मिराज ने सहमति जताई।

'फिर?' मैंने बात को फिर से ट्रेक पर लाने के लिए कहा।

'वैसे तो तुम लोगों को शायद यहाँ एन्ट्री भी न मिले पर इस जगह का ओनर मुझे अच्छे से पहचानता है इसलिए तकलीफ नहीं है।' निखिल ने गर्व से कहा।

इस शहर में नया होने के बाद भी लगता है इसकी सभी जगह अच्छी पहचान हो गई है। होगी ही न, दिनभर सभी जगह घूमता-फिरता जो रहता है। मेरे मन में निखिल के प्रति जो अभाव था वह बोल उठा।

शिवांगी ने मुझे सेन्डविच ऑफर की पर इस समय मेरे गले के नीचे से कुछ भी उतरना मुश्किल था। मन तो कर रहा था कि यहाँ से चले जाऊँ। पर ऐसा करना भी मुश्किल था।

परम, निखिल और शिवांगी हँसी मजाक कर रहे थे और मैं शोक में था।

'प्रियंका?' उसी समय पीछे के टेबल पर से किसी ने आवाज दी।

और आगे जा रही एक लड़की ने पीछे मुड़कर देखा।

'वाऊ।' परम के मुँह से निकल गया।

शोक, आघात और असमंजस के मिले-जुले इस माहौल में मेरे स्वमान और संस्कार की कीमत भी धुँए की तरह उड़ रही थी। मुझे फिर से प्रियंका की याद आ गई। मन फिर से प्रियंका की चिंता करने

लगा। मेरा हाथ मोबाइल की ओर बढ़ा पर बैटरी डाउन थी। जैसे ही मोबाइल ऑन किया वैसे ही शट डाउन हो गया। सामने दीवार पर लटकती घड़ी में टाइम देखा।

‘लेट हो गए।’ इतना कहते ही मैंने परम की ओर देखा तो मैं चौंक गया।

(17)

परम के हाथ में हुक्का था। कुछ पल पहले मेरे सामने जो परम था वह अचानक ही नए रंग में रंग चुका था। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही।

‘परम...’ मैं जोर से चिल्लाया।

‘चिल.... इसमें निकोटीन नहीं है!’ परम ने मेरी ओर हाथ से इशारा करते हुए लापरवाही से कहा।

मैंने निखिल की ओर देखा। वह और शिवांगी पास-पास बैठे थे और मोबाइल में कुछ देखकर हँस रहे थे। फिर दोनों सेल्फी लेने में मशगूल हो गए। वे लोग अपनी ही दुनिया में बिज़ी हो गए थे और परम भी मेरे हाथों में से फिसला जा रहा था। मेरा मन कचोटने लगा।

‘बाय।’ पास वाले टेबल पर जो ग्रुप बैठा था वह प्रियंका नाम की लड़की से बाय कह रहा था।

इन सब असमंजस के बीच मुझे फिर से प्रियंका की याद आ गई।

प्रियंका के रिप्लाय की राह देखने में अब मेरी धीरज टूट रही थी। एक फ्रेन्ड होने के नाते मेरी अपेक्षा परम पूरी नहीं कर पाया, वह शायद प्रियंका पूरी करेगी, ऐसा मानकर मैं प्रियंका की ओर खिंचा जा रहा था? या फिर गर्ल फ्रेन्ड होना वह बहुत कॉमन और लाइफ का इम्पोर्टन्ट पार्ट है ऐसा सोचकर मैं अपने जीवन में प्रियंका को अधिक महत्व दे रहा था? खैर जो भी हो.... वजह जानना मैंने ज़रूरी नहीं समझा। मेरा ध्यान तो बंद हो चुके मोबाइल पर था। वहाँ बैठने में मुझे कोई रस नहीं था। मैं घर जाना चाहता था।

मीत ने एक गहरी साँस ली।

'तुम्हारा मोबाइल बंद हो गया है न? देखो पास ही चार्जिंग पॉइन्ट है।' यह कहते हुए परम ने एक कश मारा और उसे खाँसी आने लगी।

'क्रेजी, धुआँ बाहर छोड़ना होता है!' निखिल ने मोबाइल में से सर उठाकर परम को सलाह दी।

'मुझे अब जाना होगा। मुझे लेट हो रहा है।' सभी अपने मस्ती में मस्त हैं तो मेरा यहाँ क्या काम है?

'गाइज़, आइ आलसो हेव टू लीव।' शिवांगी ने भी कहा।

'ओ.के. देन लेट्स गो।' निखिल ने परम से कहा।

परम ने हुक्के की ओर देखा।

'छोड़ अब, नेक्स्ट टाइम।' निखिल ने परम के सिर पर चपत लगाते हुए कहा।

सभी उठकर चलने लगे। निखिल ने केश काउन्टर पर जाकर बिल पे किया। मैं फटाफट बाहर निकल गया। बाहर निकलकर केफे पर लगे हुए बोर्ड की ओर देखा।

'साल्वेशन केफे एन्ड शीशाबार।'

साल्वेशन अर्थात् मुक्ति। लेकिन कौन सी? जीवन से मुक्ति या जीवन में मुक्ति???

मिराज की बात सुनकर मुझे झटका लगा। लेकिन उसने अपनी आप बीती सच-सच बता दी अतः अब उस पर गुस्सा करने का कोई कारण नहीं था। मैं मिराज को देखती रही। वह बिना रूके अपनी बात कहे जा रहा था।

मैं मुश्किल से चार-पाँच कदम आगे बढ़ा था कि पीछे से आवाज आई।

'मि...राज।'

आवाज जानी-पहचानी थी। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो विश्रुत खड़ा था।

‘हाय।’ विश्रुत की आवाज़ में उत्साह था।

‘हाय।’ मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई। मैं जिस जगह से बाहर निकला था, यदि विश्रुत को उसका पता चलेगा तो वह मेरे बारे में क्या सोचेगा। यह सोचकर मुझे थोड़ा टेंशन होने लगा।

‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’

‘मैं.... कुछ नहीं वह तो बस यूँ ही....’ क्या जवाब दूँ वह मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

‘मैं यहाँ ऊपर जो गिफ्ट शॉप है, वहाँ गया था। मम्मी-पापा की मैरेज एनिवर्सरी आ रही है तो सोचा कोई छोटी सी गिफ्ट लेकर उन्हें दूँ।’ विश्रुत के चेहरे पर खुशी दिखाई दे रही थी।

तभी पीछे से परम हँसता-हँसता आया। और उसके पीछे ही निखिल और शिवांगी भी आए। निखिल शिवांगी के कंधे पर हाथ रखकर चल रहा था।

‘हाय।’ परम ने आते ही पूरे जोश से विश्रुत का कंधा थपथपाया।

‘तुम इसे पहचानते हो?’ मैंने पूछा।

‘हाँ, बहुत अच्छी तरह से। अपनी सोसायटी की क्रिकेट टीम के केप्टन को कौन नहीं पहचानता!’

‘तुम मिराज को कैसे पहचानते हो?’ परम ने विश्रुत से पूछा।

‘पहचानते हो? मैं तो मिराज को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। यह तो मेरे बचपन का दोस्त है।’

‘ओह रियली, मैंने पहले कभी तुम दोनों को साथ में नहीं देखा। परम को आश्चर्य हुआ।

‘क्योंकि हम यहाँ अभी दो दिन पहले ही वापस लौट आए हैं। बीच में कुछ टाइम के लिए पापा का ट्रांसफर हो जाने के कारण हम पूना शिफ्ट हो गए थे।’

परम और विश्रुत एक-दूसरे को जानते हैं, इस बात की मुझे ज़रा भी खुशी नहीं हुई क्योंकि विश्रुत मेरा बहुत अच्छा फ्रेन्ड था। वह स्ट्रेट फारवर्ड था। वह कभी भी गलत लोगों की संगत में नहीं रहा। उसके फ्रेन्ड सर्कल में बहुत सलेक्टेड लोग होते, जिनमें से एक, मैं भी था।

‘चलो, बाय एवरीवन। आइ हेव टू लीव नाऊ।’ शिवांगी ने सबके बीच आकर कहा।

विश्रुत का ध्यान शिवांगी पर था और मेरा ध्यान विश्रुत पर। उसने एक नज़र शिवांगी की ड्रेस पर डाली और फिर तुरंत ही नज़र घुमा ली। विश्रुत को देखकर मैंने कुछ गलत किया है, ऐसा मुझे लगने

लगा। विश्रुत की मौजूदगी ने मेरी गिल्टी फीलिंग कई गुना बढ़ा दी।

शिवांगी ने परम से हाथ मिलाया और फिर मेरी ओर हाथ बढ़ाया। एक मिनट के लिए मैं हिचकिचाया लेकिन फिर शिवांगी और बाकी सबके सामने मेरा खराब न दिखे इसलिए मैंने धीरे से हाथ मिलाया। शिवांगी ने उड़ती नज़र विश्रुत पर डाली और फिर अंत में निखिल की ओर देखा। निखिल ने हँसकर उसे बाय कहा।

सभी शिवांगी को जाते हुए देखते रहे।

'चलो, अब चलें?' निखिल बोला।

'हाँ, लेट्स गो। तुम आ रहे हो हमारे साथ?' परम ने मुझसे पूछा।

मैंने विश्रुत की ओर देखा।

'मैं भी अब निकलूँगा।' विश्रुत ने मुझसे कहा।

वैसे तो मैं विश्रुत के साथ भी जा सकता था लेकिन उसके प्रश्नों का जवाब देने की मेरी कोई तैयारी नहीं थी।

हम सब अलग हुए। मैं और परम, निखिल की गाड़ी में बैठ गए और विश्रुत अपनी साइकिल के पास पहुँचा।

पूरे रास्ते मैं अपसेट और डिस्टर्ब रहा। मेरे मन में सतत मान,

अपमान, इम्प्रेशन की हलचल मची हुई थी।

मैंने कुछ गलत नहीं किया, यह सब तो नॉर्मल ही है! विश्रुत को यदि इसमें कुछ गलत लग रहा हो तो वह फिर उसी की भूल है। बुद्धि की ऐसी दलीलें पूरे रास्ते शुरू ही थी।

यह सब सुनकर मीत ने गर्दन झुका ली। मानो कुछ खो दिया हो इस तरह सिर हिलाया। वैसे भी उसने मिराज की अधिकतर बातें कभी नजरें नीचे करके तो कभी आँखें बंद करके ही सुनी थी।

'खुद ही आरोपी, खुद ही वकील और खुद ही जज, फिर खुद की भूल कहाँ से दिखेगी?' मैंने मिराज को इस पर गौर करने का मौका दिया।

'हाँ, मुझे कहने वाला कोई नहीं था। और यदि घर में कोई कुछ कहता तो मैं उनकी बातें अनसुनी करने में माहिर हो चुका था।'

'घर पहुँचकर मैंने सबसे पहले मोबाइल चार्ज करने रखा। ट्यूशन बैग पलंग पर रखी।' मिराज ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

'मिराज, खाना तैयार है। तुम खाना खाओगे?' मम्मी ने पूछा। उनकी आवाज में फिर से पहले जैसा ही प्यार था। सबकुछ नॉर्मल हो गया इसलिए मुझे भी थोड़ी राहत हुई।

'हँ, हाँ, अभी नहीं। थोड़ी देर के बाद।' मैंने शांति से जवाब

दिया।

मेरा ध्यान सिर्फ मोबाइल पर ही था। जब तक प्रियंका का मैसेज न देख लूँ तब तक खाना खाने में भी कहाँ चैन आने वाला था।

'तुझे भूख नहीं लगी? गरम-गरम खा लो न।' मम्मी ने फिर से कहा।

कितने दिनों के बाद आज फिर से मम्मी की आवाज में आग्रह था। जो वैसे तो मुझे पसंद नहीं था लेकिन आज अच्छा लगा। भूख तो लगी थी लेकिन खाने का मन नहीं था।

'पापा आ जाए उससे पहले खाना खा लूँ तो अच्छा है ताकि मैं प्रियंका के साथ चेट कर सकूँ। यदि उनके साथ खाना खाने बैठूँगा तो फिर से स्कूल और ट्यूशन की ही बातें करेंगे। और अभी वह सब सुनने का मेरा कोई मूड नहीं है।' मैंने मन ही मन सोचा।

'ठीक है, दे दो।' मैं डाइनिंग टेबल पर जाकर बैठ गया।

मम्मी ने पावभाजी और पुलाव परोस कर थाली डाइनिंग टेबल पर रखी। मेरा फेवरिट खाना था। मम्मी ने आज स्पेशली मेरे लिए ही बनाया हो, ऐसा लगा। कितनी अजीब बात है कि हम चाहे कितना भी बुरा व्यवहार करें लेकिन मम्मी-पापा हमें उतना ही प्रेम करते हैं। लेकिन मुझे खाने में रस ही नहीं था। जैसे-तैसे बड़े निवाले लेकर

बीच-बीच में पानी पीकर, खाना गले के नीचे उतारा और तुरंत खड़ा होकर मोबाइल देखने गया। चार्जिंग ही नहीं हुआ था। देखा तो मैंने स्विच ऑन ही नहीं किया था। मैंने गुस्से में पैर पटका जो कुर्सी को लगा और कुर्सी टेबल से जा टकराई।

'क्या हुआ? यूँ खाना छोड़कर कहाँ चले गए?'

'ये मम्मी भी पीछा नहीं छोड़ती।' मैं मन में बड़बड़ाया।

मम्मी पर जो प्रेम आया था वह फिर से उतर गया।

स्विच ऑन की और आकर फिर से खाना खाने बैठ गया। मम्मी भी आकर मेरे सामने बैठ गई।

'तुम ठीक तो हो न? इतना परेशान क्यों लग रहे हो?'

'नहीं, नहीं ऐसा कुछ नहीं है। बस थक गया हूँ।'

'क्यों, बाहर घुमने में मजा नहीं आया?'

'नहीं।' मम्मी पूछेगी कि कहाँ गए थे, तो क्या जवाब दूँगा, यह विचार आते ही खाना गले में अटक गया और खाँसी शुरू हो गई। मम्मी तुरंत ही पानी से भरा गिलास लेकर आए और मेरे पीठ पर हाथ फेरने लगे।

मम्मी के ममता भरे स्पर्श से पता नहीं क्यों, लेकिन मेरी आँखें

भर आई। मेरा दिल भर आया। दिमाग थक चुका था। बड़ी मुश्किल से मैंने आँसूओं को मम्मी के सामने बाहर आने से रोक लिया। लेकिन माँ नज़र से कुछ भी छिप नहीं सकता!

'तबीयत तो ठीक है न बेटा?' मम्मी ने गले और माथे पर हाथ रखकर चेक किया।

मम्मी ने प्रेम से सिर पर हाथ फेरा।

'यदि तुम्हें कोई प्रॉब्लम हो तो मुझे बताना।' बस इतना कहकर मम्मी रसोईघर में चली गई। उनका भी दिल भर आया था। मुझमें आ रहे बदलाव को वे देख सकती थी, जान सकती थी लेकिन उसके पीछे का कारण नहीं समझ पाने के कारण मम्मी को भी मानसिक तनाव रहने लगा था।

स्टेच्यू की तरह बैठकर मिराज की बातें सुन रहे मीत की आँखें डबडबाने लगी। आँखों से आँसू बाहर बहने लगे उससे पहले उसने अपने ऊंगलियों से आँसू और उसके साथ-साथ खुद की भावनाओं को बहने से रोक लिया। निकट भूतकाल की वेदना का उसने फिर से करीब से अनुभव किया। मीत से दो शब्द कहने का मन तो बहुत हुआ लेकिन मिराज को बीच में रोककर डिस्टर्ब करना उचित नहीं था। मैंने भी अपनी भावनाओं को अपने में समेट लिया।

मैं ठीक से खाना खा नहीं पाया। दिल भर आया था। मम्मी के साथ बात करनी थी। पर क्या कहूँ, कैसे कहूँ, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। मैं उठकर अपने रूम में चला गया। दस मिनट के बाद थोड़ा सहज होकर फिर से बाहर आया।

'मम्मी, सिर बहुत दर्द कर रहा है। दवाई दो न। मुझे आज जल्दी सो जाना है।' सच तो यह था कि कोई मुझे डिस्टर्ब न करे इसलिए भी मैंने जल्दी सो जाने की बात की थी। पर इतनी जल्दी नींद भी कहाँ आने वाली थी?

रूम में लौटकर मैंने फिर से प्रियंका को धड़ाधड़ मैसेजेस किए। जहाँ पहले के ही मैसेज नहीं देखे थे, वहाँ नए मैसेजेस भेजने का कोई अर्थ नहीं था। लेकिन मैंने अपना आवेग और आवेश दोनों को मैसेजेस में खाली कर दिया।

'पता नहीं आज कैसा दिन निकला है। आज कुछ भी अच्छा नहीं हो रहा है। स्कूल और ट्यूशन में जो उलझन हो रही थी उससे कई गुना ज्यादा परेशानी तो साल्वेशन केफे और हुक्काबार में हो रही थी। निखिल तो है ही बिगड़ा हुआ! उसमें वह परम को भी अपने रंग में रंग रहा है। शिवांगी के साथ उसका क्या रिलेशन है, वह समझ में नहीं आ रहा। पहले तो कहता था कि 'शी इज नाट ऑफ

माइ टाइप' और अब कुछ अलग ही रंग-ढंग दिखा रहा है। सेल्फी तो इस तरह से ले रहा था मानो उसकी गर्लफ्रेन्ड ही हो!

क्या सचमुच स्टेटस और सब पर इम्प्रेशन पड़े इसलिए गर्लफ्रेन्ड ज़रूरी होती है? आज क्लास में भी सर ने मुझसे गर्लफ्रेन्ड की ही बात की। शिवांगी वास्तव में किस टाइप की लड़की है, यह समझना बहुत कठीन है। निखिल जैसे लड़के के साथ उसकी जमती है तो क्या वह भी उसके जैसी ही होगी? शिवांगी, निखिल को फँसा रही है या निखिल, शिवांगी को? आज तो परम ने हुक्का पीने की ट्राइ करके हद ही कर दी!

क्या मैं कोई खराब कम्पनी में फँस चुका हूँ? नहीं... नहीं... शायद वे लोग ज़माने के अनुसार सही है। मैं क्यों उन लोगों के साथ नहीं घुल पा रहा? मैं ट्राय तो करता हूँ उनके जैसा बनकर रहने की। लेकिन भूल कहाँ हो रही है? मैं क्यों नॉर्मल नहीं रह पाता? मैं क्यों एबनॉर्मल दिखता हूँ?

पहले से ही मेरे घर में रिजर्व्ड और ओर्थोडॉक्स वातावरण रहा है, इसलिए मुझे इन सब बातों में शॉक लगता है, बेचैनी होती है। मैंने बचपन से लेकर अब तक यह सब देखा ही नहीं है इसलिए मेरी हालत ऐसी हो जाती है। वर्ना बाकी सब तो कैसे अपनी मस्ती

में मस्त रहते हैं और मैं?? इसमें दोष किसका है? मेरे पेरेन्ट्स ने मुझे पहले से ही ओवर प्रोटेक्ट करके रखा है। जमाने के अनुसार मुझे कुछ करने ही नहीं दिया है... ऐसे तरह-तरह के विचारों का घमासान मेरे मन को सता रहा था। इतने में मोबाइल में एक के बाद एक लगातार दस से बारह मैसेज आ गए।

मीत और मैं मिराज को देख रहे थे। उसकी घुटन को हम महसूस कर रहे थे।

'प्रियंका होगी....' इस आशा के साथ मैंने मोबाइल की स्क्रीन ऑन की।

(18)

परम का मैसेज था। उसने सभी की फोटो भेजी थी, जिसे देखने में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं थी। थकान, बेचैनी, हताशा और सिर दर्द इन सबसे परेशान होकर मैंने मोबाइल को अपने से दूर धकेल दिया। मैं जिसकी राह देख रहा हूँ उसका तो मैसेज ही नहीं है।

इतने में मम्मी रूम में आए।

'देखने ही आई थी कि तुम सो चुके हो या नहीं। तुम्हारे सिर में दर्द है न, तो शांति से सो जाओ।' इतना कहकर मुझे चादर ओढ़ाकर मम्मी चली गई।

फिर से मोबाइल में मैसेजेस आने स्टार्ट हो गए लेकिन मैंने देखा तक नहीं।

पौन घंटे के बाद जब मेरी आँख खुली तब मोबाइल हाथ में लिया। मैसेज पढ़ा।

'हाय, सॉरी।'

‘आइ एम नाट एबल टू गिव रिप्लाय ऑफ सो मेनी मैसेजेस एट दीस टाइम। आइ एम आउट ऑफ स्टेशन एन्ड देर इज नेटवर्क प्रॉब्लम।’

आखिरकार प्रियंका का रिप्लाय आया और वह भी ऐसा!

‘देट्स इट?’

मैं इतने समय से उसकी राह देख-देखकर थक गया। लेकिन उसे मेरी कोई वैल्यू ही नहीं। मेरे मैसेजेस का रिप्लाय देने के लिए उसके पास टाइम नहीं है। जब भी उसके मैसेजेस आते हैं, मैं सबकुछ छोड़कर पहले उसे जवाब देता हूँ। भला यह कोई तरीका है? पहली बार मुझे प्रियंका पर क्रोध आया।

निखिल और खास करके परम के व्यवहार से मुझे आज भयंकर ठेस पहुँची थी। उस पर, जिस प्रियंका के साथ बात किए बिना मुझे चैन नहीं पड़ता था उसके साथ भी बात हो सके ऐसा नहीं था। मैं अपना दर्द किसी के साथ बाँटना चाहता था पर किससे जाकर कहूँ? मम्मी-पापा से यह सब कुछ कहने का सवाल ही नहीं उठता था। मैं अंदर ही अंदर घुटने लगा। करवटे बदल-बदलकर बड़ी मुश्किल से रात बिताई।

दूसरे दिन सुबह से फिर वही रूटीन। घर से स्कूल, स्कूल से

ट्यूशन और ट्यूशन से घर। मेरा मन कहीं भी नहीं लग रहा था। किसी के साथ बात करने की इच्छा नहीं हो रही थी। अंदर एक खालीपन महसूस हो रहा था। जैसे-तैसे धक्के मारकर अपने आप को बलपूर्वक स्कूल और ट्यूशन ले जाता।

इस अरसे में मीत भी मेरे पास थोड़ी देर बैठता। इधर-उधर की बातें करता, मुझे मूड में लाने की कोशिश करता। लेकिन मुझे उसकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मुझे जीवन बोझरूप लगने लगा था। धीरे-धीरे स्कूल में और ट्यूशन में पढ़ाई का प्रेशर बढ़ने लगा। नौवीं कक्षा में पहले से ही स्कूल और ट्यूशन में वीकली क्लास टेस्ट लेना शुरू हो चुका था। मेरे सर्कल में सब लोग पहले से ही पढ़ाई करने में जुट गए थे। टेन आउट आफ टेन, ट्वेन्टी आउट ऑफ ट्वेन्टी लाने के लिए रेस शुरू हो गई। आठवीं कक्षा में अच्छा रिजल्ट आने के बाद मेरे अंदर भी एक अलग ही उत्साह पैदा हुआ था। मेरी भी इच्छा थी कि मैं क्लास में आगे रहूँ। लेकिन वह उत्साह मानो कहीं खो चुका था। मेरी शक्तियाँ टूट गई थी। मैं किसी एक बात पर ज यादा समय तक फोकस नहीं रख पा रहा था। क्लास में भी मेरा ध्यान कहीं और चला जाता। कई बार मन तरह-तरह के विचारों से थक जाता तो कभी विचार शून्य हो जाता। ऐसी हालत में मुझे पढ़ाई

बोझ लगने लगी थी। मैं सभी जगह नहीं पहुँच पा रहा था और इसलिए मुझे प्रेशर और स्ट्रेस फील होने लगा। मैं लगातार कई घंटों तक चुपचाप अपने रूम में बैठा रहता।

दो-तीन दिन बीत गए। प्रियंका का कोई मैसेज नहीं था।

'उसे कुछ भी कहने से क्या फायदा वैसे भी वह मैसेजेस देखती ही नहीं। मैंने निश्चय कर लिया कि जब तक प्रियंका का कोई मैसेज नहीं आता तब तक मैं भी कोई मैसेज नहीं करूँगा। दिनभर में जब कभी बेचैनी होती मैं लेपटॉप लेकर बैठ जाता। फेसबुक, ट्वीटर पर खूब टाइम पास करता। मेरा फोकस बेवज़ह, बेकार की बातों और चीज़ों पर बढ़ने लगा। इसके पीछे सिर्फ यही कारण था कि उसमें कोई दुःख देने वाला नहीं था। प्रियंका की गैरमौजूदगी में फिर से चेटींग का सिलसिला शुरू हुआ। किसी के साथ सेट होता तो चेटिंग लम्बी चलती वर्ना बात वहीं पूरी हो जाती। देखा जाए तो मुझे किसी के साथ मेल ही नहीं खाता था। लेकिन एक व्यक्ति के साथ ढंग की बातचीत हुई। उसका नाम था रिया।

'हाय।' एक दिन अचानक प्रियंका का मैसेज आया। सिर्फ 'हाय' और कुछ नहीं। मैंने अनुमान लगाया कि पहले की तरह तय किए गए टाइम पर प्रियंका चेट के लिए तैयार ही होगी। शाम को ट्यूशन

से लौटकर मैंने सीधा मोबाइल हाथ में लिया।

'यह क्या मिराज? घर में पैर रखते ही फिर से मोबाइल या लैपटॉप हाथ में!' मम्मी फिर से तिलमिला उठी।

'वह तो फ्रेश होने के लिए फ्रेन्ड से बात कर लेता हूँ या गेम खेल लेता हूँ।' हमेशा सच बोलने वाला मैं, धीरे-धीरे स्व बचाव के लिए झूठ बोलने लगा।

'स्कूल और ट्यूशन में तो सब मिलते ही हैं न? तो फिर घर लौटकर क्या इतनी सब बातें करनी होती है?'

'मम्मी, आप नहीं समझोगे। कभी-कभी हमें होमवर्क या प्रोजेक्ट के बारे में भी बात करनी पड़ती है।'

मिराज की आँखों में पछतावा था। उसने मीत की ओर देखा। जिस बात का उसे पछतावा है, उस पर कुछ कहना मीत को उचित नहीं लगा।

'मम्मी को लगता था कि मैं स्कूल या ट्यूशन के फ्रेन्ड के साथ बातें करता हूँ। इस तरह से मम्मी से कभी कोई भी बात नहीं छिपाने वाला, मैंने चेटिंग वाली बात मम्मी से छिपाकर रखी थी। वैसे भी मम्मी चेटिंग की दुनिया को कभी नहीं स्वीकारती।' मिराज ने मीत की ओर देखते हुए कहा।

इतने में मेरी नज़र मोबाइल पर पड़ी। प्रियंका ऑनलाइन दिखाई दी। लेकिन उसने कोई मैसेज नहीं किया। मम्मी सामने ही खड़े थे इसलिए उसके साथ बात करना सँभव नहीं था। मुझे ऐसा लगने लगा कि मम्मी जल्दी रूम से बाहर जाए तो अच्छा।

‘लेकिन तुम तो रोज इसी में बिज़ी रहते हो। अब तो डिनर भी हमारे साथ नहीं करते। जल्दी खाना खाकर रूम में चले जाते हो।' मम्मी आज मुझे छोड़ने के मूड में नहीं थी। वे कब रूम के बाहर जाएगी इसका कोई भरोसा नहीं था।

‘अरे, वह तो आजकल मुझे शाम को ही भूख लग जाती है, इसलिए जल्दी खा लेता हूँ।' एक झूठ को छिपाने के लिए उसके पीछे कई झूठ बोलने पड़ते हैं, ऐसा कुदरती नियम है।

‘तुम्हारे पापा भी पूछ रहे थे कि आजकल तुम क्यों घर में यूँ अकेले पड़े रहते हो? किसी से बातचीत भी नहीं करते।'

‘उन्हें क्या पता, वे तो खुद ही सारा दिन घर में नहीं होते!' मैंने तुरंत ही पलटकर जवाब दिया।

‘पापा जितना टाइम घर में होते हैं उतना टाइम तो देखते हैं न कि तुम रूम में ही घूसे रहते हो। पहले तो हमारे पास आकर बैठते थे लेकिन आजकल....'

‘प्लीज मम्मी। अब बस करो। हर बात में आपको सिर्फ मेरी ही भूल दिखाई देती है। मुझे समझने के बजाय आपको मेरी गल्तियाँ निकालने में ज्यादा मज़ा आता है। यदि मैं आपके साथ बैठता हूँ तो आप मुझसे सिर्फ पढ़ाई के बारे में बातें करती हो या तो फ्रेन्ड कैसे होने चाहिए, कैसे नहीं, उस पर उपदेश देती हो। इसके अलावा और कोई बातें होती हैं आपके पास? इसलिए मुझे आपके साथ अच्छा नहीं लगता।’ मैंने एक साँस में सबकुछ कह डाला। मेरा ध्यान प्रियंका में था इसलिए मम्मी मेरा पीछा छोड़े तो प्रियंका के साथ कुछ बात हो सके, यह सोचकर मैं ज्यादा बेचैन हो रहा था।

मैंने मम्मी का दिल दुखाया है, यह सोचने का भी मेरे पास टाइम नहीं था। मेरी दुनिया मेरे स्वार्थ तक ही सीमित हो गई थी। मेरी आँखें और उंगलियाँ मोबाइल पर फिरने लगी।

‘हाय।’ प्रियंका का कोई मैसेज नहीं आया तो मैंने मैसेज किया।

‘हेल्लो।’

‘क्या कर रही हो?’

‘कुछ नहीं। मैं तुम्हारे मैसेज की राह देख रही हूँ।’

‘ओह। क्या तुम पहले मैसेज नहीं कर सकती?’

‘कर सकती हूँ लेकिन मैं तो यह देख रही हूँ कि तुम क्यों मुझे

मैसेज नहीं करते?' उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। वैसे ही प्रियंका ने मेरी ही गलती निकाली।

'व्होट?' मुझे झटका लगा लेकिन अभी प्रियंका को नाराज करने की मेरी कोई तैयारी नहीं थी। 'वह सब जाने दो। अच्छा यह बताओ कि ऐसी कौन सी जगह गई थी जहाँ नेटवर्क नहीं था।'

'वी वेन्ट फोर अ ट्रीप।'

'वी?'

'यस। मैं, मेरे कज़ीन्स और उनके फ्रेन्ड्स, हम सब एक हिल स्टेशन पर गए थे। वहाँ बार-बार इलेक्ट्रिसिटी चली जाती थी इसलिए फोन भी चार्ज नहीं हो पाता था। और बाकी का समय घूमने में निकल जाता।'

'ओह, मुझे लगा कि तुम अपने पेरेन्ट्स के साथ गई होगी।'

'ना भई ना, उनके साथ घूमने में थोड़े ही मज़ा आएगा।'

क्या कहूँ, मुझे कुछ सूझा नहीं इसलिए जवाब में सिर्फ स्माइली भेजा।

'वी रियली इन्जोय्ड अ लोट।'

'तुम अपने फ्रेन्ड्स के साथ यूँ अकेली दो दिन घूमने गई। आइ

मीन तुम्हें घर से परमिशन मिल गई क्या?

'वेल.... इट्स नॉट इज़ी। लेकिन मुझसे पाँच-छः वर्ष बड़े मेरे कज़ीन्स उनके फ्रेन्ड के साथ जा रहे थे इसलिए सेफ्टी के लिए वे लोग साथ थे ही। मेरी फ्रेन्ड रिया भी साथ आई थी। वैसे तो मेरे पापा हाँ कहें ऐसे नहीं लेकिन इस बार फर्स्ट टाइम जाने के लिए परमिशन दी।'

'व्हाट अ को-इन्सिडेन्स! अभी मेरी भी एक नई फ्रेन्ड बनी। उसका भी नाम रिया ही है।'

'ओह, तो मेरे एबसन्स में नई फ्रेन्ड भी बना ली?' प्रियंका ने पंच मारता हुआ स्माइली भेजा।

'कम ऑन।'

'सो व्होट्स न्यू?' प्रियंका ने पूछा।

'कुछ खास नहीं। दो दिन से बहुत परेशान हूँ।'

'क्यों?'

'फिर कभी आराम से बताऊँगा।'

'ओ.के.।'

'तो तुम्हारे कज़ीन्स के फ्रेन्ड्स सब बॉयस थे या गर्ल्स भी थे?'

मैं पूछे बिना नहीं रह पाया।

‘हाँ। उन लोगों का तीन बॉयस और दो गर्ल्स का ग्रुप था और मैं और मेरी फ्रेन्ड।’

‘आइ होप द बॉयस वर डीसन्ट लाइक मी।’ मैंने हँसते-हँसते बात घुमाकर इन्क्वायरी कर ली।

‘बॉयस आर नेवर डीसन्ट।’ प्रियंका ने मजाक में जवाब दिया और आँख मारती हुई एक स्माइली भेजी।

उसका क्या आशय था, वह तो मुझे समझ में नहीं आया। लेकिन उसका मजाक मुझ पर भारी पड़ा। मुझे अंदर ही अंदर गुस्सा आने लगा कि प्रियंका ऐसे-वैसे लड़कों के साथ बाहर क्यों घूमती है?

प्रियंका ने अपने दो-तीन फोटोस भी भेजे।

‘तो फिर तुम्हें उन लोगों के साथ नहीं जाना चाहिए था।’ मैंने बात को सीरियसली ले ली।

प्रियंका को समझ में नहीं आया कि मैंने सीरियसली कहा या मज़ाक में।

इतने में फोटो डाउनलोड होते ही मैंने देखा और तुरंत ही उसे दूसरा मैसेज भेजा।

'सॉरी टू से प्रियंका, डोन्ट फील बेड। मुझे यह ज़रा भी अच्छा नहीं लगा कि तुम ऐसे कपड़े पहनकर यूँ सबके साथ बाहर घूमों।'

'क्या बुराई है मेरे कपड़ों में? ऐसा तो मुझसे मेरे मम्मी-पापा भी नहीं कहते।'

'प्लीज ट्राय टू अन्डरस्टेन्ड। जैसा तुम मानती हो उतना सभी लड़के सीधे नहीं होते।' इस मैसेज को करते वक्त मेरी आँखों के सामने निखिल और शिवांगी के चेहरे थे।

'मुझमें अपने भले-बूरे की समझ है। हू ऑर यू टू टेल मी। यू हेव नो राइट।'

मैं चुप हो गया। अब तक जो प्रियंका मेरी इज्जत करती थी, मेरी तारीफें करती थी और जिसे मैं अपना सबसे अच्छा दोस्त मानता था उसने यूँ अचानक मेरा ऐसा इन्सल्ट कर दिया।

'तुमने तो मेरा मूड ही खराब कर दिया। मैं थकी हुई थी फिर भी तुम्हारे साथ बात करने के लिए जाग रही थी।'

गुस्से में प्रियंका धड़ाधड़ जो मन में आए वह टाइप किए जा रही थी। मेरे पास उसकी किसी भी बात का कोई जवाब नहीं था। मेरी तो समझ में यही नहीं आ रहा था कि मेरी इतनी छोटी सी बात के लिए वह क्यों इतना चिढ़ गई है। क्या उसे कुछ कहने का मुझे

कोई हक नहीं? मैं तो उसके भले के लिए ही कह रहा हूँ न?

‘आइ वॉज़ सो एक्साइटेड टू शेर ऑल दीस विथ यू। तुम्हें छोड़कर मेरे सभी फ्रेन्ड्स ने मुझसे कहा कि मैं बहुत सुंदर दिख रही हूँ। मेरे ड्रेसेस बहुत स्टाइलीश है। यू आर वेरी नेरो माइन्डेड।’

‘यू आर टेकिंग मी रोंग। आइ एम जस्ट थिंकिंग अबाउट योर सेफ्टी।’

‘आइ डोन्ट नीड योर एडवाइज़। आइ एम मेच्योर इनफ टू टेक केयर ऑफ मायसेल्फ!’

‘तुम्हें बुरा लगा हो तो आइ एम सॉरी।’ पहली बार हम दोनों में झगड़ा हुआ। पर मैं प्रियंका को खोना नहीं चाहता था। बात आगे बढ़ने से रोकने के लिए मैंने सामने से ही उसे सॉरी कह दिया। वास्तव में तो मुझे प्रियंका की बातों से बहुत ठेस पहुँची थी। लेकिन मैंने प्रियंका को इसका पता तक नहीं चलने दिया।

कुछ दिनों तक हम दोनों के बीच सामान्य बातचीत ही होती। एक दिन प्रियंका और रिया, दोनों एक ही समय पर ऑनलाइन थे। प्रियंका के साथ बात चल रही थी तभी रिया का मैसेज आया।

‘हाय मिराज। हाउ आर यू?’ रिया ने सेड स्माइली के साथ मैसेज भेजा।

‘हाय। आइ एम फाइन।’

‘इट्स बीन अ वाइल यू डिड नोट टाक टू मी।’

‘हँ। आइ वॉज़ लिटल बिज़ी।’

‘अब मैं तीन-चार दिन तक बात नहीं कर पाऊँगी।’ रिया ने रोता हुआ स्माइली भेजकर कहा।

‘ओह? क्यों?’

‘मेरे भाई का फोन खराब हो गया है इसलिए मेरा फोन उसके पास ही रहेगा।’

मैंने सेड फेस वाला स्माइली भेजा।

एक ओर प्रियंका के मैसेज पर मैसेज आ रहे थे और दूसरी ओर रिया के! मैं रिया को रिप्लाय करता, तब तक तो प्रियंका ने दस से बारह मैसेज भेज दिए।

‘हेल्लो... वेर आर यू?’

‘आइ एम हियर ओन्ली।’

‘वाय आर यू नोट आन्सरिंग?’

‘अरे, आइ एम टॉकिंग टू रिया आल्सो।’

‘रिया? कौन रिया?’

‘मैंने तुम्हें बताया था न?’

‘हाँ, याद आया।’

दो मिनट के बाद प्रियंका का मैसेज आया।

‘तुम रिया के साथ ही बात कर लो न, बाय।’

‘नहीं, ऐसा नहीं है। मैं उसे यही समझा रहा था कि बाद में बात करते हैं लेकिन....’

‘लेकिन क्या? वह ज्यादा इम्पोर्टन्ट हो तो उसी के साथ बात करो न।’

‘अरे यार, तुम क्यों हर बात में चिढ़ जाती हो?’

‘मैं कहाँ चिढ़ रही हूँ। मैं तो तुम्हें मुक्त कर रही हूँ।’

दूसरी ओर रिया के मैसेजेस आ रहे थे।

‘हेल्लो...’

‘डू यू नो आज मेरा एक्सीडेन्ट हुआ और मेरे पैर पर प्लास्टर आया है।’

उसने अपने प्लास्टर का फोटो खिंचकर भेज दिया।

‘ओ.के.।’ मैंने मैसेज पढ़े बिना ही ओ.के. लिख दिया।

‘ओ.के.??? मेरा पैर फ्रेक्चर हो गया और तुम्हें कोई फर्क

नहीं पड़ता।'

'सॉरी। मैंने अभी मैसेज देखा।' मैंने रिया को जवाब दिया।

'देखा, हो गए न रिया के साथ बिज़ी... ठीक है बॉइ।' रिप्लाय देने में मुझे देर लगी इसलिए प्रियंका भड़क गई।

'यार, तुम लड़कियाँ भी बात का बतंगड़ बना देती हो। उसे फ्रेक्चर हुआ है इसलिए जस्ट उसकी तबीयत के बारे में पूछ रहा था।'

'तुम तो कह रहे थे कि मेरे अलावा तुम्हारी कोई दूसरी अच्छी फ्रेन्ड नहीं है। तो फिर रिया के लिए इतनी सहानुभूति क्यों हो रही है?'

'अरे बाबा, मेरी बेस्ट फ्रेन्ड तो तुम ही हो। उसके साथ मेरी इतनी बातचीत भी नहीं होती है। वह तो बस तुम ट्रिप पर गई थी इसलिए उसके साथ टाइम पास के लिए बातें करता था।'

'क्या पता मेरे साथ भी टाइम पास ही कर रहे होगे।'

'प्लीज प्रियंका, यदि तुम्हें ऐसी बातें करनी हो तो मुझे तुमसे कोई बात नहीं करनी। मैंने कभी भी तुम्हें टाइम पास फ्रेन्ड नहीं समझा है। मेरी हर बात का तुम उल्टा मतलब क्यों लेती हो?'

'ठीक है बाय! तुम्हारे साथ बात करने का मेरा मूड नहीं है।' इतना कहकर प्रियंका ऑफलाइन हो गई।

‘अरे यार....’ मैंने टेबल पर हाथ पछाड़ा।

प्रियंका के मन में भी जेलसी और नेगेटिविटी शुरू हो चुकी थी। उसे भी यही लगने लगा था कि सिर्फ उस अकेली का ही मुझ पर हक रहे और वह जैसा कहे वैसा ही मुझे करना चाहिए।

रिया के मैसेज शुरू थे।

‘सॉरी रिया, आइ कान्ट टॉक टू यू राइट नाउ।’ मैंने उससे कहा।

‘नो प्रॉब्लम।’

‘इज़ एनिथिंग रोंग बिथ यू?’

‘नो। ओल वेल।’

‘आइ फील देट यू आर हाइडिंग सम थिंग फ्राम मी।’

‘नो। नथिंग।’

‘हाउज़ प्रियंका?’ रिया ने अचानक ऐसा पूछ लिया, जिसका क्या जवाब दूँ?

‘उससे झगड़ा तो नहीं हुआ है न?’ रिया ने स्माइली भेजा।

‘तुम्हें कैसे पता चला?’

‘मैंने तो बस यूँ ही पूछ लिया।’

मेरा मूड तो खराब ही था लेकिन रिया को दुःख न हो इसलिए

जैसे–तैसे करके थोड़ी बहुत बातचीत की और फिर उसे बाय कहा। प्रियंका फिर से ऑनलाइन आएगी इस आशा में थोड़ी देर बैठा रहा लेकिन प्रियंका ऑनलाइन नहीं आई।

(19)

बार-बार प्रियंका के साथ घटित घटनाओं के कारण मैं अधिक डिस्टर्ब रहने लगा। पर क्या करूँ? न तो मैं प्रियंका को छोड़ सका न तो उसके साथ होने वाले लड़ाई-झगड़े से बाहर आने का कोई रास्ता ढूँढ सका। प्रियंका के पीछे मैं इतना अधिक पराधीन हो गया हूँ वह मैं समझ ही नहीं पाया।

प्रियंका ने कितने दिनों तक मेरे साथ अच्छे तरीके से बात भी नहीं की। पर वह बात तो करती है न, उस आश्वासन के साथ हमारी चेटिंग का सिलसिला ज़ारी रहा। दूसरी ओर रिया के साथ मेरी वेवलेन्थ मैच होने लगी थी। पर मैं प्रियंका के सामने उसका नाम नहीं लेता था। प्रियंका के साथ बात करके मुझे जो 'सुकून' नहीं मिलता था वह रिया के साथ बात करके मिलने लगा। फिर भी प्रियंका मेरे लिए बाकी सबसे पहले ही थी। उसके साथ मैं किसी भी समय, कोई भी काम छोड़कर चेट करने बैठ जाता था।

प्रियंका को मेरी ओनेस्टी बहुत अच्छी लगती थी। पर रिया के बारे में ओनेस्टली बताने पर प्रियंका मुझसे नाराज हो गई, जो मुझसे सहन नहीं हुआ। इसीलिए झूठ बोलकर उसके साथ रिलेशन बनाए रखना मुझे उचित लगा। हमेशा सच बोलने वाला मैं, अब घर में और फ्रेन्ड्स के साथ झूठ बोलने लगा।

चेटिंग के चक्कर में परम और निखिल से मिलना थोड़ा कम होने लगा। पर ट्यूशन में और स्कूल में परम के साथ ही रहने के कारण उसकी बातों और व्यवहार का प्रभाव मुझ पर पड़े बिना नहीं रहता। झूठ बोलना, रौफ से रहना, अपनी छोटी-बड़ी ज़रूरतों को पूरी करने के लिए पेरेन्ट्स से जिद्द करके इच्छित काम पूरा करवाना जारी ही था। घर का वातावरण बिगड़ने लगा। मम्मी की तबीयत पर भी थोड़ा असर होने लगा। उनका बी.पी. हाइ रहने लगा। अत: उन्होंने भी मेरे साथ माथापच्ची करना कम कर दिया। पापा कभी-कभी पढ़ाई के लिए टोकते थे। मीत अपनी खुद की रूटीन में ही व्यस्त रहता। वह घर में मेहमान की तरह आता और खाना खाकर अपना काम करके सो जाता। मेरे लगातार बिगड़ते हुए वर्तन और व्यवहार से घर में सभी ने मुझसे उम्मीदें छोड़ दी थी।

इतना कहकर मिराज ने मीत की ओर देखा और धीरे से कहा,

‘मैं तुम्हारी कोई शिकायत करना नहीं चाहता मात्र अपनी हालत का वर्णन कर रहा हूँ। अब मुझे तुम्हारी सिचुएशन समझ में आ गई है।’

मिराज बात कर रहा था, तभी अचानक एक बालक के रोने की आवाज आने पर हमारा ध्यान उस ओर गया।

‘अरे..... बेटा गिर गया?’ मम्मी उससे कह रही थी।

‘यह कैसा है मिराज, ऊपर चढ़ने में कितना समय लगता है और नीचे गिरना हो तो? सीधे गिर पड़ते हैं। फिर वह बालक हो या हम।’

‘हाँ। जीवन में भी नीचे गिरने में देर नहीं लगती। गलत संगत में पड़े कि सीधे गिरे। फिर अपनी ही नजरों में नीचे गिर जाते हैं।’

‘बस यही अनुभव और समझ तुझे पुनः गलती करने से रोकेगी। अब मिराज कभी भी फेल नहीं होगा।’ मैंने खुश होते हुए कहा।

‘फेल? वह तो मैं ओलरेडी हूँ। जीवन में भी और एक्ज़ाम में भी।’

मिराज एक्ज़ाम में फेल हुआ है, यह मैं जानती थी। पर फेल होने के पीछे के कारणों को जानना बाकी था।

‘इसी तरह दिन और महीने बीतते गए। एक्ज़ाम का समय आ गया। सभी ओर से निराशा ही मिल रही थी। उन दिनों पढ़ाई पर

से मन हट गया था। इच्छा होने के बाद भी मैं पढ़ नहीं पा रहा था। मेरी हालत एक हारे हुए खिलाड़ी जैसी थी।'

मिराज के चेहरे और शब्दों में स्ट्रेस स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

अंततः एक्ज़ाम का दिन आ गया। कोर्स पूरा नहीं हुआ था। इसलिए देर रात तक जागना शुरू कर दिया। पहले दो पेपर में तो समस्या नहीं हुई पर तीसरे पेपर के समय तबीयत थोड़ी बिगड़ गई। वैसे भी पेपर अच्छे नहीं जा रहे थे इसलिए टेंशन में ही दिन बीत रहे थे। मानसिक थकान, नींद और असमय खान-पान के कारण तबीयत अधिक बिगड़ गई। वीकनेस महसूस होने लगी। अचानक शरीर गर्म होने लगा और बुखार आ गया।

दवाई लेकर दूसरे दिन एक्ज़ाम देने गया। मैथ्स का पेपर था। जैसे-तैसे पेपर पूरा किया। सभी फ्रेन्ड्स झुंड बनाकर पेपर सॉल्व करने में व्यस्त थे, तब मैं नीचे देखकर चुपचाप स्कूल के बाहर निकल गया। मैं अंदर से टूट चुका था। शरीर भी साथ नहीं दे रहा था। बेहोशी की हालत में मैं घर पहुँचा।

इसके पश्चात साइंस का पेपर था। 'मैथ्स के पेपर में फेल हो जाऊँगा तो?' एक तरफ टेंशन तो दूसरी ओर शारीरिक कमजोरी। मुझे किसी के आश्वासन की ज़रूरत थी। मैंने मोबाइल हाथ में लिया।

रिया ऑनलाइन थी पर मेरी नज़र प्रियंका को खोज़ रही थी।

प्रियंका को मैसेज किया।

‘हाय।’

‘हाउ आर यू?’

‘नोट गुड।’

‘व्होट हैपन्ड?’

‘तुम्हें याद भी है कि मेरी एक्ज़ाम चल रही है?’ मैंने उससे पूछा।

‘अरे हाँ, मैं तो भूल ही गई थी।’

‘कैसे गए पेपर?’

‘आजकल तुम्हें मेरा कोई ख्याल ही नहीं रहता।’ मुझे प्रियंका की गलती ढूँढने का मौका मिल गया। आज तक वह मेरी गल्तियाँ ढूँढती थी, आज मुझे मौका मिल गया।

वास्तव में मैं उसकी गल्तियाँ ढूँढना चाहता था या फिर मेरा दुःख उसके साथ शेयर करना चाहता था? मुझे क्या करना था? यह मुझे ही समझ में नहीं आ रहा था। अचानक ही मैंने उसे कह दिया। पहले मिले हुए दर्द एवं घाव ही बोल रहे थे।

‘???’

‘तुम्हें अब मेरी कोई बात कहाँ याद रहती है? तुम तो अपनी मस्ती में ही मस्त हो।’

‘वह तो मुझे भी तुम्हारे लिए ऐसा ही लगता है। जब से रिया मिली है, तब से तुम्हें मेरे लिए कम टाइम मिलता है।’

‘प्लीज़, डोन्ट से लाइक देट। तुम भी जानती हो कि एक्ज़ाम की तैयारी के चक्कर में मैं तुम्हारे साथ बात नहीं कर पा रहा था। इसमें रिया कहाँ से बीच में आ गई। उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?’

‘यस। यू आर राइट। उसने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा है। मैंने खुद ने अपना बिगाड़ा है। तुम्हारे जैसे इंसान के पीछे अपना टाइम बिगाड़ा।’

‘तुम मुझे कुछ भी कहो तो कोई फर्क नहीं पड़ता और मैंने एक बार कह दिया तो इतना बुरा लग गया?’

‘हाँ, लग गया।’

‘प्रियंका, व्होट्स रोंग विथ यू? तुम पहले तो ऐसी नहीं थी। कैसे इतनी बदल गई हो?’

‘मुझे भी तुमसे यही पूछना है।’

‘केन वी बी द सेम फ्रेन्ड्स एज वी वर अर्लीयर।’

‘आइ थिंक नाउ इट्स नॉट पासीबल। बेटर वी स्टॉप टाकिंग टू इज अदर।’

‘प्रियंका, तुम्हें क्या हो गया? मुझे तो तुम्हारे साथ मेरी बात शेयर करनी थी पर तुम तो....’ मैं फिर से उसके सामने लाचार होने लगा।

‘देखो मिराज, तुम्हारी लाइफ में कोई न कोई प्रॉब्लम आती ही रहती है, उसका यह अर्थ नहीं कि मैं हमेशा तुम्हें साथ देने के लिए तैयार रहूँ। आइ हेव माय ओन प्रॉब्लम्स।’

‘हाय मिराज’ दूसरी तरफ रिया का मैसेज आया।

‘प्लीज डोन्ट डिस्टर्ब।’ मैंने रिया को कह दिया।

‘ओह, ओ.के. सॉरी।’ रिया का लास्ट मैसेज था।

‘बाय फोरेवर। डोन्ट ट्राय टू कॉन्टेक्ट मी अगेन। आइ एम फेड अप विथ यू।’ यह प्रियंका का लास्ट मैसेज था।

उसके बाद उसने मुझे एक भी मैसेज नहीं भेजा।

‘कुछ लोग परछाई की तरह होते हैं। जो अच्छे दिनों में तो साथ में ही दिखते हैं पर कठिन समय पर उन्हें साथ छोड़ देने में देर नहीं लगती।’ मीत ने गंभीर आवाज में कहा।

‘फ्रेन्डशिप ऑनलाइन हो या ऑफलाइन, ऐसे अनुभव तो बहुतों

को होते ही हैं।' मैंने कहा।

मिराज ने बात को आगे बढ़ाया, 'मेरी ओर से रिप्लाय न मिलने पर रिया भी ऑफलाइन हो गई। उसने मुझे सपोर्ट किया था पर मैंने ही उसे रिस्पान्स नहीं दिया। गलती मेरी ही थी। प्रियंका के कारण रिया मेरे लिए सेकेन्ड प्रायोरिटी ही थी।

मैंने मोबाइल को एक तरफ रख दिया। मैं एकदम टूट गया। मैं पलंग पर से खड़ा हुआ और सायन्स की बुक हाथ में ली पर....'

'बाय फोरेवर। डोन्ट ट्राय टू कॉन्टेक्ट मी अगेन। आई एम फेड अप विथ यू।'

प्रियंका के शब्द ऐसे चुभ रहे थे मानो छूरा भोंक दिया हो।

मेरा गला सूखने लगा। शरीर दुखने लगा। मैंने पास में रखी हुई बॉटल से दो घूँट पानी पीया। आराम की ज़रूरत महसूस होने पर बुक पास में रखकर पलंग पर लेट गया। आराम नहीं करने के कारण लाल हो चुकी आँखों से पानी निकलने लगा। वे आँसू बुखार के कारण थे या हताश और घुटन से हारे हुए व्यक्ति के, यह समझना मेरे लिए कठिन था! मैंने आँखें पोंछकर स्वस्थ होने का प्रयास किया। पर आँखें पुनः भर आई। आँसूओं की धारा बहने लगी। मैं पूरी तरह टूट गया। साँस लेना मुश्किल हो गया। मम्मी रूम में आ जाएगी

तो? इस चिंता में मैंने खुद को कंट्रोल करने का जितना प्रयत्न कर रहा था उतनी ही कमजोरी बढ़ते जा रही थी। अब मैं आँसुओं को रोकने में असमर्थ था। अतः आँखें बंद कर लेटा रहा।

एक घंटे के बाद जैसे ही आँखें खुली कि मुझे अजीब सी घबराहट होने लगी। ऐसा लगा बुखार से शरीर तप रहा है। रूम में अकेले रहने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। मैं रूम से बाहर निकला। मम्मी फोन पर बात कर रही थी।

'मुझे मिराज को लेकर, बहुत टेंशन हो रहा है। आप आज रात को बैठकर उसके साथ बात करना न?' बाहर रूम में मम्मी बात कर रही थी। स्पीकर फोन पर ही बात करने की उनकी आदत थी।

'अभी उसकी तबीयत कैसी है?' पापा की आवाज थी।

'थोड़ा बुखार है। उसने कुछ नहीं खाया है।'

'ठीक है मैं आज जल्दी घर आ जाऊँगा। तुम चिंता मत करो।'

'मुझे लगता है कि वह किसी टेंशन में है। पहले तो वह हमसे नाराज रहता था पर अब वह गुमसुम सा रहने लगा है। रात को भी देर तक जागता है। यह मैं बहुत समय से नोटिस कर रही हूँ।

'अरे वह तो एक्ज़ाम है इसलिए....'

'नहीं, एक्ज़ाम नहीं थी तो भी देर तक उसके रूम की लाइट

ऑन रहती थी। मैं देखती तब कुछ नहीं कर रहा होता था। चुपचाप सीलिंग की ओर ही देखता रहता था।'

मुझे लगता है कि हमसे फर्ज निभाने में कुछ कमी रह गई है, जिसके कारण वह हमसे नाराज रहता है।' पापा के शब्दों में दर्द था। मम्मी भी रो पड़ी।

यह सुनककर मेरा हृदय भर आया। सभी मेरे ही तो हैं। फिर भी क्यों कोई मुझे अपना नहीं लगता?

मम्मी-पापा और मेरे बीच इतना अंतर हो गया था कि मैं अपने मन की बात उनसे नहीं कर पा रहा था। बाहर प्रेम और किसी अपने की तलाश में मैं एकदम अकेला पड़ गया था। जैसे सब कुछ समाप्त हो चुका था। रूम में वापस जाकर मैं पलंग पर बैठ गया। पानी पीने के लिए हाथ बढ़ाया किंतु बॉटल हाथ से छूट गई।

बॉटल की आवाज सुनकर मम्मी फोन रखकर दौड़ते हुए मेरे कमरे में आ गई।

'क्या हुआ बेटा?' मम्मी ने बॉटल हाथ में लेते हुए मुझसे पूछा।

'अब मैं अपने आप को रोने से रोक नहीं पाया। मम्मी का हाथ पकड़कर मैं फूट-फूटकर रोने लगा। मम्मी ने मुझे गले से लगा लिया।'

'मेरी लाइफ बरबाद हो गई है। मैं किसी काम का नहीं रहा।

कोई मुझे पसंद नहीं करता, किसी को मेरी ज़रूरत नहीं है, अब मेरे जीवन का कोई मकसद ही नहीं है। इस तरह मैं नहीं जी पाऊँगा। मम्मी, मुझे मर जाना है... मम्मी, मुझे मर जाना है।' मम्मी से लिपटकर मैं जोर-जोर से रोने लगा।

'मेरी चीखें मम्मी के दिल को दलहा रही थी। उनकी आँखों से भी अविरत अश्रुधारा बह रही थी। वे मौन रहकर अपने मृदुस्पर्श से मेरे सिर और पीठ को सहला रही थी।

रात को पापा भी मेरी हालत देखकर चौंक गए। मैं ऐसी हालत में था, जैसे सचमुच मरने वाला हूँ। उन लोगों ने तुरंत डॉक्टर को घर पर बुलाया। दवाई शुरू की गई और परीक्षा देना बंद किया।

मैं अपनी ही नज़रों से गिरता जा रहा था। बस, रूम के किसी एक कोने में बैठा रहता था। धीरे-धीरे आँसू भी सूख गए। चेहरे पर किसी प्रकार का हावभाव नहीं, कोई संवेदना नहीं, मानो बुत बन गया था। आसपास वाले कई लोग मम्मी से पूछते थे कि मुझे मानसिक बीमारी तो नहीं है न? मम्मी-पापा को भी लगता था कि कहीं हमारा बेटा पागल तो नहीं हो गया? मुझे भी ऐसा डाउट होने लगा कि सच में मैं.....

यह सब चल रहा था तब मीत आप से मिला।

मिराज की वेदना और मीत की अश्रुधारा एक साथ बह रहे थे। पहले किसे सांत्वना दूँ?

(20)

इतना बोलते ही मिराज खुद पर और ज्यादा काबू नहीं रख पाया। उसका गला रूँध गया। मैं खड़ी होकर उसके पास गई। उसके कंधे पर हाथ रखा। वह रो पड़ा। आँसुओं के साथ वेदना भी खाली हो रही थी। कितने समय के जख्म पड़े हुए थे। जो धीरे-धीरे भर रहे थे। यह सब होना ज़रूरी था। वह बहुत रोया लेकिन आज उसने अपने अंदर जो भरा पड़ा था वह सब बाहर निकल जाने दिया। वह भले ही ऐसा समझता हो कि वह हार चुका है लेकिन वास्तव में अब उसके जीत की शुरुआत थी।

मीत ने अपने आँसू पोंछे और सहज हुआ। आँखें लाल हो गई थी।

मैंने मिराज को रोने दिया। अब तक वह पूरी तरह से खाली नहीं हुआ था। अनपेक्षित बोझ तले दबा हुआ था। खाली तो वह अब हुआ। नई खुशियों, आशाओं और आकांक्षाओं के साथ जीने के

लिए उसके दिल में अब जगह बन गई थी।

'जिस प्रकार हम दिल खोलकर हँसते हैं उसी प्रकार दिल भर आने पर रो लेने से नई खुशियों को अंदर आने की जगह मिलती है।' मीत ने अपनी जगह पर से उठते हुए कहा।

मीत मिराज के पास गया और प्रेम से उसे गले लगा लिया। तीन-चार बार उसकी पीठ थपथपाई। मीत ने मिराज के सिर पर हाथ फिराया और फिर अपनी जगह पर आकर बैठ गया।

मिराज का रोना बंद होने पर मैंने अपनी पानी की बोतल खोलकर उसे दी। वह मुझसे आँखें नहीं मिला पा रहा था।

'हेय, इट्स ओ.के.। लड़के तो बिना वजह दिल पर अधिक बोझ लेकर घूमते हैं कि हम लड़के हैं। हम कैसे रो सकते हैं? अरे, रो लो न भाई। जो अंदर है वही तो बाहर निकलेगा न। हम कोई बेवजह थोड़े ही रो सकते हैं?' मैंने मीत और मिराज की तरफ देखते हुए कहा।

मीत हँस पड़ा।

मिराज ने जेब में से रुमाल निकालकर आँसू पोंछे।

'हाउ डू यू फील नाउ?'

'फ्री एन्ड लाइट।'

‘यस, आइ केन सी देट ओन योर फेस। तुम्हारे चेहरे पर अब तक जो बोझ था वह अब कहीं और चला गया है। पता है कहाँ?’

‘कहाँ?’

‘तुम्हारी आँखों में।’

‘आँखों में?’

‘आइ मीन रोने से तुम्हारी आँखें सूज गई हैं। बट नो वरीज़। वह तो कुछ देर में फिर से पहले जैसी हो जाएगी।’

‘दीदी, सम टाइम्स यू क्रेक वेरी बेड जोक्स लाइक मीत!’ मिराज के चेहरे पर स्माइल आ गई।

‘रियली? तब तो मेरी सेन्स ऑफ ह्युमर इम्प्रूव हो गई, कहलाएगी।’ मैं भी हँसने लगी।

‘हाँ, कभी-कभी ऐसे क्रेज़ी सेन्स ऑफ ह्युमर की भी ज़रूरत पड़ती है।’ मीत ने कहा।

‘और ऐसे क्रेज़ी लोगों की भी ज़रूरत पड़ती है जो तुम्हारे साथ पागलों जैसी बातें करके तुम्हें हँसा सके।’ मैंने मीत की ओर इशारा करते हुए कहा।

और मिराज हँसने लगा।

अब मिराज की लाल आँखों में उसके चेहरे पर की मुस्कान का नूर था। उसकी जीत में मुझे अपनी जीत दिखाई दे रही थी। वह एक नई शुरुआत करने जा रहा है इस बात की उसे ख़ुशी थी।

कुछ देर तक हम तीनों चुपचाप बैठे रहे। अब उसे किसी के सहारे की ज़रूरत नहीं थी। हम सभी मंदिर की नीरवता में मन की शांति का आनंद ले रहे थे। खासतौर पर मिराज।

इस दौरान कई विचारों ने मुझे घेर लिया। मिराज के जीवन से मुझे भी बहुत कुछ सीखने-समझने मिला।

स्वयं को दूसरों के जैसा बनाने के लिए कोई इंसान मास्क लगाकर कब तक रह सकता है? किस हद तक अपने आप को बदलने की कोशिश कर सकता है? जिस काम को करने पर उसे बोझ लगता हो, उस बोझ को कब तक ढ़ोया जा सकता है? उस रास्ते पर आगे बढ़ने का क्या फायदा जिस पर चलने से जीवन में जो ख़ुशियाँ प्राप्त हैं वे भी बिखर जाएँ? दूसरों से प्रभावित होकर ज़बरदस्ती उनके जैसा बनने की कोशिश करना, इससे बड़ा सेल्फ टार्चर और क्या हो सकता है?

सरल बनना एवं सरल रहना इतना कठिन नहीं है। लेकिन कम्पैरिज़न करके नकली पर्सनालिटी या इम्प्रेशन बनाए रखना,

उसके लिए सतत जूझते रहना बहुत कठिन है। कुछ हद तक का बदलाव स्वीकार्य है। और ज़रूरी भी है। लेकिन पहले उसकी लिमिट समझ लेनी चाहिए। जीवन जीना आसान है लेकिन हम खुद ही उसे कॉम्प्लिकेटेड बना देते हैं।

खुद को बदलने के सभी प्रयत्न करने के बाद भी अंत में मिराज के हाथ कुछ नहीं लगा।

'तुम दोनों कहाँ खो गए?' मिराज ने ज़रा जोर से कहा।

मैंने उसकी ओर नज़रें घुमाई। अब वह सामान्य लग रहा था।

'मैं सोच रहा था कि **अच्छा बनने से तो सरल बनना ज्यादा बेहतर है।'**

'टेलिपेथी... मेरे मन में भी ऐसे ही विचार आ रहे थे। पर तुमने उसे शार्ट एन्ड स्वीट करके कह दिया।' मैंने उत्साह में आकर कहा।

'तुम आखिर किसकी फ्रेन्ड हो? विचार तो एक जैसे होंगे ही न... मेरा प्रभाव ही ऐसा है।' मीत ने कॉलर चढ़ाते हुए कहा।

'तुम कभी नहीं सुधरोगे।'

मीत की वही पुरानी हरकतों ने वातावरण को खुशनुमा कर दिया। मिराज काफी रिलेक्स्ड दिख रहा था लेकिन मुझे अभी भी कुछ कहना बाकी था।

‘मुझे एक और विचार सता रहा है।’ मैंने मिराज की ओर देखते हुए गंभीरतापूर्वक कहा।

‘कौन सा विचार?’

‘मैं यह सोच रही थी कि तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम बिल्कुल ठीक हो चुके हो। लेकिन तुम्हारे साथ फिर से ऐसा कुछ नहीं होगा, इसकी कोई गारंटी नहीं।’ यह सुनकर मीत और मिराज के चेहरे की मुस्कान एक क्षण में ही गायब हो गई।

मिराज को झटका लगा। उसके चेहरे पर अचानक थोड़ा टेन्शन उभर आया।

मीत भी आश्चर्यचकित होकर मुझे देखता रह गया।

‘दीदी, ऐसा क्यों बोल रही हो? फिर से ऐसा सब सहन करने की ताकत अब मुझमें नहीं। और जिस दिशा में जाने से मेरी यह हालत हुई है उस दिशा में अब मैं फिर कभी नहीं जाना चाहता।’

‘मैं जानती हूँ कि तुम परम, निखिल और प्रियंका के बारे में बात कर रहे हो।’

‘मैं उन लोगों को कभी भूल नहीं पाऊँगा। उन्होंने मेरी सिम्पल एन्ड सेफ लाइफ को कॉम्प्लिकेटेड और अनसेफ बना दिया। मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गया?’

'नहीं। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। वे लोग तो सिर्फ निमित्त हैं। दोष हमारा खुद का है। तुमने हमेशा डर के साथ ही जिआ है और उस डर का प्रभाव तुम्हारे सभी रिलेशनशिप पर पड़ता है।'

'डर? कैसा डर दीदी?'

'अकेले पड़ जाने का डर, लोगों से पीछे रह जाने का डर, बेकवर्ड दिखने का डर और लोगों के मज़ाक का कारण बनने का डर।'

मिराज मेरी ओर देखता रहा।

'तो आज हम इस डर को हमेशा के लिए 'बाय बाय' कह दें और जिंदगी का 'वेलकम' करें?'

मिराज ने एक गहरी साँस ली और स्माइल किया। बिना किसी दलील के उसने मेरी बात स्वीकार कर ली।

'दीदी, तुम्हें यह सब कैसे पता चल जाता है?'

'क्योंकि जो तुम अभी अनुभव कर रहे हो, वह मैं ऑलरेडी अनुभव कर चुकी हूँ।'

मिराज ने हलकापन का अनुभव किया।

'लेट्स गो।'

मैंने मन ही मन भगवान का आभार माना। इस जगह को हमारी

जिंदगी का सबसे यादगार दिन बनाने के लिए।

'दीदी, कुछ रिश्तों का कोई नाम नहीं होता। उन्हें हम वेल विशर कह सकते हैं।' मिराज साइकिल पर बैठते हुए कहा।

'यू आर एब्सोल्युटली राइट।' मीत ने साइकिल की घंटी बजाकर बात का समर्थन किया।

उसकी आँखों में मेरे लिए उपकार की भावना स्पष्ट दिखाई दे रही थी। जिसे उसे शब्दों में कहने की कोई ज़रूरत नहीं थी।

'हाँ, लेकिन इसके अलावा और कुछ भी है जो हमें अच्छे-बूरे के बीच डिमार्केशन बताता है।' मैंने बात को नई दिशा देते हुए कहा।

'क्या?'

'धर्म और अध्यात्म।'

'कोई इंसान हमें हमेशा के लिए सुख नहीं दे सकता। और वहीं से अध्यात्म की शुरुआत होती है।' साइकलिंग के साथ-साथ बातें करते-करते घर कब आ गया पता ही नहीं चला।

कुछ दिन यूँ ही बीत गए। इतना हल्कापन और सुकून पहले कभी भी महसूस नहीं किया था। मिराज अपने रूटीन में आने लगा था। ऐसा मीत से पता चला। पहले से काफी बदलाव आ गया था लेकिन अब भी शत प्रतिशत पहले जैसा मिराज नहीं हो पाया था।

अभी भी कुछ कमी थी लेकिन वह जल्द ही पूरी हो जाएगी ऐसा मुझे विश्वास था। बस मैं योग्य समय की राह देख रही थी।

'एक दिन मिराज का फोन आया, 'दीदी, कैसी हो?'

'फाइन। तुम कैसे हो?'

'डूइंग वेल।'।

'दीदी, आपको आज डिनर पर इन्वाइट करने के लिए फोन किया है। मम्मी-पापा को आपसे मिलने की बड़ी इच्छा है।'

'और तुम्हें नहीं?'

'आपकी वजह से तो मुझे नया जीवन मिला है, दीदी। आप सही समझ के रूप में हमेशा मेरे साथ ही रहती हो। इसलिए मैं तो आपसे रोज मिलता ही हूँ।'

और हम दोनों हँस पड़े।

'आऊँगी। ज़रूर आऊँगी।'

'ठीक है। तो शाम सात बजे मिलते हैं। दीदी, मीत तुम्हें लेने आए?'

'नो थैंक्स। आइ विल मैनेज।'

'ओ.के. बाय देन।'

ठीक सात बजे मैं मिराज के घर पहुँच गई।

'आओ, आओ बेटा।' अल्का बहन ने बहुत प्रेम से स्वागत किया।

मुझे देखकर मीत के पापा एकदम खड़े हो गए। 'आओ बेटा।'

इससे आगे वे और कुछ नहीं बोल पाए लेकिन उनकी आँखें बहुत कुछ कह गई। जिस जोश के साथ वे खड़े हुए उसमें उपकार भाव झलक रहा था।

'वेलकम दीदी।' तभी मिराज ने अंदर से आते हुए कहा। वह खुश दिखाई दे रहा था। मुझे देखकर उसकी आँखों में चमक आ गई।

'हाय मिराज, लुकिंग कूल।' कहते हुए मैं सोफे पर बैठ गई।

'मीत नहीं है?' मैंने घर में नज़र घुमाते हुए पूछा।

'बस, आता ही होगा।' मिराज बोला। और तभी बेल बजी। मिराज दरवाजा खोलने दौड़ा। 'शैतान का नाम लिया और शैतान हाज़िर।' मिराज बोला।

सचमुच तो वह वाक्य मैं बोलना चाहती थी लेकिन उसके पापा की हाजिरी में, मैंने बोलने में मर्यादा रखी।

'हल्लो संयुक्ता।' मीत ने अपनी शर्ट के ऊपर का बटन खोलते हुए कहा। दोनों हाथ की स्लीव्स ऊपर चढ़ाते हुए वह पंखे के नीचे

चेयर पर बैठ गया।

'चलो, खाना खाने बैठें?' अल्का बहन ने पूछा।

'यस। टुडे फैमिली डिनर विथ फैमिली फ्रेन्ड।' और सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

घर में सभी फ्रेश दिखाई दे रहे थे, इस बात की मुझे बहुत खुशी हो रही थी। यहाँ-वहाँ की बातें करते, हँसते-हँसाते, हमने डिनर पूरा किया।

सौंफ खाते हुए हमने सोफे पर बैठक जमाई। अल्का बहन रसोइघर में रहा सहा काम निपटा रहे थे।

'संयुक्ता, मीत से तुम्हारे बारे में कई बार सुना है। आज तुम्हें मिलकर खुशी हुई।' मीत के पापा बात करना चाहते थे लेकिन शब्द कम पड़ रहे थे।

'आइ थिंक, संयुक्ता से मिलकर हम चारों को खुशी हुई है, राइट? और उसका क्रेडिट मुझे जाता है।' मीत ने आइब्रो ऊँची करते हुए घर के सभी सदस्यों को स्माइल दी।

'हाँ भई हाँ, तुम ही ले लो सारी क्रेडिट बस?' अल्का बहन काम निपटाकर आ गए। साड़ी के पल्लो से हाथ पोंछते-पोंछते वे धब करके सोफे पर बैठ गए।

‘अरे मम्मी, इस अस्सी किलो वजन को किसी पर डालने से पहले कुछ तो सोचो, बेचारे की क्या हालत होगी?’

‘चुप कर बदमाश।’ अल्का बहन को हँसी आ गई।

‘दीदी, एक बात पूछुँ?’

मुझे आश्चर्य हुआ। ‘मिराज ऐसी क्या बात है, जिसके लिए तुम्हें मुझसे ऐसा पुछना पड़ा?’

‘क्योंकि वह बात पर्सनल है, दीदी।’

मैं थोड़ा हिचकिचाइ। ‘हाँ पूछो।’

अब मिराज भी थोड़ा हिचकिचाया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। मैंने उसके मम्मी-पापा की ओर देखा। वे लोग भी शांत लेकिन आतुर थे। आखिरकार मैंने मीत की ओर देखा।

‘अरे यार, मैं बताता हूँ। संयुक्ता सभी को तुम्हारी जर्नी सुननी है। तुम कैसे-कैसे फेजेज में से गुजरी? किस तरह उनमें से बाहर निकली? वह सब।’

‘हर बार आप एक महान विभुति की बात करती हो। लेकिन उनके विषय में कभी कुछ बताया नहीं। मुझे तो खास वह सुनना है।’ मिराज बीच में ही बोल उठा।

मेरे चेहरे पर हलकी स्माइल आ गई। मैं सोफे पर ठीक तरह से बैठ गई। सभी ने अपनी-अपनी जगह ले ली। मैंने अपने भूतकाल के पन्ने पलटना शुरू किया...

(21)

स्कूल में मेरे लुक्स को लेकर हमेशा अपमान, हीनभावना से ग्रसित होकर इतने वर्ष बड़ी मुश्किल से गुज़रे थे। कॉलेज के सपने तो सभी देखते हैं। स्वाभाविक है कि मुझे भी अन्य लड़कियों की तरह इच्छाएँ होती थीं। बाल बढ़ाने के लिए तरह-तरह के उपाय आज़माए। हर नए उपाय के साथ मेरी आशाएँ बढ़ती जाती पर अंत में निराशा ही मिलती। इससे मैं पूरी तरह थक चुकी थी।

अंत में सभी प्रयत्न फेइल होते देखकर किसी ने हेअर ट्रांसप्लान्ट की बात की। हेअर ट्रांसप्लांट के लिए भी बहुत प्रयत्न करने के बाद मेरे केस में वह भी संभव नहीं था।

अब अंतिम उपाय था विग। स्कूल में तो सभी मुझे पहले से ही जानते थे अतः विग पहनने से लोगों की नज़रों में मैं और अधिक मजाक का विषय बन जाऊँगी इस डर से स्कूल में विग पहनने की मेरी हिम्मत ही नही हुई। बड़ी मुश्किल से स्कूल के दिन बीते। विग

पहनकर आत्मविश्वास के साथ कॉलेज जाने की आशा अब सफल होती दिखाई दी। अंततः वह उपाय सफल हुआ।

'संयुक्ता, मैं इतनी अच्छी सेटिंग कर दूँगा कि तुम्हें देखकर किसी को पता भी नहीं चलेगा कि तुमने विग पहनी है।' वर्षों से परिचित डॉक्टर को स्वाभाविक रूप से मेरे प्रति बहुत सहानुभूति थी।

'सचमुच?' उस दिन वे डॉक्टर मुझे भगवान जैसे लगे।

कुछ ही मिनटों की मेहनत के बाद सुंदर बालों वाला एक नया चेहरा, नया लुक, नया आत्मविश्वास, नई आशाएँ और अनगिनत खुशी मेरे जीवन में आयी। सचमुच विग पहनने के बाद सब कुछ बदल गया। मानो मुझे नया जीवन ही मिल गया हो।

मेरी आँखों में खुशी के आँसू आ गए। खुश होकर हम घर वापस आए। मम्मी, पापा, रौनक, दादी सभी ने जी भरकर मेरी तारीफ़ की। मम्मी की नजरें मुझ पर ही टिक गई थी।

उस दिन से घर का वातावरण पूरा बदल गया। मेरे जीवन में आए हुए परिवर्तन से सभी को राहत मिली। कॉलेज में भी मैंने बड़े उत्साह के साथ कदम रखा। विग के कारण मिले नए अरमानों और आत्म विश्वास के साथ कॉलेज जीवन की शुरुआत की।

कॉलेज अर्थात् नई दुनिया। कुछ लोगों के लिए वह अपना कैरियर

और सम्माननीय पद प्राप्त करने का स्थान है, तो कुछ लोगों के लिए वह फैशन, स्टाइल, स्पीच, एटिकेट, एटिट्युड, कॉम्पिटिशन, जैलसी, लव बर्ड्स और शो बाजी के लिए एक बहुत बड़ा प्लेटफार्म है।

मैं भी अन्य लोगों की तरह किसी भी प्रकार की शर्म, संकोच या हीनभावना से ग्रसित हुए बिना आगे बढ़ने की आशा के साथ धीरे-धीरे कॉलेज की रूटीन में सेट होने लगी। मेरी कुछ अच्छी सहेलियाँ भी बन गई। दो-तीन लड़के भी हमारे ग्रुप में जुड़ गए। विग के कॉन्फिडेन्स के कारण मुझे उन लोगों के साथ घुलमिल जाने में ज्यादा समय नहीं लगा।

विग से नेचरल बालों की तरह शत-प्रतिशत लुक नहीं आ सकता। पर बहुत हद तक वह असली बाल जैसी ही लगने के कारण किसी को उसे देखकर शंका हुई हो ऐसा कई दिनों तक महसूस नहीं हुआ।

पोनी जैसी सादी हेयर स्टाइल करके मैं कॉलेज जाने लगी। लोगों की ओर से मुझे नॉर्मल एक्सेप्टन्स मिलने लगा। मैं कॉन्फिडेन्ट बनती गई। एक समय ऐसा आया कि मैं विग को ही अपना सच्चा अस्तित्व मान बैठी। मात्र विग पहनने और निकालने के समय के अतिरिक्त बाकी पूरे समय, मैं उस वास्तविकता को भूल ही जाती कि यह जो कुछ भी है मात्र विग के कारण ही है। असली बाल तो

है ही नहीं। बालों में हाथ घुमाने या नई हेयर स्टाइल बनाने में मुझे आनंद आने लगा। मैंने विग को ही अपना सच्चा स्वरूप मान लिया।

धीरे-धीरे मेरा कॉन्फिडेन्स सातवें आसमान पर पहुँच गया। अब मुझे, मुझमें और अन्य लड़कियों में कोई फर्क नहीं लगता था। पहले से ही मेरा ब्रेन पढ़ाई में शार्प तो था ही, जिससे कॉलेज में मेरा नाम होने लगा। अब तक बाल के कारण मुझे सबसे अपमान, अवहेलना और तिरस्कार ही मिल रहा था। मेरे टैलेन्ट की वैल्यू किसी को नहीं थी। सभी को मेरे लुक में ही इन्ट्रेस्ट था बुद्धिमत्ता में नहीं। परिणामतः मैं हीनभावना से ग्रसित हो गई थी।

परंतु ये सभी बातें अब मेरे लिए पुरानी हो चुकी थी। मेरा ग्रास्पिंग पावर फिर से बढ़ने लगा। पढ़-लिखकर मैं लोगों को बता देना चाहती थी कि यह संयुक्ता भी कुछ कर सकती है। उसकी अवहेलना अब बहुत हो चुकी।

धीरे-धीरे बहुत लोग मेरे पीछे रहने लगे। मेरे नोट्स, मेरी राइटिंग, मेरी रीडिंग, सभी परफेक्ट थे इसलिए अब मुझे किसी प्रकार का कोई डर ही नहीं था। कभी अच्छे से तैयार होकर जाती तो कॉलेज में मुझे चार-पाँच कॉम्प्लिमेन्ट्स भी मिल जाते।

‘संयुक्ता, यू रोक बेब्स।’ झंखना ने आकर मुझे कहा।

‘क्यों क्या हुआ?’ अचानक मिले कॉम्प्लिमेंट से मुझे शॉक लगा।

‘आज मेहता सर हमारी कक्षा में तुम्हारी तारीफ़ कर रहे थे।’

‘रियली?? क्या कह रहे थे सर?’ मुझे जानने की लालसा हुई।

‘वे कह रहे थे कि तुम एक ब्रिलियन्ट स्टुडेन्ट हो। तुम्हारी हैंडराइटिंग, तुम्हारे नोट्स की प्रशंसा कर रहे थे।’

‘सचमुच?’ मुझे बहुत खुशी हुई। वर्षों से भूखे इंसान को यदि अच्छा भोजन मिल जाए तो कैसे आनंद होता है? वैसा आनंद और गर्व मैंने महसूस किया। स्कूल में टीचर्स के सामने अच्छे दिखने के लिए मैंने बहुत प्रयास किए थे। मेरे लुक्स को लेकर मेरा टैलेन्ट डिवेल्यू न हो जाय, उसके लिए मैंने कई तरीकों से मेरे फ्रेन्ड्स और टीचर्स को खुश रखने का प्रयत्न किया था। पर मेरे लुक के कारण वे सब कोशिशें नाकाम रही।

लोग मेरी अवहेलना करते थे। मुझसे कम होशियार और कम स्किल वालों को ज्यादा महत्व मिलता था। इतने अधिक बोझ तले मैंने अपने आप को पूर्णतः इन्फिरियर बना दिया था। अब वही सब कुछ मुझे जीवन में वापस मिल रहा था। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था।

‘तुमसे बहुत सी लड़कियाँ ईर्ष्या करती हैं।’

‘मैं नहीं मानती।’ मुझे यह बात हजम नहीं हुई।

'ब्युटी विथ ब्रेन हो तो लोगों को थोड़ी जलन तो होती है न।'

'जा न अब, लगता है सुबह से मज़ाक करने के लिए तुझे कोई नहीं मिला।' झंखना के इस वाक्य ने मुझे झंझोड़ दिया। मैं सपने में भी नहीं सोच सकती, ऐसी बात उसने मुझसे कही थी।

अब मुझे अपने पर जरूरत से ज्यादा गर्व होने लगा। 'आइ एम नथिंग से आइ एम सम थिंग' तक कब पहुँच गई यह मुझे पता ही नहीं पड़ा। मेरी लालसा संतुष्ट होने के बदले बढ़ने लगी।

मेरे मन में मस्ती छाने लगी। धीरे-धीरे मैं भी दूसरी लड़कियों की तरह तैयार होने के लिए, सुंदर दिखने के प्रति सजग रहने लगी। 'ब्यूटी विथ ब्रेन' इस वाक्य का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस प्रभाव के कारण मुझमें परिवर्तन आने लगे। कभी-कभी नई हेयर स्टाइल भी कर लेती थी। कभी-कभी खुले बाल भी रखती थी। शुरू में थोड़ा संकोच हुआ पर धीरे-धीरे वह भी कम हो गया। हाँ, एक बात निश्चित है कि मैंने अपनी मर्यादा नहीं छोड़ी थी।

वर्षों तक जो अपमान सहन किया था। उसके बदले आज मुझे भरपूर मान मिल रहा था क्योंकि मेरी वास्तविकता से सभी अनजान थे। 'ब्यूटीफुल एन्ड ब्रिलियन्ट' के गुणन को सार्थक करने हेतु मैं बिलो नॉर्मल से अबोव नॉर्मल की ओर आगे बढ़ चुकी थी।

और अचानक एक दिन....

'संयुक्ता..... संयुक्ता.....' मीतवा मुझे आवाज देकर बुला रही थी।

'क्या हुआ?'

'आज झंखना का बर्थ डे है, याद नही?'

'अरे, मैं तो बिल्कुल भूल ही गई थी।'

'चल, सभी ग्रुप फोटो खींचवा रहे हैं।'

'हेपी बर्थ डे झंखना' मैंने झंखना से गले मिलकर विश किया।

'थैंक यू डियर।'

'सॉरी यार। मैं तो बिल्कुल भूल ही गई थी।'

'इट्स ओ.के.।'

'पब्लिक, चलो सभी लाइन में खड़े हो जाओ तो।' कैमरा पकड़कर थक गई, निराली ने जोर से आवाज़ लगाई। निराली झंखना की कजिन थी। वह भी हमारी कॉलेज में पढ़ती थी।

'हाँ, कम ऑन गर्ल्स एन्ड बॉय्स।' मीतवा ने सभी को कैसे खड़े रहना है, इस बारे में डॉयरेक्शन दिया।

उस समय हमारे शोर-गुल और मस्ती के कारण सभी का ध्यान हमारी ओर ही था।

‘गर्ल्स पीछे खड़े रहें और बॉय्स उस ऊँचाई पर बैठ जाएँ।’ मीतवा फिर से चिल्ला उठी।

‘रेडी... से चीज़... ’ निराली ने तीन-चार फोटो क्लिक कर लिए।

‘नाऊ ओन्ली गर्ल्स। बॉय्स डोन्ट माइन्ड प्लीज।’ मीतवा ने कहा।

‘आप लोग भी नौटंकी करते हो।’ प्रणव ने हँसते-हँसते कहा।

‘तुम्हें जो सोचना है सोचो। हम लड़कियों को ऐसा सब तो बहुत अच्छा लगता है।’ मीतवा ने प्रणव को पलटकर जवाब दिया।

‘तीन लड़कियाँ केन्टीन की चेअर के पास खड़े हो जाओ और तीन पीछे आ जाओ।’

‘हाँ, भाई देखो मैंने सभी को पार्टी दी है इसका प्रुफ रहना चाहिए। निराली, फोटो में टेबल पर रखी खाने की चीज़ें भी दिखनी चाहिए हाँ।’

‘हाँ बाबा, पहले सब ठीक से खड़े तो रहो।’

‘एक काम करो। शोल्डर पर इस प्रकार हाथ रखकर थोड़ा नीचे झुककर खड़े रहो।’ झंखना ने मीतवा के पीछे खड़े रहकर पोज़ देकर बताया।

‘ओ.के. मैं और झंखना साथ में रहेंगे।’ मैं मीतवा को हटाकर

उसकी जगह पर बैठ गई।

सभी अपने-अपने पेयर के साथ खड़े हो गए। निराली ने कैमरा प्रणव को दिया और मीतवा के पीछे जाकर खड़ी हो गई।

'ओ.के. रेडी??' प्रणव ने सभी से कैमरे की ओर देखने के लिए कहा।

'यस....' सभी ने स्माइल किया।

प्रणव ने दो-तीन क्लिक किए। फोटो खींच लिए गए। झुककर खड़े रहने के कारण झंखना के पहने हुए हैवी ड्रेस का ब्रोच मेरे बालों में फँस गया था। इसकी खबर न तो मुझे थी और न ही झंखना को। मीतवा अपने उतावले स्वभाव के अनुसार तुरंत ही आकर झंखना को खींचने लगी।

'सररररर......' मेरी विग जोर से खिंच गई।

'आउच।' मेरे मुँह से जोरदार चीख निकल गई।

सभी मेरी ओर देखने लगे। सिर के आगे के हिस्से में एक ओर से विग ऊपर उठ गई थी। झंखना का ध्यान मेरे सिर पर गया। मीतवा को लगा कि कोई मज़ाक चल रहा है। इसलिए उसने बिना देखे ही पीछे से झंखना का हाथ एक बार और खींचा। ब्रोच फिर से खींचें जाने के कारण ऊपर के हिस्से में से विग लगभग उखड़ गई।

सभी देखते रह गए। झंखना, मीतवा पर जोर से चिल्लाई, तब उसे यह समझ में आया कि क्या हुआ है।

'आ आ आ.....' मेरी तरफ ध्यान जाते ही मीतवा के मुँह से जोरदार चीख निकल गई।

उसकी चीख सुनकर सभी का ध्यान मेरी ओर गया। सबके मुँह से एक साथ हाय शब्द निकल गया। और मैं......

मैं तो काटो तो भी खून न निकले ऐसी बेबस और लाचार हो गई। मेरी हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि मैं ऊपर भी नहीं देख पा रही थी। आँखों से आँसू निकल गए। मेरा दम घुटने लगा, मानो किसी ने मेरी साँस रोक दी हो!

'ओह नो.... शीट.... वोट्स दीस।' ऐसी अलग-अलग आवाजों के बीच बहुत से लोगों के हँसने की आवाज भी मेरे कानों में गूँजने लगी। मेरा सिर फटने लगा।

कहाँ जाऊँ? क्या करूँ?

हाथ से विग को भी ठीक करने की ट्राय की पर डर के मारे मेरे हाथ काँपने लगे।

झंखना ने पीछे से धीरे से अपना फंसा हुआ ब्रोच निकाल लिया। और डरते-डरते मुझे बाल ठीक करने में मदद करने लगी। मैं वहाँ

से खड़ी ही न हो सकी। बड़ी मुश्किल से खड़ी तो हुई पर शर्म एवं डर के कारण फिर से बैठ गई। मेरी नजरें नीची थी पर मुझे मालूम था कि लोगों की नजरें मुझ पर ही थी। मैं एक तमाशा बन गई थी।

मीतवा और झंखना मेरे पास खड़ी थीं। उन लोगों को मेरे लिए सहानुभूति थी। पर साथ ही साथ किसी ने छल किया हो ऐसे भाव भी हुए ही होंगे। निराली थोड़ी देर हँसकर फिर हँसी रोकने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही थी। वह झंखना की कड़क आँखे देखकर शांत हो गई।

मेरा पूरा शरीर ठंडा पड़ गया था।

'इट्स ओ.के. संयुक्ता, डोन्ट वरी।' मीतवा ने धीरे से कहा।

झंखना ने जैसे-तैसे करके विग पुनः ठीक की और सभी को वहाँ से हट जाने का इशारा किया। लड़के तो चले गए पर कुछ लड़कियाँ अभी भी मेरी तरफ टक-टकी लगाकर देख रही थी।

मेरे प्रति जलन की भावना रखने वाले कुछ लोगों को शांति अवश्य मिली होगी। मैं सिर झुकाकर चलने लगी। झंखना ने मेरा हाथ जोर से पकड़ रखा था। मानो मुझे आश्वासन दे रही हो।

मीतवा ने पार्किंग में से अपनी कार निकाली। हम दोनों उसमें बैठकर कॉलेज के बाहर निकल गए।

कुछ बोलने के लिए मेरे पास शब्द नहीं थे। आँखों से निकलने

वाले आँसूओं को पोंछते हुए मैं बैठी रही।

'तुम्हारा घर आ गया।' झंखना ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

मीतवा ने नीचे उतरकर गाड़ी का दरवाजा खोला और मेरे घर की बेल दबाई। मम्मी बाहर आई।

'क्या हुआ?' सभी के उतरे हुए चेहरे को देखकर मम्मी घबरा गई।

'कुछ नहीं आंटी। चिंता मत करो।' झंखना ने मम्मी को तुरंत शांत करने का प्रयत्न किया।

'वह तो संयुक्ता की विग......' झंखना ने मीतवा को आगे बोलने से रोक दिया।

मुझे सोफे तक छोड़कर दोनों चुपचाप चली गई। क्या हुआ होगा, इस बात का अंदाजा मम्मी को हो गया था। उनके जाने के बाद मैं फूट-फूटकर कर रोने लगी। मम्मी ने मुझे अपनी ओर खींचकर गले लगा लिया। मम्मी मेरे सिर एवं पीठ पर हाथ घूमाने लगी। उन्होंने मुझे रो लेने दिया।

लगभग बीस मिनट तक ऐसा ही चलते रहा। मैं थककर वहीं लेट गई। आँखें बंद करके मम्मी का हाथ पकड़कर चुपचाप सोफे

पर पड़ी रही। न तो मम्मी ने मुझसे कोई सवाल पूछा और न ही मैंने मम्मी से कुछ कहा।

(22)

उस दिन मुझे जितना सदमा पहुँचा था, उसकी तुलना मेरी अब तक की जिंदगी के सभी सदमें से करें तब भी कम पड़ेगा।

पहले तो सभी मेरी वास्तविकता से वाकिफ़ थे और यह तो लोगों के साथ छल करके प्राप्त किया हुआ सुख था। इसलिए इसमें डबल मार पड़ा। पहला, यह कि सच्चाई सभी के सामने आ गई और दूसरा, मैं किसी का सामना करने लायक नहीं रही।

विग के सहारे मैंने जो कल्पनाएँ की थी, खुद में जो बदलाव देखा और अनुभव किया था, उसे ही मैंने अपनी नई दुनिया मान लिया था। मैं विग को ही अपने जीवन का सहारा मान बैठी थी। उसके आधार पर मिलने वाला सुख, मान, कीर्ति मानो हमेशा मेरे पास ही रहेंगे ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास हो गया था। विग के आधार पर मिलने वाले 'ब्यूटीफूल', 'ब्रिलियन्ट' जैसे टाइटल को मैंने स्थायी मान लिया था। यह मेरी कितनी बड़ी बेवकूफी थी!

मेरा मन टूट चुका था। जब मान नहीं मिलता था, तब अपमान की आदत पड़ गई थी। लेकिन मान के घोड़े पर बैठने के बाद मैं ऐसी गिर पड़ी कि फिर से उठ ही न सकी।

कॉलेज में बनी यह घटना मेरे मानस पर किसी होरर मूवी की तरह छा गई। कई दिनों तक मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मेरे साथ यह क्या हो गया? कितने सालों बाद बड़ी मुश्किल से उत्साहपूर्वक पढ़ाई शुरू की थी कि तभी ऐसा झटका लगा। मैं फिर से बिल्कुल अकेली पड़ गई।

घर में मम्मी के अलावा बाकी सभी के साथ मेरी बातचीत बंद हो गई। मुझे विग से नफरत होने लगी। उस दिन के बाद मैंने फिर से कभी विग को हाथ तक नहीं लगाया। अब क्या बचा था! किसे दिखाऊँ अपना बनावटी चेहरा!

कभी-कभी दादी रूम में आकर मेरे पास बैठते, कुछ बातचीत करने का प्रयत्न करते लेकिन मेरी ओर से उन्हें कोई रिस्पोन्स नहीं मिलता और फिर वे थक कर चले जाते। पापा रोज सुबह ऑफिस जाने से पहले और ऑफिस से घर आने के बाद, मुझे एक बार रूम में देखने ज़रूर आते। कभी 'कैसे हो बेटा?' इतना पूछने की हिम्मत जुटा लेते और रौनक बेचारा मेरे पास बैठकर अपना होमवर्क करता।

सभी को लगता कि मैं कुछ बोलूँगी, कुछ बात करूँगी लेकिन उन्हें हमेशा निराश ही होना पड़ता। कभी कभार रौनक मेरे लिए अच्छी-अच्छी चॉकलेट्स लाता और मेरे पास रख देता। कई दिन बीत गए, मैं अपने रूम में दिनभर यूँ ही पड़ी रहती।

बाकी रही मेरी मम्मी। मम्मी तो बेचारी कितने ही बार रूम के चक्कर लगाने आती। कभी मेरी आँखों के आँसू अपनी साड़ी के पल्लो से पोंछती तो कभी मुझे पकड़कर बैठे रहती। बड़ी मुश्किल से मेरे सामने अपने आँसू रोक पाती तो कभी मेरे सामने ही रो पड़ती। ऐसा करते-करते एक सप्ताह बीत गया।

'संयुक्ता, बेटा तुम कॉलेज कब से जाओगी?' एक बार मम्मी ने पूछने की हिम्मत की।

मैनें सिर हिलाकर ही 'ना' में जवाब दे दिया।

एक-दो बार झंखना और मीतवा के मोबाइल पर फोन भी आए थे। पर मैंने उठाया नहीं। उन दोनों ने मैसेज भी भेजे, पर मैंने कोई रिप्लाय नहीं किया। मैं उस दिन को भूला ही नहीं पा रही थी। मैं चाहती थी कि मेरी याददाश्त चली जाए तो कितना अच्छा।

जब मेरी बेचैनी असह्य हो जाती, तब मैं बाथरूम में जाकर पानी का नल खोलकर जोर-जोर से रो पड़ती। आईने में अपना चेहरा

और लाल आँखें देखकर खुद पर ही दया करती। कभी लगता कि मैं पागल हो चुकी हूँ।

लगभग आठ-दस दिन के बाद एक दिन.....

'संयुक्ता कहाँ है?' बाहर से किसी ने पूछा।

'भीतर ही है, अपने रूम में।' मम्मी ने कहा।

'हम उससे मिल सकते हैं?'

किसी के कदम मेरे रूम की तरफ बढ़ रहे थे। जरा हिचकिचाहट के साथ किसी ने अधखुले दरवाजे को धकेला। सामने मम्मी थी। शायद मम्मी ने किसी को बाहर बैठा रखा था।

'कौन है?' मुझे डर लगा कि कौन आया होगा? मुझे इस हालत में देख लेगा तो?

पापा के स्ट्रिक्ट इन्स्ट्रकशन थे कि घर के अलावा किसी भी बाहर के व्यक्ति को मुझसे न मिलने दिया जाए। उन्हें डर था कि कोई मुझे पसंद न आए या मुझे डाउन फील कराए ऐसी बात करेगा तो मेरी हालत और बिगड़ जाएगी।

'बेटा तुम्हारे फ्रेन्ड्स आए हैं।'

'कौन फ्रेन्ड्स?'

‘जो उस दिन तुम्हें घर छोड़ने आए थे न, वे दोनों।’

‘नहीं।’ मैंने अपना हाथ सिर पर रखा। मुझे किसी से नहीं मिलना इस आशय से मैंने अपना हाथ माथे पर रखा। तभी मुझे अहसास हुआ कि मैंने विग नहीं पहनी है। उन लोगों ने मुझे ऐसी हालत में पहले कभी नहीं देखा था। मैं बहुत शर्मिंदगी महसूस कर रही थी। स्वयं पर फिर से घृणा होने लगी। अगले ही सेकेन्ड मुझे विग पहनने का विचार आया। मम्मी आलमारी में से विग निकालकर मुझे दी।

‘नहीं चाहिए मुझे।’ मैंने मम्मी के हाथ को धक्का मार दिया।

‘बेटा, वे लोग कितने दिनों से तुमसे मिलना चाहते हैं। पहले भी आए थे तब भी मैंने उन्हें मना कर दिया था कि थोड़े दिन बाद आना।’

‘मैं उन्हें किस तरह से मिल पाऊँगी?’ मेरी आँखों में फिर से आँसू आ गए।

‘ठीक है मैं उन्हें मना कर देती हूँ। तुम रोना मत।’

मैं तकिए पर सिर रखकर रोने लगी। इतने में किसी ने रूम का अधखुला दरवाजा खोला हो, ऐसा आवाज आया। मैंने तुरंत ही मम्मी का दुपट्टा सर पर ओढ़ लिया।

‘हाय संयुक्ता।’

मैंने नजरें उठाई। सामने झंखना थी और उसके पीछे मीतवा। शायद आज भी मुझसे मिलना न हो पाए, यह सोच कर वे लोग खुद ही सीधे मेरे रूम में आ गए थे। उन लोगों का सामना करने की हिम्मत मुझमें बिल्कुल भी नहीं थी। झंखना मेरे पास, मेरे पलंग पर आकर बैठ गई। मीतवा थोड़ा हिचकिचा रही थी। वह सामने वाली दीवाल से लगकर खड़ी रही। मम्मी टेन्शन में थी।

'तुम कैसी हो?' झंखना ने बात शुरू की।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी ओर देखकर मैंने फिर से सिर झुका लिया। मम्मी, झंखना और मीतवा तीनों एक दूसरे की ओर देख रहे थे।

'आंटी, संयुक्ता कॉलेज कब आएगी?' मीतवा को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या बात करे।

'वह तो अभी पता नहीं है।' मम्मी ने कहा।

'संयुक्ता, तुम जैसी होशियार स्टूडेंट यूँ घर पर बैठी रहे, वह ठीक नहीं है। जो हो चुका उसे भूल जाओ।'

'वह इतना आसान नहीं है।' मैं कहे बिना नहीं रह सकी!

'मैं समझ सकती हूँ, लेकिन उसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं।'

'अपने आपको इतना दु:खी मत करो।' मीतवा बड़ी मुश्किल

से बोली।

मैंने उसकी ओर देखा और फिर मैंने झंखना की ओर देखा। झंखना ने मेरे हाथ पर हाथ रखा।

'क्या एक बार भी मेरी बात नहीं मानोगी संयुक्ता?'

'बेटा, ये लोग खास तुमसे मिलने आए हैं। उन्हें तुम्हारी परवाह है।' तभी मम्मी बोल उठी।

मेरी आँखों में फिर से पानी भर आया। झंखना ने उस दिन जो मुझे सपोर्ट किया था वह मैं कभी नहीं भूल सकती। आज भी उसकी आँखों में मेरे लिए दया और सहानुभूति दिखाई दे रही थी। लेकिन आज दया, मुझे मेरी हीनता का ज्यादा अहसास करवा रही थी।

'बोलो संयुक्ता, क्या मेरी एक बात मानोगी?'

मैंने सवाल भरी आँखों से उसकी ओर देखा।

'कॉलेज आना फिर से शुरू कर दो। हम सब हैं न तुम्हारे साथ।'

'हाँ, झंखना सच कह रही है। तुम्हारे सामने गलत तरीके से देखने की किसी की हिम्मत नहीं होगी।' मीतवा ने थोड़ा आगे आकर कहा।

'तुम अपने दिमाग में से सारा बोझा निकाल डालो।' झंखना ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और मैं उसकी तरफ देखूँ, इसकी राह देखने

लगी।

‘सॉरी, आइ कान्ट।’ मैंने नीचे देखते हुए ही कहा।

‘कोई बात नहीं। हम तुम्हें फोर्स नहीं करेंगे लेकिन एक प्रॉमिस करो।’

‘तुम्हारा जब भी मन करे तब, तुम खुद मुझे फोन करना। तुम कहोगी तब मैं तुमसे मिलने ज़रूर आऊँगी।’

‘ओ.के.।’ मैंने शार्ट में ही बात समाप्त की। मैं उन लोगों को अपसेट नहीं करना चाहती थी लेकिन दूसरों के बारे में सोच सकूँ ऐसी अभी मेरी हालत नहीं थी।

‘अब हम चलते हैं।’ झंखना ने मीतवा की ओर देखते हुए कहा।

‘ठीक है बेटा, थैंक यू।’ तुम लोग कभी-कभी मिलने के लिए आते रहना। मम्मी गदगद हो उठी।

‘बाय, ध्यान रखना।’ मीतवा ने कहा।

‘बाय।’

‘टेक केयर संयुक्ता।’ इतना कहकर झंखना ने मम्मी की ओर देखा और रूम से बाहर निकल गई।

‘आंटी, कभी भी, कुछ भी काम हो तो बिना किसी संकोच

के ज़रूर बताना।'

सभी के जाने के बाद मैं खूब रोई। तब तक रोती रही जब तक कि मेरे दिल का बोझ हल्का नहीं हो गया। फिर शांत हो गई। मैं रो-रोकर थक चुकी थी। फिर मैंने रूम में चारों ओर नजरें घुमाई। मेरी नज़र स्टडी टेबल पर टिक गई। पिछले दस दिनों से मेरी एक भी बुक बाहर नहीं निकली थी। कितने उत्साह और उमंग के साथ मैंने इस जगह अपने पर टूटे हुए अहंकार को फिर से जीवित किया था।

एक बार फिर नेगेटिविटी पूरी तरह से मुझ पर हावी हो चुकी थी। कभी मैं शून्यमनस्क हो जाती, तो कभी विचारो के फोर्स में मानसिक तौर पर खूब थक जाती। पागल तो नहीं कह सकते लेकिन मैं सुद बुध खो चुके इंसान की तरह रहने लगी। मुझे किसी भी चीज़ में कोई रस नहीं आ रहा था।

रात के नौ बजे थे। पापा रूम में आए। कुछ कहना चाहते थे।

'संयुक्ता, कैसे हो बेटा?'

'चलो, हमारे साथ बाहर बैठो।' मम्मी ने कहा।

'नहीं, मुझे यहीं अच्छा लगता है।'

'यूँ सारा दिन रूम में ही बैठी रहोगी, तो कैसे चलेगा? थोड़ा बाहर निकलो। लोगों से मिलो।' पापा ने कहा।

‘मैं किसी को अच्छी नहीं लगती।’ मैंने चीढ़कर कहा।

‘ऐसा नहीं है। हम सभी को तुम भी उतनी ही अच्छी लगती हो जितना कि रौनक।’ मम्मी ने तुरंत कहा।

‘मैं आपकी बात नहीं कर रही। मैं बाहर के लोगों की बात कर रही हूँ।’

‘बेटा, दुनिया वैसी ही दिखती है जैसी हम उन्हें देखना चाहते हैं। जिंदगी में क्या नहीं है उसके बजाय, क्या है उस पर भी विचार करो।’

‘मम्मी इन सब बातों में मुझे कोई रस नहीं है। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।’

‘ठीक है, चलो इस बारे में बात नहीं करते, बस।’ मेरा मूड ज्‍ यादा बिगड़ जाए इससे पहले ही पापा ने बात खत्म कर दी।

‘तुम्हें अभी यदि कॉलेज जाने का मन नहीं करता तो कोई बात नहीं लेकिन कुछ ऐसा करो जिससे तुम फ्रेश हो जाओ। जिसमें तुम्हारा टाइम पास हो।’ मम्मी ने मेरे पास आकर कहा।

‘मुझे किसी चीज़ में कोई इन्ट्रेस्ट ही नहीं है तो मैं क्या करूँ?’ मैं उद्धत होती जा रही थी।

‘ठीक है, कोई बात नहीं। तुम उसे फोर्स मत करो।’ पापा ने

मम्मी की ओर देखते हुए कहा।

‘मेरे साथ कल वॉक पर आओगी?’

‘देखूँगी।’ मैं किसी भी प्रकार से बंधन में रहना नहीं चाहती थी।

कुछ देर सभी चुपचाप बैठे रहे। मेरे पास बात करने के लिए कुछ नहीं था और वे लोग भी मुझे मनाने का प्रयत्न करके थक चुके थे।

‘मुझे थकान लग रही है। मुझे सोना है।’ ऐसा घुमाकर बात करते हुए मैंने उन्हें रूम से बाहर जाने के लिए कहा।

‘ठीक है, सो जाओ शांति से। मम्मी तुम्हारे पास ही सोएगी।’ पापा ने मेरे सिर पर हाथ रखा और फिर चले गए।

मम्मी रातभर मेरे साथ ही रही। मुझे ठीक तरह से नींद भी नहीं आ रही थी। मैं एक ओर करवट लेकर बस लेटी हुई थी। मम्मी मेरी पीठ थपथपाते हुए दिनभर के शारीरिक और मानसिक थकान के कारण कुछ देर बाद सो गई। मैंने गहरी साँस ली। नफरत और निराशा के बोझ तले मेरी भी आँख लग गई।

सुबह रोज की तरह मम्मी अपने काम में लग गई। दादी मेरे रूम में कुर्सी पर बैठे थे। मुझे सँभालने में किसी ने कोई कमी नहीं रखी थी।

‘उठ गई बेटा?’

मैं जड़वत बैठी ही रही।

'क्या हो रहा है, बेटा संयुक्ता?'

'दादी, मैं पागल तो नहीं हो जाऊँगी न?'

अचानक ही ऐसा सवाल सुनकर दादी कुर्सी पर से उठकर मेरे पास आकर बैठ गए। प्रेम से मेरे सिर पर हाथ रखा और मुझे दीवाल की तरफ देखने का इशारा करते हुए उस पर लगी भगवान की फोटो की ओर ऊंगली करके कहा।

'देखो बेटा, वे हैं न। वे जगत् के पालनहार हैं। तुम्हारे सारे दुःख उन्हें सौंप दो।'

दादी की बात सुनकर, भगवान की ओर देखकर मुझे दो मिनट के लिए शांति तो ज़रूर मिली लेकिन अपने दुःख उन्हें किस तरह से सौंप दूँ? वह मुझे समझ में नहीं आया।

'भगवान सब अच्छा करेंगे।' दीदी ने कहा।

'वे तो बैठे-बैठे बांसुरी बजाते हैं। वे कैसे मेरा दुःख लेंगे?' मैं खुद को रोक नहीं पाई।

'बेटा, ऐसे भगवान का अनादर नहीं करते।'

'मुझे आपकी बात समझ में नहीं आती। वे तस्वीर में हैं और

मैं यहाँ हूँ।'

'भगवान यदि दुःख देते हैं तो उसे सहन करने की शक्ति भी देते हैं।'

'आप तो दोनों ओर से बोलती हो। एक तरफ कहती हो कि उन्हें दुःख सौंप दो और दूसरी ओर कहती हो कि दुःख सहन करने की शक्ति देंगे।'

दादी मेरी ओर इस तरह देखने लगीं मानो किसी नासमझ पर तरस खाकर देख रहीं हों!

वैसे तो मेरी वजह से मेरी फैमिली मुरझा ही गई थी। लेकिन इस बार जो हुआ वह पहले से बहुत अलग था। कुछ समय के लिए आई खुशियों पर एकाएक ग्रहण लग गया था।

यूँ ही दिन बीतते गए। मुझे खुश करने की सभी की कोशिशें नाकाम रही। धीरे-धीरे मेरा खाना-पीना एकदम कम होता गया, जिससे मेरी तबीयत बिगड़ने लगी। मुझे जीने में कोई रस ही नहीं था।

'मैं तो लड़की हूँ, यंग हूँ, इसलिए मुझे इस रूप में कोई स्वीकार कर ही नहीं सकता।' किसी भी तरह से लेकिन मैं खुद को नीचा गिराना सीख गई थी। यूँ कहा जा सकता है कि मुझे दुःखी होने की और दुःखी रहने की आदत ही पड़ गई थी।

विग की वजह से मुझमें जो आत्मविश्वास जागा था, वह अचानक चकनाचूर हो गया। इसमें किसकी भूल थी? मेरी ही न। क्योंकि मैंने उस परिस्थिति को परमानेन्ट मान लिया था। सभी मुझे खुश देखना चाहते थे। और मैंने भी खुश रहने के लिए दुनिया भर के हाथ-पैर मारे। थक हारकर एक मात्र विग के सहारे अपने अस्तित्व को टिकाए रखने के पीछे असल सत्य को भूल गई, उसकी इतनी बड़ी सजा?? अब मुझसे सहन नहीं हो रहा था।

कुछ दिन बाद झंखना और मीतवा ने मुझे फोन करने के कई प्रयत्न किए। मैसेज भी किए लेकिन मेरी ओर से कोई रिस्पांस न मिलने पर धीरे-धीरे वे भी मेरे जिंदगी से दूर हो गए। उन दोनों के लिए मेरे दिल में उपकारी भाव था लेकिन मैंने उनके साथ छल किया है, यह बोझ मुझे उनका सामना नहीं करने दे रहा था। अब मैं ऐसे कोई व्यक्ति से नहीं मिलना चाहती थी जो मुझे मेरे अतीत की याद दिलाए। इस तरह से मैंने अपने अच्छे मित्रों को खो दिया।

(23)

इस प्रकार चार महीने बीत गए। मैं बीमार रहने लगी। मानसिक स्थिति ज्यादा बिगड़ने से शारीरिक अशक्ति, थकान और कमजोरी रहने लगी।

'संयुक्ता को किस प्रकार नॉर्मल किया जा सकता है यह सोच-सोचकर मैं थक गई हूँ।' मम्मी ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए पापा से कहा।

'मुझे तो डर है कि जीवन इसी तरह चलता रहा तो कुछ अनहोनी न हो जाए।' पापा बहुत असमंजस में थे।

'पापा, मेरे एक फ्रेन्ड के कोई रिलेटिव जाने-माने साइकेट्रिस्ट हैं। हम संयुक्ता की बात उनसे करें तो?' उम्र बढ़ने के साथ ही साथ रौनक भी समझदार हो गया था।

'हाँ, तुम्हारी बात सही है।' पापा ने रौनक से कहा।

'कुछ भी करो पर मेरी संयुक्ता को ठीक कर दो।' मम्मी, पापा

और रौनक की तरफ देखकर कहने लगी।

‘हाँ, मम्मी मैं कल ही बात करके अपॉइन्टमेन्ट ले लेता हूँ।’

‘हाँ, जल्दी करना। अब मेरी सहनशक्ति की लिमिट टूट रही है।’ पापा की आँखों में आँसू थे।

अगले ही दिन के लिए डॉक्टर का अपॉइन्टमेन्ट फिक्स हो गया।

‘दीदी, कल हम एक डॉक्टर के पास जाएँगे।’ रौनक ने आकर मुझसे कहा।

‘क्यों?’

‘अपनी हालत देखिए। कुछ अच्छे से खाती-पीती नहीं हो। कितनी दुबली हो गई हो।’

‘पर मुझे किसी डॉक्टर की ज़रूरत नहीं है।’ मैं अब डॉक्टर के पास जाना नहीं चाहती थी।

‘दीदी, हम बाल के लिए नहीं जाएँगे। बस तुम्हारी हेल्थ अच्छी हो जाए इसलिए जाना है। प्लीज दीदी।’

‘कहा न मुझे किसी डॉक्टर के पास नहीं जाना है।’

‘डॉक्टर शाह बहुत अच्छे इंसान हैं। उनसे मिलकर आपको अच्छा लगेगा।’

‘नहीं मुझे किसी के पास नहीं जाना है।’

रौनक मुझे समझाकर थक गया। पापा और मम्मी ने भी प्रयत्न किए परंतु मैं टस से मस नहीं हुई।

‘कोई बात नहीं मम्मी। हम डॉक्टर शाह से बात करेंगे। वह हमारी बात समझकर भी कोई सामान्य दवाई दे देंगे। संयुक्ता को उससे आराम मिलेगा।’ मम्मी को हताश देखकर रौनक ने उन्हें सांत्वना दी।

‘संयुक्ता, डॉक्टर शाह ने तुम्हारे लिए विटामिन की टेबलेट्स लिख दी है। उससे तुम्हारी वीकनेस कम होगी। लोगी न?’ मम्मी ने पूछा।

‘हाँ।’ मैं भी वीकनेस से थक गई थी अतः मैं तुरंत मान गई।

मेरा जवाब सुनकर घर में सभी को राहत हुई।

मैंने दवाई लेना शुरू किया। उनकी दवाई से मुझे थोड़ा अच्छा लगने लगा।

मेरी अच्छी तरह देखरेख हो सके इसलिए मम्मी भी घर में ही रहने लगी। बाहर के काम पापा और रौनक ही सँभालते थे।

कभी-कभी फ्री टाइम मिलने पर मम्मी हमारी ही बिल्डिंग में रहने वाली पारूल आंटी के साथ बैठती थी। पारूल आंटी बहुत ही मिलनसार स्वभाव की थी। मम्मी के साथ उनका व्यवहार अच्छा था। धीरे-धीरे मम्मी सबसे विमुख होने लगी। जिससे भी मिलती वे मेरे

बारे में ही बात करते, मम्मी को अब वह अच्छा नहीं लगता था।

डॉक्टर शाह की दवाई से शुरू-शुरू में मेरा मन शांत रहने लगा। रात को नींद भी आने लगी, विचारों का फोर्स कम होने लगा। तीन-चार महीना बहुत अच्छा लगा। घर में सभी ने शांति महसूस की। मैं कभी-कभी पापा के साथ सुबह मार्निंग वॉक में जाने लगी।

बिल्डिंग के अन्य कुछ लोग भी वाकिंग के लिए आते थे। पर हम सबसे दूर ही चलते थे। लोग मुझे देखते हैं, यह मुझे समझ में आता था। पर मैं किसी की ओर नहीं देखती थी।

एक दिन रौनक के फ्रेन्ड्स घर आए थे। रौनक के ग्रुप के सभी फ्रेन्ड्स मुझे पहचानते थे। पर मैं कभी किसी से बात नहीं करती थी। सभी रौनक के रूम में बैठकर गप्पे मार रहे थे। तभी बेल बजी। रौनक दरवाजा खोलने गया।

'तुमने संयुक्ता को देखा?' प्रणव ने धीमी आवाज में मिहिर से पूछा।

'नहीं, क्यों?'

'लास्ट टाइम मैं घर पर आया तब उसने विग पहनी थी और अब फिर से पहले की तरह ही रहती है।

'अच्छा?'

‘हाँ, तब तो अच्छी लग रही थी। पता नहीं फिर से क्यों ऐसी हो गई।?’

‘हं। टकली....’ कहकर प्रणव धीरे से हँसा।

मिहिर भी हँस दिया।

तब मैं रौनक के रूम के बाहर रखे हुए पौधों पर पानी डाल रही थी। इस बात से वे लोग अनजान थे। उनकी बातें सुनकर मेरा मन फिर से विचलित हो गया।

‘क्या किसी के पास मेरे बारे में बात करने के अलावा और कोई टॉपिक नहीं है? क्या यह एक चीज़ मेरी जिंदगी की इतनी महत्वपूर्ण बात बन गई है कि मेरे पूरे व्यक्तित्व और अस्तित्व में लोगों को इसके सिवाय और कुछ दिखाई ही नहीं देता? लोगों के पास मुझे पहचानने के लिए एक ही दृष्टि है?’ इस विचार ने मुझे फिर से अंदर से तोड़ दिया।

यदि यही सब चलते रहना है तो फिर दवाई लेकर ठीक होने की क्या ज़रूरत है?

यह सोचकर मैंने नियमित दवाई लेना कम कर दिया। मुझे स्वस्थ होने में भी कोई दिलचस्पी नहीं रही।

मैंने घर से बाहर निकलना बंद कर दिया। मेरी हिम्मत पूरी

तरह से टूट चुकी थी। अब मेरी हालत ऐसी हो गई थी कि किसी की कही हुई सामान्य बातें भी मुझे असहनीय लगती। मैं उन बातों को कई दिनों तक भूल नहीं पाती थी।

एक दिन मैं रूम में अपनी आलमारी खोलकर देख रही थी। आलमारी में यहाँ-वहाँ देखते हुए अचानक मेरी नज़र मेरी ड्राइंग बुक पर पड़ी। मैं उस बुक के पन्ने पलटने लगी। उसमें मेरे द्वारा बनाए गए पुराने स्केच थे। मैं पन्ने पलटने लगी। एक पन्ने पर मेरी नज़र रुक गई।

विग मिलने के बाद मेरी जिंदगी में खुशियों के जो दिन आए थे उस दौरान मैंने अपना एक स्केच बनाया था। कॉलेज के फ्रेन्ड्स के साथ खुले बाल वाले एक फोटो को देखकर मैंने यह स्केच बनाया था। अपने आप को लंबे बालों में देखने का सपना साकार हुआ था, तब के उत्साह का प्रतिक था यह स्केच।

पर खैर.....

काल्पनिक दुनिया में बनाया गया सपनों का यह महल, ताश के पत्तों से बनाए गए महल की तरह ही टूट गया।

एक बार फिर कॉलेज की वह पूरी घटना आँखों के सामने जीवंत हो गई। झंखना, मीतवा, फोटो खींचती हुई निराली, ग्रुप के

अन्य लड़के सभी एक-एक करके नज़र के सामने आने लगे। मात्र चार-पाँच सेकेंड में ही ऐसा लगने लगा मानो वह घटना अभी ही घटित हुई हो। कुछ लोगों के हँसने की आवाज कानों में कील की तरह चुभने लगी। विग ठीक कर रहे मेरे काँपते हुए हाथ आँखों के सामने आ गए। मैंने अपने हाथों के देखा। अभी भी वे उसी तरह काँप रहे थे। मैं जोर से रो पड़ी।

'संयुक्ता, क्या हुआ?' मम्मी दौड़कर रूम में आयी।

मैंने हाथ में पकड़ी हुई ड्राइंग बुक फेंक दी। मैं मम्मी के पैर पकड़कर रोने लगी।

'मम्मी मुझे यह सब भूल जाना है। प्लीज कुछ करो।' मैंने मम्मी के पैर पकड़कर कहा।

मम्मी मेरे पास नीचे बैठ गई।

उस समय हमारी पड़ोसी पारूल आंटी, मम्मी के पास कुछ काम से आई थी। वे मेरी हालत जानती थीं।

'मेरी एक बात मानोगी?' पारूल आंटी ने मम्मी से पूछा।

'क्या?'

'आपने अभी तक इतने प्रयत्न किए किंतु किसी से भी आपको संतोष नहीं मिला।'

मम्मी नज़रें झुकाए बैठी थी।

'एक बार मेरी बात मान लो। विश्वास करो आपको कोई नुकसान नहीं होगा। संयुक्ता के लिए एक अंतिम प्रयत्न करके देखो।'

'कौन सा प्रयत्न?'

'बस, एक बार मेरे साथ दादा के पास चलो। मेरी आपसे यही विनती है कि संयुक्ता को एक बार दादा के दर्शन के लिए ले चलते हैं।'

मम्मी कुछ पल चुप रहीं फिर मेरी ओर देखा और हाँ कह दिया।

'इस बार आपको निराश नहीं होना पड़ेगा।' पारूल आंटी ने मेरे सिर पर हाथ घुमाते हुए मम्मी से कहा।

'देखते है, भगवान करे कुछ अच्छा हो जाए।'

मैं चुप थी। 'हाँ' कहुँ या 'ना', ये सोचने की शक्ति भी मुझमें नहीं थी। मैं मौन हो गई।

अगले दिन सुबह पारूल आंटी फिर से आई। इस बार वे मम्मी के पास न जाकर सीधे मेरे पास आई।

'संयुक्ता।' वे धीरे से आकर मेरे पास बैठ गई।

'हाँ।' मैंने उनकी ओर देखा।

‘आज तुमसे एक रिक्वेस्ट करती हूँ।’ उन्होंने मेरे सामने हाथ जोड़कर कहा।

‘क्या।’

‘दादा के पास जाने के लिए ना मत कहना। तुम्हारे सभी प्रॉब्लम हमेशा के लिए सॉल्व हो जाएँगे।’

‘यह सँभव ही नहीं।’

‘यह पहली और अंतिम बार तुम्हारी पारूल आंटी तुम्हें फोर्स कर रही है। फिर कभी नहीं करूँगी। बस?’ उनकी आँखों में मेरे लिए प्रेम दिख रहा था।

मैंने सिर हिलाया। उन्होंने अत्यंत उल्लास के साथ मुझे गले लगा लिया। मम्मी यह सब देख रही थी।

‘कब जाना है?’ मम्मी ने पूछा।

‘मैं वही कहने तो आई हूँ। लो, खुशी के मारे बताना ही भूल गई। मैंने आप लोगों के लिए बात कर ली है। हम आज शाम को चार बजे दादा के पास जाएँगे।’

‘आपको यकीन है न कि संयुक्ता को कोई तकलीफ़ नहीं होगी?’ मम्मी को अभी भी किसी कोने में डर और शंका थी।

‘मुझ पर विश्वास रखो। एक बार जब आप दादा से मिलेंगे तभी आपको विश्वास हो जाएगा।’

‘अच्छा। हम शाम को तैयार रहेंगे।’

मिराज ध्यान से मेरी बातें सुन रहा था।

‘फिर?’ मिराज की उत्सुकता उसके चेहरे पर दिख रही थी।

(24)

'फिर क्या?' वह दिन मेरी लाइफ का सबसे बेस्ट डे था जब मुझे दादा के दर्शन हुए। पहली ही मुलाकात में वे मेरे दिल में परमात्म प्रेम जगा गए।

'परमात्म प्रेम? वह किस तरह?'

'बताती हूँ.... बताती हूँ....' शाम को चार बजे हम उनके घर पहुँचे। मैं रुक गई। पारूल आंटी ने अंदर आने के लिए कहा। एक तरफ अपार शंकाएँ थी और दूसरी तरफ पारूल आंटी के प्रति विश्वास। हमने घर में प्रवेश किया।

घर सामान्य लग रहा था। पूराने जमाने का हो ऐसा दिखाई दे रहा था। वातावरण में सादगी और सज्जनता महसूस हो रही थी। घर के हर कोने से पवित्रता बाहर झाँक रही थी। ऐसा लग रहा था मानो अपने अस्तित्व का ढिंढोरा पीट रही हो! घर में अद्भुत शांति छाई हुई थी। मंदिर जैसी ही नीरव शांति। मुझे ठंडक लग रही थी। फिर

भी मन शांत नहीं था।

तभी सफेद पंजाबी ड्रेस पहनी हुई एक बहन बाहर आई।

'जय सच्चिदानंद, पारूल बहन।'

'जय सच्चिदानंद, कानन बहन।'

'जय सच्चिदानंद।' उन्होंने मेरे और मम्मी की ओर हाथ जोड़ते हुए कहा। हमने भी हल्के से स्मित के साथ हाथ जोड़े।

'आइए बैठिए।' उन्होंने हमें पलंग पर बैठने के लिए कहा।

'दादा हैं न अंदर?' पारूल आंटी ने पूछा।

'हाँ, हैं। आपसे पहले जो आए थे न उनसे बात कर रहे हैं। पाँच मिनट लगेंगे।'

'कोई बात नहीं।'

पलंग पर बैठते ही मानो जन्मोंजन्म के भटकाव के बाद विश्राम करने बैठे हों, ऐसी ठंडक महसूस हुई। मन को तृप्ति मिली। रूम में कोई खास फर्नीचर नहीं था। घर की दीवालों का रंग हल्का था और पुराने जमाने का दरवाजा था। हर ओर स्वच्छता और खुलापन था। कहीं भी ज़रूरत से ज्यादा कोई सामान नहीं पड़ा था। कहीं भी ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जो आँखों को आकर्षित कर सके फिर भी

मन आकर्षित हो रहा था। ऐसा अनुभव हुआ जैसे किसी संत के घर पर आ गए हों।

‘इतनी अधिक ठंडक! बाहर से उमस को यहाँ आने की मनाही हो, ऐसा इस ठंडक का प्रभाव है!’ मैं, कुछ भी सोच पाने की स्थिति में नहीं थी, फिर भी इस बात का अनुभव कर पा रही थी।

इतने में रूम में से एक भाई और एक बहन बाहर निकले। उनके चेहरे पर खुशी थी, कानन बहन से ‘जय सच्चिदानंद’ कहकर वे चले गए।

‘अंदर आइए।’ कानन बहन ने पारूल आंटी से कहा।

‘हाँ।’ पारूल आंटी तुरंत खड़ी हुई और मुझे और मम्मी को भी अंदर आने के लिए कहा।

हमने भी बिना किसी आहट के धीमें कदमों से उनके पीछे-पीछे रूम में प्रवेश किया। मन में कई तरह की भावनाएँ थी। थोड़ी कौतूहलता और कुछ शंकाओं से मन घिरा हुआ था।

दादा का रूम एकदम सादगीभरा था, फिर भी मनमोहक लग रहा था। वहाँ की अपार शांति इसकी वजह थी। दादा सामने ही बैठे थे। कानन बहन, दादा के पास नीचे बैठ गए।

पारूल आंटी ने सीधे जाकर उनके पैर छूए।

‘जय सच्चिदानंद।’ पारूल आंटी ने नतमस्तक होकर कहा।

‘जय सच्चिदानंद।’ दादा ने भी उन्हें प्रत्युत्तर में कहा।

मैं मम्मी के साथ पीछे खड़ी थी। दादा ने हमारी तरफ देखा। पहली बार उनके साथ दृष्टि मिली। कितने ही जन्मों की पहचान हो ऐसी आत्मियता उनकी दृष्टि में थी। वह दृष्टि आज भी मेरी आँखों में पूर्णत: समाई हुई है।

उन्होंने मेरी तरफ देखा। मेरी नजह तो उनके चेहरे के स्मित, आँखों की पवित्रता और निर्मल चमक पर ही टिक गई थी। दादा के प्रति मन में जितनी भी शंकाएँ थी उन सभी का समाधान होने लगा। उनके मुख पर का तेज और सौम्यता, दोनों का प्रभाव मेरे दिल पर छा गया। हृदय में मानों बरफ सी ठंडक हो गई। उग्र मन बिल्कुल शांत हो गया। ये सारे अनुभव मात्र एक-दो पल में ही हो गए।

‘बैठ जाओ सभी।’ दादा की आवाज में बहुत ही मृदुता थी।

हम पीछे जहाँ खड़े थे वहीं मम्मी बैठ गई। मैं भी मम्मी के पास बैठ गई। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मेरे अंदर क्या हो रहा है, ऐसा लगा मानो समय ठहर सा गया है।

‘आगे जाकर बैठिए, दादा के पास।’ कानन बहन ने कहा।

‘नहीं, चलेगा। यहाँ ठीक है।’ मम्मी ने कहा।

यह पिछले आघातों का असर था।

‘दादा, यह संयुक्ता है और ये उसकी मम्मी रश्मि बहन।’ पारूल आंटी ने हमारा परिचय करवाया।

‘पहली बार आए हैं?’

‘हाँ, दादा।’

‘क्या पढ़ाई करती है?’ दादा ने मेरी ओर देखते हुए पूछा।

‘वैसे तो कॉलेज में है लेकिन.... दादा, आपका आशीर्वाद लेने ही आए हैं। आजकल संयुक्ता थोड़ी डिस्टर्ब रहती है।’

‘कोई बात नहीं। दुनिया में सभी डिस्टर्ब ही हैं न।’ दादा ने हँसते हुए कहा।

‘ऐसा नहीं दादा। इसे कुछ प्रॉब्लम है।’ पारूल आंटी ने सबकुछ साफ-साफ बताने की कोशिश की।

‘ऐसा? उन सब का धीरे-धीरे हल आएगा। बादल हमेशा नहीं घिरे रहते हैं। सुर्य के प्रकाशित होने पर सबकुछ क्लियर हो जाएगा।

‘हाँ, दादा।’ पारूल आंटी शांत हो गई, शायद दादा का आशय उन्हें समझ में आ गया था।

रूम में शांति छा गई। दादा का जवाब सुनकर पारूल आंटी

शांत बैठे हुए दादा की तरफ देखती रहीं। मैंने धीरे से पारूल आंटी की ओर देखा। उनकी नजरें दादा पर स्थिर थी और मन भक्तिभाव से ओतप्रोत था।

'आपको कुछ पूछना हो तो पूछ लेना।' दादा ने मम्मी से कहा।

'हाँ।' मम्मी सिर्फ इतना ही बोल सकी।

मेरी नज़र सब पर घूमते-घूमते फिर से दादा पर स्थिर हो गई। जाने क्यों लेकिन उनकी ओर देखते ही मेरा दिल भर आया। आँखें डबडबाने लगी। रोना तो मेरे लिए बिल्कुल सामान्य था लेकिन आज आँखें भीगने की वजह दादा थे। उनसे मिलकर मुझे अपनेपन का एहसास हुआ इसलिए मेरे दिल ने उन्हें तुरंत स्वीकार कर लिया।

क्या यह सब सत्य है? मैं कोई सपना तो नहीं देख रही हूँ न? मुझे ऐसा क्यों हो रहा है? मैंने अपने आँसुओं को कंट्रोल करने की कोशिश की।

'तुम अपनी सारी परेशानियाँ यहाँ खाली कर दो।' पारूल आंटी ने मम्मी से कहा।

तभी कानन बहन अंदर आए। दादा के पास जाकर उन्होंने धीरे से कहा, 'दादा पूना से तन्मय का फोन है। बहुत खुश लग रहा है। वह आपसे अभी बात करना चाहता है।'

‘ऐसा?’ फोन दीजिए।’

हमारे साथ बात अधूरी छोड़कर दादा ने तन्मय का फोन रिसीव किया वह मुझे पसंद नहीं आया। मैंने मम्मी की ओर देखा। उन्हें भी थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। मेरी नज़र पारूल आंटी की तरफ गई। वे तो पहले की तरह भक्तिभाव में बैठे हुए थे।

कानन बहन ने फोन स्पीकर पर रखा और वहीं पकड़कर खड़े रहे।

‘जय सच्चिदानंद तन्मय।’

दादा की आवाज सुनते ही तन्मय की आवाज कमजोर पड़ गई।

‘जय सच्चिदानंद दादा। सोली, मैंने ही आपके साथ अभी बात कलने की ज़िद की। लेकिन दादा आज मैं बहुत खुश हूँ इसलिए मैं आपसे अभी बात कलना चाहता था। आपने छच्छमुछ मेले पल खूब उपकाल किया है। मैंने कभी भी सोचा नहीं था कि मैं फिल से नॉल्मली जीवन जी सकूँगा। मैं भी औलों की तलह खुश लह सकता हूँ। लाइफ एन्जाय कल सकता हूँ। मुझे तो लगता था कि मेली पूली जिंदगी एक अंधेली लूम में ही जाएगी। पल आपने मेली जिंदगी में ऐसा उजाला किया जो मैंने कभी भी देखा ही नहीं था।’

‘ये तन्मय कौन हो सकता है? उसकी प्रॉब्लम तो समझ में आ

रही थी कि उसकी स्पीच स्पष्ट नहीं है। दादा ने ऐसा क्या किया होगा कि वह दादा का इतना अधिक उपकार मान रहा है?' ऐसे कई प्रकार के सवालों ने मेरे मन को घेर लिया। मैंने मम्मी की ओर देखा। मम्मी भी कौतुहलवश दादा की ओर देख रही थी। मेरी नजरें मम्मी पर से हटकर पारूल आंटी पर पड़ी। उन्हें देखकर ऐसा लगा कि यह सब होना उनके लिए कोई नई बात नहीं थी। वे उसी भक्तिभाव के साथ दादा की ओर देख रही थी। उनके चेहरे पर हल्की स्माइल थी। मेरे कान फिर से तन्मय की बात सुनने के लिए खड़े हो गए।

'दादा, आपने मेला हाथ पकलकल फिल से मुझे उजाले में चलना सीखाया। जब जीवन में जीने के लिए कोई वजह नहीं थी तब, आप एक बड़ी वजह बनकल मेले जीवन में आए। औल ऐसा आधाल दिया। जिसके कालन मैं आज मेले पैल पल खड़ा हूँ। लोगों के साथ नजले मिला सकता हूँ। आलाम से लोगों के सवालों के जवाब दे सकता हूँ। बोलते-बोलते तुतलाने लगूँ तो सभी के साथ मैं भी अब हँस सकता हूँ।'

तन्मय बिना रूके एक साँस में बोलते ही जा रहा था। उसकी आवाज में अत्यधिक उत्साह था जबकि दादा खूब स्थिरतापूर्वक उसकी बातें सुन रहे थे। न तो उसे बीच में रोका था और न ही कुछ बोले।

कानन बहन भी ज़रा भी बेचैन हुए बगैर फोन पकड़कर खड़े थे। उनके चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं था कि 'यह अब फोन रखे तो अच्छा।'

'दादा, पहले वाला तन्मय जिसने बाहल जाना बंद ही कल दिया था। लोगों के साथ घूलने-मिलने में जिसे संकोच होता था। वही तन्मय अब बाहल जाता है। लोगों से मिलता-जुलता है। कॉलेज के नए प्लोजेक्ट में भाग लेता है। दादा आपकी खूब क्लीपा है मुझ पल। दवाई जो काम नहीं कल सकी, वह काम आपके पलेम ने किया है। जब मैं आपसे पहली बाल मिलने आया था तब आप ही एक ऐसे थे जिसने मुझे नालमल देखा था। आपने कभी भी मुझमें कोई कमी है इस दिल्सटी से देखा ही नहीं। आपकी वह दिल्सटी ने मुझे बहुत शक्ति दी है। दादा इसी तलह मुझ पल क्लिपा बलसाते लहना।

अब दादा बोले, 'हमारी कृपा तुम्हारे साथ ही है। हमारे कहे अनुसार करते रहना सब ठीक हो जाएगा। हम तुम्हारे साथ ही हैं।'

'वह तो मैं अनुभव कलता ही हूँ दादा।'

'हाँ, चलो विधि कर लेते हैं। कहकर दादा ने आँखे बंद कर ली और मन में कुछ बोलने लगे। मैं उन्हें देखती ही रही। उनके मुख पर अलौकिक तेज था। तन्मय को तब कैसा अनुभव हो रहा होगा, वह

तो मुझे पता नहीं लेकिन मुझे अद्‌भुत शांति का अनुभव हो रहा था।

‘जय सच्चिदानंद।’ दादा ने विधि पूरी करते हुए कहा।

‘जय सच्चिदानंद, दादा।’ कहकर तन्मय ने फोन काट दिया।

फोन रखते हुए दादा, कानन बहन की तरफ देखकर यूँ मुस्कराए मानों मौन रहकर भी कुछ बात कह रहे हों। कानन बहन ने फोन बंद किया और एक साइड रखकर नीचे बैठ गए।

‘देखा? किसकी लाइफ में प्रॉब्लम नहीं है लेकिन सच्ची समझ से सभी दु:ख दूर किए जा सकते हैं। अभी इतना खुश दिखने वाला तन्मय जब मेरे पास आया था तब डिप्रेशन में था।’

‘डिप्रेशन....!’ मम्मी बोल पड़ी। लेकिन मेरी ओर देखकर वे तुरंत चुप हो गई।

दादा ने मेरी ओर देखा और कहा, ‘ये तन्मय तुम्हारे ही उम्र का है। बचपन से ही तोतलाता था। बहुत इलाज करवाया लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। वह जहाँ भी जाता सभी उसकी हँसी उड़ाते। धीरे-धीरे उसने अपना आत्मविश्वास खो दिया।

‘मुझ पर भी सब हँसते हैं।’ पता नहीं कैसे, मेरे मुँह से यह बात निकल गई।

‘लोगों के पास निर्दोष आनंद का कोई रास्ता नहीं। इसलिए ऐसा

करके उन्हें खुशी मिलती है। लेकिन उन्हें पता नहीं है कि इसमें वे कितना जोख़िम मोल ले रहे हैं। हमारे पास ऐसी समझ होनी चाहिए कि हम ऐसे हँसी मज़ाक को सहन कर सकें और अनजाने में ही गुनाह कर रहे इन बेचारे लोगों को माफ कर सकें।' दादा के इन शब्दों ने मुझे पल भर के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया।

'लोग.... बेचारे?... और उन्हें माफ कर देना चाहिए?' दादा के शब्दों को पचाना मुझे कठिन लगा लेकिन उनकी वाणी में जो करूणा थी वह मुझे छू गई।

'दादा, संयुक्ता को भी तन्मय जैसा ही होता है।' आखिरकार पारूल आंटी ने इशारे में दादा को बताया।

'अच्छा? तो गौरव भाई के साथ थोड़ी बात करो न। उन्होंने इसी की पढ़ाई की है। अच्छी तरह समझाएँगे और इसे भी ठीक हो जाएगा। हम प्रार्थना करेंगे।'

दादा ने कानन बहन की ओर देखा। कानन बहन तुरंत खड़े हो गए। वे हमारे खड़े होने की राह देख रहे थे।

पारूल आंटी ने अत्यंत विनम्रता से दादा को प्रणाम किया और खड़े हुए। उन्होंने मुझे और मम्मी से बाहर आने के लिए कहा। मैं और मम्मी भी उठे। दादा को प्रणाम किया और बाहर आ गए।

‘बैठो।’ हमें पलंग पर बैठने के लिए कहकर कानन बहन गौरव भाई को बुलाने चले गए।

हम तीनों ठीक तरह से बैठ गए।

‘जय सच्चिदानंद।’ गौरव भाई ने मुस्कराकर हाथ जोड़ते हुए कहा। उनके चेहरे पर भी एक अलग ही तेज दिखाई दे रहा था। छोटी उम्र में भी उनके चेहरे पर सरलता के साथ स्थिरता और व्यवहार में विनय झलक रहा था।

‘ये गौरव भाई हैं। वे भी कानन बहन की तरह ही दादा को समर्पित हो चुके हैं। आप इनके साथ निःसंकोच बात कर सकते हैं।’ पारूल आंटी ने मम्मी से कहा।

कुछ औपचारिक बातें हुई। फिर पारूल आंटी मम्मी से बोली, ‘आप अपनी बेटी के बारे में गौरव भाई को विस्तार से बताइए।’

मैंने मम्मी की तरफ देखा। वे चाहकर भी बोल नहीं पायी। सिर हिलाते हुए मेरी ओर देखा फिर पारूल आंटी की ओर देखा।

पारूल आंटी मम्मी का इशारा समझ गई और मेरा हाथ पकड़कर मुझसे कहा, ‘चलो संयुक्ता तुम्हें दादा का घर दिखाती हूँ।’ ऐसा कहकर मुझे वहाँ से ले गई।

हमारे जाने के बाद मम्मी ने उन्हें मेरे बारे में विस्तारपूर्वक सभी

बातें बताई। उनकी आँखें भर आई, 'मेरी बेटी डिप्रेशन में है। मुझे डर है कि कहीं वो पागल तो नहीं हो गई न!'

'नहीं, नहीं। अधिकतर लोग ऐसा ही मानते हैं कि डिप्रेशन मानसिक रोग है। और मानसिक रोग यानी पागल ऐसी मान्यता लोगों में घर कर गई है। लेकिन वास्तव में यह भी शारीरिक मस्तिष्क की एक बीमारी ही है। डिप्रेशन पागलपन नहीं है लेकिन दिमाग में कुछ केमिकल चेंजेस के कारण इंसान को नेगेटिव विचार ज्यादा आते हैं। यह समझ नहीं पाने के कारण हम उन्हें पागल मान लेते हैं और अंत में हमारे ही वाइब्रेशन उन्हें पागल बनाते हैं। इसलिए ऐसा मानने की गलती मत करना और उसे खूब प्रेम देना।' गौरव भाई की आवाज में खूब आत्मियता झलक रही थी।

'तो क्या उसका दिमाग कमजोर हो चुका है?'

'नहीं। डिप्रेशन यानी मानसिक कमजोरी यह बात गलत है। पहले आप इस झूठे भ्रम में से बाहर निकलकर स्वस्थ हो जाओ। तभी इसमें से बाहर निकलने में आप उसकी मदद कर सकोगे।'

'वह किस तरह गौरवभाई?'

'आप कौन से धर्म का पालन करते हो?'

'वैष्णव।'

‘फिर तो आप जानते ही होंगे कि महाभारत युद्ध में, अर्जुन रणभूमि में अपने ही चाचा, दादा, भाई-बंधुओं को देखकर एकदम टूट गया था। वह एक प्रकार का डिप्रेशन ही था। तब श्रीकृष्ण ने उसे उपदेश दिया था और उसे ठीक किया। आज की भाषा में वह एक प्रकार की साइकोथेरेपी ही थी। इन सब का वर्णन भगवत गीता में ‘विषादयोग’ और ‘कर्मयोग’ में किया गया है।’

मम्मी ने सिर हिलाया।

‘तो क्या वह अर्जुन के दिमाग की कमजोरी थी?’

मम्मी सोचने लगी।

‘नहीं, कुछ बातों का दिमाग पर ऐसा असर हो जाता है कि जिससे दिमाग में केमिकल चेंजेस हो जाते हैं और नेगेटिव विचार शुरू हो जाते हैं। फिर उस व्यक्ति को आगे कुछ सूझता नहीं। वह हताश होता जाता है और फिर नेगेटिविटी में पड़ जाता है। इसे मेडिकल टर्म में डिप्रेशन कहते हैं।

‘ओह।’

‘इतिहास इस बात का साक्षी है कि कितने ही महान पुरुषों को उनके जीवन में डिप्रेशन का सामना करना पड़ा था। अतः डिप्रेशन शर्मनाक स्थिति है यह मान्यता ही गलत है। पहले तो आप इसमें से बाहर निकलिए तभी आप अपनी बेटी को सही समय पर योग्य

आधार दे सकेंगीं।'

मम्मी ने अपने आँसू पोंछे और सहज हुई।

'अभी उसे शारीरिक एवं मानसिक, इन दोनों आधार की सतत आवश्यकता है। खासकर प्रेम और सपोर्ट। आप अपनी आँखें, शब्द, व्यवहार और हास्य के द्वारा इसे व्यक्त करें। उसे प्रेमभाव का अनुभव होने दें। क्या आप जानती हैं कि प्रेम के आदान-प्रदान से दोनों पक्षों की हिलींग होती है? रिसर्च में भी यह साबित हुआ है।'

मम्मी शांति से सुन रही थी।

'दूसरा, उसके साथ खुलकर बातें करें। उसकी बातें सुनें। ऐसा करने से उसके अंदर दबी हुई भावनाओं को बाहर निकलने का रास्ता मिलेगा और उसे राहत महसूस होगी। यदि उसकी भावनाएँ बाहर नहीं आई तो उसे ऐसा महसूस होगा कि मैं बिल्कुल अकेली पड़ चुकी हूँ। इसलिए उसे बाहर निकलने दो। उसे समझो और स्वीकार करो।'

'और खास बात, ऐसे समय में उसे सलाह की नहीं लेकिन प्रशंसा की ज़रूरत है। इसलिए उसके पॉज़िटिव गुणों की प्रशंसा करो। उसमें कुछ तो अच्छी बात होगी न?'

'वह ड्राइंग बहुत अच्छा करती है। खाना भी बहुत अच्छा बनाती है।'

'तो उसकी इन क्वालिटी की तारीफ़ करें और धीरे-धीरे उसे

इनमें व्यस्त रहने के लिए प्रेरित करें।'

'इससे वह ठीक हो जाएगी?'

'निश्चित ही।'

तब तक मैं वहाँ पहुँच गई। मेरे पीछे आंटी भी आ गई।

'मम्मी, घर चलिए न।' मैंने धीरे से कहा।

'हाँ, चलते हैं बेटा।' इस बार मम्मी के चेहरे पर से टेंशन जैसे गायब हो चुका था। प्रेम भरे हास्य के साथ उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फिराया।

गौरव भाई ने फिर से उतने ही विनय के साथ हाथ जोड़कर हमसे जय सच्चिदानंद कहा।

गौरव भाई ने कहा, 'एक बार दादा से मिल लेते हैं।'

हम फिर से अंदर गए। 'सारी बातें हो गई?' दादा ने गौरव भाई से पूछा।

गौरव भाई ने हाँ कहा।

'तुम्हें सभी बातें पसंद आई? समाधान हुआ?' दादा ने मम्मी से पूछा।

'हाँ। बहुत हल्कापन लग रहा है।'

‘तुम्हें यहाँ अच्छा लगा?’ दादा ने मुझसे पूछा।

मैंने मौन हामी भरी।

‘तुम्हें कोई बात करनी है?’

मैं सोचने लगी। जीवन के अनसुलझे प्रश्न तो बहुत थे लेकिन पूछने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

‘कोई बात नहीं जब तुम्हारा मन करे तब पूछ लेना। मेरी बात मानोगी?’ दादा इतनी आत्मियता से मुझसे बातें कर रहे थे मानो मुझे बहुत करीब से पहचानते हों।

‘क्या?’

‘हम कुछ दिन यहीं हैं। आते रहना। तुम्हें अच्छा लगेगा।’

मैंने आँखों से ही स्वीकृति दे दी।

पारूल आंटी ने दादा के पैर छूए और उनके पीछे मैंने और मम्मी ने भी। दादा ने हमें प्रसाद दिया।

‘कल आएँगे।’ पारूल आंटी ने कहा। और फिर हम तीनों रूम से बाहर निकल गए। कानन बहन हमारे पीछे दरवाजे तक आई। हँसते चेहरे से उन्होंने हमें विदा किया।

रास्ते में पारूल आंटी ने मम्मी से पूछा, ‘कैसा लगा?’

मम्मी ने शांति से कहा, 'अच्छा लगा। दादा संत पुरुष जैसे ही लगे। ज्यादा बात नहीं हुई फिर भी अंदर सबकुछ शांत हो चुका है। कानन बहन और गौरव भाई भी कितने अपने लगे। दोनों बहुत सालों से दादा के साथ रहते हैं?'

'हाँ, कई वर्षों से दादा की सेवा में हैं।' पारूल आंटी ने कहा। मैं चुपचाप सुन रही थी।

'गौरव भाई काफी कुछ जानते हैं। अच्छा नॉलेज है। उनके साथ बातें करने से नई दिशा मिली। कितने ही वर्षों का बोझ उतर गया। उनके साथ बात करके ऐसा लगा कि यदि गौरव भाई ऐसे हैं तो दादा कैसे होंगे?'

'दादा की तो बात ही निराली है! वे तो आश्चर्य की प्रतिमा हैं! उनके बारे में जितना भी कहा जाए शब्द कम पड़ जाते हैं! धीरे-धीरे आप खुद ही अनुभव करना। हम कल भी जाएँगे न?'

मैंने देखा कि मम्मी ने कोई आनाकानी नहीं की।

'ऐसी क्या बातें की होंगी मम्मी ने गौरव भाई के साथ?' मैं भी आश्चर्यचकित थी। कितने वर्षों के बाद मैंने मम्मी को रिलेक्स्ड देखा।

'दादा आश्चर्य की प्रतिमा? अर्थात् क्या? ऐसा क्या होगा दादा में?' एक तरफ मन में अनगिनत प्रश्न उठ रहे थे तो दूसरी तरफ समाधान भी था क्योंकि दादा से मिलकर मेरा मन भी शांत हो चुका

था कितने ही जन्मों से मेरे भीतर जो जलन थी वह आज बुझ गई थी।

'संयुक्ता, बेटा तुम्हें अच्छा लगा?' आंटी ने मेरी ओर देखते हुए पूछा।

'हाँ।' मैं इतना ही बोल पाई।

मै भी लम्बे समय के बाद ऐसी जगह पर गई थी जहाँ मुझे देखकर किसी को हँसी या दया आई हो ऐसा कोई एब्नॉर्मल एक्सप्रेशन दिखाई नहीं दिया। और इसी बात से मुझे बहुत शांति मिली थी।

'यह बात सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। हम कल फिर से जाएँगे। तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी।'

घर लौटते वक्त रास्ते में मुझे बार-बार दादा का चेहरा याद आ रहा था। दादा को वैसे तो हम खास जानते नहीं थे। फिर भी मानो उन्होंने हमारे मन पर एक विशिष्ट छाप अंकित कर दी थी। दादा सबसे अलग ही हैं।' ऐसा सतत हो रहा था।

और मम्मी....

मम्मी को तो फूलों जैसा हल्कापन महसूस हो रहा था। वर्षों बाद उनके चेहरे पर किसी प्रकार का बोझ नहीं था।

हमारी बातचीत हो रही थी तब तक घर आ गया। हम अपने-अपने घर की ओर मुड़ गए। जाते-जाते पारूल आंटी ने पलककर हँसते हुए मेरी ओर देखा।

(25)

शाम हो गई थी। मुझे थोड़ी पोज़िटिव फीलिंग हो रही थी। पापा घर आ गए लेकिन मम्मी ने उनसे दादा के संबंध में कोई बात नहीं की। पर दादी और रौनक ने चर्चा की।

मेरे चित्त में दादा की रमणता चल रही थी। उनका वह दिव्य चेहरा और उनकी आँखों में से झरती हुई शीतलता, वह अलौकिकता मुझे स्पर्श कर रही थी।

उस रात मैं जैसे-तैसे करवटे बदलते हुए सोने का प्रयत्न कर रही थी। कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला....

'संयुक्ता, क्या सोच रही हो?'

'दादा, मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है? मैंने क्या गुनाह किया है?'

'पूरा जगत पाप-पुण्य के कर्मो का हिसाब चुका रहा है।'

‘पर मैंने तो ऐसा कोई पाप नहीं किया है।’

‘इस जन्म में नहीं तो पिछले जन्म में किया होगा। बीज के बिना तो फल आते ही नहीं न!’

‘मुझे कुछ नहीं समझना है। मुझे नॉर्मल दिखना है। मेरे बालों को लेकर मुझे जो दु:ख है वह आप दूर कर सकते हैं?’

‘हाँ।’

थोड़ी देर तक सब कुछ शून्य हो गया। फिर मैंने अपने आप को आईने के सामने खड़े देखा। मुझमें बाहर से कोई फर्क नहीं था। मैं अंदर से बदल गई थी। मैं खुश थी। मुझे अपने आप से कोई शिकायत नहीं थी। मैं स्वस्थ थी, स्ट्रांग थी।

‘बस दादा, अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे अपने सच्चे स्वरूप की पहचान हो गई है। इसी तरह अपनी कृपा मुझ पर बनाए रखना।’

‘हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ ही है।’ दादा ने मेरे सिर पर हाथ रखा और अदृश्य हो गए।

मैं हड़बड़ाकर जाग गई। पर इस बार जाग जाने पर भी कोई चीखना-चिल्लाना नहीं हुआ। हृदय की धड़कने रिधम में चल रही थी। बगल में ही सोई हुई मम्मी को पता ही नहीं चला कि मैं जाग

गई हूँ। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। घड़ी में देखा तो सुबह के चार बजे थे। मैं फ्रेशनेश फील कर रही थी।

'दादा मेरे सपने में आए थे? यकिन नहीं हो रहा था। मात्र एक बार की ही मुलाकात के बाद मुझे सपने में आकर आशिर्वाद दे गए। उनके हाथ का स्पर्श अभी भी मैं अपने सिर पर फील करती हूँ। क्या वे कोई दैवी पुरुष हैं अथवा कोई दिव्य पुरुष!' मैं आगे कुछ भी सोच नहीं पा रही थी।

'दादा का मूल्यांकन करने में मैं गलत साबित हो जाऊँ उससे पहले मुझे दादा से एक बार फिर मिलना है।'

'मम्मी.... मम्मी.... आज हम दादा से मिलने चलें?' बगल में सोती हुई मम्मी को मैंने हिलाकर जगाने का प्रयास किया।

'संयुक्ता... सो जाओ। अभी सुबह नहीं हुई है।' पहले भी कई बार डिप्रेस होकर मैं इसी तरह मम्मी को उठा देती थी। इसलिए मेरी बात समझे बिना ही उन्होंने जवाब दिया।

'मम्मी.... मैं दादा की बात कर रही हूँ।'

'दादा!'

'हाँ, सुनो न। मुझे दादा से मिलना है।'

‘ठीक है। मैं पारूल आंटी से बात करूँगी। अभी तो सो जाओ।’

मम्मी को नींद में मेरी तड़प का एहसास न होना स्वाभाविक ही था। सपने के बारे में सोचते हुए मैं तकिए पर सिर रखकर लेटी रही। नींद तो कब की उड़ चुकी थी। शायद कुछ अच्छा संकेत मिला हो, इस खुशी में मैं दादा से मिलने के प्रसंग को याद करती हुई पलंग पर लेटी रही।

सुबह से मेरे मन में दादा ही दादा थे। उसी समय पारूल आंटी घर आई।

‘संयुक्ता, खुश हो न?’ पारूल आंटी ने हँसते-हँसते पूछा।

‘हाँ, मैं आपको ही याद कर रही थी।’

‘ऐसा? क्या बात है?’

‘दादा.....’ मैंने हिचकिचाते हुए कहा।

‘हाँ बोलो। दादा का क्या?’ उन्होंने प्रेम से पूछा।

‘दादा आज मेरे सपने में आए थे।’ ऐसा कहकर मैंने उन्हें पूरा सपना सुनाया।

‘क्या बात कर रही हो?’ आंटी की आँखे फैल गई। ‘अभी तो

नहीं के बराबर ही मिलना हुआ है और दादा सपने में आ गए? यह तो दादा की तुम पर कृपा हुई।'

'सुना रश्मि बहन?' मम्मी तुरंत दौड़ती हुई आयी।

'अपनी बिटिया को दादा के आशीर्वाद मिल गए। अब संयुक्ता निश्चित ही ठीक हो जाएगी, मुझे विश्वास है।' कहकर आंटी ने मुझे गले से लगा लिया।

मेरी नज़र मम्मी पर पड़ी। वे खुशी से गदगद होकर मुझे देख रही थी। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा।

'आंटी, मुझे दादा से पर्सनली मिलना है।' मैंने कहा।

'हाँ, हाँ, क्यों नहीं। आज हमें जाना है न?'

'मम्मी, आप भी चलोगी न?'

'हाँ।' मेरे, दादा से मिलने के उतावलेपन को देखकर उनकी आँखों में खुशी झलकने लगी।

बहुत दिनों के बाद मेरे चेहरे पर खुशी दिख रही थी।

बस, इस तरह मेरा दादा से मिलना निश्चित हुआ। मुझे दादा तक ले जाने में पारूल आंटी की मुख्य भूमिका रही।

‘हम तीनों दादा के पास गए। मम्मी और आंटी दादा के दर्शन करके बाहर कानन बहन के साथ बैठ गए और मैं दादा के साथ।’

दादा का वही फ्रेश चेहरा, वैसी ही स्नेह मुस्कान और आँखों में वैसा ही तेज।

‘संयुक्ता नाम है न तुम्हारा?’ दादा ने बात शुरू की।

‘हाँ।’

मुझे दादा को सपने की बात बतानी थी। पर एकदम से कहुँ या नहीं यह सोचने लगी।

‘जहाँ विश्वास हो वहाँ मन की बात कह देनी चाहिए।’ दादा ने कहा।

‘दादा, आपसे मिलने के बाद मुझे बहुत शांति लग रही है। मैं नहीं जानती थी कि आपसे फिर से मिलने की मुझे इतनी तीव्र इच्छा होगी।’

‘वह तो अपना हृदय कबूल करे तभी ऐसा होता है।’

‘आपके कहे अनुसार मैं कर रही हूँ। मुझे अच्छा लग रहा है।’

‘ऐसा? बहुत अच्छा।’

‘दादा, आज आप मेरे सपने में आए थे।’

‘ऐसा? तब तो तुम्हें दादा के आशीर्वाद मिल गए। क्या सपना आया था?’

मैंने सविस्तार पूरा सपना कह सुनाया। दादा सपने की बात सुनकर भी पहले की तरह ही स्थिर थे। किसी प्रकार की उत्सुक्ता नहीं दिख रही थी। उनकी ये सारी विशेषताएँ ही मुझे प्रभावित कर रही थी।

‘तो तुम्हे अच्छा दिखना है, इस बात का दुःख है?’

‘हाँ, दादा। इसी बात के लिए मैं पूरी जिंदगी परेशान रही हूँ। सभी ने मेरा तिरस्कार किया है, कई लोगों ने मेरा मजाक उड़ाया है। पर इसमें मेरी क्या गलती है? यह कोई मेरे हाथ की बात है क्या?’

‘सही बात है। वह तुम्हारे हाथ में नहीं है। तो जो तुम्हारे हाथ में नहीं है उसके लिए दुखी होने के बदले जो तुम्हारे हाथ में है उस पर ध्यान देना चाहिए।’

‘मेरे हाथ में क्या है, दादा?’

‘इनर ब्यूटी!’

‘इनर ब्यूटी?’ मैं समझने का प्रयत्न कर रही थी।

‘हाँ, यह शारीरिक दिखावा, उसकी सुंदरता, ये आउटर है। सुडोल काया, सुंदर चेहरा, अच्छे अंग-उपांग, बाल, नाखून ये सभी आउटर ब्यूटी हैं।’

‘और इनर ब्यूटी?’ मैंने पूछा।

‘स्वभाव इनर ब्यूटी कहलाता है।’

मैंने कोई रिस्पांस नहीं दिया।

‘कितने भी सुंदर हों, पर यदि स्वभाव अच्छा न हो तो लोग उन्हें पसंद करेंगे?’

मैंने धीरे से नकारात्मक सिर हिलाया।

‘पर हार्टिली हो, सेवाभावी हो, किसी को दुःख न देता हो ऐसा व्यक्ति दिखने में अच्छा न हो तो भी लोग उसे पसंद करेंगे या नहीं?’

मैं सोचने लगी।

‘अपंग हो पर हँसमुख हो, हमेशा खुश रहती हो और साथ वालों को हमेशा खुश ही रखती हो तो लोग उसे पसंद करेंगे या नहीं, तुम्हें क्या लगता है?’

‘हाँ, मैंने धीमे स्वर में कहा, ‘फिर भी दादा, लोग बाहरी सुंदरता

को भी महत्व देते हैं।'

'वह तो शुरू में देखते हैं। बाद में स्वभाव ही देखते हैं क्योंकि देखने में बहुत सुंदर हो पर घमंडी हो, हमें नीचा दिखाती हो, बात-बात में हमारी इन्सल्ट करती हो तो उसके साथ हमारी फ्रेन्डशिप कितने दिन चल सकती है?'

मैं निरूत्तर थी।

'ऐसा ही हो जाएगा न कि तुम्हारी सुंदरता तुम्हें मुबारक। मैं तो चली। ऐसा ही होगा न?'

'हाँ, होगा।'

'इसलिए बाल नहीं है इस बात का दुःख बिल्कुल नहीं होना चाहिए।'

'पर दादा, लोगों का मजाक मुझसे सहन नहीं होता। मुझे बहुत दुःख होता है।'

'जब तक तुम्हें लोगों के मज़ाक से दुःख होता है तब तक उन्हें तुम्हारी हँसी उड़ाने में मज़ा आएगा। और तुम दुःखी होगी ही। तुम बेअसर हो जाओ। तो उन लोगों को तुम्हारी हँसी उड़ाने में मज़ा नहीं आएगा और धीरे-धीरे वे मज़ाक करना बंद कर देंगे।'

‘किस प्रकार बेअसर हो जाऊँ?’

‘सच्ची समझ द्वारा। जिसका कोई उपचार नहीं, उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए, उसका दु:ख नहीं लगाना चाहिए। वास्तव में वह दु:ख है ही नहीं! इसलिए उसे खुशी-खुशी स्वीकार कर लेना चाहिए।

‘कैसे स्वीकार करूँ?’ लोग मुझे स्वीकार नहीं करते, मैं किसी के साथ मिक्स नहीं हो पाती।’ मेरी आवाज में थोड़ा दु:ख था।

‘लोग हमें नहीं स्वीकार करते इसमें हमें क्यों दु:खी होना चाहिए?’

‘तो कहाँ जाऊँ? किस प्रकार इन सबका सामना करूँ?’

‘धैर्य और समझदारी से।’

‘समझ-समझकर मैं थक गई हूँ।’

‘जिस समझ से थकान लगे वह समझ ही नहीं है।’

‘तो आप ही बताइए कि मैं क्या समझूँ? मुझे भी अन्य लड़कियों की तरह अच्छा दिखने का मन तो होगा ही न?’

हमारी बात शुरू थी, उसी समय कानन बहन अंदर आए और दादा से धीरे से कुछ कहा।

‘संयुक्ता, आज हमने जो बातें करी उसे थोड़ा पचने दो। उस

पर विचार करना। पर साथ ही साथ मैं जैसा कहूँगा वैसा करोगी?'

'क्या?'

'तुम्हें योगा-प्राणायाम आता है?'

'हाँ।'

'तुम्हें वह रोज करना है।'

'तुम्हें और क्या अच्छा लगता है?'

'ड्राइंग करना अच्छा लगता है।'

'साइकिलिंग करना अच्छा लगता है?'

'हाँ।'

'तो वह भी करना।'

'फिर शाम को कृष्ण भगवान की आरती करना, उनके लिए फूलों का हार बनाना। यह सब करोगी?'

'हाँ।'

'तो कल से करना।'

'हाँ।'

मैंने दादा के चरणस्पर्श किए। दादा ने आशीर्वाद दिया। 'हम प्रार्थना करेंगे सब अच्छा हो जाएगा हं!'

उस दिन भी मैं बहुत हल्का महसूस कर रही थी। घर पहुँचकर मैंने दादा के साथ की हुई बातें मम्मी, दादी और रौनक को बताई। सभी बहुत खुश हुए। रात को दादा की बातें याद करते-करते मैं सो गई।

अगले दिन से मुझे अपने में और घर के वातावरण में परिवर्तन का अनुभव हो रहा था। मैं भी वही थी मेरा रूम भी वही था। फिर भी आज मेरे रूम की दीवारें मुझे खाने को नहीं दौड़ रही थी। न ही मैं अपने आप को कोस रही थी। मैं बहुत शांत थी।

वैसे तो, मेरी स्थिति देखकर अभी तक मेरे घरवालों ने उसमें से बाहर निकलने के अनेक उपाय बताए थे। पर मेरा मन उसे स्वीकार नहीं करता था। पर दादा के शब्दों से मेरे मानस पटल पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनके कहे अनुसार करने हेतु मेरा मन तुरंत तैयार हो गया।

धीरे-धीरे मैंने प्राणायाम करना शुरू किया और मम्मी ने रोज घर में आरती करना। मैं शांति से बैठती। कभी सोते-सोते सुनती। दादी की मदद से मैं फूलों की माला बनाने लगी। घर का वातावरण दु:ख और बोझिल पर से हटकर सरल और सौम्य होता गया।

मुझमें परिवर्तन हुआ और मम्मी, दादी और रौनक में भी।

वे लोग सारे काम मेरे पास बैठकर करते थे। मैं भी किसी को वहाँ से चले जाने के लिए नहीं कहती थी। मैं घर में सभी से थोड़ी बातें करने लगी। वे सब भी मुझे प्रेम से सँभालने लगे। मैंने अपने नसीब पर रोना और उसे कोसना छोड़ दिया।

धीरे-धीरे मम्मी ने पापा को भी सारी बातें बताई। पापा भी मुझमें यह असंभव परिवर्तन देखकर खुश हुए। वे भी धीरे-धीरे आरती में आने लगे। घर का वातावरण भक्तिमय और आनंदमय हो गया।

घर के सभी लोग मन ही मन दादा का उपकार मानने लगे और साथ ही साथ पारूल आंटी का भी।

हमें खुश देखकर पारूल आंटी भी बेहद खुश थी।

(26)

आठ दिनों के बाद, दादा से मिलने जाना तय किया। हम पहुँचे तो कानन बहन ने ही हँसते हुए हमारा आवभगत किया। हमें बाहर बैठाकर वे दादा को बताने गए।

मैं अंदर गई। मम्मी और पारूल आंटी कानन बहन के साथ बाहर बैठी। दादा से मेरी दृष्टि मिली और फिर से वही अनुभव हुआ। वही ठंडक, वही तृप्ति। इसे कोई जादूगरी कहूँ या क्या कहूँ? मुझे समझ में नहीं आ रहा था। हाँ, आश्चर्य की प्रतिमा कहना ही योग्य लग रहा था।

अंदर जाकर मैंने दादा के चरणस्पर्श किए।

'कैसी हो संयुक्ता?' अच्छा लग रहा है?'

'हाँ दादा। आपके समझाने से मुझमें थोड़ी-थोड़ी हिम्मत आ रही है। पर अभी भी मेरे मन का पूर्णत: समाधान नहीं हुआ है। अंदर बहुत हलचल हो रही है, जो मुझे परेशान कर रही है। मुझे

घुटन होती है।'

मैं आगे कुछ बोलती उससे पहले तो एक लड़की रोते-रोते अंदर आई। कानन बहन जिस प्रकार उसके पीछे आई वह देखकर ऐसा लगा कि वह लड़की कानन बहन को अनसुना कर दादा के पास आ गई हो। दिखने में सुंदर, यंग लगभग तेईस-चौबीस साल की होगी। दादा के पैरों पर गिरकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

'दादा, ऐसी स्वार्थी और धोखेबाज दुनिया में मैं अब नहीं जी सकती। और कोई मुझे मरने भी नहीं देता।'

दादा ने निरूत्तर रहकर उसे बोलने दिया।

'सबकुछ तो है मेरे पास। डिग्री, सुंदरता, पैसा.... सबकुछ। मात्र कैंसर की बीमारी क्या हुई, अंकित ने मुझसे शादी करने से इंकार कर दिया। ये कैंसर तो क्योरेबल है, फिर भी। सचमुच, इस दुनिया में सभी लोग बहुत खराब हैं।' वह नॉन-स्टाप बोल रही थी।

'पार्थी, इस दुनिया में कोई व्यक्ति खराब नहीं होता। हमारे कर्म खराब होते हैं। पुण्य के उदय होने पर सभी अच्छा कहते हैं और जब पाप का उदय होता है तब वही व्यक्ति हमारा तिरस्कार करते हैं। देखा जाए तो इसमें हमारे ही पुण्य और पाप हैं। व्यक्ति तो मात्र

निमित्त बनते हैं।'

दादा के इस वाक्य ने मेरे अंतःमन को झंकझोर दिया। मेरे जीवन के दुःख, बीच में क्षणिक सुख और फिर दुःख की श्रृंखला मेरे स्मृतिपटल पर छा गई।

'क्या सचमुच कोई व्यक्ति खराब नहीं होता? हमें दुःख देने वाले कसूरवार नहीं होते?' मेरे अंदर अचानक आविर्भाव हुआ।

'मैं क्या करूँ दादा? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।' पार्थी विवश होकर बोल रही थी।

'हमारे कर्म हम पूरे नहीं करेंगे तो हमारा वह कर्ज बाकी रहेगा। बाद में भी उसे पूरा तो करना ही पड़ेगा। कुदरत किसी को नहीं छोड़ती, पार्थी।'

'दादा, यह सब मेरे लिए असहनीय है। मुझे मर जाना है।'

'ऐसे कोई आत्महत्या नहीं करते। उससे कर्म पूरे नहीं होते। कर्ज चुकाए बिना चले जाएँ तो उसे चुकाने के लिए फिर से मनुष्य देह धारण करके ब्याज सहित कर्ज चुकाना पड़ता है। सात जन्मों तक आत्महत्या करके ही मरना पड़ता है। इसलिए समस्या का हल निकालना चाहिए। नहीं तो दुःख घटने के बदले बढ़ता है।'

‘मैं अंकित को माफ नहीं कर सकूँगी। मैं ऐसा मानती थी कि वह मुझसे बहुत प्रेम करता है। पर सबकुछ मात्र दिखावा ही था।’ उसे रोने के साथ गुस्सा भी आ रहा था।

‘प्रेम? ये दो हाथ वाले हमें क्या प्रेम दे सकेंगे, पार्थी? उल्टा हम ही जगत को प्रेम देंगे। पर कब? जब हम वीतराग बन जाएँगे तब। वीतराग अर्थात् किसी के प्रति द्वेष नहीं, किसी के प्रति कोई राग भी नहीं। सभी के लिए एक समान प्रेम। जैसा दादा का है वैसा। तुम दादा का प्रेम देखती हो न?’ दादा की आवाज से भरपूर प्रेम बरस रहा था।

यह सुनकर पार्थी शांत हो गई और मैं तो ठंडी पड़ गई।

‘ये दो हाथवाले हमें क्या प्रेम दे सकेंगे?’ दादा का एक-एक वाक्य मेरे हृदय में अंकित होता गया।

‘सभी के लिए एक समान प्रेम। जैसा दादा का है वैसा। तुम दादा का प्रेम देखती हो न?’ मुझे ऐसा लग रहा था कि दादा यह पार्थी को नहीं बल्कि मुझे ही कह रहे हैं। मैं दादा का प्रेम मात्र देख ही नहीं रही थी बल्कि वहीं बैठे-बैठे अनुभव भी कर रही थी।

दादा ने पार्थी को बहुत प्रेम से समझाया और आत्महत्या के

विचारों से उसे मुक्त करवाया। उसके साथ ही साथ मेरे मन ने भी कभी आत्महत्या न करने का निर्णय ले लिया।

पार्थी दादा के चरणस्पर्श करके रूम के बाहर निकल गई। उसके जाने के बाद दादा ने मेरी ओर देखा।

'जिस सुंदरता पर पार्थी को अभिमान था, वह अभिमान न तो कैंसर की बीमारी को मिटा सका और न ही उसकी सगाई को टिकाए रख सका।'

मैं क्या कहती?

'तुम्हारे साथ इतना तो बुरा नहीं हुआ है न?'

'नहीं।' मैंने सिर हिलाते हुए का।

'इसलिए अपनी दृष्टि हमेशा अपने से नीचे वालों की ओर रखनी चाहिए। तो हम सुखी रह सकते हैं। ऊपर वालों को ही देखते रहेंगे तो हमारा दुःख कभी दूर नहीं होगा।'

'आपकी बात एकदम सही है, दादा। फिर भी मेरे मन पर हमेशा यह बोझ रहता है कि मेरे बाल नहीं हैं।'

'बाल ही नहीं हैं न। बाकी तो सब सही सलामत है न। एक बात बताओ। तुम्हारे पास हार्ट है, किडनी है, आँखें है, ये सब तुम

किसी को लाखो रूपए में दे दोगी क्या? इसके बदले बाल मिलते हों तो भी दोगी क्या?'

'वह कैसे दिया जा सकता है?'

'दुनिया में कितने लोगों के पास वह सब नहीं है। हमारे पास शरीर की वह सभी संपत्ति तो सलामत है न? यह हमारे ऊपर कुदरत का कितना बड़ा उपकार है?'

दादा की बातें सीधे-सीधे मेरे हृदय में उतर रही थी।

'जो हमें मिला है, हमेशा उसका उपकार मानकर उसी में खुश रहना चाहिए। जो नहीं है उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। समझ में आ रहा है?'

'हाँ।'

'पर दादा, ये सब तो आप समझते हैं। लोग तो नहीं समझते न? लोग मुझे उस दृष्टि से नहीं देखते न।'

'लोग तो सुंदरता ही पसंद करते हैं। ये जो आम लेने जाते हैं न उसके जैसा है, बाहर से लोग सुंदर देखकर लाते है। फिर घर आने के बाद खट्टे निकले तब पछताते हैं। भगवान कृष्ण को श्याम जी कहकर खुश होते हैं और कोई लड़की काली हो तो उसकी टीका

करते हैं। ऐसे लोगों को क्या कह सकते हैं!'

इस बात पर दादा की एक्शन देखकर मुझे हँसी आ गई।

'वास्तविकता को देखने की दृष्टि बदल जाएगी, फिर वह वास्तविकता तुम्हें दु:ख नहीं दे सकेगी। समझ में आ रहा है?'

'थोड़ा-थोड़ा।'

'एक बात याद रखना, इस युग में रूप होते ही नहीं। रूप तो उस युग में थे जब भगवान थे। वे सभी पद्मिनी स्त्री कहलाती थी। उन स्त्रियों की सुंगध ही मीलों दूर से भी आती थी और आज की नारियाँ! पास में बैठना भी अच्छा न लगे वैसी उनमें से पसीने की गंध आती है। सुगंध फैलाने इत्र छिड़कना पड़ता है।'

दादा की एक-एक बात से मेरा अंत:मन सहमत होते जा रहा था।

'अच्छे ड्रेस पहनने से, मेकअप करने से, हेयर स्टाइल करने से रूप में निखार नहीं आ जाता। असली रूप निखरता है सत्संग से, सच्ची समझ से, अच्छी संगत में आने से। और उससे भी महत्वपूर्ण यह, कि जैसे-जैसे मनुष्य का अहंकार कम होते जाता है वैसे-वैसे उसका रूप अलौकिक होते जाता है। अहंकार रूप को नष्ट कर देता है, लोगों के प्रेम को खत्म कर देता है, लोगों को दु:ख ही देता है।

अब मुझे दादा की बातों में रूचि होने लगी।

'भगवान संपूर्ण अहंकार रहित ही हैं इसलिए उनका रूप देवों से भी बढ़कर होता है। यह त्वचा का रूप रंग तो एक दिन झुलस जाएगा। पर यदि अहंकार नष्ट हो जाए तो वह अलौकिक रूप हमेशा ही रहता है।

'अहंकार किस प्रकार कम होता है?'

'हम जब दूसरों को दु:ख देना बंद कर दें तब। जैसे-जैसे दूसरों की गल्तियाँ निकालना बंद कर दें, दूसरों के दोष देखना बंद कर दें, वैसे-वैसे कुबुद्धि कम होती जाती है। इस प्रकार अहंकार और कुबुद्धि कम होती है तो आंतरिक रूप और आंतरिक स्वभाव इतना सुंदर हो जाता है कि लोगों को हमारी उपस्थिति अच्छी लगती है। हमारा स्वभाव अच्छा लगता है, हमारे साथ रहना अच्छा लगता है।'

अब मैं मुक्त मन से मुस्कुराई। मुझे उनकी बातें एकदम ही अलग लगी। क्यों कोई ऐसा नहीं सोचते हैं?

'अब कहो, तुम कौन सी ब्युटी पसंद करोगी?'

'ईनर ब्यूटी।' मुझे पहली बार किसी ने एक नए तरीके से जिंदगी की वास्तविकता समझायी थी। 'यह सब सुनकर अच्छा लग

रहा है। पर जब वास्तविक दुनिया का सामना करना पड़ता है तब सबकुछ बहुत कठिन लगता है।'

'नहीं, वास्तविक दुनिया का सामना करते समय इस समझ को ध्यान में रखने से सहायता मिलती है। तुम्हें और एक बात कहूँ।'

'जब व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तब कोई उसे अपने पास रखते हैं? लोग तुरंत शमशान ले जाने की तैयारी करते हैं। अपने ही लोग ऐसा क्यों करते हैं?'

'सड़ जाती है इसलिए।'

'हाँ, यह शरीर सड़ जाता है, गंध आती है। इसलिए लोग कहते हैं यह तो हमें बीमार कर देगा। यह सोचकर जल्दी ही दाह संस्कार कर देते हैं।'

'हाँ, सही है।'

'तो यह शरीर जो कभी सुंदर था, वह बुढ़ापा आने पर कैसा विचित्र हो जाता है? सुंदर आँखों में मोतियाबिंद आने से कैसे लगती हैं? यह तो आत्मा है तब तक ही शरीर की कीमत होती है उसके बाद तो उसकी जीरो वैल्यू ही है।'

'हाँ, मेरी नानी को मैंने देखा था। पूरा शरीर क्षीण हो गया था।

मृत्यु के बाद चेहरा भी बदल गया था।'

'हाँ, इसीलिए असली कीमत आत्मा की है। आत्मा ही परमात्मा है। बाकी तो यह शरीर रूपी पेकिंग तो कभी भी तकलीफें दे सकता है। इसका कोई भरोसा नहीं।'

'दादा, दूसरी लड़कियाँ मेरे सामने रौब जमाती है तब मुझे कैसी समझ रखनी है?'

'वह तो वे अपने मन में ऐसा समझती है कि 'मैं कुछ हूँ' इसलिए करती है। ऐसी कितनी ही लड़कियों के केस मैं जानता हूँ। जो एक जमाने में बहुत सक्सेसफूल थी फिर डिप्रेशन की शिकार बनकर कहाँ गुम हो गई पता ही नहीं। तब कहाँ गया दिखावा, स्टेटस और पैसों के आधार पर प्राप्त किया गया सुख? कर्मों का फल तो सभी को भोगना ही पड़ता है।'

'यह सब समझ में आता है, दादा। पर मैं किसी को फेस नहीं कर सकती उसका क्या करूँ?'

'क्यों? लोग मजाक उड़ाएँगे इस बात का डर लगता है?'

'हाँ। दूसरी लड़कियों को मान मिले और मुझे तिरस्कार। यह देखकर मुझे खूब जेलसी होती है।'

‘कोई ज्यादा खूबसूरत और गोरी लड़की हो तो लोग उसे क्यों अधिक मान देते हैं यह कभी सोचा है?’

वह अच्छी दिखती है इसलिए सभी को अच्छी लगती है। और सभी के सामने रौब भी जमा सकती है।

‘नहीं। इस संसार में लोग भूखे हैं, कई पैसों के, कई मान-सम्मान पाने के और ज्यादातर वासना के।’

‘वासना!’ यह शब्द सुनते ही मैं डर गई।

‘इस काल में लोगों की दृष्टि बहुत विकारी है। सामने सुंदरता हो तो उसे भोग लेते हैं। अंततः मन से तो भोग ही लेते हैं। मान देकर उसे फँसाते हैं और फिर उसका गैरफायदा उठाते हैं। और ये लड़कियाँ बेचारी मूर्ख बनती हैं। सम्मान, प्रशंसा पाकर वे मूर्छित ही हो जाती है।’

यह सुनकर मैं बिल्कुल गूंगी हो गई।

‘लोग अपनी लालच के लिए दूसरों को मान देते हैं। इसके बदले किसी न किसी प्रकार की लालच होती ही है।

‘तो ये सभी हिरोईनों के लिए भी ऐसा ही होता है?’

‘तो और क्या? लड़कियाँ समझती है कि हम सबको नचाती

हैं। पर अंत में खुद ही मूर्ख बनकर छली जाती है।'

अंतिम बात सुनकर मैं स्तब्ध रह गई और खड़ी होकर दादा के पैरों में गिर गई।

(27)

मैंने दादा के चरण-स्पर्श किए तब दादा ने प्रेमपूर्वक मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिए। मेरी आँखों से सतत अश्रुधारा बह रही थी। जब तक मैंने सिर ऊपर नहीं उठाया तब तक दादा ने मुझे खाली हो जाने दिया। मैं शांत हुई। आँसू पोछकर सामान्य हुई। दादा को देखा। उनकी आँखों से प्रेम ही प्रेम छलक रहा था।

'संयुक्ता, आज जो हमारे बीच बात हुई है उसका रोज मनन करना। जब-जब बाहर जाना पड़े तब तो खास। उससे तुम्हें शक्ति मिलेगी। धीरे-धीरे तुम्हारी व्याकुलता कम होती जाएगी।'

'हाँ, दादा। लेकिन फिर भी जब कभी मैं कमजोर पड़ जाऊँ तब आप मेरे साथ ही रहना।'

'हम तुम्हारे साथ ही हैं। हमारी और एक बात मानोगी?'

'क्या दादा?'

‘मम्मी-पापा का कहना मानकर डॉक्टर की दवाई लेना शुरू कर दो।’

मैं चुप रही।

‘डॉक्टर की दवा और हमारी दुआ दोनों साथ मिलकर काम करेंगे।’

जाने क्यों लेकिन मेरा मन तुरंत मान गया।

‘ठीक है दादा।’

मैंने फिर से दादा के पाँव छूए। दादा ने आशीर्वाद दिए। इस बार मेरे चेहरे पर खुशी था। सारा बोझा मानो वाष्पित हो गया हो!

इसे जादू कहें या चमत्कार!

मैं रूम से बाहर निकली। मम्मी और पारूल आंटी, कानन बहन के साथ बातें कर रहे थे। मुझे देखकर उनकी आँखें मेरे चेहरे पर स्थिर हो गई। वे अनुमान लगाने की कोशिश कर रहे थे कि मैं ठीक तो हूँ!

लेकिन ‘माँ तो माँ’ ही होती है। मुझे देखते ही उनके चेहरे पर खुशी छा गई। वे तुरन्त उठकर मुझसे लिपट गई।

‘संयु.... मेरी बेटी...’

‘मम्मी, मुझे बहुत अच्छा लगा।’

यह सुनकर पारूल आंटी ने भी राहत की साँस ली।

‘आइए, आप भी दादा से आशीर्वाद ले लीजिए।’ कानन बहन ने मम्मी से कहा।

मैं, मम्मी और आंटी हम तीनों दादा के दर्शन करने अंदर गए।

‘जय सच्चिदानंद, रश्मि बहन।’

‘जय सच्चिदानंद, दादा।’

‘सब ठीक है न?’

‘हाँ दादा। संयुक्ता को देखकर मुझे भी शांति हो गई।’

‘सब ठीक हो जाएगा हँ। उसकी डॉक्टर की दवाई भी शुरू कर देना न।’

‘लेकिन वह...’

‘वह लेगी।’ कहकर दादा ने मेरी तरफ देखा।

मैंने हाँ में सिर हिलाया।

मुझमें आए इस अकल्पनिय बदलाव को देखकर मम्मी हैरान रह गई।

उनकी आँखें में खुशी के आँसू आ गए। दादा के प्रति कृतज्ञता उनकी आँखों में स्पष्ट दिखाई दो रही थी। लेकिन वे उन्हें व्यक्त नहीं कर पा रही थी।

'दादा...' वह इतना ही कह पाई।

'रश्मि बहन, तुम्हारी बेटी को खरी सुंदरता तो अब हासिल करनी है और उसके लिए उसे तुम्हारे सपोर्ट की ज़रूरत होगी।'

'हाँ, हाँ, ज़रूर।'

दादा ने पारूल आंटी के साथ थोड़ी बातें की और फिर हम तीनों वहाँ से निकल गए।

मम्मी ने रौनक से डॉक्टर के बारे में बात की और रौनक ने पापा और दादी से। घर में सभी बहुत खुश थे। मेरी डॉक्टर की दवाई भी शुरू हो गई।

दादा की दुआ और डॉक्टर की दवा!

मैं वास्तव में ठीक होने लगी, तन और मन, दोनों ही से! दादा की कही हुई बातें मैं रोज याद करती। वे मेरे लिए विटामिन की

तरह काम कर रही थी।

धीरे-धीरे मैंने घर से बाहर निकलने की हिम्मत की। लेकिन हिम्मत के साथ बेचैनी भी थी। शुरुआत में तो मैं बिल्डिंग में ही नीचे उतरती और फिर से ऊपर आ जाती। इससे ज्यादा बाहर जाने की मेरी हिम्मत नहीं होती। इस घबराहट से मेरी धड़कने तेज हो जाती। घर पहुँचकर मैं थोड़े देर आँखें बंद करके बैठती और दादा की बातें याद करती। फिर मुझमें हिम्मत आती। इस तरह दिन बीतते गए।

एक दिन मैंने तय किया, मैं घर से अकेले बाहर निकलने की शुरुआत दादा से मिलने जाने से करूँ! और मैं गई भी। मम्मी, दादी और रौनक तो मुझे देखते ही रह गए!

दादा के पास पहुँचते तक तो मैं पसीने से लतपथ हो चुकी थी। तेज कदमों से उनके रूम तक गई। दरवाजे के पास से ही, दादा को देखते ही, मेरे साथ-साथ मेरे दिल के धड़कने की स्पीड भी अपने आप नॉर्मल हो गई। उन्हें देखते ही ठंडक हो गई। धीरे से मैंने रूम में प्रवेश किया। उनके सामने मर्यादा और विनय अपने आप ही आ जाते ऐसा गजब का उनका प्रभाव था।

'जय सच्चिदानंद दादा।' मैंने कहा।

‘जय सच्चिदानंद। सबकुछ सच्चिदानंद है न?’

‘हाँ दादा।’

‘तो अब तुम्हारी आंतरिक बेचैनी कम हुई?’

‘वैसे तो आपसे जो समझ मिली है वह याद रहती है। उससे काफी फर्क पड़ा है, दादा। लेकिन कई बार अब भी अंदर असर हो जाता है।’

‘ऐसा? क्या होता है?’

‘दादा, मैं जब भी घर से बाहर निकलती हूँ तब लोगों की अचरज भरी नजरें मुझ पर स्थिर हो जाती है। पहले जितना असर तो नहीं होता लेकिन जब कोई ज्यादा समय तक घूरता रहता है तब ऑकवर्ड फील होता है।’

‘उस समय तुम क्या करती हो?’

‘आपकी बात याद आ जाती है तो थोड़ा नॉर्मल हो जाती हूँ। पर कई बार जब सामने वाले व्यक्ति का व्यवहार अच्छा नहीं होता तब सबकुछ भूल जाती हूँ।’

‘पहले से तो थोड़ा अच्छा रहता है न?’

‘हाँ दादा। पहले तो बिल्कुल खराब हालत थी। आप तो जानते ही हो।’

‘और क्या-क्या होता है?’ दादा मेरी मनः स्थिति समझ गए। वे समझ गए कि मेरी उलझन अभी भी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है।

दादा से सच-सच बता दूँगी कि मुझे अभी भी यह सब होता है तो उन्हें कैसा लगेगा! यह सोचकर मैंने एक बार में ही उन्हें सबकुछ नहीं बताया लेकिन पकड़ी गई।

‘हाँ, मैं अभी भी लोगों के साथ निगाहें नहीं मिला सकती। मैं ट्राय करती हूँ। इन सब लोगों से मुझे डरने का या हीनता महसूस करने का कोई कारण नहीं है लेकिन....’

‘कोई बात नहीं। हमें अहंकारपूर्वक नहीं बल्कि समझदारी से इसमें से बाहर निकलना है। जैसे-जैसे तुम्हें गहराई में समझ में आता जाएगा वैसे-वैसे सब ठीक होते जाएगा।’ दादा ने मुझसे प्रेम से कहा।

उनका यह प्रेम देखकर मैंने चैन की साँस ली। दादा अब मुझे परिचित लगने लगे थे। मुझे उनके साथ बात करने में जो थोड़ा संकोच होता था वह भी उनकी करूणा से निकलने लगा।

‘हाँ दादा। अभी भी जितना होना चाहिए उतना कॉन्फिडेन्स

नहीं ला पाती।'

'कॉन्फिडेन्स लाना नहीं है। तुम्हारी समझ बदलेगी तो उसके परिणामस्वरूप अपने आप कॉन्फिडेन्स आ जाएगा। अंहकारपूर्वक लाया हुआ कॉन्फिडेन्स कब डिप्रेशन में बदल जाए, कहा नहीं जा सकता।'

दादा के इस वाक्य से विग की वजह से जो एलिवेशन आया था और उसके बाद के डिप्रेशन वाली घटना एकदम ताज़ा हो गई। दादा की बातें गले उतरने लगी क्योंकि उन्हें सुनते ही खुद की भूलें स्पष्ट रूप से दिखने लगी और वहीं उनका समाधान भी हो गया...

'सारा दिन तुम्हारी दृष्टि संयुक्ता के बाह्य रूप रंग पर, विनाशी स्वरूप पर सीमित हो जाती है। उसी दृष्टि को तुम, अपने असल अविनाशी स्वरूप पर सेट करो।' दादा ने कहा।

'अर्थात्? मैं कुछ समझी नहीं?'

'यह देह तो निरंतर परिवर्तनशील है। बचपन में जैसा होता है वैसा जवानी में नहीं रहता और जैसा जवानी में होता है वैसा बुढ़ापे में नहीं रहता। मृत्यु के समय भी बदलाव आता है। मरने के बाद लोग उसे जला देते हैं। तो जब जीवित था तब किसकी हाज़िरी से उसमें चेतना थी? जिस देह के आधार पर सभी संबंध हैं, वे सभी

मरने के साथ ही खत्म हो जाते हैं। तो फिर इसमें हम मूल कौन? ऐसा विचार किया है कभी?'

'नहीं दादा।'

'हम सभी के भीतर जो आत्मा है वही मूल तत्व है और वही परमात्मा है। वही तुम्हारा सच्चा स्वरूप है। उसे लोग देख ही नहीं सकते। जिसे देखते हैं वह तो बाहर का पैकिंग है। वह तो किसी का रूपवान होता है तो किसी का कुरुप। लेकिन भीतर जो आत्मा है वही सच्चा माल है। उसके निकल जाने के बाद शरीर को कोई सँभालकर नहीं रखता। उसे तो तुरंत ही श्मशान में छोड़ आते हैं। इसलिए आत्मा के सामने इस पैकिंग की कोई वैल्यू नहीं है। लेकिन कलियुग में लोगों का मोह इतना अधिक बढ़ गया है कि इसे ही सर्वस्व मान बैठे हैं। यह मैं ही हूँ और यह सब मेरा ही है। अध्यात्म भाषा में वास्तविकता बिल्कुल अलग ही है। समझ में आता है?'

'हाँ, थोड़ा-थोड़ा। सारी जिंदगी इस शरीर को ही अपना सर्वस्व माना और इसी की वजह से इतनी भयंकर वेदना, आंतरिक बेचैनी सहन करनी पड़ी। अब समझ में आ रहा है कि सच्ची कीमत तो आत्मा की है। दादा, आज से मैं निर्भय होकर बाहर जाने की शुरुआत करूँगी।'

'बहुत अच्छा। हमारा आशीर्वाद है। तुम भी सुंदर ढंग से जीवन

जीने लगोगी।'

मैं कुछ कहती उससे पहले ही दादा ने आगे कहा।

'और हाँ... बाल के साथ नहीं, सच्ची समझ के साथ।' दादा ने अपनी पहली ऊँगली उठाकर हँसते-हँसते मुझे चेतावनी देते हुए कहा।

मैं खिलखिलाकर हँस पड़ी।

'दादा, कभी-कभी मुझे विश्वास ही नहीं होता कि आपसे मिलने से पहले मेरी जिंदगी कैसी थी और आज कैसी है!!'

'कोटी जन्मों के पुण्य एकत्र होने पर इस जन्म में ज्ञानी मिलते हैं।'

'उस दिन पहली बार मुझे अपने फूटी किस्मत पर गर्व हुआ। मैंने दादा के चरणों में सिर झूकाया। दादा ने मुझे आशीर्वाद दिए और मैं वहाँ से निकल गई।

और उस दिन के बाद धीरे-धीरे मैं नॉर्मलिटी की ओर जाने लगी। जब मीत मिला था न, उस दिन मैं बिंदास रौनक के साथ नाटक देखने गई थी। उसके बाद क्या-क्या हुआ वह तो तुम्हें पता ही है।'

सभी मौन थे। स्वस्थ थे। लेकिन फिर भी किसी गहरी सोच में डूब गए थे।

मैंने मिराज की तरफ देखते हुए कहा, 'मिराज एक बात याद रखना। हमें ऐसा लगता है कि मैंने बहुत सहन किया है लेकिन इस जर्नी में हमारे पैरेन्ट्स को हमसे भी ज्यादा सहन करना पड़ता है।'

मिराज की आँखें झूक गई। देखा तो उसके मम्मी-पापा की आँखें भी झूकी हुई थी।

'मिराज, तुम्हें याद है मैंने तुमसे कहा था कि परम, निखिल, प्रियंका... यह सब तो निमित्त हैं।'

'हाँ दीदी। वे लोग तो जैसे हैं वैसे ही हैं। पर मुझे अच्छे-बुरे का फर्क समझ में नहीं आया इसलिए मैं अपने आप को बदलने के चक्कर में इन सब में फंस गया। इसमें उनका कोई दोष नहीं है।'

'मिराज, तुम्हारी समझ सचमुच बहुत डेवेलप होती जा रही है। आइ एम हैप्पी टू हियर दीस फ्रॉम यू।'

मिराज के चेहरे पर एक संतोष भरा स्माइल आ गया।

'मिराज, यदि तुम उन लोगों को माफ कर सकते हो तो क्या अपने पेरेन्ट्सको माफ नहीं कर सकते?' यह सुनते ही मिराज स्तब्ध रह गया।

'भले ही बदलते जमाने के अनुसार अब विचार शैली बदल गई

है और क्रिकेट को भी कैरियर बना सकते हैं। लेकिन जमाना चाहे जितना भी बदल जाए यह सिद्धांत कभी भी नहीं बदलेगा कि माँ-बाप को कभी भी दुःख नहीं देना चाहिए। उनके साथ समझाकर ही बात करनी चाहिए। और यदि विचार न मिलते हो तो भी वे खुश रहे इस तरह से रहना चाहिए। ऐसा करने में यदि अपने सुख को छोड़ना पड़े तब भी ऐसा करके पहले मम्मी-पापा को खुश रखना चाहिए। जिस सुख को पाने के लिए तुमने इतने हाथ-पैर मारे, इतनी मेहनत यदि मम्मी-पापा को खुश रखने में की होती तो तुम अपने आप ही सुखी हो गए होते। तुम्हारी ऐसी हालत न हुई होती। आखिर वे तुम्हारे माता-पिता हैं। और कोई माता-पिता अपने बच्चों का अहित नहीं चाहते।' मेरा आवाज थोड़ा स्ट्रांग था लेकिन मुझे विश्वास था कि अब वह टूट नहीं जाएगा।

'बिना एकता के एक घर में साथ रहने पर मुक्तता कैसे अनुभव की जा सकती है?' मेरी नज़र सभी की ओर थी। किसी के पास कोई जवाब नहीं था।

'क्या हुआ? कठिन लग रहा है?' मेरी नज़र फिर से मिराज पर स्थिर हो गई।

मिराज एकटक मेरी ओर देखता रहा।

‘कभी तो माउन्ट एवरेस्ट चढ़ना ही पड़ेगा न?’ मेरी आवाज मृदु होने लगी, ‘तुम ही कहो, जब तुम बीमार थे तब क्या तुम्हारे फेसबुक या इन्स्टाग्राम या व्हाट्सएप के फ्रेंड्स काम आए थे?’

‘कोई नहीं।’

‘तब तुम्हारे पास तुम्हारे पेरेन्ट्सही थे न?’

मिराज ने सिर हिलाया। और एक के बाद एक सारा घटनाक्रम उसकी आँखों के सामने आने लगा।

‘इसलिए चाहे जो भी हो, घर के सभी लोग एक धागे में ही बंधे होने चाहिए। तुम इसका अनुभव करके तो देखो।’

मिराज ढीला पड़ गया। मेरी बातें उसका दिल भी कबूल कर रहा था। उसकी आँखों में पछतावा दिख रहा था। वह तुरंत खड़ा हुआ और मम्मी के पैरों में गिर पड़ा। अचानक ऐसा होने से अल्का बहन तो स्तब्ध ही रह गई। तुरंत ही उन्होंने मिराज को उठाया और गले से लगा लिया। वे रो पड़ी। उसके बाद मिराज अपने पापा के पैरों में गिर पड़ा। वे भी खड़े हो गए और मिराज को गले से लगा लिया। अल्का बहन साड़ी के पल्लो से आँखें पोंछ रहीं थी और मिराज के पापा अपना चश्मा। मीत गद्‌गद हो गया था। वह उठ खड़ा

हुआ और मिराज से लिपट गया। दोनों भाईयों का मिलन देखकर मेरी आँखें भी भर आईं।

फाइनली मिराज मेरे पास आया। और मेरे सामने भी झूकने लगा। मैंने तुरंत ही उसे रोक दिया और हँसते-हँसते अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया, 'गुड लक मिराज। आइ एम प्राउड आफ यू।' मिराज ने अपने आँसू पोंछते हुए मेरे साथ हेन्ड शेक किया।

'दीदी, एक लास्ट फेवर करोगे? मुझे भी दादा के दर्शन करने हैं। जिन्होंने मुझे देखा नहीं है, फिर भी, मेरे लिए तुम्हें सतत मार्गदर्शन देकर मुझ पर कितनी कृपा की।'

'हाँ, हाँ। हमें भी उनके दर्शन करने हैं। जिनकी कृपा से हमारे अंधेरे घर में फिर से उजाला हो गया।'

'ज़रूर ले जाऊँगी।' मैंने खुश होकर कहा। अभी वे बाहर गए हैं। महीने बाद आएँगे तब जाएँगे।

सभी खुश हो गए।

'मिराज तुम्हारा बर्थ डे आ रहा है न? लो, मेरी ओर से यह छोटी सी गिफ्ट।'

'फ्रेम जैसा कुछ लग रहा है?' वह आतुरता से गिफ्ट रेपर

खोलने लगा।

‘करेक्ट।’

उसने रेपर खोलकर फ्रेम में लिखे हुए शब्दों को पढ़ा।

'I never lose. I either win or learn.'

-Neison Mandela

‘आज के बाद जीवन में कैसे भी कसौटी आए लेकिन तुम स्ट्रांग और पॉज़ेटिव ही रहोगे, प्रॉमिस करो।’

उसने मुझे खुशी-खुशी प्रॉमिस दिया।

मिराज के वेल विशर के तौर पर यह मेरी आखिरी मुलाकात थी। उसके बाद हम कभी नहीं मिले। मीत से उसका रिपोर्ट मिल जाता है। उनके घर में सबकुछ ऑल राइट हो गया है। कभी-कभी छोटी-मोटी नोंकझोंक होती है लेकिन कुछ देर बाद सॉल्यूशन आ जाता है। चिंगारियाँ तो होती है लेकिन फिर तुरंत उस पर पानी छिड़कना आ जाना चाहिए।

मुझे बहुत संतोष है। दादा ने मुझे जो नवजीवन दिया है उसका बदला तो मैं चुका सकूँ ऐसा है नहीं लेकिन अपने जैसे एक राह से भटके हुए को सही रास्ते पर लाकर मैंने अपना जीवन सार्थक किया।

हाँ।

मैं संयुक्ता....

आपकी अपनी मित्र।

आपकी ही परछाई....

आप अपने में मुझे अथवा मिराज को कहीं न कहीं अदृश्य रूप में देखोगे ही....

अब तो आप मुझे बहुत अच्छी तरह से पहचानते हो इसलिए आपमें छिपी हुई मेरी तस्वीर को भी आसानी से पहचान लोगे।

जीवन के विभिन्न पहलु में उलझकर मैं और आप ज़रा सी नासमझी के कारण बेवजह ही अपने होठ और आँखों को न हँसने की उम्रकैद की सज़ा दे दिया करते हैं।

आओ, आज सच्ची समझ के साथ मुक्त मन से हँसें और जीवन को संपूर्ण रूप से जीएँ।

–जय सच्चिदानंद

स्वयं को दूसरों के जैसा बनाने के लिए कोई इंसान मास्क लगाकर कब तक रह सकता है? किस हद तक अपने आप को बदलने की कोशिश कर सकता है? जिस काम को करने पर उसे बोझ लगता हो, उस बोझ को कब तक ढ़ोया जा सकता है? उस रास्ते पर आगे बढ़ने का क्या फायदा जिस पर चलने से जीवन में जो खुशियाँ प्राप्त हैं वे भी बिखर जाएँ? दूसरों से प्रभावित होकर ज़बरदस्ती उनके जैसा बनने की कोशिश करना, इससे बड़ा सेल्फ टार्चर और क्या हो सकता है?

सरल बनना एवं सरल रहना इतना कठिन नहीं है। लेकिन कम्पैरिज़न करके नकली पर्सनालिटी या इम्प्रेशन बनाए रखना, उसके लिए सतत जूझते रहना बहुत कठिन है। कुछ हद तक का बदलाव स्वीकार्य है। और ज़रूरी भी है। लेकिन पहले उसकी लिमिट समझ लेनी चाहिए। जीवन जीना आसान है लेकिन हम खुद ही उसे कॉम्प्लिकेटेड बना देते हैं।

"स्वयं को दूसरो के जैसा बनाने के लिए कोई इंसान मास्क लगाकर कब तक रह सकता है ? किस हद तक अपने आप को बदलने की कोशिश कर सकता है ? जिस काम को करने पर उसे बोझ लगता हो, उस बोझ को कब तक ढ़ोया जा सकता है ? उस रास्ते पर आगे बढ़ने का क्या फायदा जिस पर चलने से जीवन में जो खुशियाँ प्राप्त हैं वे भी बिखर जाएँ ? दूसरों से प्रभावित होकर ज़बरदस्ती उनके जैसा बनने की कोशिश करना, इससे बड़ा सेल्फ टार्चर और क्या हो सकता है ?

सरल बनना एवं सरल रहना इतना कठिन नहीं है। लेकिन कम्पैरिज़न करके नकली पर्सनालिटी या इम्प्रेशन बनाए रखना, उसके लिए सतत जूझते रहना बहुत कठिन है। कुछ हद तक का बदलाव स्वीकार्य है। और ज़रूरी भी है। लेकिन पहले उसकी लिमिट समझ लेनी चाहिए। जीवन जीना आसान है लेकिन हम खुद ही उसे कॉम्प्लिकेटेड बना देते हैं।"